भूदान-गंगोत्री

दामोदरदास मूँदड़ा

○

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

प्रकाशक :
अ० वा० सहस्रबुद्धे,
मंत्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
वर्धा (बम्बई-राज्य)

पहली बार : ५,०००
फरवरी, १९५७
मूल्य : दो रुपया आठ आना

मुद्रक :
विश्वनाथ भार्गव,
मनोहर प्रेस,
जतनबर, बनारस ।

दो शब्द

भूदान-गगोत्री का जन्म पोचमपल्ली मे १८ अप्रैल १६५१ को हुआ। माँ धरती को उसकी प्रसव की वेदनाएँ तो शिवरामपल्ली सम्मेलन मे ही होने लगी थीं। आर्थिक समता और भूमि-वितरण के सबध मे कार्यकर्ताओं के साथ वहाँ जो प्रश्नोत्तर हुए, उन्हीसे यह अन्दाज हो जाता है कि इस अहिसक क्रांति के अवतरण की तैयारियाँ कैसे शुरू हो गयी थी। वैसे तो ये तैयारियाँ बहुत पहले से ही प्रारम्भ हो गयी थी, जिनकी झाँकी इस भगीरथ के जीवन की अनेक घटनाओं से मिलती है। इस गगोत्री की तरह वह सरस्वती भी कभी प्रकाश मे आये, तो उसका दर्शन जनता को होगा।

तो, इस तरह अब करीब साढे पॉच वर्ष हो गये, जब कि गगोत्री ने बढते बढते 'ग्रामराज्य' की गगा का विशाल रूप धारण किया और वह 'शासन-मुक्त, शोषण-रहित अहिंसक समाज-रचना' के महासागर मे अपने को विलीन करने जा रही है। 'निधि-मुक्ति' और 'तत्र-मुक्ति' का ऐतिहासिक निर्णय उसके इस दिशा मे बढते हुए प्रथम चरण का सकेत ही है।

इस बीच श्रमदान, सपत्तिदान, जीवन-दान और समर्पण आदि उसकी अनेक धाराएँ भी प्रकट हुई है, जिनके कारण इस गगा का क्षेत्र देश तक ही सीमित न रहकर विश्वव्यापी और सर्वस्पर्शी बन गया है।

उस समय तेलगाना मे काम करनेवाली प्रमुख सस्थाएँ दो ही थीं, काग्रेस और कम्युनिस्ट-पार्टी। न कोई रचनात्मक सस्था थी और न कोई अन्य उल्लेखनीय राजनैतिक पक्ष ही। समाजवादी पक्ष का कुछ काम करीमनगर जिले मे दिखाई दिया, परन्तु नलगुडा और वरगल मे तो इन्हीं दोनो का मुकाबला था। काग्रेस ने भी करीब-करीब इस क्षेत्र से

सन्यास ले लिया था, कम्युनिस्ट पार्टी भी यहाँ गैर-कानूनी करार दी गयी थी और उसके कार्यकर्ता भी जेल मे थे। यहाँ जो थोडी-बहुत जन-सेवा की अपेक्षा की जाती थी, वह काग्रेस से ही। यही वजह है कि विनोबाजी ने एक से अधिक बार काग्रेस का जिक्र किया है। सेवा तथा साधन-शुद्धि, दोनो के सबध मे कार्यकर्ताओ की उदासीनता देखकर एक बार तो उन्होने यहाँ तक कह दिया कि 'बहुत सभव है, मुझे काग्रेस की शुद्धि के लिए अपने प्राणो की बाजी लगानी पडे।' लेकिन ईश्वर की इच्छा शायद उनके द्वारा किसी एकाध राजनैतिक पक्ष की शुद्धि कराने के बजाय अखिल मानव-समाज को ही इस महान् आरोहण के पथ पर अग्रसर कराकर उसे चित्त-शुद्धि की दीक्षा देने की थी।

कुछ लोगों का कहना है कि शुरू मे तो विनोबाजी ने केवल भूदान की ही बात कही थी। फिर धीरे-धीरे षष्ठाश की बात शुरू की। यहाँ तक तो ठीक था। परतु आजकल तो वे स्वामित्व-निरसन की बात करते है, जो हमारे सविधान के भी खिलाफ पडती है। उन्हें ऐसा नही कहना चाहिए।

यह सही है कि सविधान ने भूमि तथा अन्य व्यक्तिगत सपत्ति के स्वामित्व पर मुहर लगा रखी है। लेकिन सविधान तो कोई ऐसी ईश्वरदत्त वस्तु है नहीं, जिसमे कोई परिवर्तन न हो सके। सविधान मे परिवर्तन हुए है और होते भी रहेंगे। लेकिन भूदान द्वारा इस देश मे आज जो शासन मुक्ति की प्रक्रिया शुरू हुई है, उसके कारण समूचे सविधान मे आमूलाग्र परिवर्तन की आवश्यकता महसूस हो रही है। सर्वोदय के सकल्प में यह परिणाम निहित ही है, क्योंकि सर्वोदय मे जो शासन-मात्र का क्षय अपेक्षित है, उसके बिना वह जीवन मे उतर ही नही सकता।

जाहिर है कि शासन के क्षय के साथ शासन की आधार-शिला आज के सविधान का क्षय नहीं, तो परिवर्तन अनिवार्य ही है।

रही स्वामित्व-निरसन की बात। विनोबा ने चाहे दान की बात कही

हो या षष्ठाश की या समर्पण की, वे सारे शब्द समानार्थक ही हैं। क्योंकि 'दान' शब्द उन्होंने उसके मूल याने 'समविभाजन' के अर्थ मे ही प्रयुक्त किया है और समविभाजन स्वामित्व कायम रखकर नही हुआ करता। षष्ठाश मे भी शेष पचमाश के स्वामित्व का विधान नही, धरोहर की ही धारणा है। लेकिन विनोबाजी ने तो आरम्भ से ही भूमि को हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह भगवान् की देन कहा है। इतना ही नही, गत साढे पॉच वर्षो मे सतत किसी एक मन्त्र का जप उन्होंने किया हो, तो वह इसीका किया है। क्या किसीका स्वामित्व स्वीकार करके भी यह धरा हवा, पानी, प्रकाश या नीलाकाश की पक्ति मे बैठ सकती है?

और, माना कि विनोबाजी ने शुरू मे केवल दान की ही मॉग की थी और वह भी उसके रूढ-प्रचलित 'भिक्षा' के अर्थ मे। तो, क्या भूदान के विचार ने अपने विकास के बारे मे कोई निषेधात्मक सकल्प किया था? जो विचार नित्य-नूतन अर्थ बोध कराता जाता है, वही क्राति का वाहन बन सकता और वही विश्व को प्रेरणा दे सकता है।

फिर भी गगोत्री की इस कहानी मे स्वामित्व-निरसन के पक्ष मे विनोबाजी ने समय-समय पर बहुत स्पष्ट शब्दो में अपने विचार प्रकट किये है। एक जगह वे कहते है

"मेरे सामने जमीन एक से मॉगकर दूसरे को देने का सवाल ही नही है। सब मिलकर सारी जमीन जोतें, यही हमें करना है। यही प्रयोग हमें सिद्ध करना है। सारा गोपाल-कलेवा हमें करना है।"

ग्राम-दान के जरिये इस गोपाल-कलेवे का मेवा ही विनोबा आज हमे चखा रहे है। यह पुस्तक किसी साहित्यिक की कलाकृति नही है। शाति-सेना के सेनानी के एक चाकर द्वारा ऑखो देखी घटनाओं का उल्लेख मात्र है। लेखा उस इलाके का है, जहॉ विनोबाजी के जाने से पहले

समता और सेवा के नाम पर हजारों हत्याएँ हो चुकी थी, जीवन खतरे से खाली नहीं था, लोग भयभीत थे। जख्मे हरी थी, कोई पोछनेवाला नही था। मिलिटरी और पुलिस से भी लोग तग आ चुके थे। खुद मिलिटरी भी घुटने टेक चुकी थी। यह लेखा उस समय का है, जब कोई भूदान-समितियाँ नहीं थी, न कार्यकर्ताओं का ठीक साथ था, न कार्य की कोई व्यूह-रचना थी, न ठहरने का ठिकाना होता था और न कार्यक्रम ही पहले से ठीक तय हो पाता था। घर-घर जाकर मजलूमों से मिलना पडता था, दिलो के घावो पर सहानुभूति और सात्वना का मरहम लगाना पडता था, ढाढस बँधाना पडता था और कभी-कभी प्रेमभरी डॉट भी सुनानी पडती थी। एक-एक डिसमल जमीन के लिए भी व्यक्ति व्यक्ति से मिलकर भूदान का विचार समझाना पडता था। यह सब विनोबा ने किया—भाषा की सुविधा न रहते हुए किया, अपनी सारी बुद्धि-शक्ति, योजना-शक्ति, चिन्तन-शक्ति तथा प्रतिभा और साधना की बाजी लगाकर किया। अहिसक हल की खोज मे जब वे जीवन की ही बाजी लगा चुके थे, तो फिर सकोच क्या और कैसे रह सकता था? किसी व्यास की निगाहो से यह सब गुजरता, तो निश्चय ही पुनः एक और महाभारत की देन ससार को प्राप्त होती! सभव है, यह विनम्र लेखक ही भविष्य मे किसी दिव्य चक्षुष्मान् की प्रतिभा को जाग्रत कर दे! अगर ऐसा हुआ, तो यह लेखक तो धन्य होगा ही, लेखपाल भी धन्य होगा। परतु लेखपाल ने स्वयं एक छोटे सेवक की तरह बिलकुल अपरिचित गाँवो मे एक ही भूदान का विचार समझाने से लेकर भूमि की प्राप्ति और वितरण तक की सभी प्रक्रियाओं मे आनेवाली इन कठिनाइयो का अनुभव किया है। उन सब अवसरों पर गगोत्री की इस कहानी ने सदा बडी प्रेरणा प्रदान की है। आज भी सैकडों कार्यकर्ता अनेकविध असुविधाओं को सहकर भू-क्राति का सदेश गाँव-गाँव और डगर-डगर पहुँचा रहे हैं। यदि गगोत्री का यह लेखा चद साथियों को भी प्रेरणा प्रदान कर सका, यदि कुछ लोगों के भी दिलों

मे शाति-सेना के सेनानी की तरह 'करेंगे या मरेंगे' की भावना पैदा कर सका, तब भी लेखा और लेखपाल, दोनो अपने को धन्य मानेंगे।

मेरे लिए इस करुणा की प्रसादी प्राप्त करा देने का बहुत सारा श्रेय बहन विमला को है। अगर उनका सतत तकाजा मेरे पीछे न लगा रहा होता, तो शायद आज भी मुझ कम्बख्त से यह काम पूरा न हो पाता। बिना निराश हुए वे मुझे बराबर याद दिलाती रहीं, टोकती रहीं और डॉट भी सुनाती रहीं। उनकी यह गुप्त देन ही मिली है, भूदान की इस कहानी को।

मेरी पुत्री चि० मृदुला की डायरी से मुझे इस पुस्तक को तैयार करने मे महत्त्वपूर्ण सहायता मिली है।

इसमे जो चित्र दिये गये है, वे हैदराबाद सूचना-विभाग के श्री विनोदरावजी से तथा हैदराबाद भूदान-समिति के श्री केशवरावजी से प्राप्त हुए है।

ब्लॉक बना देने मे मद्रास के साप्ताहिक 'कल्कि' परिवार ने अत्यन्त आत्मीयतापूर्वक निरपेक्ष सहायता की है।

कमवम् (मदुरा)

हरिभाऊ उपाध्याय

अनुक्रम

भूदान-गंगोत्री

रामनवमी का प्रसाद : १ :

"आज रामनवमी का यह मगल-दिन आप लोगो के साथ बिताने का अवसर मिला है। मुझे इस बात का बहुत आनन्द है कि ऐसे मगल अवसर पर हैदराबादवासियो के हृदय के साथ मेरा सपर्क हो रहा है। आप और हम यहाँ बैठे है। हमारे बीच मे भगवान् साक्षी है। मै तो आप सब लोगो को भगवान् की मूर्तियाँ ही देख रहा हूँ। आपके हृदय से मेरे हृदय का आज अनुबध हो रहा है, इसकी अनुभूति मै अपने मे पा रहा हूँ।"

नीचे सुरम्य हरित भूमि, ऊपर नीलगगन, पश्चिम मे क्षितिज पर लालिमा की अद्भुत रेखाएँ थी और था दाहिनी ओर मूसा के प्रवाह मे उसका सुन्दर प्रतिबिम्ब, चारो ओर सुन्दर उपवन। ऐसे उस अत्यन्त प्रसन्न वातावरण मे विनोबाजी रामनवमी की महिमा का वर्णन कर रहे थे।

विनोबाजी के यह राम कैसे है ? कौन है ? कहाँ रहते है ?

खालिक-खलक

"रामचन्द्र भगवान् अतर्यामी है, सबके हृदय मे मौजूद हैं, सदा सर्वदा हाजिर और नाजिर है। उनका न जन्म है, न मृत्यु। उन्हें कोई विकार लागू नही है, बल्कि वे सब विचार-विकार से परे है। यह सारी कुदरत उनकी है। जिसे सीतादेवी कहते है, वह उनकी कुदरती शक्ति है। उस आत्मीय कुदरती शक्ति के साथ वे हमेशा रहते है। भगवान् को उनकी शक्ति से हम अलग नही कर सकते। सूर्यनारायण को रोशनी से अलग नही कर सकते। नदी को पानी से अलग नही कर सकते। नमक को उसके स्वाद से अलग नही कर सकते। किसी भी चीज को उसकी शकल से

अलग नहीं कर सकते। किसी भी पदार्थ को जैसे उसके गुणों से अलग नहीं कर सकते, वैसे भगवान् को भी उसकी शक्ति से अलग नहीं कर सकते। इस वास्ते हम 'सीताराम' नाम लेते हैं। राम के साथ सीता आती है। प्रभु के साथ माया आती है। खालिक के साथ यह सारी सृष्टि, जो उसकी पैदाइश है, आ ही जाती है।

परमेश्वर की रंगभूमि

"जैसा मैंने कहा, उसका कोई जन्म तो नहीं है। फिर भी हमने आज उसके जन्म का एक नाटक किया। सारे हिन्दुस्तान के लोग यह समझते हैं कि भगवान् रामचन्द्र का कोई जन्म नहीं है, बल्कि वह हमारे हृदय में जनमता रहा है। अगर यह अनुभव हमको आ जाय, तो जिस क्षण यह अनुभव आयेगा, उसी क्षण भगवान् का जन्म हुआ होगा। हमारे जीवन में जो-जो काम हम करते हैं, वे सारे काम अपने अहंकार से करते हैं। लेकिन अगर ऐसा कोई काम हमसे बना हो कि जिसमें हमारा अभिमान नहीं था, हमारा अहंकार नहीं था, हमारी कोई कामना नहीं थी और जिसमें हम खुद नहीं थे, तो उस काम में और उस क्षण में भगवान् का जन्म हुआ, यह समझो। तो, आज हम एक नाटक करते हैं भगवान् के जन्म का। हर रोज यह नाटक हमको करना चाहिए—हरएक क्षण करना चाहिए। हमारे हृदय में भगवान् नित्य-निरंतर जनमा करें, नित्य-निरंतर वही पैदा हुआ करें, उन्हींका खेल हमारे हृदय में चलता रहे, हमारे सारे विकार मिट जायँ और हमारा हृदय खास परमेश्वर के नाटक के लिए ही एक रंगभूमि बन जाय, ऐसी कोशिश हमें हर रोज करनी चाहिए। लेकिन सारे समाज के लिए ऐसी कोशिश करने का एक खास अवसर, एक दिन बनाया गया। कोई उसको रामनवमी कहते हैं, कोई कृष्णाष्टमी कहते हैं। कोई-न-कोई दिन हम ढूँढ लेते हैं और उस दिन हम अपने को भूल जाने की कोशिश करते हैं।"

इसके बाद ससार मे और खासकर हिंदुस्तान मे दिखाई देनेवाले अनेकविध दु'खो का दर्दभरा जिक्र किया। बेकारी, गरीबी, भुखमरी, जातिभेद, वर्ग-द्वेष, शस्त्र-सम्भार, खूनखराबियाँ और इन सबकी पार्श्व-भूमि मे पिछले दिनो तेलगाना मे हुआ हत्याकांड, इन सबका विवरण स्वय विनोबाजी के मुख से सुनते समय शरीर रोमाञ्चित हो उठा।

किन्तु विनोबा ऐसे चित्रकार नही, जो केवल अन्धेरे को तो उपस्थित कर दे और उसके बाद के अरुणोदय की झाँकी न कराये। परिस्थिति-चित्रण और पथ-प्रदर्शन की दोहरी भूमिका के कारण वे निराशा मे आशा की किरण दिखाकर माता की तरह हमारी प्यारभरी रहनुमाई भी करते है। फिर आज तो भगवान् राम के पावन स्मरण मे उनकी स्फूर्ति-गङ्गा लहरा उठी थी। जीवन की मूलभूत दृष्टि समझाते हुए उन्होने कहा : "मैने कुरान मे एक जगह पढ़ा कि जिसके बारे मे तुम्हारे दिल मे अदावत है, उसको प्रेम की निगाह से देखो, तो फौरन अनुभव आयेगा कि जो अदावत थी, वह मिट गयी और जो दुश्मन थे, वे मित्र मे परिवर्तित हो गये, दोस्त बन गये। यह जो कुरान मे लिखा है, वही बुद्ध भगवान् ने कई वचनो मे कहा है। उन्होने कहा है कि वैर से वैर शात नही होता। अगर बैर छोडोगे, जरा हिम्मत करोगे—बैरियो पर भी प्रेम करने के लिए हिम्मत चाहिए, वह हिम्मत अगर करोगे—तो अनुभव आयेगा कि जिसको आप बैरी समझते थे, वह फौरन मित्र बनता है। यही बात हमको उपनिषदो ने समझायी। यही बात शकराचार्य ने समझायी। यही बात कृष्ण भगवान् ने समझायी। अब और किनके नाम लूँ? क्योकि सारी दुनिया पर परमेश्वर ने असख्य सत्पुरुषो की वर्षा की और जब-जब कही जरूरत महसूस हुई, तब-तब उसने हमको हिदायत देनेवाले निरन्तर भेज ही दिये। किसी भी देश के इतिहास मे ऐसा कोई समय नही दीख पडता कि जब लोगो को हिदायत देनेवाले भगवान् की तरफ से नही आये। उन्होने यही बात हमको समझायी कि जरा अन्दर देखने की कोशिश करो, आत्मा को पह-

चानो। हम जो भी कोशिश करते है, सारी बाहर-बाहर की विद्या सपादन करने मे करते हैं। वह भी ठीक है। बाहर भी परमेश्वर का रूप है। इसलिए वह विद्या हम हासिल करते है, तो कोई गलती नही करते। लेकिन भगवान् जैसे बाहर विद्यमान है, वैसे उसका मूलरूप अन्दर भी विद्यमान है। अन्दर भगवान् है, उसकी छबि बाहर होती है। तो जरा अन्दर देखने की कोशिश कीजिये और इस तरह अन्दर देखने की कोशिश करने के लिए जो रामनवमी-जैसे दिन आते है, उन दिनो मे यह प्रयत्न खास तौर से कीजिये।"

सारे भगवान् के ही रूप है

दाशरथी राम को ही लोग विनोबा का राम न समझ ले, इसलिए पुन. दोहराया : "मै राम की महिमा क्या वर्णन करूँ? राम कोई मनुष्य नही था। एक मनुष्य राम नाम का हो गया। उसकी कीर्ति भी हिन्दुस्तान मे फैली है। लेकिन वह तो परमेश्वर का एक अशमात्र था और जो परमेश्वर सबके हृदय मे है, वह उसके हृदय मे भी था। और हम जो रामनाम लेते है, वह उस परमेश्वर का नाम लेते है, जिसकी एक विभूति, जिसका एक आविर्भाव, जिसका एक रूप वह दाशरथी राम भी था, जिसका एक रूप मै खुद हूँ और जिसका एक रूप आप सब है। अगर आप यह समझते हों कि भगवान् का एक रूप हो गया—दाशरथी राम और वही एक रूप हुआ, और अन्य कोई रूप नही हुए, और आज कोई और रूप है—तो भगवान् के लिए आपका बिलकुल गलत खयाल है। हमको यह समझना चाहिए कि हम सारे भगवान् के ही रूप है और उसका अनुभव प्राप्त करने के लिए, वह तजुर्बा लेने के लिए ही हमे यह मानव-देह मिली है।"

रामनवमी का प्रसाद

गगा बहती ही जा रही थी और उस प्रवाह मे वक्ता और श्रोता, दोनों ही अपने को मानो भूल गये थे। मूर्तिमन्त शांति के रूप मे दिखाई

देनेवाले सहस्रों श्रोताओं का वह दर्शन स्वय परम पावन था। ऐसा प्रतीत होता था कि हरएक के हृदय पर आज के इस पुण्य-दिवस की स्मृति अटल रहनेवाली है। स्वय विनोबाजी को भी ऐसी ही प्रतीति हो रही थी।

"मुझे तो आज के इस परम पवित्र दिवस की याद बहुत दिन रहनेवाली है।" और उन्होंने कारण भी बताया :

"क्योंकि हमारे कुछ भाई, जो कि देश की सेवा करना चाहते है, लेकिन जिन्होंने एक दूसरा ढग अख्तियार किया है, और जो कम्युनिस्टो के नाम से दुनिया मे पुकारे जाते है, तथा आज जेलो मे है—उनसे आज मुझे मुलाकात करने का मौका मिला और मुझे इस बात की खुशी हुई है कि उन लोगो के साथ दो घटे दिल खोलकर बात हुई। मै मानता हूँ कि यह रामनवमी का प्रसाद मुझे सेवन करने को मिला है।"

सच्ची दृष्टि

जिनको दुनिया दुश्मन समझती है, जो वास्तव मे कितने ही खून और हत्याओं के लिए जिम्मेवार माने जाते है, उनके लिए भी सर्वोदय-समाज के इस सेवक के हृदय मे कितना प्यार भरा है! उनके उस भाषण मे ही उसकी कारण-मीमासा भी हम पाते है :

"सर्वोदय मे सबकी चिता आती है, तो कम्युनिस्ट भाई भी मेरी चिता के विषय है और मै जरूर चाहूँगा कि उनको समझा सकूँ, उनको जीत सकूँ। और अगर भगवान् ने चाहा, तो वे भी सर्वोदय-विचार के प्रेमी हो सकते है। जो उसकी इच्छा होगी, वही होगा। इस सबध मे हम अपने पास कोई अहकार नही रख सकते। लेकिन हमारा कोई फर्ज है। मै तो अपना फर्ज समझता हूँ कि हरएक के साथ दिली परिचय कर लूँ। हरएक के साथ एकरूप होने की कोशिश करूँ। हरएक की तरफ उस निगाह से देखूँ, जिस निगाह से वह खुद अपनी तरफ देखता है। अपनी निगाह से दूसरों को देखना, न देखने के समान है। उन-उन मनुष्यो

की अपने लिए जो दृष्टि है, उस दृष्टि को पहचानकर, उसके साथ एकरूप बनकर उन मनुष्यो के बारे मे सोचना ही सच्ची दृष्टि है। और उससे, किसी भी सवाल के जो अनेक पहलू होते है, उन सबका पता चलता है और पूरी रोशनी मिलती है। नही तो मनुष्य का दर्शन आधा, एकागी हो जाता है।"

वेद-माता की गोद मे जिसका लालन-पालन हुआ, उपनिषदो के दूध से जिसके मन और बुद्धि को पोषण मिला है, 'अद्वैत' के तत्त्वज्ञान ने जिसका हृदय केवल विशुद्ध सहानुभूति से ओतप्रोत कर दिया है, परिणाम-स्वरूप सबके हृदय की आर्तता का और दुःख का प्रतिबिंब जिसके हृदय मे प्रतिबिंबित हो उठता है, सारा विश्व जिसका शरीर बन जाता है, और फिर जिसके लिए दुनिया मे क्षुद्र या कुटिल कुछ रहता ही नही—जो कुछ होता है, जो कुछ है ऋजु ही ऋजु है—जहाँ ऐसी ब्रह्ममयता है, वहाँ यदि कम्युनिस्टो के प्रति ऐसे सहानुभूति-भरे भावो का दर्शन होता हो, तो क्या आश्चर्य ?

आइये, रामनवमी का जो प्रसाद विनोबाजी ने उस जेल की चहार-दीवारी मे पाया, उसका कुछ अश हम भी पाने की कोशिश करे। उसके लिए अपने दिलों को भी सहानुभूति के भावो से भरने की कोशिश करे।

प्रातःकाल दस बजे का समय होगा। मालमत्री श्री बी० रामकृष्ण-रावजी के साथ विनोबाजी कारागार पहुँचे। सलामी आदि की रस्म-अदाई हुई। और विनोबाजी ने बिना किसी सरकारी अधिकारी को साथ लिये जेल के आँगन मे प्रवेश किया। जेल के आँगन मे ही नही—उन कम्यु-निस्ट भाइयो के हृदयरूपी गर्भागार में ही।

पहले से खबर करा दी गयी थी, इसलिए कम्युनिस्ट नेता विनोबाजी का इन्तजार ही कर रहे थे। यहाँ कुल डेढ सौ से ऊपर ये लोग थे, लेकिन विनोबाजी से मिलने के लिए करीब २५ लोग ही जमा हुए थे। उनमे से बहुत-से तो उसी रोज पहली बार एक-दूसरे से मिल रहे

थे। कुछ को पहले रोज ही मिलाया गया था। विनोबाजी को अपने बीच पाकर वे निःसदेह प्रसन्न दिखाई दिये। उन्होंने बताया कि उनसे किस तरह कोई पहले मिला भी नहीं था, किसीने मिलने की ख्वाहिश भी नही की थी।

करीब दो घटे विनोबाजी वहाँ रुके। शुरू मे जेल-व्यवस्था-सबधी उनकी शिकायते सुनी और उनको यथासभव दूर करने की कोशिश करने का आश्वासन भी दिया। एक बात अपनी ओर से भी सुझायी कि काम माँग लो, क्योंकि बिना काम के सपूर्ण मनःस्वास्थ्य सभव नही होता। धूलिया जेल का अपना अनुभव भी बताया।

अहिसा की नीति

अध्ययन तथा चिंतन-मनन की अनुकूलता के कारण जेल-जीवन आत्मविकास का साधन कैसे बन सकता है, इस सबध मे अपनी अनुभवपूर्ण सूचनाएँ भी दी। अब मुद्दे की बात आयी। विनोबाजी ने सीधे पूछा . "क्या आज की बदली हुई परिस्थिति मे भी आप लोग अपने हिंसक कार्यक्रम को ठीक समझते है या उसमे परिवर्तन करना उचित समझते है? पहले निजाम की हुकूमत थी, रजाकारों का जमाना था। सभव है, हिंसक मार्ग के अतिरिक्त कोई रास्ता न सूझा हो। परन्तु अब बदले हुए जमाने मे, जब कि हरएक को मताधिकार मिल चुका है और अपनी इच्छा की सरकार बनाने की सुविधा प्राप्त हो चुकी है, लोकमत तैयार करके अपना बहुमत बनाने के बजाय हिंसक तरीको का सहारा लेने की क्या आवश्यकता रह जाती है? हिसा-अहिसा के बारे मे नैतिक श्रद्धा की बात थोडी देर के लिए छोड दी जाय, तो भी नीति माने पॉलिसी के तौर पर आज अहिंसा के सिवा और कौन-सा तरीका कारगर हो सकता है?"

जिनसे बाते हो रही थी, वे सब जिम्मेदार कार्यकर्ता थे। एकाध को छोडकर, केवल दुराग्रहवश बात करनेवाला कोई दिखाई नही दिया।

लेकिन हिंसा की विफलता के कायल होते हुए भी पार्टी और पार्टी का अनुशासन उन्हें अपनी सही राय जाहिर करने से रोक रहा था।

सोच रहे हैं

बातचीत लम्बी हुई। कम्युनिस्टों के बारे में यह कहा जाता है कि उनके दिलो-दिमाग के दरवाजे दूसरी विचारधारा के लिए बंद-से रहते हैं। परन्तु यहाँ दूसरी विचारधारा स्वीकार करने का सवाल नहीं था। अपनी विचारधारा लोगों को समझाने का जो मौका मिला है, उससे लाभ उठाने की समय-सूचकता का सवाल था। अगर वे लोग कहते हैं कि आज बदली हुई परिस्थिति में हिंसक तरीकों की हम आवश्यकता नहीं समझते, लिहाजा हमने हिंसक-मार्ग छोड़ना तय किया है, तो विनोबाजी भी उनकी भूमिका सरकार को समझा सकते थे। उनकी रिहाई की कोशिश कर सकते थे। लेकिन जेल में बंद वे कम्युनिस्ट नेता इस प्रकार कुछ भी कह सकने की परिस्थिति में अपने को नहीं पा रहे थे। तब विनोबा ने पूछा : "क्या मैं यह असर लेकर जाऊँ कि आप लोग अपनी हिंसक नीति, जो पिछले दिनों आप बरतते रहे हैं, छोड़ना नहीं चाहते?" विनोबाजी इस तरह का असर लेकर जायँ, यह भी वे भाई नहीं चाहते थे। आखिर उन्होंने कहा कि "हम लोग अभी विचार कर रहे हैं। हमने न तो पुरानी नीति को छोड़ना तय किया है, न उसको जारी रखना ही। सोच रहे हैं, इतना ही कह सकते हैं।"

उनकी असमर्थता

बातें और भी हुईं। यह सही है कि पार्टी के सब लोग नहीं मिल सकते थे। यह संभव भी नहीं था और उसकी जिम्मेवारी इन्हीं लोगों पर थी। और जगहों पर कम्युनिस्ट पार्टी कानूनी रहते हुए भी यहाँ वह गैर-कानूनी करार दी गयी थी, इसलिए यदि ये लोग व्यक्तिगत रूप से हिंसा

के परित्याग की वात विनोबाजी से कहते, तो भी विनोबाजी के हाथ कम्युनिस्ट भाइयो के हक मे मजबूत हो सकते थे। बङ्गाल के टेररिस्ट भाइयों ने टेररिस्ट पार्टी के सदस्य होते हुए भी व्यक्तिगत रूप से हिंसा-त्याग का निर्णय किया था और बापू की मध्यस्थता से लाभ उठाकर जेल से मुक्त हुए थे और देश के वातावरण को सुधारने मे योग दिया था। लेकिन इन भाइयो पर पार्टी के अनुशासन की ऐसी तलवार लटक रही थी कि वे किसी निर्णय पर पहुँचने मे अपने को असमर्थ पा रहे थे। उनकी वातचीत से जाहिर था कि उनमे दो विचारधाराएँ काम कर रही है। एक दल हिंसक कार्यक्रम छोडने के पक्ष मे है, दूसरा नहीं है। उन्हे सोचने के लिए अधिक अवकाश की जरूरत हो, तो यद्यपि विनोबाजी का आगे का सारा कार्यक्रम तय हो चुका था, उसे स्थगित करके भी विनोबाजी को एक-दो रोज के लिए रोका जा सकता था। परन्तु उन्होने ऐसा करना उचित नही समझा। हॉ, आवश्यकता पडने पर विनोबाजी के पास सदेश भिजवा सकने की सुविधा उन्हें अधिकारी दे, यह बात तय हुई। सम्भव हुआ तो उनके नेता श्री रावी नारायण रेड्डी से उनकी मुलाकात का प्रबन्ध हो, ऐसी भी उन लोगो ने ख्वाहिश जाहिर की। सबने अत्यन्त आदर और प्रेम से विनोबाजी को विदा किया।

ठीक बारह बजे थे। बाहर सर्वत्र राम का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। जेल मे भी एक मदिर था और वहॉ भी घण्टानाद और आरती सुनाई दे रही थी। लेकिन विनोबाजी तो मानव-मन्दिर मे विराजनेवाले राम को ही जगाने आये थे और शायद जगाकर ही जा रहे थे। उनके लिए यही सच्चा राम-जन्मोत्सव था।

विनोबाजी जब जेल के लिए रवाना हुए, तो किसीने कहा: "कौरवो को समझाने के लिए पाडवों का प्रतिनिधि जा रहा है", दूसरे किसीने कहा: "राम की पराक्रमशीलता का चमत्कार दिखानेवाला उनका एक सेवक रावण से मिलने जा रहा हे।" क्या हो रहा था, क्या नहीं हो रहा

था या क्या होने जा रहा था, यह तो भविष्य की कोख मे छिपा था, परन्तु इतना तो स्पष्ट था कि विनोबा मे मुद्दालय, मुद्दई और मध्यस्थ, तीनो भूमिकाएँ एकत्र साकार हुई थी। 'अग्ने नय सुपथा राये' की भावना से वे अपने ही भाइयो से मिलने गये थे कि सभव हुआ तो उन्हे समझाया जाय, जिससे गल्त मार्ग से हटकर परमानन्द की ओर ले जानेवाले सरल मार्ग पर व आ सके।

हृदय-प्रवेश

परन्तु यह नही हो सका। कितना अच्छा होता कि विनोबाजी के रूप में अपने एक सच्चे मित्र को पाकर हैदराबाद के कम्युनिस्ट भाई व्यक्तिगत रूप से ही क्यो न हो, जैसा कि विनोबाजी ने सुझाया था, बदली हुई परिस्थिति मे हिसा की आवश्यकता और निरर्थकता के बारे मे अपनी राय जाहिर करते और हैदराबाद के लोक-जीवन मे एक नया अध्याय प्रारम्भ करने के यश के भागी बनते। यद्यपि जाहिरा तौर से ऐसा कुछ होता दिखाई नही दिया, फिर भी विनोबा उनके हृदयो मे सर्वोदय का विचार-बीज बो आये थे। इस आशा से कि कभी न-कभी तो वह अकुरायेगा ही।

जेल से बाहर आकर देखते है, तो सैकडों लोगो की भीड लगी हुई थी। निवास पर लौटते-लौटते एक बडा जुलूस ही बन गया। स्नान आदि से निवृत्त होकर थोडा विश्राम भी नही कर पाये कि कताई का समय हो गया। २ से २-३० कताई और फिर मिलनेवालो की भीड। कार्यकर्ता आये, अधिकारी आये और कुछ कम्युनिस्ट मित्र भी आये, जिनसे आज जेल मे मुलाकात हुई थी और जो अभी अभी रिहा किये गये थे। उन्होने विनोबाजी से ओर भी बहुत सी बातो का जिक्र किया, जिसका सार यही था कि सरकार की ओर से बहुत जुल्म हो रहा है। उतने मे मुख्य मत्री श्री वेलोदी और उनके साथ शिक्षामत्री श्री बी० रामकिशनरावजी भी आये। उनको विनोबाजी ने कम्युनिस्ट मित्रो के साथ की बातचीत से वाकिफ किया। जेल मे कम्युनिस्ट भाइयो को जो सुविधाएँ चाहिए थी,

उनका यथासभव प्रबन्ध करने की बात भी इन लोगो से विनोबा ने की, जो उन्होंने स्वीकार कर ली, किन्तु जो आक्षेप इन रिहाशुदा मित्रो ने लगाये थे, उनके बारे मे बताया गया कि "वे निराधार है तथा जिन्होंने आक्षेप किये थे, उनके ही हाथ खून से रँगे हुए है।" इससे सहज ही अदाज हो सकता था कि आगे का काम कितना कठिन है।

दोपहर मे सबसे अधिक हृदयस्पर्शी कार्यक्रम रहा आन्ध्र-युवती-सघ का। रामनवमी के निमित्त आन्ध्र-बहनो ने पोतना महाकवि के काव्य मे से कुछ प्रसग गाकर सुनाये। इस कार्यक्रम मे श्री रामकृष्णराव की पुत्री ने महत्त्व-पूर्ण भाग लिया। अपनी कठ-माधुरी और भक्ति-भावना के कारण उन्होंने प्रह्लाद-चरित्र का प्रसग अत्यन्त भावमयता से गाया। वातावरण मे सर्वत्र शाति छा गयी। विनोबाजी की ऑखों से भक्ति-गङ्गा बह निकली। सत्याग्रही प्रह्लाद के जीवन से किसको स्फूर्ति नही मिलनेवाली थी? फिर अब जिस नये आवाहन पर विनोबाजी निकल पडे थे, उसमे तो प्रह्लाद की-सी ही कसौटी होनेवाली थी। यह भक्तगाथा उस पथ के लिए एक प्रेरक पाथेय ही था।

● ● ●

रात के राजाओं की पहली झाँकी : २ :

हयातनगर

१६-४'-५१

दडकारण्य-प्रवेश

रामनवमी के निमित्त भगवान् रामचन्द्र के जन्म का अर्थात् आत्म-ज्ञान के उदय का अपने-अपने हृदय मे अनुभव करने की प्रेरणा देकर तथा अतर को केवल राममय रखने का सदेश सुनाकर विनोबाजी ने अब तेलगाना के गाँवो मे प्रवेश किया। तेलगाना को दडकारण्य भी कहते है। हजारो बरस पहले इसी भूमि ने भगवान् रामचन्द्र के चरणो का परस पाया था, जिनके पुण्य-प्रताप से वह असुरो की पीडा से मुक्त हो सकी थी। अनेक सतो ने भी, यहाँ की भूमि को हरी-भरी करनेवाली गोदा और कृष्णा के किनारो पर, तपस्या करके इस भूमि को पावन किया था तथा एकाग्र साधना, उत्कट चिन्तन और अखड मनन द्वारा लोक-जीवन को आत्मनिष्ठ और श्रेयार्थी बनने की प्रेरणा दी थी। पर आज उसी भूमि पर दु.ख और क्लेश सर्वत्र छाया सा दिखाई दे रहा था। इसलिए उस प्रदेश मे, उन सब सतो की विरासत साथ लिये, राम का एक अत्यन्त प्यारा भक्त पदार्पण कर रहा था। मूसा के किनारे आज सवेरे उस ऋषि को सैकडों भाई-बहनो ने आदर और श्रद्धा-सहित बिदा किया। कितने ही सीमा तक पहुँचाने आये। इस पर भी जी नहीं माना, तो अगले मुकाम तक साथ हो लिये।

एक सामाजिक समस्या

रास्ते मे जगह-जगह स्वागत-समारोह हुए। बीच मे एक अनाथालय भी पडता था, पर वहाँ विनोबाजी नही जा सके। एक मील तक अपने बेंड और पताकाओं सहित अनाथालयवाले हमारे साथ-साथ चले। इधर

हयातनगरवालो ने विविध सुदर द्वारो, तोरणो और पताकाओ से अपने गॉव को सजा रखा था। ग्रामवासियो ने उत्साह के साथ स्वागत किया। दोपहर को अनाथालय के लोग पुनः आये। लडकियॉ, लडके, सचालक आदि। अनेक बालको को छुटपन से, आठ-आठ, चार-चार रोज तक के शिशुओ को सचालको ने पाला-पोसा था। उन सबके माता-पिता कहलाने का सुख सचालको की मुद्रा पर सहज प्रकट हो रहा था। अभी-अभी उनके यहॉ दाखिल किया हुआ एक सुदर बालक वे अपने साथ ले आये थे। विनोबाजी की गोद मे वह चॉद का टुकडा और भी प्यारा दिखाई दे रहा था। इसमे शक नही कि सचालक लोग अच्छी सेवा कर रहे थे। पर समाज मे ऐसी सेवाओ के क्षेत्र की गुजाइश ही क्यो होनी चाहिए? विनोबाजी का यह बुनियादी सवाल था।

दोपहर को गॉव के सम्बन्ध मे चर्चा हुई। चार हजार की बस्ती, पॉच हजार एकड जमीन, जिसमे से एक हजार शिकार के लिए सुरक्षित। खेती का ही एकमात्र धन्धा। करीब दो सौ बडी जोडी है, जो हैदराबाद जाने-आने का किराया करती है—पॉच रुपया पाती है। दस चूने की भट्टियॉ है। बडियॉ चूना ढोने का काम करती है। चार घर बुनकरो के है। फी घर हर माह आधी पेटी सूत का कोटा मिलता है। दो धोतियॉ बनती है। केवल एक हफ्तेभर का काम रहता है, तीन हफ्ते की बेकारी। पर अपना सूत कातेगे नही, हाथ-सूत का कपडा बुनेगे नही!

सेंदी की ज्वालाएँ

बढई, लुहार, कुमार, दरजी, चमार के भी दो-दो चार-चार घर है, जो गॉव के लिए पर्याप्त समझे जाते है। कपडा, शक्कर, गुड, मिट्टी का तेल—सभी चीजे बाहर से आती है। इनके लिए जो पैसा बाहर जाता है, वह तो जाता ही है, पर सेंदी के कारण भी अत्यधिक पैसा बरबाद हो रहा है, और वह भी अनेक बरसो से।

सेंदी, शराब आदि द्वारा गाँव की हर साल कितनी संपत्ति बाहर चली जाती है, इसका मोटा हिसाब इस प्रकार है .

	प्रतिदिन		मासिक		सालाना
	रु०		रु०		रु०
सेंदी बिक्री	३५०	× ३०	१०,५००	× १२	१,२६,०००
शराब	१६		४८०		५,७६०
(१ गैलन रोज)					
टैक्स					३,६००
कुल					१,३५,३६०
बस्ती—४०००			फी आदमी करीब		३४
			कम से कम		३०
उपरान्त कपडा			"		२०
			कुल		५०

यानी सेंदी, शराब और कपडे के रूप मे फी आदमी सालाना कम-से-कम ५० रुपये गाँव से बाहर जाते है। सालभर का दो लाख रुपया हो जाता है। ६८ फी सदी से ज्यादा लोग सेंदी-शराब पीते है। हरिजनो के तो बच्चे भी पीते है। अनाज पर्याप्त नही मिलता, अतः सवेरे खाना और शाम को सेंदी चलती है। इस सेंदी मे कलाल को कितना और सरकार को कितना मिलता है, यह जानने लायक है :

सेंदी की कुल कीमत	रु० १,२६,०००
इसमे एक्साइज	३६,०००
दरख्तो पर टैक्स	४४,०००
सरकार की आमदनी	८०,०००

कलाल के लिए शेष	४६,०००
इसमे कलाल का खर्च	२३,०००
,, मुनाफा	२३,०००

सरकार को जमीन से जहाँ सिर्फ पाँच हजार का लगान मिलता है, वहाँ सेंदी से सोलह गुना ज्यादा मिलता है। ऐसी सोने की चिड़िया सरकार कैसे छोड सकती है ? तीस मे से तेरह करोड की इस आमदनी को कब पूरी तरह बद किया जा सकेगा ? लोगों मे जो सज्जन है, वे अपने-अपने गाँवो मे शराब बद क्यों नहीं करते ? 'सरकार गिरफ्तार कर लेगी, हमे कम्युनिस्ट कहकर पकड लेगी', ऐसी दलील लोग करते है।

'रात के राजाओं' ने भी साथ छोड़ा

लोगो ने बताया कि पहले एक बार रात के राजाओं ने लोगो को शराब पीने से रोका था। यहाँ हमे मालूम हुआ कि कम्युनिस्टो को रात के राजा कहते है। उस समय गाँववाले सभी बडे सुखी थे। पर कहते है कि यह कार्यक्रम शराब से मुक्ति दिलाने के इरादे से नही, बल्कि सरकार के खिलाफ एक कार्यक्रम के रूप मे स्वीकार किया गया था। जब तक सेंदी से लोग मुक्त रहे, तब तक वे सुखी रहे। परतु कांट्रैक्टर के दबाव से इन रात के राजाओं ने भी अपना वह कार्यक्रम छोड दिया, ऐसा गाँववालो का कहना है।

राक्षस भी तो जीते थे

विनोबा के मुँह से सहसा निकला : "यह सब बडा भयकर मालूम होता है। फिर भी ये सब लोग जी तो रहे है।" गाँववालो मे से एक भाई ने कहा : "महाराज ! राम के जमाने मे राक्षस भी तो जीते थे ! सेंदी बद नहीं होगी, तो हालत खराब होगी।"

उसने यह भी कहा : "सेंदी फौरन बद होनी चाहिए, टेनन्सी एक्ट पर अमल होना चाहिए, लेवी-वसूली के तरीके मे सुधार होना चाहिए।"

इस व्यसनाधीनता मे ऐसी जाग्रति का क्वचित् दर्शन भी बडा आशाप्रद था ।

पहला आघात

दडकारण्य की यात्रा का यह पहला गॉव, और उसकी यह हालत ! कम्युनिस्ट भाइयो के तरीको की कुछ झॉकी यहॉ मिली । यद्यपि उनके बारे मे बहुत-कुछ सुन रखा था। विनोबा के मन मे उनके लिए अब तक कोई पूर्वग्रह नही था—कल जेल के मित्रों को इसकी प्रतीति भी हो गयी थी ! परतु अब गॉववालो से उनकी नीति और हरकतों का पता चलने लगा । वे पैसे के दबाव मे आते है, यह सुनकर विनोबा को एक बार तो धक्का ही लगा।

गॉव की दशा दयनीय थी । आमदनी कुछ नही । फी आदमी एक एकड जमीन भी नही । उद्योग-धधे कुछ नही । रोटी के बदले सेदी की ही खूराक ! पिछले सौ साल से ऐसा ही चल रहा है, ऐसा कहनेवाले लोग गॉव मे मौजूद है। फिर भी लोगो को लगता है कि देश के सामने कोई कार्यक्रम नही !

सेवा या सत्ता ?

इस सबध मे विनोबाजी एक कार्यकर्ता से बात कर रहे थे । "समाज-सुधार के काम मे काग्रेसवालो को रुचि नही । उन्हें राजकारण चाहिए । उसके बिना सत्ता नही मिल सकती । वे कहते है : 'अगर सत्ता हम लोग नही लेगे, तो दूसरे जो गुडे है, उनके हाथ में वह चली जायगी ।' परतु उन गुडो के हाथ मे सत्ता न जाय, इसलिए इन भले मानुसो को उन्हींके तरीको का प्रयोग करना पडता है। और उन तरीको का प्रयोग गुडो की अपेक्षा भी अधिक सफलतापूर्वक किये बिना कामयाबी कैसे होगी ? इस तरह जो चीज ये नही चाहते, उसका अमल खुद ही करते है। जिन्हे ये नही चाहते, वे ये खुद बन जाते है !"

ग्राम की प्रार्थना मे हजारो स्त्री-पुरुष उपस्थित थे । दूर-दूर के देहातो से

विनोबाजी नाश्ता करते हुए साथ मे कोदण्डराम रेड्डी तथा अन्य कार्यकर्ता

चट्टानों और पहाड़ों के बीच

लोग आये थे। एक ओर उनके दर्शनो का सुख, दूसरी ओर उनकी बिगडी दशा का दुःख।

हम सब एक परिवार के है

विनोबा ने लोगो को समझाया कि "उनके गॉव का कल्याण दिल्ली मे आये हुए स्वराज्य से नहीं हो सकता, उनके गॉव मे लगी आग हैदराबाद के लोग आकर नही बुझा सकते और यह असभव ही है कि कोई एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियो का समूह एक जगह बैठकर इतने बडे देश की व्यवस्था देख सके।" इसलिए विनोबा ने उन्हे अपने गॉव की सेवा के लिए एक मडली बनाने की प्रेरणा दी: "यह मडली गॉव की जरूरतो को देखे, बने जहाँ तक गॉव मे ही उनकी पूर्ति करे। हैदराबाद से बहुत कम चीजे मँगाये। शराब सेंदी से लोगों को बचाये और कोशिश करे कि गॉव के बाहर के झगडे, फिर वह काग्रेसवालो के हो या समाजवादियो के, गॉव मे आने ही न दे। जब चुनाव का मौका आये, तब आप अपना मत योग्य आदमी को दे सकते है। परतु झगडो का सवाल आये, तो साफ कह दीजिये कि 'हमे आपके झगडो से कोई मतलब नही। हम न तो काग्रेसी है, न सोशलिस्ट है, और न हिंदू-सभावादी। हम तो हयातनगरवासी है।' इस तरह आप सबको हाथ जोडकर कहिये। कोई बाहर से आकर आप लोगो को एक दूसरे के खिलाफ भडकाये, तो कहिये—'हमारा गॉव एक है। हम एक परिवार के है। देश के लोग जैसे देश के बारे मे सोचते है, हम भी अपने गॉव के बारे मे सोचना चाहते है।' इस तरह आप दृढतापूर्वक बाहर की बुराइयो को रोकेंगे, तो आपके यहाँ की बुराइयाँ भी धीरे-धीरे कम हो जायँगी।" • • •

श्रीमानों के लिए खतरा : ३ :

बाटासिगारम्

१७-४-'५१

तीसरा मुकाम

आज का रास्ता बारह मील का था, सडक कुछ पक्की, कुछ कच्ची, किनारे के तथा थोडी दूर के गॉवो के लोग स्वागत के लिए सडक पर आये थे। रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोडा, कनकमूला, राउलपल्ली, कपरावल्ली आदि अनेक छोटे-छोटे गॉवो के लोग थे। इर्द-गिर्द की छोटी-छोटी पहाडियो मे से भी लोग आये थे। अपने पास जो कुछ था—पत्र, पुष्प, फलम् से थालियॉ सजाकर लाये थे। जगह-जगह तोरण-पताकाएँ भी थी। एक जगह तो सहयात्रियों ने स्त्री-पुरुषो को और बच्चों को दूर से देखा, जो पहाडी से उतरकर दौडे-दौडे सडक की ओर आ रहे थे। उनको देखकर हम लोगो ने विनोबाजी को रोक लिया। उतने ही मे लोग पहुँच गये। बॉस से बॅधी आम के पत्तो की घनी लबी माला लिये दो युवक रास्ते के दोनो ओर खडे हो गये और बात की बात मे एक द्वार भी खडा हो गया। विनोबा ने फल-फूल स्वीकार किये, उसी वक्त वे तकसीम भी कर दिये गये और आगे बढे। ८-३० बजे बाटासिगारम् पहुँचे। लोग भजन-कीर्तन करते हुए अगवानी करने आये। गॉव मे आनन्द-उत्सव की भावना दिखाई दे रही थी। निवास पर पहुँचने पर लोगो से कहा गया कि दो बजे सामुदायिक कताई के वक्त आये, बाद मे मिलने का वक्त रखा गया है। भीड कुछ कम हुई, पर गॉवो से लोग तो आते ही रहे और दो बजे तक काफी भीड जम गयी।

पहले लोहा तो बन ले

विनोबाजी तो भोजन के लिए कही बाहर जाते नही, अपने निवास पर ही मट्ठा लेते है। परन्तु हम लोगों को भोजन के लिए दूसरी जगह

जाना था। रास्ते मे जगह-जगह गॉववालो ने हम लोगो को आदरपूर्वक और आग्रहपूर्वक अपने घर बुलाया। वे लोग समझते थे कि सत के साथ के लोगो के आने से भी घर पावन होता है। हम लोग उनकी भावना को देख-कर अपने मन को पावन कर रहे थे। जिस पुण्य-पुरुप के पावन सहवास से लोग हममे भी श्रद्धा रखने लगे है, उसकी विश्वात्म भावना का परस हमे भी हो, तो हमारा सोना हो जाय। परन्तु ऐसा सोना बनने के लिए भी पहले लोहे की योग्यता तो प्राप्त करनी ही पडती है।

गॉव का पहरा

दोपहर कताई के बाद मिलनेवालो की भीड लगने लगी। गॉववालो से गॉव की जानकारी मिली। कुछ माह पूर्व कम्युनिस्ट आये थे। तब तो कुछ सामान खरीदकर ले गये थे। पर बीच-बीच मे आते रहते है और चीज-वस्तु, रुपया आदि जो भी मिलता है, लूट-खसोटकर ले जाते है। लोग डरे हुए है। कुछ लोगो की उनके साथ सहानुभूति भी नजर आयी। डरे हुए लोग कुछ बढा-चढाकर बात करते नजर आये, तो सहानुभूति रखनेवाले कुछ छिपाते हुए। दो सिक्ख भाई भी मिले। यहाँ उनकी डेअरी थी। पहले यही रहते थे, पर कम्युनिस्टो की हिरासत भुगत चुकने के कारण व अपने पास का काफी सामान व पैसा उनकी भेट चढा चुकने के कारण अब दिन मे आते है और शाम होते ही हैदराबाद लौट जाते है।

रात मे गॉववाले बारी-बारी से पहरा देते है। बीस-बीस की टोलियाँ रहती है। गॉव के चारो ओर ऐसी चार टोलियाँ काम करती है। गॉववाले चाहते थे कि अब उन्हें इस काम से मुक्ति मिले। "आपके गॉव की रक्षा दूसरा कौन करेगा ?" विनोबा ने उनसे पूछा। गॉववालो का खयाल था कि पुलिस यह काम करती रहे। विनोबा ने कहा : "फिर उनके खर्च का बोझा भी आपको ही नित सहन करना पडेगा।"

लेकिन इसके लिए गॉववाले तैयार नही थे, न वे यही चाहते थे कि पुलिस चली जाय।

पुलिस का यह हाल कि एक घर मे एक कम्युनिस्ट नेता को भोजन और वातचीत मे लगाकर पुलिस को बुलाया गया, तो जल्दबाजी मे कम्युनिस्ट को गिरफ्तार करने के बजाय उस पर गोली चला दी, किंतु गफलत मे कम्युनिस्ट के बजाय घरवाले को ही गोली का शिकार बना दिया। उसकी बेवा और १३-१४ बरस का बच्चा विनोबा के पास शिकायत लेकर आये थे कि अब तक न कोई तहकीकात हुई है, न कोई सहायता ही मिली है।

हैदराबाद से बीस मील पर यह चित्र था—कम्युनिस्टो और पुलिस, दोनो का। अभी भीतर—इटेरिअर मे जाना तो बाकी ही था। नलगुडा जिला, जो दुनिया मे कम्युनिस्टो के कारण मशहूर हो गया है, अभी शुरू होना था। यह तो हैदराबाद के इर्दगिर्द और हैदराबाद जिले की ही हालत हम देख रहे थे। शाम को प्रार्थना मे हमेशा की तरह हजारों की तादाद मे स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। अनुवाद श्री लक्ष्मीबहन कर रही थी। लक्ष्मीबहन सगम और कोदडराम रेड्डी, दोनो हैदराबाद से हमारे साथ हो गये थे—प्रातिक काग्रेस की ओर से। लक्ष्मीबहन बडी कलाकार है। शिक्षण-विभाग मे ऊँची जगह पर थी, परन्तु रजाकारों के जमाने मे निषेध प्रकट करने के लिए नौकरी से इस्तीफा दे दिया था। तब से लोगों की सेवा मे जुटी हुई है। कोदड रेड्डी नवयुवक है, सेवाभावी, बुद्धिमान और नम्र।

विनोबा ने प्रार्थना-प्रवचन मे लोगो को समझाया .

"आप लोगो को वही कहना चाहिए, जो आपने देखा हो। सच और झूठ मे चार अगुल का अन्तर है। दो आने बात को पौने दो आने कहकर बताओ, पर सवा दो आने नहीं। अगर आप सही-सही हालत बतायेंगे, तब तो हम आपकी हालत समझ सकेंगे। हम आये ही इसलिए हैं कि आपके दु खो को देखें-सुने-समझें। सही हालत का पता चलेगा, तभी तो हम इलाज बता सकेंगे।"

डरनेवालों का भगवान् भी साथी नहीं

फिर विनोबाजी ने उन लोगो को एक-दो हिदायतें भी दीं। "हरगिज

डरो नही। कोई बात पूछी जाय, तो वह सच-सच बताओ। जो डरता है, उसकी रक्षा भगवान् भी नही कर सकता। आपको न तो कम्युनिस्टो से डरना चाहिए, न पुलिसवालो से। अपने गॉव की रक्षा करना गॉव-वालो का ही काम है। अगर आप लोगो मे एकता होगी, तो आपके गॉव का बचाव आप कर लेगे। जानवर भी, जो दुर्बल होते है, अपना एक सघ बनाकर अपनी रक्षा कर लेते है। आप एक होकर रहने के बजाय अगर अलग-अलग रहेगे और एक-दूसरे के साथ लडते रहेगे, तो आपको कौन बचा सकता है?

"आपने देखा होगा कि डरनेवाले को जानवर भी पहचान लेता है। हमारे सामने कई जानवर आते है। वे हमारी ऑख की ओर देखकर ही जान लेते है कि हम डर गये हैं या नही। अगर हमे वे भयभीत पाते है तो हमला करते है, निर्भय पाते है तो चुपचाप बाजू से निकल जाते है। इसी तरह अगर यहॉ पुलिस-मिलिटरी आये, तो निर्भयता से आप अपनी बात बताइये। लोग मुझे पूछते है कि 'हम पर कम्युनिस्ट भी जुल्म करते है, पुलिसवाले भी करते है, तो हमारी रक्षा कौन करेगा?' मुझे यह सुन-कर आश्चर्य होता है। मिलिटरी और पुलिसवालो का भय तो बिलकुल नही होना चाहिए, क्योकि वे तो रक्षा के लिए ही यहॉ भेजे गये है। और कम्युनिस्टो से इसलिए डरने का कारण नही है कि वे तो दो-चार ही आयेगे और आप तो हजारों है। अगर उनसे भी डरेगे, तो फिर आपसे क्या कहा जाय? आपको अपने गॉव मे स्वयसेवक-दल बनाना चाहिए। स्वयसेवक-दल का काम होगा कि गॉव की रक्षा करे। दल को उस तरह की तालीम दी जानी चाहिए। अगर हम डर छोड देंगे, तो कम्युनिस्ट भी नही डरायेगे। आखिर वे भी कोई राक्षस तो है नही। वे तुम्हारी-हमारी तरह मनुष्य ही है। एक बार उन्हें पता चल जायगा कि लोग निर्भय है, तो फिर वे कुछ नही करेगे।"

बाद मे गॉव की आर्थिक स्थिति के बारे मे ध्यान दिलाते हुए कहा :

"आपके गॉव मे कुछ लोग गरीब है और कुछ श्रीमान् है और कुछ मध्यम श्रेणी के है। जो श्रीमान् और मध्यम श्रेणी के है, उनका काम है कि गरीबो के साथ हिल-मिल जायॅ। अगर कुछ लोगो के पास धन आ गया है, तो भगवान् ने उन्हे वह गरीब लोगो की सेवा के लिए ही दिया है। भगवान् तो कसौटी करता है, उसकी भी, जिसे वह धन देता है, और उसकी भी, जिसे वह गरीब बनाता है। जिसको धन देता है, उसकी परीक्षा लेता है कि वह दयाभाव रखता है या नही। अगर रखता है, तो वह भगवान् की कसौटी मे पास होता है। उसी तरह जो गरीब है, उसकी परीक्षा यही कि वह हिम्मत रखता है या नही ? अगर वह हिम्मत रखता है, हारता नही, डरता नही, दीन नही बनता, तो भगवान् की परीक्षा मे वह भी पास है। और अगर वह दीन बनता है, डरता है, तो भगवान् की परीक्षा में वह पास नही।

"इस तरह इस गॉव मे गरीब और श्रीमान्, दोनो एक-दूसरे की मदद करेंगे, तो न यहॉ कम्युनिस्ट कुछ तकलीफ दे सकेगे और न पुलिस ही। यहॉ स्वराज्य होगा।"

श्रीमानो के लिए खतरा !

और अन्त मे श्रीमानो के बारे मे अपनी भावना प्रकट करते हुए कहा : "तो मै भगवान् से प्रार्थना करूॅगा कि आपके गॉववालो को वह ऐसी सद्-बुद्धि दे कि सब लोग एक-दूसरे को प्यार करें, एक-दूसरे की मदद करें। अगर श्रीमान् गरीबो के लिए अपना धन, अपनी बुद्धि, अपनी ताकत खर्च करेंगे, तो वे जी सकेंगे, नही तो श्रीमानो के लिए खतरा है। अगर वे अपने गॉववालो से प्रेम का बर्ताव करेंगे, तो हिन्दुस्तान मे उनके लिए कोई खतरा नही है।"

● ● ●

गंगोत्तरी का आविष्कार :४:

पोचमपल्ली

१८-४-'५१

कम्युनिस्ट-कारनामों के लिए हैदराबाद राज्य के जो दो जिले प्रसिद्ध है, नलगुडा और वरगल, उनमे से नलगुडा जिले मे आज विनोबा प्रवेश कर रहे थे। पिछले दोनो मुकाम यद्यपि तेलगाना के ही है और वहाँ भी कम्युनिस्ट कार्रवाइयो का कुछ दर्शन हुआ है, फिर भी वे कम्युनिस्ट कथाओ की प्रस्तावनाभर है, पुस्तक का प्रारम्भ तो अब होगा। सच्चा दडकारण्य भी यही से शुरू होता है। ह्यातनगर और बाटासिगारम्, ये दोनो उसके द्वार समझिये। सारा रास्ता दुतर्फा पहाडी से होकर गुजरता है। पहाडियाँ, जो पहले घने दरख्तो से लदी हुई थी, अब बिलकुल मुक्त है, क्योंकि उनकी आड में कम्युनिस्ट छिप जाया करते थे कि राहगीरो पर ठीक दाव साध सके। सारा जङ्गल इसलिए अब छँट गया है। फिर भी रास्ते के दोनो तरफ दिखाई देनेवाले ये पर्वत मडल, माँ धरती की वत्सलता के ही साक्षी है, और एक के बाद दूसरी पर्वत-पंक्तियाँ ऐसी प्रकट होती जाती है, मानो कमल-दल की एक-एक पँखुडी धीरे-धीरे खिल रही हो। सवेरे की शेष चाँदनी मे दस मील का रास्ता सहज ही तय हुआ। रास्ते मे स्थान-स्थान पर स्वागत-समारोह का स्वीकार करते हुए विनोबा ७ या ७-३० बजे के करीब पोचमपल्ली पहुँचे। लोग दो कतारो मे राम-धुन गाते खडे थे। विनोबाजी उन सबका प्रणाम स्वीकारते हुए उन लोगो के बीच से गुजरे। सारा वातावरण आध्यात्मिक तथा सास्कृतिक भावो से भरा नजर आया।

अब तेलगाना की विशेषता का दर्शन होने लगा। पूरा गाँव साफ-सुथरा, कही पानी का छिडकाव, कही गोबर से लिपा-पुता। जगह-जगह

अल्पनाएँ । निवास पर पहुँचते ही दो पडितो ने श्रीफल भेट किया और पुरुष-सूक्त सुनाया, जिसमे विनोबाजी सहज ही तन्मय हो गये ।

गाँव की हालत

पोचमपल्ली सात सौ घरों का एक छोटा-सा गॉव है । तीन हजार जन-सख्या है, जो पवनार की याद दिलाती है । विनोबाजी के निवास के सामने ही पवनारवाली धाम नदी की तरह एक बडा तालाब भी है। वर्धा-नागपुर रास्ते की तरह सामने से एक रास्ता भी गुजर रहा है ।

इस छोटे-से गॉव मे बुनकरो की सख्या ६४३ है, हरिजन २१६ । तीन हजार लोगो मे से दो हजार को जमीन बिलकुल नही है । सेंदी पीनेवालो की सख्या भी दो हजार है । रोज डेढ सौ रुपयों की सेंदी बिकती है । शिक्षक गायब है, इसलिए एक हरिजन-प्रेमी भाई ने हरिजन बच्चो का मदरसा अलग चला रखा है ।

कम्युनिस्टो के कामो का परिचय भी मिला । यह गॉव उनका केंद्र माना जाता है । पिछले गाँवों मे जो कुछ देखा-सुना, उससे यहॉ अधिक ही सुनने-देखने मिला । यहॉ चार हत्याऍ हुई, यही से नजदीक येरूरी गॉव मे तीन, इर्द-गिर्द की मिलाकर दो बरस मे कुल बीस । जो कोई उनके बारे मे कुछ जरा-सी जानकारी किसीको, याने पुलिस या काग्रेसवालो को देगा, तो गोली का शिकार होना पडेगा । और इस केन्द्र मे कुल कम्युनिस्ट दस या बारह है । उनकी खोज के लिए हथियारबद पुलिस का डेरा यहॉ पडा है ।

"हम कहॉ ठहरे है ?" विनोबा ने गॉववालो से पूछा ।

"मदरसे की इमारत मे ।"

"कितने बच्चे पढते है ?"

"सात ।"

"मास्टर ?"

"एक ।"

तीन हजार की बस्ती के भावी नागरिकों की शिक्षा का यह हाल, मास्टर भी रोज हाजिर नही रहते। कभी-कभी अपनी सुविधा से आकर पढा जाते है।

बालक भगवान् है

सवा नौ बजे होगे। ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए विनोबाजी निकले। पहले हरिजन-बस्ती मे ही गये। कई मकानो के भीतर जा-जाकर देखा। बाहर-भीतर एक समान! बिल्कुल स्वच्छ। हरि के जन अदर एक, बाहर एक हो भी कैसे सकते थे? एक घर के भीतर देखा कि चार दिन की नवप्रसूता जमीन पर बैठी है। बालक चटाई पर ही लिटा है। बच्चे को विनोबा ने गोद मे उठा लिया, उसकी माँ के पास बैठ गये। उस बालक की आँखो मे उनकी आँखे मानो गड गयी। "बालक भगवान् है", माँ के मुँह से सहसा शब्द निकल पडे। इस बीच उसके हाथ विनोबा के चरण छू चुके थे—जिसका शायद न हाथो को पता था, न उसको, न विनोबा को।

बाहर आये तो देखा कि पूरी हरिजन-बस्ती के लोग इकट्ठा हो चुके थे।

उन्हें अपने बच्चो के लिए अलग मदरसा चाहिए था। तय हुआ कि बच्चे अलग मदरसे मे नही पढेगे, सबके साथ उसी सरकारी मदरसे मे पढेगे। कोशिश की जायगी कि पढाई का अच्छा प्रबध हो।

मकानों के लिए जगह चाहिए थी। इसमे कानून भी हरिजनो की सहायता करता है। तय हुआ कि उन्हें जगह दिलवाने के लिए तहसीलदार से कहा जाय।

जमीन की माँग

लेकिन यह सब सवाल तो गौण थे। मुख्य सवाल था—जमीन का। 'हम लोगो को खेती के लिए जमीन चाहिए', हरिजन भाइयो ने माँग की।

रास्ते से बातचीत करते-करते सब लोग इस बीच डेरे पर आ पहुँचे। हरिजन भाइयो ने बताया कि आज खेती के अभाव मे उन्हे कभी-कभी भूखो भी रहना पडता है, क्योकि मजदूरी का कोई भरोसा नही। अगर जमीन मिले, तो इज्जत की जिन्दगी बसर कर सकेंगे।

गॉव मे कुल २५०० एकड जमीन है। तीन हजार की बस्ती, यानी फी आदमी ¾ एकड से कुछ अधिक। आज ये सारे हरिजन, जमीनवालो के यहॉ मजदूरी से काश्त करते है, सालभर मे उपज का २०वॉ हिस्सा पाते है, एक कम्बल, और एक जोडी जूता, बस।

"जमीन कितनी चाहिए?" विनोबा ने पूछा। थोडी देर आपस मे विचार करने पर मुखिया ने खडे होकर जवाब दिया : "८० एकड बस होगी, खुश्की ४०, तरी ४०।"

"इतने से काम निभ जायगा?"

"जी, हम लोग और भी कुछ काम कर लेते है।"

"यदि हम आप लोगो को जमीन दिलवा दे, तो आप सब मिलकर सामुदायिक काश्त कीजियेगा या जुदा-जुदा?"

"सब मिलकर।" थोडी देर विचार करके मुखिया ने जवाब दिया।

"तो हमे एक अर्जी लिख दो, हम आपके लिए कोशिश करेंगे।"

भूदान की गगोत्तरी

इतना कहा तो—किंतु क्षण-भर के लिए कुछ अतर्मुख हो गये। विनोबा का विचार पहले तो सरकार को लिखकर इन लोगो को जमीन दिलवाने का प्रयत्न करने का था। फिर सोचा, उसमे देर बहुत लग जाने की सभावना है। उस विचार को पूरी तरह रद्द न करते हुए सामने जो गॉववाले बैठे थे, उनसे भी पूछने की प्रेरणा उन्हे हुई। इसलिए फिर गॉववालो को लक्ष्य कर उन्होने कहा :

"यदि सरकार की ओर से जमीन न मिल सके या देरी लगे, तो उस हालत मे गॉववालो की ओर से कुछ किया जा सकता है?"

विनोबाजी ने अपना विचार रखा ही था कि एक भाई, श्री रामचंद्र रेड्डी सहसा खड़े हो गये और नम्रभाव से कहा : "मेरे स्वर्गीय पिताजी की इच्छा थी कि कुछ जमीन इन भाइयों को दी जाय। लिहाजा, मैं अपनी और अपने पाँच भाइयों की ओर से सौ एकड़—जिसमें पचास खुश्की और पचास तरी है—आपके द्वारा इन लोगों को भेंट करता हूँ।"

उन भूमिहीन हरिजन भाइयों की ओर से विनोबा ने माँग की और भूमिवानों में से श्री रामचन्द्र रेड्डी के हृदयस्थ भगवान् जाग गये। उन्हें दान की प्रेरणा हुई। भूदान की गंगोत्तरी प्रकट हुई!

रामचन्द्र रेड्डी की घोषणा ने सारे वातावरण को बदल दिया। सब लोग बैठे थे, रामचन्द्र रेड्डी खड़े थे। घोषणा के बाद भी वे वैसे खड़े ही रहे। उन सबके बीच शुभ्र-वस्त्रधारी कृशकाय विनोबा के मुख पर उस समय सहसा एक अद्भुत तेजोवलय छा गया। दिखाई ऐसे दिये कि चारों ओर मानस का प्रशान्त शीतल नीर और बीच में हंस। दधीचि और वामन, दोनों का व्यक्तित्व एकत्र साकार हो उठा। उनकी विस्मित और गम्भीर मुद्रा ने कुछ क्षण रामचन्द्र रेड्डी को निहारा, फिर उन हरिजन भाइयों की ओर देखा। इस बाह्य प्रक्रिया के भीतर कोई विशेष आन्दोलन-सा हो रहा था। विनोबा की मुद्रा पर गम्भीर चिन्तन प्रकट हो रहा था। क्या सोच रहे थे? ईश्वर के इस चमत्कार के बारे में या उसकी व्यवस्था की पूर्णता के बारे में? भूख के साथ भोजन देने की उसकी योजना के बारे में।

दान की घोषणा ऐसे तो स्पष्ट थी। फिर भी दाता को, हरिजनों को और सबको ही बात ठीक और स्पष्ट समझ में आ सके, इसलिए श्री रामचन्द्र रेड्डी को एक कागज दिया गया कि वे अपना संकल्प उस कागज पर लिख दें। रामचन्द्र रेड्डी ने फौरन अपने भावों को अपने हाथ से कलम-बन्द कर दिया। विनोबाजी ने वह कागज देखा, जो अब कागज नहीं था, एक दस्तावेज, एक ऐतिहासिक संकल्प-पत्र बन गया था। सब लोगों के सामने वह फिर पढ़ा गया। जाब्ते की दृष्टि से दाता की

अपनी इच्छानुसार उस पर दो गवाहो के हस्ताक्षर भी हो गये। रामचन्द्र रेड्डी के मुख पर एक विशेष सतोष की भावना झलकने लगी। एक तरह का उत्साह भी उनकी मुद्रा पर नजर आ रहा था। दानपत्र पुनः पढा गया।

102
Ahm. 18/4/51

I hereby declare on behalf of
my brothers (the sons of Shri Vedre
Narasimha Reddy of Pochampalli
Bhongir Taluk, Nalgonda Dist.) and
also on my own behalf that according
to the wish of my dear deceased father
out of the landed property belonging
to our family (Vedre family) at
Pochampalli and Julur, fifty acres
of land (including wet and dry S.Nos)
at Pochampalli and fifty acres
of land (as above) at Julur are hereby
declared to be dedicated for the uplift
of the local Harijans of Pochampalli
and Julur and now very solemnly I
hereby request Shri Vinoba Bhaveji
(who is now proceeding on his peace
tour in our Andhra Desa) to bring to
the notice of these Harijans and explain
the purpose and use of these dedicated
lands so that the soul of my dear
deceased Pitha (called "Bapuji" in
my family) may be in peace and
the souls of these deserving brethren
may be satisfied at such a unique
and appropriate occasion

Details of the dedication —
I 50 (fifty) acres of land at Julur village
II 50 (fifty) acres of land at Pochampalli
Total 100 (One hundred acres only)

The possession of these lands shall be given
to these brethren in the beginning of this
coming raining season in the respective
villages. I request Shri Vinobaji to
form a trust (of course according to

has established Sarvodaya principles and direct the local institutions concerned to take adequate interest in this matter. But according to the wishes of my dear deceased father one member of our Reddy family should be taken in the said trust and naturally some of the local Harijan members also should be included in the trust and the management and utilization of these lands should be left to the local Harijans by gradual development every year within these limits and request I conclude this document and entrust this matter to Shri Vinobaji to decide and take necessary action in this regard.

Ram Chandra Reddy
(eldest brother),
18/4/51

[illegible]

१ [illegible]
२ [illegible]
३ [illegible]
४ [illegible]
५ [illegible]

[illegible]

[illegible]

Ram Chandra Reddy [illegible]

भीड बढ रही थी और मसले एक-एक करके सामने आ रहे थे। गॉव मे सेदी शराब खूब चलती थी। बुनकर सूत के अभाव मे बिना

काम के और बिना भोजन के जिन्दगी बसर करते थे। धोबी भी दुखी थे, एक के बाद एक अपनी समस्या सुनाते रहे और सान्त्वना पाते रहे। किसीने सुझाया कि जिन्हे भूमि दी जाय, वे सेंदी शराब से मुक्त होने का संकल्प करें। विनोबाजी ने ऐसी किसी शर्त के साथ जमीन देने की बात स्वीकार नही की। आज दबाव के कारण कोई प्रतिज्ञा करे, यह उन्हे उचित प्रतीत नही हुआ। उनकी सद्भावना पर उन्होने यह विषय छोड दिया।

इधर भीतर मुलाकाते चल रही थी। बाहर जनता खूब जमा हो चुकी थी।

मुखिया ने अपने साथियो से बातचीत शुरू की। वातावरण उत्सुकता और गभीरता के भावो से भरा लगने लगा। दो मिनट भी नही बीते और मुखिया खडा हुआ। सारी आँखे उसकी ओर मुडी। उसने कहा .

"महाराज, हम आज से ही निश्चय करते है, हम आइन्दा सेंदी नही पीयेंगे।" किसीने सुझाया कि प्रतिज्ञा लिखवा ली जाय। विनोबा ने मना किया : "आज तुम लोगो के प्रति इन भाइयो के दिलो मे एहसान की भावना है। उसके दबाव मे वे तो फौरन प्रतिज्ञा कर लेंगे, पर ऐसा न करना चाहिए। बरसो की आदत है, छूटते-छूटते छूटेगी। अगर अपने वचन पर वे कायम रहे, तो काफी है।"

बिना हाथ-सूत के चारा नहीं

तीसरी समस्या पेश हुई। बुनकर आये। "सूत का कोटा पर्याप्त नही मिलता। आधी पेटी ही मिलती है, जिससे एक हफ्ते से ज्यादह काम नही रहता। करीब तीन हफ्ते बेकार रहना पडता है, सूत दिलवाइये।"

"सब जगह यही हाल है।" विनोबा ने उनके साथ पूरी सहानुभूति अनुभव करते हुए कहा।

"फिर क्या किया जाय?" बुनकरो ने पूछा।

"आप लोग ही बताइये"—विनोबा ने उन्हीसे सवाल किया एव फिर अपने तरीके से उनको समझाना शुरू किया .

"अरे भाई, जब अपने देश मे पहले मिले नही थी, तब क्या बुनकर नही थे ? या बेकार बैठे रहते थे ? या लोग नगे रहते थे ? और तुम लोग खुद बुनते हो, फिर भी तुम्हारे बदन पर यह मिल का कपडा है। जब तक तुम अपने सूत का कपडा नही पहनोगे, मसला हल नही होगा। क्या किसान अनाज पैदा करके रोटी खरीदता है ? तुम लोग खुद ही अपने काम को काटते हो। होना यह चाहिए कि हमे अपने लिए सूत कात लेना चाहिए।" अपनी धोती, दुपट्टे और बिस्तरे के कपडे बताते हुए कहा : "यह देखो, यह कपडा कितना अच्छा है ? सब-का-सब हाथ का है। कातने का निश्चय करो, तो जिदा रह सकोगे।"

बुनकरो ने फिर और सवाल किया : "यहाँ कपास नही होती।"

"ठीक है, पर पहले भी कपास नही होती थी, ऐसी तो बात नही है ? गाँववालो ने अगर अब कपास बोना छोड दिया है, तो उन्हे फिर से वह शुरू करना चाहिए। यह केवल पोचमपल्ली का सवाल नही है—सभी गाँवो का सवाल है। और यहाँ तो मैने सुना है कि कपास बोनेवाले को लगान भी माफ हो जाती है। जब तक कपास पैदा नही होती, तब तक वह खरीदी जा सकती है। कपडा खरीदने से बेहतर है कि कपास खरीदी जाय।"

हमारे निवास के सामने, तालाब के किनारे आम और नीम के बडे-बडे दरख्त थे—उनकी छाया मे करीब पाँच हजार स्त्री-पुरुष विनोबा का इतजार कर रहे थे। इर्द-गिर्द के गाँवो से लोग आये थे। गाँवो मे रेवनपल्ली, भीवनपल्ली, गोसकोंडा, कन मुकला, राउलपल्ली, कपरास पल्ली आदि सभी गाँव के लोग थे। ये गाँव कम्युनिस्ट भाइयो के कार्य-क्षेत्र माने जाते है। विनोबा सभा मे आये, तो इधर लोगो ने महात्मा गाधी की जय का उत्साह-भरा नारा लगाया—विनोबा मच पर बैठे, तो ऊपर

कोयल ने भी मधुर कठ से उनका अभिवादन किया। सबको सुनाई दे, इस खयाल से जनता के बीचोबीच खडे होकर, विनोबा ने तेलुगु गीता से स्थितप्रज्ञ के श्लोक पढे। उनके मुख से तेलुगु सुनते ही शात जन-समुदाय मुग्ध होकर चित्रवत् श्रवण-भक्ति मे लीन होता-सा दिखाई दिया। उन्हें मानो यकीन हो गया कि फकीर उन्हीका आदमी है।

प्रवचन के प्रारभ मे विनोबाजी ने तेलगाना की दुःखद परिस्थिति, कम्युनिस्टो का आन्दोलन, जेल मे उनसे की गयी मुलाकात आदि का जिक्र किया और फिर बोले . "हम लोगो ने देखा, वे भी तुम्हारे-हमारे जैसे सादे मनुष्य है, उन लोगों ने यहाँ पर बहुत भय पैदा कर दिया, ऐसा सब लोग बोलते है। लेकिन इस गॉव के लोग, गरीब और श्रीमान्, दोनो अगर मिल करके रहेगे, तो आपके गॉव को कोई दुःख नही होगा। हम इस गॉव के सब लोगों को सुनाना चाहते है कि आप सारे गॉववाले एक हो जाइये। गॉव मे कुछ लोग दुःखी है, तो कुछ लोग सुखी भी है। जो लोग सुख मे है, उनसे हम प्रार्थना करते है कि अपने गॉव के दुःखी लोगो की चिन्ता जरा आप कीजियेगा। हम लोगो को गाधीजी ने एक बडा रास्ता बताया है। उन्होने बताया कि हम किसीको तकलीफ नहीं देंगे। जो दुःखी है, उनको जरा सब्र रखना चाहिए। अगर हम सहन नहीं करेंगे, तो हमारा काम नहीं होगा। जो हमारे दुःख है, जो हमारी तकलीफें है, उन्हें सज्जन लोगो के सामने रख देना, बोलने मे जरा भी डर नहीं रखना, असत्य कभी नही बोलना, अतिशयोक्ति कभी नहीं करना, जैसा है वैसा ही बताना, इस तरह अगर गरीब-दुःखी लोग हिम्मत रखेंगे और सुखी लोग दयाभाव रखेंगे, तो आपके गॉव मे कम्युनिस्टो का कोई उपद्रव नहीं हो सकता।"

भूमिदान का सकल्प

फिर सवेरेवाली भूमिदान की घटना का जिक्र करते हुए कहा "आज इस गॉव के हरिजन लोग हमसे मिलने के लिए आये थे। उन

भूदान-आन्दोलन के प्रथम दाता श्री रामचन्द्र रेड्डी
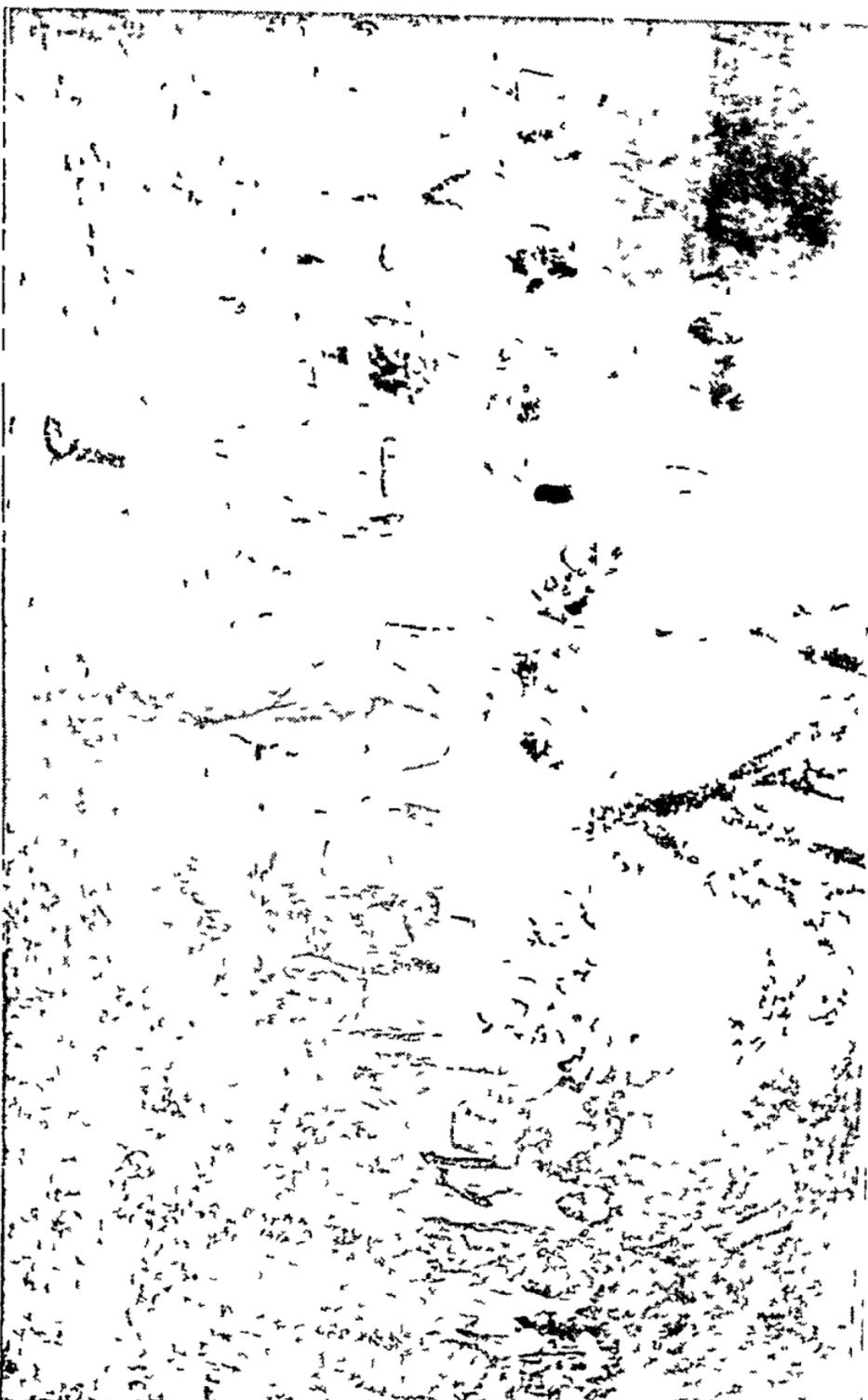
रामनवमी के मगल मुहूर्त पर शाति-सेना के सिपाही ने शाति की खोज मे तेलगाना के लिए कूच किया ।

लोगो ने कहा कि हमको अगर कुछ जमीन मिलती है, तो हम मेहनत करेंगे और मेहनत का खाना खायेंगे। हमने कहा कि अगर हम आपको जमीन दिलायेंगे, तो आप सब लोगों को मिलकर काम करना होगा, अलग अलग जमीन नही देंगे। फिर उन्होंने कबूल किया कि हम सारे एक होंगे और जमीन पर मेहनत करेंगे। हमने कहा कि इस तरह हमको लिख दो, आपकी अर्जी हम सरकार मे पेश करेंगे। इस बीच हमने, जो लोग जमा थे, उनसे भी पूछा, तो उनको १०० एकड अपनी जमीन देने के लिए वहीं के एक भाई तैयार हो गये और उन्होने हमारे सामने हरिजनो को वचन दे दिया कि आपको इतनी जमीन हम दान देंगे।"

विनोबाजी ने फिर दाता को खडे रहने का इशारा करते हुए कहा : "वह भाई जरा खडे हो जायँ।"

रामचन्द्र रेड्डी तत्क्षण दोनों हाथ जोडकर विनम्र भाव से खडे हो गये। विनोबा बोलते रहे। तब तक रेड्डीजी मौनपूर्वक वैसे ही खडे-खडे श्रवण-भक्ति करते रहे। विनोबाजी का प्रवाह जारी था। उन्होने कहा : "ये वे भाई है, जिन्होने वचन दे दिया है कि हम अपनी १०० एकड जमीन दे देंगे। तो यह भला आदमी आपके सामने है। अगर वह जमीन नही देता है, तो ईश्वर का गुनहगार बनेगा। आप उसको याद रखिये। लेकिन वह जमीन देगा, तो हरिजनों पर यह जिम्मेदारी आ जायगी कि सारे-के-सारे प्रेम-भाव से एक होकर इस जमीन को जोते।" एक क्षण के लिए विनोबाजी रुके, दाता और हरिजन भाइयों की ओर तथा जनता की ओर गौर से देखा, इतने मे रामचन्द्र रेड्डी की भावनाएँ जाग उठी। उनसे नही रहा गया। उन्होंने पुन. अपने दान को दोहराया और सबके सामने अपने वचन को पालन करने की प्रतिज्ञा की।

करतल-ध्वनि से आसमान गूँज उठा। एक अद्‌भुत दर्शन था वह। एक ओर एक फकीर उस विशाल वृक्ष के नीचे मच पर खडा अधिकार-वाणी से कुछ बोल रहा था। दान मे भूमि मिली थी, पर उसकी वाणी मे

दीनता नही थी, सद्भाव था, श्रद्धा थी, दीन-दुखियों के प्रति हुए अन्याय के अशतः परिमार्जन का सतोष था। और दूसरी ओर विशाल जन-समुदाय के बीच रामचन्द्र रेड्डी खडे थे, जमीन का दान किया था, परन्तु मुद्रा पर अहकार नही था। प्रायश्चित्त को भावना थी। समाधान था। और उधर हजारो-हजार ऑखे कभी फकीर को निहारती थी—कभी दाता को। विस्मित थो। मन-ही-मन फकीर को वन्दना करती थी। दाता को धन्यवाद देती थी। क्या विशेष घटना हुई थी? जमीन तो उन्हे इसके पहले कम्युनिस्टो ने भी तकसीम कर दी थी। परन्तु क्या नतीजा निकला था? यही कि जमीनें छिन गयी थी और जमीनो के साथ प्रतिष्ठा भी। और आज क्या हुआ था? जमीन तो मिली ही थी। जमीन के साथ-साथ प्रतिष्ठा भी मिली थी और दोनो को मिली थी, देनेवाले को भी और पानेवाले को भी। "इट ब्लेसेथ हिम दैट गिव्ज् एड हिम दैट टेक्स" ऐसी यह घटना थी।

निराशा मे आशा छा गयी।
मानो किसी जादूगर ने कोई चमत्कार प्रकट किया।
या किसी वैज्ञानिक ने कोई सुप्त और गुप्त शक्ति प्रकाशित की।

चद क्षण इस सामूहिक अनुभूति मे बीते होंगे और फिर उस "भूदान" वाली घटना मे कितनी क्षमता छिपी हुई है, यह बताते हुए गभीर वाणी से विनोबा ने घोषणा की :

"अगर ऐसे सज्जन लोग हर गॉव मे मिलते हैं, तो कम्युनिस्टो का मसला हल हो गया, ऐसा समझो। आप यह जरूर समझ लो कि श्रीमान् लोग हिन्दुस्तान मे अपने हाथ मे ज्यादा जमीन रख सकनेवाले नही है। कोई भी श्रीमान् गरीबो की मदद के सिवा अपनी भूमि अपने हाथ मे रख नही सकता।"

जमीन के साथ गृहोद्योग भी

मिले हुए दान से सतुष्ट होकर विनोबाजी खामोश नही रहे। भूमि

के साथ-साथ जब तक ग्रामोद्योग नही जुडेगे, हिन्दुस्तान के देहातो की गरीबी दूर नही होगी। इसलिए उन्होने गाँववालो को समझाया :

"लेकिन आप लोगो को मै एक बात और कह देना चाहता हूँ कि अगर सब लोगो को जमीन दे भी दे, तो भी हम सब लोगो का जीवन अच्छा और सुखी नही बनेगा। आपके गाँव मे कुल ३००० लोग रहते है और आपके गाँव मे पूरी जमीन कुल मिलाकर ३००० एकड ही है। उसमे अच्छी जमीन भी आयी, खराब जमीन भी आयी और पत्थर भी आये। मतलब यह हुआ कि हरएक आदमी को इस गाँव मे एक एकड से ज्यादा जमीन नही है। तो आप देखिये कि एक एकड जमीन की काश्त करने से एक साल का खाना, कपडा, ये सब चीजे मिल जायेगी ? इसलिए जरूरत इस बात की है कि जमीन की काश्त के साथ-साथ दूसरे धधे भी गाँव मे चलने चाहिए।"

खादी के व्यवसाय की आवश्यकता और अहमियत के बारे मे विस्तार से समझाते हुए सभा मे से ही एक बालक की टोपी दिखाकर कहा : "अब देखो, यह लडका। इसके सिर पर टोपी है। (हाथ मे टोपी लेकर) यह देखो उसकी टोपी। इसमे खिडकी है। खिडकी नही, दरवाजा। अब अगर हम लोग सूत कातते, तो ऐसी टोपी कौन पहनता ? तो हमारी यह दरिद्र दशा हुई है। हमको दिन-ब-दिन कपडा कम मिलनेवाला है, तो हम कहते है कि पहले के जमाने मे हर गाँव मे कपास होती थी, हर गाँव मे सूत कातते थे और अपना कपडा पहनते थे। गाधीजी ने यह समझाया कि हिन्दुस्तान के किसान जैसे अपना अन्न पैदा करते है, वैसे अपना कपडा पैदा करने लगे, तभी सुखी होंगे, नही तो नही होगे। इस तरह अगर उद्योग करेगे, तो आपके गाँव के बुनकरो को काम मिलेगा। वे बुनकर हमारे पास आये थे, तो कहते थे कि हम आठ थान बुन सकते है महीने मे, लेकिन हमको दो थान सूत मिलता है, तब क्या करे ? अब उन बुनकरो को मै कहाँ से सूत दे सकता हूँ ? आप परमेश्वर से प्रार्थना

कीजिये कि हे भगवन्, बारिश मे सूत की बारिश कर, तो फिर इन बुनकरो को बारिश मे से सूत मिलेगा। मानो मृग नक्षत्र मे सूत की बारिश होनी चाहिए। तो मै यह कहता था कि अगर आप सब लोग गॉव मे कपास बोयेगे और सूत कातेगे, तो आपके गॉव के बुनकर जिदा रहेगे, नही तो ये लोग मरनेवाले है। अरे, मिलवालो के पास सूत है कहाँ? मिलवाले लडाई के पहले हर मनुष्य के लिए १७ गज बुनते थे, अब १२ गज कपडा दे रहे है। आप लोग यह मत समझिये कि मिल-वाले कही से ज्यादा सूत लायेगे। आपको अगर वे विलायत से सूत ला दे, तो क्या आप पसद करेगे, विलायत का सूत? आपको बाहर से अन्न भी ला दे, बाहर से सूत भी ला दे, तो इस देश मे रहते काहेको है? बाहर ही क्यो नही चले जाते? अगर आपको इस जगह रहना है, तो हर गॉव में अन्न की पैदाइश होनी चाहिए, हर गॉव मे कपडा पैदा होना ही चाहिए। और सूत कातना इतना आसान काम है कि पाँच साल का लडका भी अपना सूत कात सकता है। इसी तरह से गॉव के दूसरे भी उद्योग है। वे सारे उद्योग गॉव मे चलने चाहिए। इस तरह सारा गॉव एक हो करके उद्योगो मे लग जाय। एक-दूसरे पर प्रेम करे, तो वे जो कम्युनिस्ट लोग है—वे भी सतुष्ट हो जायेगे। इसलिए अब भय छोड दीजिये और काम मे लग जाइये।"

विनोबाजी ने सेंदी शराब की बुराइयो की ओर भी ध्यान दिलाकर कहा कि सभी धर्मों ने उसका निषेध किया है और आशा प्रकट की कि पोचमपल्लीवाले अब सेंदी-शराब छोड देगे।

अत मे कुछ देर भजन-कीर्तन हुआ और फिर गॉव के लोग अपने-अपने गॉव लौट गये। रोज ही लौटते है, लेकिन आज हर आदमी जाते समय बार-बार इस भगवान् के बेटे को निहारता था, जिसने पोचमपल्ली के निमित्त ससार को एक नया रास्ता दिखाया था। पोचमपल्ली की हद तक भूमि का प्रश्न हल हुआ। विनोबा ने यह भी समझा दिया कि

बिना ग्रामोद्योगो के केवल भूमि का मसला हल नही होगा। व्यसन-निवारण की भी प्रेरणा दी। लेकिन पोचमपल्लीवाले मानो ग्राम की समग्र रचना के बारे मे ही समझ लेना चाहते थे। या उनके निमित्त गॉवों के आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक विकास का पूरा विवरण ही प्रकट होना था। शायद इसीलिए गाम को कुछ चितनशील व्यक्ति विनोबाजी से मिलने आये और वर्ण तथा आश्रम, दोनो के बारे मे जानना चाहा कि आजकल दुनिया इनके विषय मे उदासीन ही नही, विरुद्ध भी है, तो आपकी क्या राय है?

विनोबा के मन का विषय था। प्रसन्न होकर बोले : "वर्ण और आश्रम सबके लिए, सब काल मे रक्षणीय और पालनीय है। हमारे गॉव के बुनकर का कपडा ही हमे लेना चाहिए, गॉव के तेली से ही तेल खरीदना चाहिए, गॉव के चमार से ही जूते बनवाने चाहिए। इस तरह स्वदेशी का खयाल रखने से वर्णधर्म टिक सकेगा। यही बात आश्रम की है। आजकल लोग अत तक गृहस्थ बने रहते है। यह वाछनीय नही है। वानप्रस्थ होना ही चाहिए।"

जहॉ भोजन की एक ही पक्ति मे मासाहार, शराब या ताडी चलती हो, वहॉ भोजन करने-न करने के औचित्य के बारे मे पूछे गये प्रश्न का जवाब देते हुए कहा : "यदि पक्ति मे ही मासाहार या शराब-दारू चल रही हो, तो उनके साथ उस पक्ति मे बैठकर भोजन नही करना चाहिए। लेकिन आहार-साम्य हो, तो सब मिलकर एक साथ खाना खाये, यह अच्छा है। घरों मे मासाहार करनेवालो के साथ भी पक्ति मे निरामिष भोजन एक साथ करने मे कोई हर्ज नही। हमे भोजन मे शबरी और राम का उदाहरण सामने रखना चाहिए। बिल्ली चूहे का आहार करती है, फिर भी हम उसे अपने पास बैठाकर दही, भात खिलाते ही है न?"

अत मे एक प्रश्न 'मुक्ति' के सबध मे पूछा, तो विनोबा ने कहा :

"आसक्ति, क्रोध, काम, मोह, अज्ञान आदि विकारों से मुक्ति पाना ही मोक्ष है। अगर विकार क्षय हो जाता है तो मोक्ष मिल गया। परमेश्वर की उपासना भी करनी है, तो किसलिए? विकारो से मुक्ति पाने के लिए ही।"

रात को सोने से पहले पुनः सबको बुलाया--साथ मे जो जिम्मेवार कार्यकर्ता हैदराबाद से आये थे, उन्हें भी तथा गॉववालों मे से भी कुछ लोगो को। जो भूमि मिली थी, उसका उचित प्रबन्ध होना जरूरी था। बॅटवारा होना था, फिर सहकारी तौर से जुताई होनी थी और सरकारी कानून का भी जमीन को सरक्षण मिलना था। उसके हस्तातरण का प्रबध होना था। दाता पर उसके खर्च का भार न पडे, ऐसी सबकी भावना थी। इस सब काम के लिए विनोबा ने एक ट्रस्ट मुकर्रर किया, जिसमे दाता के अतिरिक्त, उसकी सलाह और अनुमति से हरिजन भाइयों के दो प्रतिनिधि रखे तथा एक श्री व्यकट रगा रेड्डी का नाम रखा, जो उस समय आन्ध्र प्रदेश काग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष थे। एक नाम गॉव के पटेल का रखा। जो ट्रस्ट-कमेटी बनी थी, उससे हरिजन भाइयो को भी पूरा सतोष हुआ, दाता को भी सतोष हुआ और काम के बारे मे भी निश्चितता का अनुभव सबने किया।

● ● ●

भीम-जरासंध, राम-लक्ष्मण बने : ५ :

तगलपल्ली
१९-४-'५१

रोज की तरह सबेरे प्रार्थना हुई। प्रार्थना के बाद विनोबा किसीसे कुछ बोलते नही है। अपने कार्यक्रम मे व्यस्त रहते है। स्वाध्याय चलता है। कुछ शहद, पानी या दही-दूध का जलपान लेते है और कूच होता है। परतु आज जैसे ही प्रार्थना समाप्त हुई, उन्होंने ट्रस्टियो से बात करने की इच्छा प्रकट की। लोग प्रार्थना के लिए आये ही थे—विनोबा ने गभीरता से चद बाते समझायी। उनकी जिम्मेवारी का उन्हे भान कराया। "मेरा ध्यान इधर रहेगा। यहाँ के काम का असर सारे देश पर होगा।" लगता था, बहुत कुछ मन मे भरा है। पर कहना नही चाहते। थोडे शब्दो मे सारी भावना और प्रेरणा का खजाना पोचमपल्लीवालो को सौपकर मौन रहे। चेहरे पर चिता नही थी। चितनोत्तर समाधान था। यह भी प्रतीत होता था कि रात को नीद ठीक नही आयी है। परन्तु सवेरे की सारी बातचीत वैशिष्ट्यपूर्ण थी, मानो कोई साक्षात्कार ही हुआ हो रात को। पोचमपल्ली से कूच किया, तो गाँववालो ने "रमारमण गोविंदो हर" का उद्घोष किया। विनोबा ने पुन. इस उद्घोष को दोहराया। काफिला निकल पडा। गाँववाले भी—हरिजन-गैरहरिजन—सभी साथ निकल पडे। फिर कब आयेगे, कौन जानता था? कल की घटना से सारा गाँव मत्र-मुग्ध था। सत को रोक नही सकते, तो जितना हो सके—साथ तो हो ले। भजनानद मे लोग एक मील तक निकल आये।

आखिर विनोबाजी ने उन्हें रोका। उनकी तरफ मुडकर उन्होने दोनो हाथ जोडकर तेलुगु मे कहा : "अदरिकी नमस्कारम्!" यानी 'सबको

नमस्कार।' लोगों ने भी भक्तिभावपूर्वक प्रणाम किया। क्षणभर सब रुक गये। सबको जाने का इशारा करके विनोबा आगे बढे। पोचमपल्लीवालो के कदम बडी मुश्किल से गॉव की ओर मुडे।

भीमनपल्ली, धोतीगुडा, धर्माजीगुडा होते हुए आठ बजे तगलपल्ली पहुँचे। पहले रोज पोचमपल्ली मे इर्द-गिर्द के देहातो से काफी लोग आये थे। भूदान की बात चारो ओर फैल चुकी थी। विनोबाजी तगलपल्ली जा रहे है, यह भी लोगो को मालूम हो चुका था। इसलिए सिर्फ बीच मे आनेवाले गॉव मे ही नही, बल्कि खेतो मे, जगलो मे और बीच मे पडनेवाले एक ताड-वन मे भी, जगह-जगह कही पचास, कही पचीस, कही सौ और कही दो सौ किसान कधे पर कबल धारण किये घुटने तक की धोती और हाथ मे लकडी लिये हुए विनोबाजी का स्वागत करने और उन्हे दिल भरकर देखने के लिए खडे थे। विनोबाजी दुखियों से मिलने के लिए आनेवाले है, ऐसी खबर तो गॉववालो को पहले से ही थी। पर कोई भगवान् का भक्त, गाधी का बेटा जमीन दिलाने आया है, यह बात कल की घटना से चिनगारी की तरह फैल गयी थी, और यही वजह थी कि लोग भूमि दिलानेवाले इस फकीर को देखने के लिए जगह-जगह बडी सख्या में जमा हुए थे।

राज्य-रहित जमाना

रास्ते मे बहुत बडा ताड-वन लगा था। उसके सम्बन्ध मे लोगो ने बताया कि पुलिस-एक्शन के पहले यह वन इतना घना था कि रास्ता भी नही सूझता था। उसकी तुलना मे आज वन आधा भी नही रहा था। पुलिस-एक्शन के बाद कुछ दिनो तक जो राज्यरहित जमाना बीता, उस अवधि मे जिस-जिससे बन पडा, सबने ताड-वृक्ष काट लिये, किसीने मकानों के लिए, तो किसीने बेचकर पैसा कमाने के लिए।

तगलपल्ली पहुँचने पर मालूम हुआ कि गॉव में दो पक्ष है। दो सगे भाई आपस मे लड रहे है—कोर्ट-कचहरियो मे हजारो रुपये बर्बाद

कर चुके है। इन्ही दोनो के कारण गॉव मे भी दो पक्ष पडे हुए है। विनोबा ने दोनों को अपने पास बुलाया। एक—व्यकट रेड्डी—के यहॉ तो हम ठहरे ही थे, दूसरे नरसिह रेड्डी। व्यकट रेड्डी कम्युनिस्टो के भय से अक्सर हैदराबाद रहते। हमारे आने की खबर पाकर एक रोज पहले ही घर आये थे। उनकी पत्नी तो हमारे पहुँचने के बाद घर पहुँची थी। दूसरा भाई पडोस मे ही रहता था। झगडा आपसी था, फिर भी एक भाई कम्युनिस्टो का मददगार समझा जाता था, तो दूसरा भाई काग्रेस और सरकार का।

भीम-जरासंध

गॉववालो ने विनोबाजी से साफ कहा : "ये दोनो भाई लडते है, गॉव तबाह हो रहा है। दोनो की लडाई मे गॉववाले पिसे जा रहे है।"

विनोबा ने अपने तरीके से दोनो से बात की, सबके सामने। पूछा : "तुम दोनो कितने बरस और जीनेवाले हो?"

"हमारा एक पॉव श्मशान मे है और एक यहॉ"—एक ने जवाब दिया। दूसरे ने भी अपनी अनुमति इसी वक्तव्य के पक्ष मे प्रकट की।

"फिर यह लडाई और यह तबाही किसलिए?"

"आप जैसी आज्ञा दे।"

"पच जो फैसला दे, उसे मजूर कर लेगे न?"

"जरूर कर लेगे।"

लोगो के दिलो से मानो एक बडा भारी बोझ उतर गया।

लेकिन विनोबा का काम इतने से पूरा नही होता था। शाम को प्रार्थना-प्रवचन मे दोनो को मच पर बुलाया। जनता से कहा कि "ये दोनों भाई अब तक भीम-जरासध थे। अब आज से इनके झगडे मिट गये है।" दोनो ने विनोबाजी को प्रणाम किया। दोनो मच पर एक-दूसरे से गले मिले। नब्बे एकड जमीन का दान घोषित किया और आगे चलकर गॉव की सेवा करने का अभिवचन दिया। जो भाई गॉव छोडकर

हैदराबाद रहते थे, उन्हें कहा कि "तुम्हें अब हैदराबाद रहने की जरूरत नही है।" और गॉववालो को भी समझाया कि "आपके गॉव का कोई मनुष्य आपके डर से बाहर गॉव चला जाता है, यह आपके लिए असह्य होना चाहिए। **हम सब जीयेंगे तो एक साथ, मरेंगे भी एक साथ,** ऐसी गॉववालो की भूमिका होनी चाहिए।"

धन मे धन प्रेमधन

दोपहर को गॉववालो से जो चर्चा हुई थी, उसका जिक्र करते हुए बोले :

"एक भाई कहने लगे कि गॉव मे कुछ लोग तो बहुत गरीब है और कुछ लोग श्रीमान् है। पर ऐसा तो हरएक गॉव मे होता है। कुछ लोग श्रीमान् होते है और बहुत-से गरीब होते है। उनके बीच मे, श्रीमान् और गरीबों के बीच मे, जो झगडे है, उनको मिटाने का रास्ता मेरे पास है। वह रास्ता क्या है? यही है कि अपने पास जो है, वह दान देते जाओ। भगवान् ने हमे ये जो दो हाथ दिये है, वे इस वास्ते दिये है कि हम दूसरो को दान दे। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता मे यही रास्ता बताया है। उन्होने कहा है कि हरएक मनुष्य को चाहिए कि अपने पास जो कुछ है, वह दूसरो को दान दे। अगर हम दान देते है, तो वह दस-गुना पैदा होकर दुनिया सुखी होती है। और अगर हम दान नही देते है एव सारा अपने पास रख लेते है, तो सारा देश दुःखी हो जाता है। फिर अपने पास धन रखनेवाला मनुष्य मर जाता है, तो लोग कहते है, 'बहुत अच्छा हुआ—रावण मर गया।' लेकिन जब दुनिया छोडकर जाते है, तब सबका प्रेम-सम्पादन करके ही हमको जाना चाहिए। कुछ लेकर नहीं जायेगे। राम गया, तो वह कुछ ले नही गया और रावण गया, वह भी कुछ ले नही गया। लेकिन राम गया, तो उसका अच्छा नाम रहा और रावण गया, तो उसका बुरा नाम रहा। रामचद्र गये, तो सारी दुनिया का प्रेम सपादन करके गये और रावण गया, तो सबका तिरस्कार सपादन करके गया। इसलिए इस दुनिया मे सपादन करने लायक और

कोई धन है, तो वह प्रेम ही है। जिसने प्रेम-संपादन नहीं किया और लाखों रुपये कमाये हैं, उसने सब कुछ गँवाया। लोग कहते हैं कि इस गाँव में कम्युनिस्टों का डर है। हम पूछते हैं कि कम्युनिस्ट कोई जंगली प्राणी होता है? शेर होता है या शेर-बच्चा होता है? कौन होता है? तो कहते हैं कि वे मनुष्य ही होते हैं। फिर मनुष्यों का डर आप क्यों रखते हैं? अगर हम प्रेम से रहते हैं, एक-दूसरे को मदद देते हैं, तो यह सारा गाँव अयोध्या नगरी बन जायगा, लेकिन यहाँ तो झगड़े ही चलते हैं। एक-दूसरे को प्रेम नहीं देते हैं, तो बाहर से यहाँ पुलिस आकर पीटती है, कम्युनिस्ट आकर पीटते हैं, और भी कोई आकर पीटेंगे।"

अन्त में हिंसक कार्रवाइयों से बाज आने की प्रेरणा देते हुए कहा : "भाइयो, एक ही बात कहकर खतम करता हूँ। जब तक आपका भरोसा बंदूक या पिस्तौल पर रहेगा, तब तक आपकी कोई प्रगति होनेवाली नहीं है। इसलिए चाहे कम्युनिस्ट हो, चाहे सोशलिस्ट हो, चाहे कांग्रेसी हो, सबको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान की उन्नति के लिए सिवा अहिंसा के दूसरा कोई रास्ता नहीं है।"

जमीन दिलाकर जा रहा है

लौटते हुए लोग नव्वे एकड़ जमीन की ही बातें करते गये। गाँव में भी यही एक चर्चा जारी रही। "नव्वे लोगों की रोटी का इन्तजाम हो गया न? कोई मामूली बात है?" हर कोई एक-दूसरे से कहने लगा। "कम्युनिस्टों ने तो सिर्फ वादे ही किये थे, किन्तु देखो, गांधी बाबा का बेटा आया, तो जमीन दिलवाकर जा रहा है।"

सहभोजन

ग्राम की सभा में जो मांगल्य प्रकट हुआ, उसमें रात को और भी अभिवृद्धि हुई। मानो दिनभर के प्रयत्नों पर कलश चढ़ गया। दोनों भाई और दोनों के दो भतीजे (तीसरे भाई के पुत्र) अनेक बरसों बाद, शायद पचीस बरस के बाद हम सबके साथ एकत्र भोजन के लिए

बैठे। बडे भाई की पत्नी ने सबको परोसा। नरसिंह रेड्डी तो इतने प्रभावित हुए कि उन्होने विनोबा का सारा साहित्य खरीद लिया और दूसरे रोज उन्होने हमारे साथ चलने की इजाजत भी मॉगी। विनोबा ने खुशी से चलने की अनुमति दे दी।

हकीम ने मर्ज चीन्हा

भीम-जरासध के रूप मे तेलगाना के प्रश्न का आज एक और पहलू प्रकट हुआ और वह भी बहुत अहम पहलू। अब हकीम ने मर्ज को ठीक-ठीक चीन्हा था। इलाज भी, जो परिस्थिति मे से ही सूझा था, लागू होता नजर आ रहा था। आज गॉव मे भय और हिसा के स्थान पर कौटुम्बिक भावना और पारस्परिक प्रेम का बीज बोया गया। गॉव की हवा बदल गयी। भूदान की गगोत्तरी वेग से आगे बढने लगी। ● ● ●

साम्ययोग के सप्त सोपान : ६ :

सरवेल

२०-४-'५१

गत वर्ष बुद्ध-जयती के अवसर पर यहाँ श्री नारायण रेड्डी ने सर्वोदय-केंद्र शुरू किया है। पहले से यहाँ बीमारो की सेवा का काम चलता था। अब उसके साथ कताई, बुनियादी-शाला, ताडगुड-केंद्र आदि काम भी शुरू हुए है। कस्तूरबा-केंद्र भी चलता है।

विनोबाजी करीब ७-३० बजे यहाँ पहुँचे। गाँव के लोगो ने अनेक प्रकार के वाद्यो और गीतो से स्वागत किया। मुख्य द्वार के भीतर आने पर देखा कि दो तरफ 'व्ही' के आकार मे दो पक्तियाँ मकानो की है, बीच मे एक छोटा मडप और पीछे नारायण रेड्डी का सेवा-केंद्र। निवास पर पहुँचते ही चदन, माला, दीप आदि होने पर विनयाश्रम के स्वामी सीतारामजी ने वेदपाठ किया। फिर लक्ष्मीबाई सगम तथा श्री वैद्यनाथन्जी आदि ने यात्रा का उद्देश्य समझाकर लोगो को ग्राम की प्रार्थना मे उपस्थित होने के लिए कहा।

९ बजे गाँव-प्रदक्षिणा के लिए विनोबा निकले। पहले कस्तूरबा-केंद्र देखने गये। रगावली आदि से केंद्र खूब सजाया गया था। दो बहने इस केन्द्र मे कार्य करती है। पूर्व-बुनियादी और बुनियादी, दोनो उम्र के बालक आते है। प्रौढ-शिक्षा का भी काम चलता है। बच्चो का काम देखकर और उनके मुख से कुछ गीत-कहानी वगैरह सुनकर विनोबा गाँव के अन्य भाग देखने गये।

गाँव दिखाने के लिए अक्सर कार्यकर्ता ही मार्गदर्शन करते है और योजनापूर्वक सारा गाँव दिखाते है। आज विनोबा अपनी इच्छा से गाँव

देखना चाहते थे, इसलिए जिधर उनकी इच्छा होती, उस तरफ वे मुडते और सारी भीड़ उनके पीछे हो लेती।

कहीं धूप, कहीं छाँह

हरिजनो के मुहल्ले मे गये, बुनकरो के मुहल्ले मे गये, और भी मकानों मे हो आये। हर घर लिपा-पुता, लाल, सफेद और पीली मिट्टी की विविध अल्पनाओ से चौक पूरे हुए। द्वार पर आम के तोरण। सारा कितना स्वच्छ और सुन्दर! बुनकरों के घरो मे गये, तो करघों के इर्दगिर्द सारी भूमि अल्पनाओं से सजायी हुई। पॉव रखते सकोच होता था।

बुनकरो मे दो प्रकार दिखे। सतुष्ट और चिंतित। चिंतित वे, जो केवल मिल के कोटे पर आधार रखते थे, महीने मे एक हप्ता बुनते, तीन हप्ता वेकार! सतुष्ट, वे थे, जो हाथ-कता बुनते थे। उनका करघा कभी खाली नही रहता। यह चित्र और वह चित्र! दोनो के घरों मे अल्पनाएँ थीं, पर एक घर मे छाया थी उदासीनता की, दूसरे मे प्रभा थी समाधान की। एक घरवाला अपनी दुखभरी गाथा सुना रहा था कि सूत नही, काम नही, दाम नही और इसलिए पेटभर रोटी का सामान नही। दूसरा भी वाते करता था, पूछे हुए प्रश्नो का जवाव देता, परन्तु करघे पर वैठे-वैठे और हाथ से काम करते-करते। गर्दन ऊपर उठाने की फ़ुरसत नहीं। मिलों के हिमायती, खादी के विरोधी, वाहर से लॉग-स्टेपल कपास मॅगाने की सिफारिश करनेवाले अर्थशास्त्री एक वार हिन्दुस्तान के देहातो मे घूमकर यह धूप-छॉह का दृश्य देखने का कष्ट करे, तो देश का कितना उपकार हो।

समस्या का हल

तेलगाना-यात्रा के अव तक के इस पचास मील के प्रवास मे जगह-जगह लोग कम्युनिस्टो से कम-वेशी प्रमाण मे त्रस्त पाये गये थे। जगह-जगह उनके द्वारा पहुँची पीडा का हाल सुना और देखा था, लेकिन इस गॉव के लोगो ने वताया कि यद्यपि इर्दगिर्द के लोग कम्युनिस्टों की वजह

से कुछ परेशान है, यहाँ अमन है, कोई तकलीफ नहीं है। विनोबा को इस अमन का कारण खोजते देर नही लगी। श्री नारायण रेड्डी यहाँ कई दिनो से सेवा-कार्य मे जुटे हुए थे। उनके पास जो जमीन थी, उसमे से उन्होने दो सौ से अधिक एकड जमीन गरीब किसानो मे बॉट दी थी। इसलिए, यद्यपि इर्दगिर्द के लोग कम्युनिस्टों के कारण कुछ त्रस्त थे—यहाँ उनका प्रवेश भी नहीं हो सका था। कम्युनिस्ट-सवाल को पैदा ही न होने देने का यह एक राज-मार्ग था, जिसकी ओर ध्यान दिलाते हुए सध्या-प्रवचन मे विनोबा ने समझाया कि "जहाँ कुछ-न-कुछ सेवा चलती है, वहाँ कम्युनिस्टो के लिए कोई क्षेत्र नही रहता।"

अब तक कम्युनिस्टो के काम का जो अनुभव हुआ था, उसके आधार पर उनके काम करने के तरीके के बारे मे कुछ साफगोही की आवश्यकता थी।

विनोबा ने कहा . "वे लोग गरीबों मे घूमते है, कष्ट उठाते है, इसका मुझे आनन्द है, लेकिन उन्होंने काम करने का जो तरीका अख्तियार किया है, वह गलत है। उन लोगो ने हिसा का तरीका अख्तियार किया है। लेकिन वे हिन्दुस्तान की सभ्यता को जानते नहीं। यह देश इतना विशाल और पुराना है कि यहाँ की सभ्यता का खयाल रखे बिना जो यहाँ काम करना चाहेगा, वह कामयाब नहीं होगा। बाहर के राष्ट्रों मे बहुत हिसा चलती है और वे लोग युद्ध के बाद युद्ध करते रहते है। यदि हिन्दुस्तान मे वह तरीका चला, तो हिन्दुस्तान बरबाद हो जायगा।"

कम्युनिस्टो के काम के बारे मे भी कहा :

"निजाम के और रजाकारो के जुल्मों से जब सारे लोग भयभीत हो गये थे, दब गये थे, तब सभव है, कम्युनिस्टो ने लोगो को जगाया हो, उनको ढाढस बँधाया हो, लेकिन जब हिन्दुस्तान मे लोकसत्ता आ गयी है, तब हिसा का आश्रय लेना गलत है।"

विनोबा ने यह आशा प्रकट की कि यद्यपि कम्युनिस्टो के कुछ साथी

इस बारे मे सोचने से भी इनकार करते हो—उनमे जो जिम्मेदार है, वे ऐसा नही कर सकते। सोचने से इनकार करने को भी विनोबा ने जडता ही कहा : "लेकिन कम्युनिस्टो को सही रास्ते पर लाने का तरीका यही है कि दूसरे लोग सेवा मे लग जायँ। मुझे खुशी है कि यहाँ कुछ लोगो ने वह मार्ग अख्तियार किया है।"

'तीन पेपर्स'

फिर विनोबा ने यहाँ के सेवको को काम की तीन कसौटियाँ बतायी। एक तो यह कि ताड-गुड बनाने का जो काम यहाँ चल रहा है, उसकी परिणति सपूर्ण नशाबन्दी मे होनी चाहिए। इन अमृत-वृक्षो को आज जो जहर का वृक्ष बना दिया गया है, वह रुक जाना चाहिए। दूसरी कसौटी बतायी—सब गाँवो को खादीमय बनाने की। तीसरी कसौटी बतायी—गाँव मे न कोई बिना काम का रहे, न बिना अन्न का। "ये तीन पेपर्स मैने आपके लिए दिये है, इनमे आपको पास होना है।"

सेवक-सेना

लेकिन अन्त में एक बहुत महत्त्व की बात समझायी—सेवको की सेना तैयार करने की। "यह नही समझना चाहिए कि सेवा करने का कुछ ही लोगो का धधा है और बाकी सब लोग स्वामी है। यहाँ आश्रम मे जो सेवक इकट्ठे हुए है, उनके समान पाँच-पचास लोग गाँव मे तैयार हो जाने चाहिए।"

इस सबध मे वानप्रस्थ-आश्रम की योजना को समझाते हुए कहा ·

"पहले हिन्दुओं मे ऐसी व्यवस्था थी कि हर मनुष्य वानप्रस्थ बनकर सबकी सेवा मे लग जाता था, परन्तु अब वानप्रस्थ तो खतम ही हो गया। विवाह करके लोग आमरण ससार मे फँसे रहते है। होना यह चाहिए कि थोडे दिन लडके-बच्चो की सेवा करके समाज की सेवा मे लग जाना चाहिए। चार आश्रमों मे से एक वानप्रस्थ आश्रम होता है,
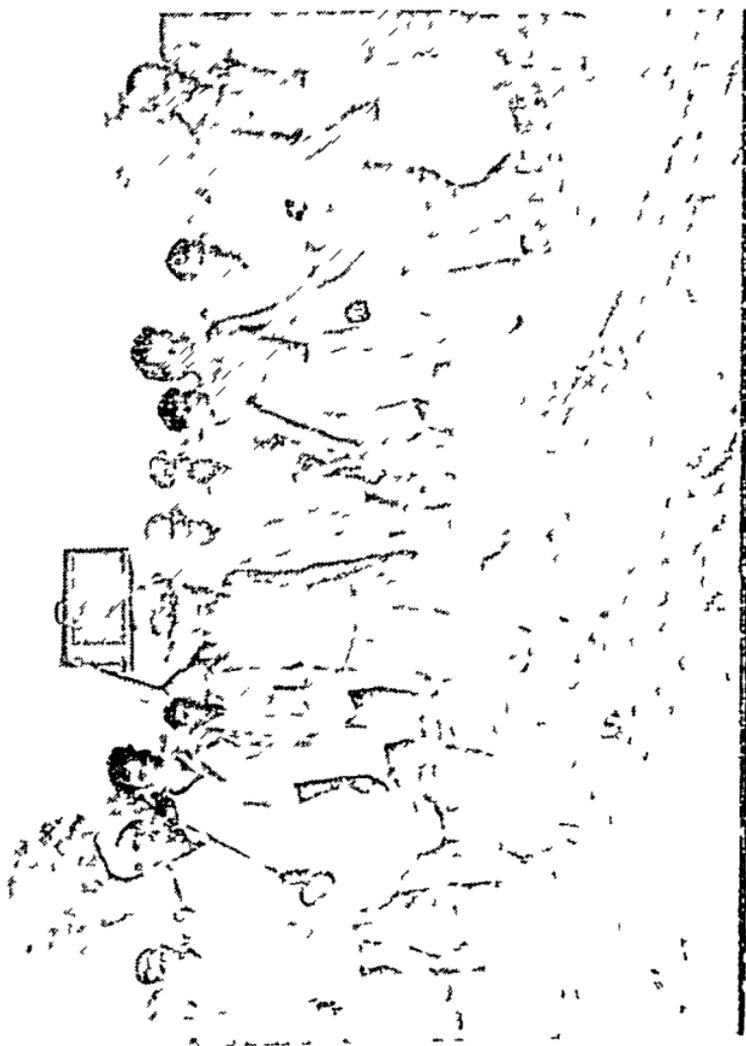
गंगा नदी पार करते हुए। लेखक के सिर पर विनोबा की थाती।

विनोबा का न्यायालय। वहाँ सरकारी कानून नहीं—भगवान् का कानून चलता है। वहाँ हरएक को अपनी भूल स्वीकारनी होती है।
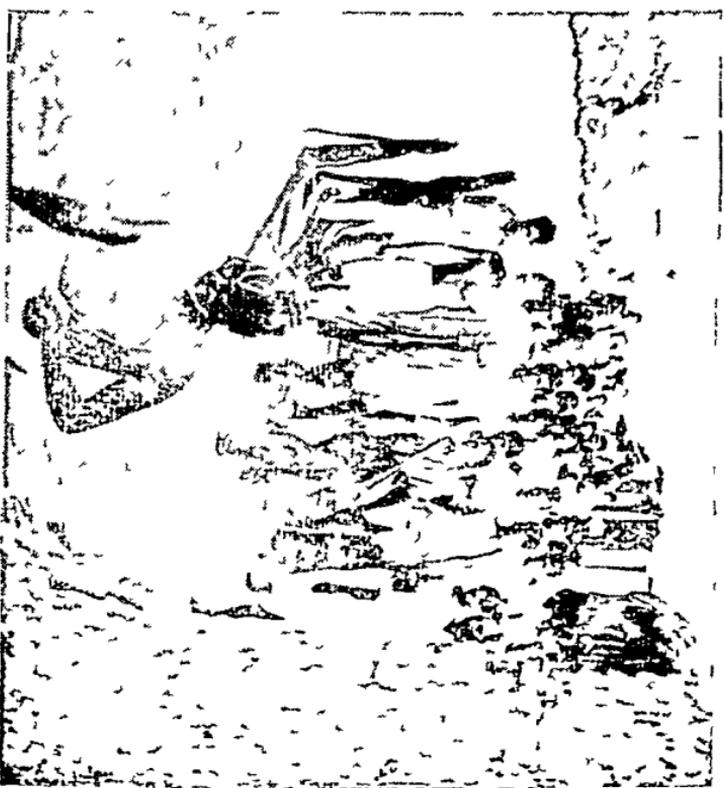
गाँव का निरीक्षण करने निकलते है, तो गाँववाले साथ हो जाते है। घर-घर मे जाकर विनोबाजी उनका सुख-दुख पूछते है।

याने चार लोगो मे एक समाज की सेवा के लिए तैयार ही होता है। याने आपकी इस बारह सौ की जनसख्या मे से तीन सौ सेवक मिलने चाहिए। इसलिए मै चाहूँगा कि आप लोगो मे जो चालीस-पैंतालीस बरस की आयु के लोग है, स्त्री हो या पुरुष, मन मे विचार करे कि अब विषय-वासना से मुक्त होना है और गाँव की सेवा मे लग जाना है। स्वयसेवकों की कितनी बडी सेना हिंदू-धर्म ने तैयार की है। लेकिन हम आज धर्म का केवल नाम लेते है, धर्म तो भूल ही गये है। ·· ऐसे सेवा-केन्द्र के लिए इन लोगो को बाहर से सेवक लाने की चिन्ता करनी पडती है, लेकिन मुझे तो इस गाँव के मनुष्य सेवक ही दिखाई देते है। वे सेवा मे क्यो नही लग जाते ?" और फिर अन्त मे कहा : "मनुष्य-जन्म बहुत पुण्य से प्राप्त होता है। इसलिए आपको अगर यह विचार जँच जाय, तो विषय-वासना से आप मुक्त होने का प्रयत्न कीजिये और सेवा मे लग जाइये।"

सप्त सोपान

यहाँ विनोबाजी के हाथों आश्रम की नींव भी डाली गयी थी, इसलिए सेवको को अपनी जिम्मेवारी का भान कराते हुए विनोबा ने कहा "अब आश्रम जैसी सस्थाओ मे काम करनेवाले कार्यकर्ता अगर अपने जीवन की आवश्यकताओ के लिए काचनाश्रित रहेंगे, तो क्राति नही कर सकेंगे। उन्हे परिश्रम द्वारा अपने जीवन की बुनियादी आवश्यकताओ की पूर्ति करनी चाहिए। अन्न, वस्त्र, तरकारी, फल, दूध तथा शिक्षण और स्वास्थ्य, ये ऐसी बाते है, जो आश्रम मे ही पूरी हो सकती है।" स्वास्थ्य के लिए औषधियों का विशेष सहारा लिये बिना कुदरती इलाज का निष्ठापूर्वक प्रयोग करने की सलाह दी। स्वावलम्बी साम्ययोग की यह सप्तपदी बताकर विनोबा ने आश्रम की मजबूत नींव डाली। ● ● ●

वामन के तीन कदम : ७ :

वाविळापल्ली
२१-४-'५१

सरवेल से वाविळापल्ली का सीधा रास्ता सात मील ही था, परन्तु बीच मे नारायणपुर के लोगो ने चाहा कि विनोबाजी उनके गॉव से होकर जायॅ। छह मील का फर्क पडता था, परन्तु विनोबा प्रेम-भरे आग्रह को न टाल सके।

बडे सवेरे ठीक पॉच बजे सरवेल से रवाना हुए। दिन निकला ही था कि नारायणपुर पहुॅचे। हवा खूब जोरो से चलती थी और वह भी सामने से, लेकिन उसकी शीतलता उत्साहप्रद थी। गॉव पुरानी राजधानी का—इसलिए कोट, किला, दरवाजे, सडके, सभी कुछ था, परन्तु इतने सवेरे भी सब बिलकुल साफ-सुथरा, कई जगह आम के तोरण और द्वार। रात-ही-रात इतना सब खडा कर दिया था!

दवा और फीस, दोनो एक

गॉव मे बस्ती मुसलमानों की अधिक थी। भूदान में चौवन एकड अड्तीस गुठा जमीन मिली, जो एक मुसलमान भाई ने दी।

दान स्वीकारते हुए विनोबा ने चन्द शब्द कहे :

"आपके गॉव मे आना नहीं था, जाना दूसरी तरफ से था, लेकिन छह मील का चक्कर स्वीकार करके भी मैं इधर से आ गया, क्योंकि आपके गॉववालों की बहुत इच्छा थी। मैंने भी अपने गरीब भूमि-हीन भाइयों के लिए कुछ सौदा कर लिया और आना कबूल कर लिया!"

फिर एक हकीम की तरह तेलगाना की हालत की चिकित्सा करते हुए कहा :

"हमारे गाँवों को एक बडा भारी रोग हो गया है। श्रीमान् गरीबों को चूसते है। हमने सोचा कि इस बीमारी की दवा होनी चाहिए। श्रीमान् अगर जमीनों का दान करते हैं, तो रोग की दवा भी होती है और हमारी फीस भी वसूल होती है। याने दवा और फीस, दोनो एक ही है।

"हमे खुशी है कि आप लोगों ने यहाँ के हरिजनों के लिए दान देना स्वीकार किया। इसी तरह सब लोगो को चाहिए कि अपने गाँवों की फिक्र करे। पाँच अँगुलियो की तरह हम समाज मे पाँच भाई है और यह पाँच अँगुलियाँ समान तो नही होतीं? छोटी-बडी होती है, लेकिन सब मिलकर काम करती है। उसी तरह गाँव में कुछ छोटे, कुछ बडे लोग रहते है। सब मिलकर काम करे, तो सब सुखी होंगे।

"मै आशा करता हूँ कि आज जो काम हुआ है, वह एक प्रारम्भ है, यह आगे बढेगा। यही खतम नहीं होगा।"

पोतना महाकवि के भू-भाग मे

अभी हमने ऊपर कहा है कि नारायणपुर पुरानी राजधानी का गाँव है, जिसके अवशेष अब भी नजर आते है। नारायणपुर की राजकोंडा पहाडी मे ही तेलुगु के प्रसिद्ध कवि पोतना को राजा ने गिरफ्तार कर रखा था और चाहा था कि पोतना अपना महान् ग्रन्थ राजा को समर्पित करे। पोतना एक किसान थे, किन्तु जितने महान् विद्वान्, उतने ही परम भक्त। उन्होने तो जो कुछ लिखा था, वित्तैषणा या लोकैषणा की भावना से नही, उपासना की उत्कटता से। और सबके लिए लिखा था, किसी राजा के लिए नही। राजा के बहनोई जब पुनः पोतना को समझाने आये, तो पोतना अत्यधिक विह्वल हो उठे। उनका निश्चय अटल था। उनसे सहा नही गया। एक सरस्वती की प्रतिमा थी, जिसे वे अपनी आराध्य देवी मानते थे, जो उनकी स्फूर्ति का स्रोत थी। उसके सामने वे चले गये कि उससे कुछ मार्गदर्शन मिले। जाकर खडे रहे तो देखा कि उस प्रतिमा की आँखों से अश्रु निखर रहे है। सहसा हाथ जोडकर पोतना कहने लगे :

"अयि मातृदेवि, यह क्या कर रही हो—क्या तुम समझती हो कि मै वह भागवत, वह कलाकृति, वह तुम्हारी स्फूर्ति—उस राजा को बेचने का पातक करूँगा ? क्या मै सरस्वती की प्रसादी को वेश्या के बाजार मे ले जा रखूँगा ? हर हर ! मुझसे ऐसा पातक नही होगा। तुम शात हो। अयि मातृदेवि ! तुम शात हो।"

और फिर सरस्वती की ऑखो से अश्रु निकलना बद हुआ।

हमारे सहयात्री श्री केशवरावजी को आज विशेष स्फूर्ति मालूम हुई और कितनी ही देर वे पोतना की भागवत का कितना ही अच्छा-अच्छा अश सुनाते रहे। विनोबा ने कहा कि "जिस भाषा मे पोतना जैसे महान् लोगो ने अमर काव्य लिख रखा है, उस भाषा के लोग कभी न कभी ऊपर उठे बिना नही रहेगे। विनोबा को पोतना के लिए ज्ञानदेव और तुलसीदास के समान ही आदर है।"

वाविळापल्ली मे निवास-स्थान पर एक छोटा-सा मडप लगाया गया था। अनेक फल-फूलों से भरी थालियो से स्वागत किया गया। बालगोपाल मडली स्वागत मे रहती ही है। विनोबा ने सारी पुष्प-मालाएँ और फल सब बालको को बॉट दिये। बालकृष्ण का विधिवत् पूजन ही मानो हो गया। इतने मे घर की मालकिन आरती से सजी थाली लेकर आयी। उस बहन से कुकुम-तिलक लगवाने के बजाय विनोबा ने अपने हाथ में थाली ले ली और वहॉ जितनी बहने थीं, सबको तिलक कर दिया। हमारे साथ जो बहने थी, उनका भी नम्बर उसमे आ गया। इस बहती गगा मे हाथ धोने से वे क्यो चूकती ?

ऐसे अनेक सुखद प्रसग और भाव नित्यानुभूति के विषय बन गये हैं। खुद विनोबा ने कहा : "इस पैदल यात्रा मे जो आध्यात्मिक और गहरे अनुभव मुझे मिल रहे है, उसका अश भी रेल की यात्रा मे मिलना सभव नहीं था। पहले, ट्रेन का प्रवास कुछ कम नहीं किया था, लेकिन ऐसे अनुभवो का दर्शन उसमे नही हो सका था।"

भीतर जिस बरामदे मे विनोबा की चारपाई रखी गयी थी, वहाँ दीवार पर हनुमान की एक तसवीर लग रही थी—प्रेम और भक्ति-भाव से परिपूर्ण विशाल मुद्रा थी, कीर्तन-रग मे रमी हुई चैतन्य महाप्रभु की याद दिलाने-वाली। बहुत देर तक विनोबा इस तसवीर को निहारते रहे। उनकी खुद की मुद्रा पर भी इन दिनो उनकी भीतरी सकल कल्याणकारी भावना पूरी तेजस्विता के साथ प्रतिबिम्बित हो रही थी। तसवीर देखने मे विनोबा ध्यान-मग्न हो गये।

इस प्रदेश से एकरूप होने की उनकी अनेकविध प्रक्रियाएँ देखकर अचभा होता है। नित्य तेलुगु गीता और पोतना-भागवत का स्वाध्याय तो उच्च स्वर से चलता ही है, मानो सारी शुभ भावनाओ का प्रकट आवाहन होता रहता है। बातचीत मे यद्यपि स्वय तेलुगु ज्यादह बोल नही पाते, बोलनेवाले से तेलुगु मे बोलने के लिए कहते है। गॉव मे पहुँचने पर अक्सर घर-घर हो आते है। रसोई देखते है। पूजा देखते है। झूला देखते है। गाय-बैल और सारा जीवन ही निहार लेते है। प्रयोगशाला मे वैज्ञानिक किसी नतीजे की खोज मे प्रयोग-मग्न रहता है, उस एकाग्रता से इस लोकान्त मे भी वे एकान्त का अनुभव कर लेते है।

इधर लबाडो की बस्ती ज्यादह है। वे लोग मिलने भी आये थे। राजस्थान से ये लोग गिरोह बनाकर व्यापार आदि के लिए चले हुए है। बरसो से इधर बसे है, परन्तु रहन-सहन सब अभी तक सुरक्षित रखा है। हममे से जो लोग राजस्थानी बोल लेते थे, उन्होने उनसे उनकी बोली मे ही बातचीत की। थोडी देर बाद करीब तीस-चालीस लबाडी बहने आयी। घागरा, ओढनी, और अपने रीति-रिवाज के अनुसार उत्तम-से-उत्तम शृगार किये, सब मानो एक वरदी मे सजी हुई। ऑगन काफी बडा था। ऊँचे स्वर मे उनका गान शुरू हुआ और मुक्त मन से उनका नृत्य।

आज हम जिनके यहाँ ठहरे थे, उन्हे रजाकारो से बहुत तकलीफ हुई थी। फिर कम्युनिस्टो ने भी उन्हे कुछ दिन के लिए हिरासत मे रखा

था। नजदीक की पहाडियो मे उनका डेरा है—वहीं इन्हें पकडकर रखा था। फिर छोड़ दिया।

हम लोग आ रहे थे तब मालूम हुआ कि बहुत पास से कम्युनिस्ट गुजरे है और पहाडी मे चले गये है। उन लोगों के पास अपना रेडियो है। बाहर के जगत् से उनका सम्पर्क रहता है। उनके सघटन की कई खूबियाँ यहाँ मकान-मालिक से मालूम हुईं। वह स्वय अब भी भयभीत नजर आये कि कहीं कोई उन्हें इस तरह बाते करते देख न ले, जिससे पुनः कम्युनिस्टों की हिरासत मे रहना पडे।

जब गाँववाले मिलने आये, तो विनोबा ने भूदान की भूमिका समझायी और जमीन माँगी, तो मकान-मालिक ने पचीस एकड दिये—और भी लोगों ने थोडा-थोडा दिया।

प्रार्थना के पहले ही मालूम हुआ कि अभी-अभी पुलिस ने गाँव में से चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया है। इस शका से कि उनका कम्युनिस्टों से कुछ सपर्क है।

इन गिरफ्तारियो का उल्लेख करते हुए प्रार्थना-प्रवचन मे विनोबा ने कहा :

"पुलिसवाले अपना कर्तव्य करते है। आप लोगों को यह ध्यान मे रखना चाहिए कि पुलिस आपकी मदद के लिए है, आपको तकलीफ देने के लिए नही। जो लोग गिरफ्तार हुए है, उन लोगों ने कम्युनिस्टो को मदद दी होगी, तो कम्युनिस्टो के भय से दी होगी या उनके साथ सहानुभूति रखने के कारण दी होगी। यह कोई न समझे कि ये लोग जो पकडे गये है, सारे-के-सारे गुनहगार होंगे। वे अगर बिना डर के जो कुछ हुआ है, पुलिसवालों को सुनायेंगे, तो मैं उम्मीद करता हूँ कि उन्हे भी कोई तकलीफ नही होगी।

निर्भयता की शक्ति

"एक नौजवान मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने एक सवाल पूछा

कि कम्युनिस्ट आते हैं, हमको धमकाते है। हम उन्हें खाना खिलाते है, तो पुलिस हमे डराती है। अगर हम कम्युनिस्टो को खाना नहीं खिलाते है, तो वे मार डालने का भय बताते है। इस तरह रात में कम्युनिस्टों से तकलीफ होती है, दिन मे पुलिसवालो से। ऐसी सूरत में हमे क्या करना चाहिए ?

"मैने कहा कि आप लोगो को निर्भय बनाने के लिए ही मै आया हूँ। अगर कोई जबरदस्ती से आपके घर मे घुसकर खाना माँगता है, तो उसको खिलाने की जिम्मेदारी आप पर नहीं है। उन्होंने कहा कि जिम्मेदारी तो हम पर नही है, लेकिन वे हमको मार डालेंगे तो हम क्या करेंगे ? मैंने उनको समझाया कि परमेश्वर ने जिसका मरण आज लिख रखा है, उसका मरण कभी टलनेवाला नही है। और उसने अगर हमारा मरण आज नहीं लिखा है, तो कोई कम्युनिस्ट हमको मार सकनेवाले नहीं। तो आप लोगो को मरण का डर छोड़ना चाहिए। जो लोग मरने से डरते है, वे जिन्दा नहीं है, लेकिन मर चुके है। आप इतना तो समझते ही है कि हममे से कोई यहाँ रहनेवाला नही है, सारे-के-सारे जानेवाले हैं। जब परमेश्वर का बुलावा आता है, तो हरएक को जाना ही पडता है। इसलिए कोई बन्दूक लेकर हमारे सामने आयेगा, तो उसके सामने छाती खुली करने की हिम्मत हममे होनी चाहिए। वह यदि मारने के लिए आयेगा और अगर वह भी हमारा भाई होगा, तो उस पर हमारे मन मे दया होनी चाहिए। और उसके सामने शाति से खडे हो जाना चाहिए एव कहना चाहिए कि भाई, जबरदस्ती से कोई चीज माँगते हो, तो हम देनेवाले नहीं है। हमें कत्ल करके जो लेना हो, वह ले जाओ। जब हम लोग इस दुनिया को छोडकर जाते है, तो यहाँ का सारा सरजाम साथ लेकर नहीं जाते हैं। यह जो निर्भयता की शक्ति है, खूनी लोगो का सामना करने की शक्ति है, वह शक्ति हम लोगों मे होनी चाहिए।

प्रह्लाद का उदाहरण

"आपने प्रह्लाद का चरित्र सुना है। वह छोटा-सा बच्चा था, लेकिन उसने हिरण्यकश्यपु का सामना किया। एक छोटा-सा बच्चा भी अगर यह समझे कि यह जो देह है, वह मेरा रूप नही है, मै तो परमेश्वर की ज्योति हूँ और यह जो देह है, वह तो एक चोला है, जो मै पहना हूँ, तो वह भी निर्भय हो सकता है। अगर वह यह समझे कि हम तो परमेश्वर की ज्योति है और यह शरीर ऊपर-ऊपर का हमारा एक कपडा है, हम परमेश्वर के प्रकाशमात्र है, तो हिम्मत आ जायगी। लोग मानते है कि हाथ मे बदूक आने से हिम्मत आती है, लेकिन यह बिलकुल गलत खयाल है।

मै भी कम्युनिस्ट हूँ

"यही देखो न कि कम्युनिस्टो ने विचार किया कि गरीब लोगो की सेवा करे। उनका विचार तो अच्छा है, लेकिन उन्होंने जो तरीका अख्तियार किया है, उससे किसानों का कोई लाभ नही हो रहा है, बल्कि किसान भयभीत हो गये है। गाधीजी हम लोगों मे आये और उन्होंने हमको हिम्मत दी, वह आप लोगो ने देखा। अग्रेजो ने हमारे हाथ से शस्त्र छीन लिये थे, तो गाधीजी ने कहा कि हमे शस्त्रो की कोई दरकार नही। और सत्याग्रह की लडाई मे जहाँ तक लोगो ने देखा, स्त्रियों ने—जो कभी घर से बाहर नही निकली थी—भी अपनी जान खतरे मे डाली और हिन्दुस्तान ने ऐसा दृश्य देखा कि हजारो स्त्रियाँ बाहर आ गयी। मतलब उसका यह हुआ कि शस्त्र की ताकत कोई ताकत नही है, आत्मा की ताकत ही सच्ची ताकत है। लेकिन कम्युनिस्टो का अभी तक आत्मा की निष्ठा पर विश्वास नही बैठा, वे शस्त्र पर ही भरोसा रखे हुए है। अगर वे शस्त्र पर भरोसा रखते हैं, तो वे देखेगे कि हिन्दुस्तान के लोग उनके बारे मे कोई सहानुभूति नही रखते। लेकिन अगर वे शस्त्र का विश्वास छोड दे और आत्म-शक्ति पर विश्वास रखे, तो वे देखेगे कि मै भी उनके पक्ष मे दाखिल

होता हूँ। फिर मैं कहूँगा कि मैं भी एक कम्युनिस्ट हूँ, और तुम भी कम्युनिस्ट हो। तो दोनों मिलकर हिन्दुस्तान की सेवा करेंगे। लेकिन उन लोगों का तरीका अभी तक यह रहा कि वे एक-एक गाँव में फूट डालते हैं और मेरा तरीका यह होगा कि सारे गाँव को मैं एक बनाऊँगा। वे एक ही गाँव में एक घरवाले को दूसरे घरवाले के साथ लड़ायेंगे, मैं सब गाँववालों को एक करूँगा।

और भी लो

"अभी देखिये, मैं एक छोटे गाँव में हो आया। उस गाँव को लूटकर आया हूँ। उस गाँव में ५० एकड़ जमीन एक श्रीमान् भाई से गरीबों को दिलवायी। उसके पहले भी ८ गाँवों में इसी तरह १०० एकड़, ७५ एकड़ जमीन लोगों से ली और गरीबों को दिलवायी। आज आपके गाँव को भी कुछ लूटनेवाला हूँ। लेकिन ये कम्युनिस्ट लोग कहेंगे कि जिसके पास ५-५ हजार एकड़ जमीन होती है, वह सौ एकड़ जमीन देता है, तो उससे क्या होगा? तो मैं कहता हूँ कि जरा धीरज रखो, अभी ५ हजार में से जो सौ देता है, वह प्रेम से देता है तो मैं लूँगा और बाकी के ४ हजार ९ सौ एकड़ भी मेरे ही है। जब ये लोग देखेंगे कि हम जमीन देते जाते है—गरीबों को, उससे गरीबों का प्रेम ही हमको मिलता है, तो फिर वे खुद कहेंगे कि और भी ले लो।

हवा बदल जानी चाहिए

"तो फिर कम्युनिस्ट हमको कहेंगे कि कैसा भोला मनुष्य है। लेकिन उनको मैं कहूँगा कि भोला मैं नहीं हूँ, मेरा धंधा मैं जानता हूँ। एक दफा थोड़ी भावना, थोड़ा वातावरण बनने दो कि जमीन गरीबों को देने में लाभ है, फिर एक दफा वातावरण तैयार हो जायगा, तो कानून मैं करा लूँगा। फिर राह नहीं देखनेवाला कि आज सौ एकड़ है, पाँच साल के बाद और १०० एकड़ मिलेगी, और फिर पाँच साल के बाद शेष १०० एकड़ मिलेगी। ऐसे चार हजार मिलने में तो सौ बरस चले जायँगे। बात ऐसी

है कि हवा बदल जानी चाहिए। और हवा बदल जाती है, तो कानून उसके साथ आता ही है। परन्तु मैं वातावरण तैयार करूँ, तो कानून को लोग पसन्द करेंगे। बाप ऐसा ही तो करता है। बच्चे को मिठाई खिलाता है, लेकिन मिठाई देता है, तो वह प्रेम से देता है और तमाचा लगाता है, तो प्रेम से लगाता है। और जो कोई लूटने के लिए आते है, वे बच्चे को मिठाई खिलाते तो है, पर वह प्रेम की मिठाई नहीं होती। लेकिन माता जो तमाचा लगाती है, वह प्रेम का होता है। मै जो जमीन लेता हूँ, वह प्रेम से लेता हूँ।

आज मै वामनावतार हो गया हूँ

मुझे आश्चर्य लगता है कि जहाँ मै जाता हूँ, वहाँ लोग जमीन देने के लिए क्यों तैयार होते है? मै सोचता हूँ कि क्या वह गाधीजी की करामात है? लोग जानते है कि यह गाधीजी का मनुष्य है, इसलिए प्रेम से देने को तैयार होते है। लेकिन इतनी ही बात नहीं है, और भी बात है। गाधीजी की करामात है, लेकिन परमेश्वर की भी करामात है। परमेश्वर की महिमा है कि इतनी सारी जमीन अपने हाथ मे रखकर कोई ले जानेवाला नही है, ऐसा लोग जानते है। आखिर इतनी जमीन को वे खुद भी तो नही जोत सकते है। इसीलिए इतनी जमीन अपने हाथ मे रखने से कोई लाभ नही है, यह बात उनके ध्यान मे आ गयी। इसलिए आज मै वामनावतार हो गया और कहता हूँ कि जमीन दे दो। तीन कदम दोगे, तो भी बस है। लेकिन मुझे जो सौ एकड मिले है, उतने ही मेरे नही है। वे जो चार हजार एकड बचे है, वे सारे-के-सारे मेरे ही है। जैसे वामन के तीन कदमो मे सारा त्रिभुवन आ गया, वैसा यह मामला है। तो यह सारी खूबी अगर गरीब लोग समझेंगे, श्रीमान् समझेंगे और कम्युनिस्ट समझेंगे, तो सारा गॉव सुखी होगा। यह तो मै कम्युनिस्टो का ही काम कर रहा हूँ। यह एक फच्चर है। इस फच्चर को डालता हूँ और फिर उस पर कानून का हथौडा पडेगा। अगर यह फच्चर काम नहीं

देगी, तो हमारा काम सिर्फ कानून से नहीं होगा। इसका आरंभ होता है दान से और समाप्ति होगी कानून से। और कम्युनिस्ट आरंभ करेंगे लाठी से और समाप्त करेंगे कानून से। आखिर में कानून से समाप्ति वे भी करेंगे, मैं भी करूँगा। लेकिन आरंभ में मैं प्रेम और दान चाहता हूँ, और वे लाठी तथा लूट चाहते हैं।"

• • •

परमेश्वर का न्यायालय : ८ :

सिवन्नागुडा
२२-४-'५१

वाविळापल्ली मे वामनावतार की घोषणा करके और जमीन-सम्बन्धी कानून के स्वरूप की कल्पना देकर आज सवेरे सिवन्नागुडे के लिए विनोबाजी ने कूच किया। रास्ते मे अतमपेठ, सोमराजगुडा आदि स्थानो के लोगो का स्वागत स्वीकार कर करीब ७-३० बजे मुकाम पर पहुँचे, तो मालूम हुआ कि एक जमीन्दार ने काफी जमीन अपने कब्जे मे कर रखी है और उनके खिलाफ काफी लोगो को शिकायते भी है। अर्जियाँ आने लगी। कई अर्जियाँ आयी। ३ बजे से विनोबाजी इन अर्जियो का फैसला करने के लिए बैठ गये। किसान और जमीदार, दोनो के सामने अर्जियो की सुनवाई होने लगी। हरएक को दूसरे के खिलाफ कुछ-न-कुछ शिकायत तो थी ही। विनोबाजी ने शुरू मे ही अपनी शर्त बता दी कि यह सरकारी कोर्ट नही है, प्रेम का दरबार है। यहाँ कागजी कानून नही चलेगा—ईश्वरीय न्याय लागू होगा। मै मानता हूँ कि हरएक की कुछ-न-कुछ गलती होगी ही। लेकिन आप यहाँ एक-दूसरे की गलतियाँ बताये, यह नही चलेगा। हरएक अपनी-अपनी भूल स्वीकार करे, तब हम फैसला देगे। जिसकी गलती उसीके मुख से सुनेगे और न्याय नही देगे। न्याय तो परमेश्वर ही दे सकता है। हम तो प्रेम का काम करने आये है। प्रेम का फैसला ही दे सकते है।

जो लोग 'न्याय' देने का दावा करते है, उनके लिए यह विचार कुछ आत्मनिरीक्षण का प्रेरक है। 'जस्टिस और मर्सी' का यह भेद, न्याय और करुणा का यह अन्तर, सभीको समझने की आवश्यकता है।

न्यायालय में भी केवल न्याय की कसौटी पर फैसले नहीं हो सकते—न्यायाधीश कितना ही दावा क्यों न करे। शेक्सपियर ने ठीक लिखा है कि न्याय के इजलास मे भी हमे प्रेम और करुणा का सहारा लेना चाहिए। विनोबाजी ने तो शुरू मे ही कह दिया कि मेरा प्रेम का दरबार है—प्रेम का ही कानून है—यहाँ फैसले होंगे—न्याय की बात यहाँ नही चलेगी। परस्पर सद्भावना पर ही सब निर्भर करता था—और सुतराम् जमींदार की सद्भावना पर, क्योंकि कितने ही मामले ऐसे थे, जिनमे कानून गरीब की कोई मदद नहीं कर सकता था।

अब फैसले होने लगे। बहुत पुरानी जमीनें भी, जो जमींदार के कब्जे मे चली गयी थी, किसानो को वापस मिलीं। कई बरसो पहले खोयी हुई अपनी ३ एकड जमीन को ६०० रुपये देकर फिर से वह जमीन पाने के लिए किसान कोशिश कर रहा था, जमींदार ६०० मॉग रहा था। विनोबाजी ने जमींदार को समझाया कि किसान गरीब है, ६०० वह दे रहा है, ६०० आप मॉग रहे है, उसे दे दो। और जमीन किसान को मिल गयी। एक भाई ने झूठा बयान किया था, विनोबा ने उसे समझाया कि यह ठीक नही है, इस तरह फैसले करते-करते ५॥ बज गये। प्रार्थना का वक्त हो चुका था।

अपने प्रार्थना-प्रवचन के आरभ मे विनोबाजी ने आज के इजलास की कार्रवाई का जिक्र करते हुए कहा कि जितनी अर्जियाँ आयी थी, उनमे बहुत सारी ठीक थीं और उनका हल भी अच्छा हुआ। "गॉव-गॉव मे इस तरह सेवक लोग दोनो पक्षो को साथ बैठाकर बातचीत करेंगे, तो बहुत कुछ काम हो सकेगा और यहाँ की समस्या सुलझाने मे बडी मदद मिलेगी।" सेवको के बारे मे अपना निरीक्षण बताते हुए उन्होंने कहा कि यहाँ कोई सेवक नहीं है, जिसका नतीजा ये झगडे है। विनोबाजी ने आशा प्रकट की कि जन-सेवक आगे आकर इस तरह के कामो को उठा लेंगे।

जो भू-दान मिला था, उसके लिए श्रीमानो और भूमिवानों को

धन्यवाद देते हुए उन्होंने कहा कि जो दान मैं गरीबों की ओर से मॉग रहा हूँ, उसमे केवल गरीबों का ही बचाव नही है, श्रीमानों का भी है।

वित्तस्य गतय:

सपत्ति की त्रिविध फल-श्रुति बताते हुए कहा :

'**दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य**'—खा-पीकर उपभोग करो, या दान करो, या फिर वह ऐसे ही नष्ट होनेवाली है, या तो डाकू ले जायेंगे, या और कोई। विनोबा ने बताया कि जिनके पास हजारों एकड जमीन है, वे उसका उपभोग नही कर सकते। "पेटभर खाओ, लेकिन पेटीभर मत रखो। अगर रखोगे, तो उस पर या तो मेरा हक होगा या कम्युनिस्टों का या डाकुओं का।"

"इसलिए भाइयो! देते जाओ। हमारी माँ ने हमें बचपन मे समझाया था कि देनेवाला देव होता है और रखनेवाला राक्षस।"

अनेक उदाहरणों से समझाया कि संपत्ति एक जगह नहीं रहनी चाहिए। समाज में घूमती रहनी चाहिए। मेघ की तरह बरसनी चाहिए। गेंद की तरह एक के पास से दूसरे के पास जाती रहनी चाहिए। कन्या की तरह प्रेमपूर्वक दूसरों को समर्पण करनी चाहिए। स्वीकार करनेवाले का उपकार मानना चाहिए।

अन्त मे गरीब भूमिहीनों को गाधीजी के सत्याग्रह के रास्ते का चमत्कार समझाते हुए कहा : लूटने-मारने की बात मन में हरगिज मत लाना। उससे कल्याण नही होगा। दीन मत बनना, उद्धत भी मत बनना।

प्रेम का दरबार

इस तरह आज शिकायतों और इजलास के रूप में समस्या का एक और नया स्वरूप और उसका हल प्रकट हुआ। बेदखलियाँ बढाने में हैदराबाद के कानून से मदद मिल रही है। ये ईश्वरीय इजलास उन बेदखलियों को रोकने मे कारगर हो सकते हैं। ईश्वरीय इसलिए कि

विनोबाजी ने शुरू मे ही मुद्दई-मुद्दालयो से कह दिया था कि "इस इजलास मे एक-दूसरे की गलतियाँ नही सुनी जायँगी, अपनी-अपनी गलती हर कोई बतावे। यह सरकारी कानून का कोर्ट नहीं है, यह परमेश्वरीय प्रेम का दरबार है।" वैसा ही हुआ।

कानून जिम्मेवार

जमीदार लोग पुराने काश्तकारो को बेदखल कर रहे है, इसके लिए हैदराबाद का सरकारी कानून भी जिम्मेवार है, जो उन्होंने अभी-अभी जारी किया है, जिससे किसान के अधिकारो की रक्षा होती है। छह साल तक जो किसान किसी खेती पर मेहनत करता है, किसी खेती को खुद जोतता है, उसे फिर मालिक निकाल नहीं सकता। किसान चाहे तो उस खेती को खरीद सकता है, जिसकी कीमत सरकार तय करेगी। याने इस कानून से जमीदारों का कब्जा जमीन पर नही रहेगा। एक परिवार अपने पास कम-से-कम जमीन कितनी रख सकता है, इसकी मर्यादा सरकार तय करनेवाली है। लेकिन भू-स्वामियो को अभी से यह भय हो गया है कि जमीन हाथ से निकली जा रही है। इसलिए वे किसानो को जमीन से बेदखल किये जा रहे है। लोगो को कानून का ज्ञान नही है। कचहरी मे जाकर लडने की हैसियत नही है। जाकर भी फैसला अपने हक मे होगा, इसका कोई विश्वास नही है। भू स्वामियों का और उनके पैसो का प्रभाव अधिकारियों पर पडना स्वाभाविक है, इसलिए बेचारा किसान कचहरी मे जाने की कल्पना ही नही कर सकता। तब आपसी समझौते करवाना बहुत जरूरी हो जाता है। ऐसे समझौते के अभाव मे ही कम्युनिस्टों को मौका मिलता है। जमीदार से तग आकर वे कम्युनिस्टों की शरण लेते है। कम्युनिस्ट लाठी और बदूक की मदद से मामले को सुलझाने की कोशिश करते है। नतीजा यह होता है कि भय, आतक, विद्रोह, दु:ख, सब बढते ही जाते हैं। सबके हृदय मे जो परमेश्वर है,

उसे जगाये बिना और शातिमय तरीके से ही कार्य करने का संकल्प किये बिना एक बुराई मे से दूसरी बुराई निकलने का सिलसिला बद नही हो सकता ।

इस दृष्टि से आज के न्यायालय का दृश्य अद्भुत था। वह कोर्ट था ही नही। दैवी सपत् का दीक्षा-स्थल था जहाँ सचाई, उदारता, त्याग और सद्भाव आदि गुणों का आविष्कार हो रहा था। दस दस, बीस-बीस बरस पुरानी जमीनें जो जमीदारो ने हथिया ली थी, जिनकी थी, उनको वापस मिली। चिर-विरह के बाद माता-पुत्र की भेट हुई। कैसा पावन दर्शन था !

● ● ●

सज्जन-द्रोह का पातक : ६ :

तिरगल्लापल्ली
२३-४-'५१

प्रकृति भी अनुकूल

सिवन्नागुडा से सवेरे पॉच बजे रवाना होकर, रास्ते-भर अत्यत सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देखते हुए करीब ८॥ बजे तिरगल्लापल्ली पहुँचे। कूच के समय गॉव के बाहर तक गॉववाले रामधुन गाते हुए पहुँचाने आये। फिर अत्यत छोटी पगडडी के रास्ते चलना पडा। तीनो तरफ पहाडियॉ, बीच मे सुदर ताडवन। ताडवन पार किया, तो अमराई और अमराई के बाद धान की खेती। फिर पहाडी, और जहॉ-तहॉ ऑखो को प्रसन्न करनेवाले छोटे-छोटे झरने। धान की कटनी हो चुकी थी। इसलिए रास्ता खोजने मे तकलीफ नही हुई। इधर से लोग अक्सर कम गुजरते है। रास्ते मे जितने गॉव पडे, कम्युनिस्टो के अड्डे माने जाते थे। एक झरने के पास बडी चट्टान के सहारे कुछ सोल्जरो के साथ एक अफसर कम्युनिस्टो की खोज मे डेरा डाले हुए थे। चट्टान पर उनकी घडी और अखबार पडे थे। हम लोगो को २-३ दिन से ताजे अखबार देखने को नही मिले थे। अफसर ने अपना अखबार हमे दे दिया। पूछने पर पता चला कि ४०-४५ कम्युनिस्टो को उन्होने गिरफ्तार कर लिया है, परतु उनके खयाल से वे लोग गुण्डे अधिक नजर आते है।

पहाडी चलकर ऊपर के मैदान पर आये, तो तिरगल्लापल्ली के लोग भजन गाते हुए हमे लेने आते दिखाई दिये। अब रास्ता अच्छा था। लक्ष्मी बहन ने कहा कि इस यात्रा मे सारी प्रकृति कितनी अनुकूल है। मानो पच-महाभूत अपनी तरफ से पूरी मदद पहुँचाना चाहते है।

सज्जनो की हत्या !

अभी मुकाम २ मील दूर था। जो लोग हमे लेने आये थे, रास्ते-भर अनेक मधुर गीत गाते रहे। पहुँचने पर देखा कि गाँव बहुत साफ-सुथरा है। इस गाँव के पुराने सेवक राज रेड्डी की हत्या कम्युनिस्टों ने कर डाली थी। गाँववाले राज रेड्डी को भूल नही सकते थे। हर किसीके मुँह से उनके लिए प्रेमभाव प्रकट हो रहा था। हरिजन भाइयों के लिए उन्होने अपनी जमीन पर सुदर मकान बनवाये थे। राज रेड्डी की हत्या का हाल सुनकर विनोबाजी के हृदय को काफी दु:ख पहुँचा। सज्जनो की हत्या द्वारा गरीबों की सेवा करने की आशा कम्युनिस्ट करते है। एक विचित्र-सी बात थी। मन ही मन वे काफी गभीरता से सोच रहे थे। तेलंगाना की समस्याएँ नया-नया रूप लेकर रोज प्रकट हो रही थीं। विनोबाजी नया-नया विचार देकर लोगो को अहिंसात्मक क्राति के लिए प्रेरित कर रहे थे।

अरण्यकाड मे जहाँ राक्षसों द्वारा मारे गये साधु-सतो की हड्डियो का ढेर रामचद्रजी देखते है, वहाँ उनके मुँह से सहसा प्रतिज्ञा के शब्द निकलते हैं कि मै इन राक्षसो का अत करके ही रहूँगा। गुसाईंजी ने बहुत मार्मिक शब्दो मे कहा है—'भुज उठाइ प्रण कीन्ह प्रभु।'

मानो ऐसी ही कुछ प्रतिज्ञा विनोबा भी आज मन-ही-मन कर चुके थे। आज इस छोटे-से गाँव में ७०-८० एकड जमीन का दान मिला था। एक मनुष्य को छोडकर सभी काश्तकार छोटे-छोटे है। इसलिए अधिक दान की आशा भी नही थी। विनोबाजी ने प्रार्थना-प्रवचन मे इस दान की सराहना की : "देनेवालो ने जमीन बहुत प्रेम से दी है, इसलिए मेरे दिल मे उसकी कीमत बहुत ज्यादा है।" दान की इस प्रेरणा का कारण बताते हुए विनोबाजी ने कहा : "यहाँ जो प्रेम का वातावरण है, जो सद्‌भाव है, उसका कारण है—राज रेड्डी का बलिदान।"

सोल्जरो द्वारा की गयी उन ४०-५० गिरफ्तारियों के बारे मे कहा

कि "अधिकारियो को वे लोग कम्युनिस्ट नही नजर आते। गुडा दिखाई देते है। वे गुडे हो, न हो, परतु अच्छे उद्देश्य से बुरे साधनो को उत्तेजन देनेवाले लोग गुडो को उत्तेजन तो देते ही है। गरीबो की भलाई के लिए भी जब हम जोर-जबरदस्ती और हिसा तथा डकैती का रास्ता लेते है, तो उस रास्ते मे गुडा लोग शामिल हो ही जाते है, क्योकि दोनो का मार्ग एक हो जाता है।" ऐसे लोगों से किसी भी तरह सहानुभूति न रखने की स्पष्ट सूचना विनोबा ने दी। उन्होंने कहा कि "राज रेड्डी जैसे सज्जनो की हत्या करके गरीबो का उद्धार कैसे होगा, मेरी समझ मे ही नही आता।"

विनोबाजी ने इस हिसक प्रवृत्ति का मूल कारण बताया : "यूरोप मे तीस साल के अदर दो लडाइयाँ हुईं। तीसरी की तैयारी है। वहाँ के लोग अक्सर लडते रहते है। उनका इतिहास हम अग्रेजी मे पढते है। अग्रेजी राज्य की ही यह देन इस हिसा के रूप मे हमे मिली है।" बोलते-बोलते उन्हे स्मरण हो गया : "भाइयो, ऐसे लोगो के विचार पढकर हमारे दिमाग बिगड जाते है। गाधीजी की हत्या करनेवाले ने भी यही कहा कि 'मैने हिंदू-धर्म की रक्षा के लिए ही गाधीजी की हत्या की है'।" —बस, फिर वे अधिक बोल न सके। ● ● ●

बंदूक छोड़ो, हल लो

: १० :

नागिल्ला
२४-४-'५१

नागिल्ला अब तक नलगुडा जिले मे ही था, लेकिन अभी-अभी वह महबूबनगर जिले मे ले लिया गया है। नागिल्ला और अजलापुरम्—आगामी मुकाम—ये दो गॉव महबूबनगर जिले के इस यात्रा के बीच पडते थे। गॉव के बाहर एक बगीचे के पास एक बडे दरख्त के नीचे विनोबाजी के लिए झोपडी बनायी गयी थी। बीच मे एक बडा कुऑ था और उसके बाद एक बडा मडप—जो साथियो, अन्य मेहमानो, भजन-मडलियो आदि के लिए बनाया गया था। गॉववाले भजन गाते हुए और नाचते-कूदते हुए विनोबाजी के स्वागत के लिए आये थे। गॉव मे से होते हुए जुलूस निवास पर पहुँचा, तो बीच मे जगह-जगह बहनो द्वारा मगल-आरतियो द्वारा स्वागत किया गया। दोपहर दो बजे से ही स्त्रियो की भीड शुरू हुई। सैकडो स्त्रियॉ जमा हो गयी। लक्ष्मी बहन और मदालसा बहन ने उनसे बातचीत शुरू की। इधर लोगों को जो कष्ट था, उसकी शिकायते भी आने लगी। दरखास्ते लिखने के लिए दो कार्यकर्ता बैठ गये। उधर भू-स्वामियो से विनोबाजी की बातचीत शुरू हुई।

प्रेम की कीमत

कलवाले उस छोटे-से गॉव मे अस्सी एकड जमीन मिली थी। आज का गॉव बडा था, फिर भी लोगो के दिल बडे नही थे। भूमिवानो ने बताया कि बहुत-सी जमीन उन्होने कानून के भय से बेच डाली है। सिर्फ उतनी ही रखी है, जितनी जरूरी थी। विनोबा ने कहा . "आपने जमीन बेच डाली और पैसा जमा किया। लेकिन आपका पैसा

मुझे नही चाहिए। आपके पैसे पर मेरी नजर नही है, न रहेगी। वह काम सरकार का है। आपके पास जो जमीन है, उसीमे से मुझे दीजिये।"

उन लोगो ने ४७ एकड जमीन अर्पण की।

विनोबा ने उन्हे कहा : 'मुझे आपके जमीन की भी कीमत नही है। कीमत है आपके प्रेम की। अगर आपने दान प्रेम से दिया है, तो मेरे लिए वह बडी बात है।"

प्रार्थना-प्रवचन मे इस दान का जिक्र करते हुए बोले "मेरा धधा इस प्रकार जमीन के निमित्त गॉव-गॉव मे प्रेमभाव बढाने का है।"

समानता लाने का काम छिपकर नही हो सकता

गरीबो की सेवा का कम्युनिस्ट भी दावा करते है। उस बारे मे कहा .

"उनकी बडी-बडी किताबे है। कुछ मैने भी पढी है। उनमे लिखा है कि जितने गरीब है, उन सबकी सेवा करनी चाहिए, उन सबको श्रीमानो के बराबर हक मिलने चाहिए। तो यह जो उनका विचार है, वह कोई नया विचार नही है। आपके 'पोतना' महाकवि भागवत मे भी यह बात बता चुके है। 'तनयदु अखिल भूत मुलदु ओक भगि समहितत्व बुत जरगुवाडु' अर्थात् श्रीमान् और गरीब इस भेद के लिए गुजाइश नही है। समझना यही चाहिए कि जितनी जमीन है, उतनी सब लोगो की मिलकर है। कम्युनिस्टो का यह जो कहना है, वह कहना सत्य है, लेकिन उसके अमल के लिए जो रास्ता उन्होने लिया है, वह गलत है। दुनिया मे समान भाव लाने का काम छिपकर रहनेवाले लोग नही कर सकते। सूर्य सबके साथ समान व्यवहार करता है। वह छिपा हुआ नही है। श्रीमान् के घर मे सूर्यनारायण जितनी सेवा करता है, उतनी ही सेवा वह गरीब के घर मे भी करता है। आलसी मनुष्य दरवाजे बद करता है, तो उसके घर मे सूरज नही जाता। लेकिन जो भी अपना दरवाजा खोलता है, उसके घर मे वह जाता है। वह कभी छिपता नही। जिनको छिपना है,

वह अपने घर मे छिपते है। तो जो सबमे समान भाव रखते हैं और दुनिया को समान बनाना चाहते है, उनको खुली हवा मे आना चाहिए। समान भाव होना चाहिए, यह पोतना की इच्छा थी। इसीलिए वह खुली हवा में किसान बनकर लोगों मे काम करता था और उसने अपने हाथ मे बदूक नही ली थी, बल्कि हल लिया था।

"तो मै कम्युनिस्टो से प्रार्थना करूँगा कि अगर तुम सर्वत्र समान भाव चाहते हो, तो बदूक छोड दो, हल हाथ मे ले लो और किसानो के माफिक काम करना शुरू कर दो।"

प्रभु रखवारे !

रात को एक महान् दुर्घटना होते-होते बची। मडप मे जब लोग भोजन के लिए बैठे थे, तो विनोबा ने सोचा कि सबको देख आये। रात अँधेरी थी, बत्ती मडप मे जल रही थी। विनोबा की झोपडी के पास के कुएँ का जिक्र ऊपर आ चुका है। मडप के लिए रास्ता कुएँ के पास से दाहिने हाथ से होकर निकलता था। कुएँ को दीवार वगैरह कुछ नही थी। लम्बा-चौडा भी वह बहुत था। विनोबाजी बिना लालटेन लिये ही झोपडी से निकल पड़े। दाहिनी ओर मुडने के बजाय सीधे चले। नित्य-निरतर जाग्रत रहनेवाली हमारी महादेवी बहन के ध्यान मे बात आ गयी। वे सहसा भयभीत हुईं। लालटेन लेकर दौडी। देखा तो विनोबाजी कुएँ की तरफ बढे जा रहे थे। अब अगला कदम भीतर पडने ही वाला था कि महादेवी बहन ने जोरो से विनोबा का हाथ पकड़कर उन्हे पीछे घसीटा, तब विनोबाजी के ध्यान मे बात आयी। लेकिन फिर भी मानो कुछ हुआ ही नहीं, इस तरह दाहिनी ओर से वे मडप मे चले गये। आज भी उस प्रसग के स्मरण-मात्र से रोम-रोम खडे हो जाते है।

● ● ●

भूतदयां विस्तारय : ११ :

अजलापुरम्
२५-४-'५१

कॉलरा-ग्रस्तो के बीच

नागिल्ला से सवेरे रवाना हुए, तो दो मील पर ही जयघोष सुनाई दिया। तीन मील पर एक कुछ बडा गॉव आया। अठारह सौ बस्ती के इस गॉव के करीब पॉच सौ लोग विनोबा के दर्शनों के लिए जमा हुए थे। लोगो के चेहरो पर उदासीनता दीख पडी। पूछने पर मालूम हुआ कि दो रोज से कॉलरा के कारण सारा गॉव सकट मे है और कुछ लोग कॉलरा के शिकार भी हो चुके है। आज भी दो-तीन की हालत नाजुक बताते थे। पासवाली किसी यात्रा की छूत का यह परिणाम था। तहसील का गॉव छह मील पर है, जहॉ डॉक्टर, तहसीलदार, अमीन सब रहते है। दो रोज पूर्व ही उन लोगो को इत्तिला दी जा चुकी है, परन्तु अब तक कोई सुनवाई नही, कोई मदद नही। उन्हे कॉलरा से बचने के उपाय बताकर और स्वास्थ्य मत्री के नाम पत्र देकर हम लोग आगे बढे।

कम्युनिस्टो के लिए क्षेत्र तैयार

करीब आठ बजे अजलापुरम् पहुँचे। छोटा सा गॉव। साफ-सफाई बिलकुल ही नही थी। ऐसी गन्दगी सारी तेलगाना-यात्रा मे किसी भी गॉव मे नही पायी गयी। गॉव काफी पिछडा हुआ। स्थानीय कार्यकर्ता भी कोई नही। तहसील के अध्यक्ष ने आकर सारा प्रबन्ध किया था। गॉव मे कॉलरा के आसार थे, इसलिए गॉव के बाहर एक वृक्ष की साया मे खास झोपडी बनाकर पडाव का प्रबन्ध किया गया था। इस गॉव को

छोड भी सकते थे, क्योकि रास्ते मे नही पडता था, परन्तु नलगुडा और वरगल के अलावा दूसरे जिलो मे भी कम्युनिस्टों की कार्रवाइयो का क्या हाल है, तथा जनता की क्या स्थिति है, इसे विनोबा खुद देखना चाहते थे। इस दृष्टि से यहाँ आना महत्त्व का सिद्ध हुआ। महबूबनगर जिले का यह हिस्सा भी कम्युनिस्टों से अछूता नही था—गाँव के पटेल और देशमुखों का व्यवहार ऐसा था कि कम्युनिस्टो के लिए क्षेत्र तैयार मिल गया।

हम लोग पहुँचे ही थे कि जिलाध्यक्ष श्री हनुमतरावजी भी आ पहुँचे। उन्हे बहुत अफसोस था कि विनोबाजी के आगमन के पहले नहीं आ सके। वरना गाँव का जो चित्र विनोबा को दिखाई दिया, उसमे कुछ तो परिवर्तन जरूर होता।

पिछले दिनों हैदराबाद मे जो सर्वोदय-शिविर हुआ था, उसमे श्री हनुमतरावजी अपने आठ-दस मित्रो सहित शरीक हुए थे। इन मित्रो में मुसलमान भाई भी काफी सख्या मे थे। शिविर के बाद से ये सभी लोग अपने जिले मे बराबर सर्वोदय-कार्य करते रहे है। भूदान के काम मे इनसे विशेष सहायता मिलेगी, ऐसी सहज अपेक्षा की जाती है। श्री लक्ष्मी बहन ने श्री हनुमतरावजी का जो परिचय पू० विनोबाजी से करा दिया, वह भी काफी आत्मीयता, आदर और अपेक्षाओं से भरा हुआ था।

हनुमतरावजी के साथ ही एक लडकी भी आयी। बाबा को प्रणाम किया, तो बाबा ने आश्चर्य से पूछा : "अरे, मृदुला आ गयी। हो गयी महिलाश्रम की परीक्षा? लेकिन सच्ची परीक्षा तो अब होनेवाली है।"

शोषण का लगातार क्रम

विनोबाजी गाँव देख आये थे, फिर गाँववाले को भी देखा। गाँव के पटेल से भी बाते की। जैसे बाह्य शुचिता का अभाव था, वैसे ही अन्तर-शुद्धि का भी था। गाँव के पटेल को काग्रेस के आदोलन मे जेल जाना पडा था। 'जाना पडा था', इसलिए कहा कि काग्रेस-आन्दोलन मे भी हथियार जमा करने और हथियार स्वय इस्तेमाल करने के आरोप

मे वह पकडा गया था। पटेल के व्यवहार से सारा गॉव दुखी था, गॉव-वालो के व्यवहार से पटेल दुखी था। कम्युनिस्टो ने पटेल के तीन रिश्तेदारो की हत्या कर डाली थी। पटेल का कहना था कि गॉववालो ने और लबाडो ने कम्युनिस्टो से मिलकर यह खून करवाये। लबाडे स्त्री-पुरुष सैकडो की तादाद मे झोपडी के पास सवेरे से ही आ बैठे थे कि महात्माजी को अपना दुख सुनायेगे—परन्तु उनकी हिम्मत नही हो रही थी—डरते थे कि महात्माजी के चले जाने के बाद पिटाई होगी। विनोबा ने सबको अपने पास बुला लिया और निर्भय होकर अपना दुखडा सुनाने के लिए कहा। उनके मुख से उनकी करुण-कथा सुनकर दुख होना स्वाभाविक था। पचास-पचास बरस से जो जमीने वे जोत रहे थे, उनसे किसी-न-किसी बहाने वे छीनी जा रही थी, बहुत-सी छिनी जा चुकी थी। विनोबा ने देशमुखो को भी समझाया। उन्होने शुरू मे काफी भोलापन दिखाया। श्री लक्ष्मी बहन से रहा नही गया। उनका हृदय तडप उठा। उन्होने देशमुख का आवाहन किया कि "अरे! तुम महर्षि के सामने बात कर रहे हो, दुर्बुद्धि छोडो। सच-सच अपने अपराध कबूल करो। पिछला पाप भगवान् तुम्हे माफ करेगा। आइन्दा किसीको तकलीफ न देने की प्रतिज्ञा करो।"

शाति का तरीका

विनोबा ने लक्ष्मीबाई को शात किया। गॉव के मुखिया लोग जमा थे। उनसे कहा . "इस गॉव मे दो बरस से मिल्टिरी बैठी है। हमारी रक्षा के लिए ये दिल्लीवाले यहॉ आकर बैठे, यह कोई शोभा की बात नही है। जो कुछ पिछली भूले हुई है, वे भूल जानी चाहिए और गाव मे शाति रहे, ऐसी कोशिश करनी चाहिए। शाति रखने का हमने एक तरीका ढूँढा है और वह है—जिनके पास जमीने है, उनसे जमीने मॉगने का—जिनके पास नही है, उन्हे वे जमीने देने का। तो आप लोग हमे जमीने दे दो।" देशमुखो ने तीस एकड भूमि दी। उनके दिल के दरवाजे कुछ बद-से

थे, कारण उनका खयाल था कि उनके भाइयो के कत्ल मे गाँववालों का हाथ था। विनोबाजी ने सबको पिछली बात भूल जाने को कहा। शाम की प्रार्थना मे इस संबंध मे प्रकाश डालते हुए उन्होने कहा :

"मै समझ गया हूँ कि इस मुल्क मे देशमुख, देशपाडे, जागीरदार वगैरा लोग बहुत है और उन लोगो के जुल्मो के नीचे प्रजा काफी पिस गयी है। फिर भी मै कहता हूँ कि यद्यपि इतना जुल्म हो रहा है, तथापि इन लोगो की हत्या करना, उनको फँसाना, परेशान करना, उनके घर-बार बरबाद करना, यह अच्छा रास्ता नही है। इससे गरीब लोगों का काम बननेवाला नही है।"

उपाय बताते हुए उन्होने कहा : "इसका उपाय वही हो सकता था, जो गाधीजी ने हमे बताया है। उसी रास्ते को आजमाने के लिए मै गॉव-गॉव जा रहा हूँ और यहाँ भी आया हूँ। मै चाहता हूँ कि गरीब-श्रीमान्, सबके हृदयस्थ भगवान् प्रकट हो। इसलिए आजकल मै ज्यादा व्याख्यान नही देता, बोलता कम हूँ—अदर से ईश्वर की प्रार्थना ही ज्यादा करता हूँ कि वह हमारे सब भाइयो को अक्ल दे।"

फिर यहाँ के देशमुखो के बारे मे कहा :

"मैने उन्हे समझाने की बहुत कोशिश की—परन्तु थोडी देर बाद मै चुप हो गया, क्योंकि मै समझ गया कि ज्यादा चर्चा से काम होनेवाला नही है। उनके दिलो मे गहरे घाव है। उनके भाइयो की कत्ले हुई है। उनके हृदय मे करुणा प्रकट हो, इसलिए भी परमेश्वर की करुणा ही बरसनी चाहिए। मेरे हृदय मे भी जो दयाभाव है, वह परमेश्वर की दया का ही परिणाम है। इसलिए मै प्रभु से नित्य प्रार्थना करते रहता हूँ कि तू प्रेम से भरा है—हम तेरी संतान है—हम सबको थोडा प्रेमभाव देना। शंकराचार्य के शब्दो मे मै भी रोज प्रार्थना करता हूँ कि भूतदया विस्तारय—हे परमेश्वर, मेरे हृदय मे सबके लिए दया रहे और वह दया निरन्तर बढती रहे।

"और मुझे कहने मे खुशी होती है कि भगवान् मुझे रोज दया का नित्य नया सबक सिखाता है—नित्य नया दर्शन कराता है। मे गॉव-गॉव जाता हूँ, तो क्या सुनता हूँ कि कम्युनिस्टो ने फलॉ गॉव मे इतने मनुष्यो को कत्ल किया। फलॉ जगह खेतो को जला दिया। फलॉ खेत मे घास की गॅजियॉ भस्म कर दी। मै मन मे यही प्रार्थना करता हूँ कि हे भगवन्! इन कम्युनिस्टो के लिए भी मेरे मन मे दया-भाव ही रखना। ये लोग हिसा का काम करते है, तो उनको हम किस मुँह से दोष दे सकते है? क्योकि मौका पडने पर काग्रेसवालो ने भी हिंसा की है, गाधीजी का नाम लेकर हिसा की है।" ○ ○ ●

फी शादी एक कुआँ

: १२ :

तुरपल्ली
२६-४-'५१

आज मजिल बारह मील की थी। पुनः नलगुण्डा जिले मे प्रवेश करना था। विनोबा ने नित्य की भॉति सबेरे पॉच बजे कूच किया। थोडी ही देर मे डेढ मील पर इर्वेन नामक गॉव आया। साढे पॉच भी नही बजे होगे। सारा गाँव उमड पडा। विनोबा रास्ते मे कही रुकते नही, परतु अब तो 'भूदान' के लिए कही भी रुक सकते थे। अनत रेड्डी ने पद्रह एकड अच्छी जमीन का दान-पत्र पेश किया। उस प्रभात की मगल वेला मे वह दान स्वीकार करते हुए विनोबा ने गॉववालो को गॉव मे प्रेम-भाव बनाये रखने के लिए कहा।

जब गॉव के समीप आये थे, तो "रामजी आये" का गीत गाया जा रहा था। जब भू-दान लेकर विनोबा चल पडे, और वे तेजी से ही चलते है—तो गॉववाले भी उनके साथ हो लिये और उतनी ही तेजी से गाने लगे। अब की बार भजन मे परिवर्तन हुआ कि "मन रामडु पोतुन्नाडु राम भजे—रामजी रवाना हो रहे है, आओ मन! राम का भजन करे।"

रास्ते मे कोतापल्ली और सिद्दमपल्ली के लोगो का आदर-प्यार स्वीकार करते हुए करीब दस बजे तुरपल्ली पहुँचे। रास्ते के दोनो ओर केतकी की बाढ और बीच-बीच मे छह-छह, आठ-आठ फीट ऊँचे केतकी कमल ऐसे सुन्दर फब रहे थे कि मानो इसी अवसर के लिए सजाये गये हो। पडाव भी नजदीक ही था। बेला, कन्हेर और गुलाब के दर्जनो हारो की वर्षा हुई। विनोबा ने सबका उपहार प्रेमपूर्वक स्वीकार किया और उसी क्षण

साथ चलनेवाली 'बालकृष्ण' की मूर्तियों को अपने हाथों से वे सब मालाएँ पहना दी। विनोबा की कसौटी करने के लिए ही मानो कभी-कभी कोई बालक कुछ असमंजस-सा, कुछ भयभीत-सा दौड़ने लगता, तो विनोबा भी अपने भगवान् के पीछे-पीछे दौड़ते और उसको मना लाते। फिर बड़े प्यार से उसे माला पहना देते।

आज तो विनोबा विशेष ही प्रसन्न थे। तीन बजे से प्रार्थना के समय तक मुलाकातों व शिकायतों का समय रहता है। गाँव में पटेल-देशमुखों या देशपाडों के खिलाफ कोई शिकायतें नहीं थी। जमीन प्राय सबको है। जिन थोड़े हरिजन-परिवारों को नहीं थी, उनके लिए स्थानिक लोगों ने पैंतीस एकड़ के करीब जमीन दे दी थी। इसलिए कुछ फुरसत पाकर विनोबा कमरे से बाहर निकले, तो देखा कि बच्चे, बूढ़े, स्त्री, पुरुष, एक भीड़-सी जमा थी। भीड़ में जो बच्चे थे, वे विनोबा के साथ हो गये, और विनोबा बच्चों के साथ। पहले थोड़ी देर तो विनोबा का हाथ पकड़-कर बच्चे इधर से उधर, उधर से इधर आँगन में घूमते रहे। लेकिन वह शृंखला बढ़ती गयी। उस आँगन में अमाना कठिन हुआ। इधर लोगों की भीड़ भी बढ़ती गयी। विनोबा ने अब बाल-गोपाल मंडली के साथ नाना तरह के खेल खेलना शुरू किया। खेल में तल्लीन हो गये। पूर्ण में पूर्ण की लीनता का ब्रह्मानंद लूटने लगे। इस ब्रह्म-समाधि में से जगाने के लिए ही मानो प्रार्थना की घंटी बजी। एक समाधि से दूसरी समाधि में ऋषि ध्यानावस्थित हुए।

साढ़े तीन हाथ जमीन काफी है

आज दान जिस कारण से कम मिला था, उसका विश्लेषण करते हुए कहा : "यह बहुत खुशी की बात है कि यहाँ बड़े जमीनवाले ज्यादा नहीं हैं। और उससे भी अधिक खुशी की बात यह है कि अब यहाँ कोई भूमिहीन नहीं रहा है। उन सबके लिए आवश्यक भूमि का प्रबन्ध हो गया है। आज हमें दान भी कम मिला है, क्योंकि उतने ही की जरूरत

थी। बहुत ज्यादा दान मिलता है, तो हमे उसकी खुशी नही होती। क्योंकि जहाँ ज्यादा दान मिलता है, वहाँ पहले से बहुत ज्यादा अन्याय हुआ रहता है। पहले विषमता रहती है, फिर हमको दान मिलता है। पास मे ज्यादा जमीन रखना अच्छा नही है। आखिर हमे जमीन चाहिए कितनी? संतो ने हमे बताया है कि साढे तीन हाथ जमीन हमारे लिए काफी है।"

भगवान् का प्रकाश

दोपहर विनोबाजी बच्चो के साथ रम गये थे। प्रवचन में उसका भी जिक्र किया : "जो बहुत-से लडके आज यहाँ आये थे, हमने सोचा कि उनके साथ जरा खेल ले। फिर १०-१५ मिनट सब लडको के साथ खूब खेल लिया। खेलते-खेलते मेरे मन मे विचार आया कि इतने सारे जो लडके है, उनकी जिम्मेदारी सिर्फ उनके माँ-बाप पर ही है कि सारे गाँववालो पर है। एक श्रीमान् के घर मे लडका पैदा हुआ और गरीब के घर मे लडका पैदा हुआ, तो उन दो लडकों मे क्या फर्क है? वह जो लडका पैदा हुआ, वह भगवान् का प्रकाश है। दोनो घरो मे समान प्रकाश आ गया। इसलिए गाँव के माता-पिता अगर यह विचार करेंगे कि जितने लडके गाँव मे है, सब हमारे है, तो गाँव सुधर जाता है। यह एक छोटी-सी युक्ति मैने बतायी, जिसका अभ्यास करना चाहिए।

"एक श्रीमान् तो अपने लडके को पढाई के लिए शहर मे भेजता है। अगर वहाँ कोई रिश्तेदार हो तो ठीक, नहीं तो वहाँ खुद जाकर रहेगा—बच्चे की तालीम के लिए। लेकिन सोचना चाहिए कि अपने बच्चे की तालीम के लिए इतनी फिक्र करता है, तो उस गाँव के दूसरे लडके पडे है, उनकी तालीम के लिये क्यो न फिक्र करे? अरे, एक दीपक अगर जल गया, तो वह घर के भीतरवालों के भी काम आता है और बरामदे पर भी काम आता है। अगर एक स्कूल यही गाँव मे बनाते है और दो-तीन शिक्षक रखते है, तो वे दो-तीन शिक्षक मिलकर के उस श्रीमान् के लडके

को तालीम देंगे और गाँव के लड़कों को भी तालीम देंगे। भगवान् श्रीकृष्ण बालगोपालों में रहे और उन्हींके बीच में खेले-कूदे। कितना अच्छा था? अगर कहीं कृष्ण भगवान् को गोकुल से उठाकर स्कूल में दिल्ली भेज देते, तो क्या हालत हुई होती गोकुल की?

सब बच्चों की इकट्ठी तालीम

बच्चों की कोई जाति नहीं होती। उनके लिए गरीब-श्रीमान् के भेद-भाव भी नहीं होते। वे तो परमेश्वर की प्रजा हैं। लेकिन ये श्रीमान् लोग सारे गाँव के लिए सोचते ही नहीं। अपने खुद के लिए सोचते हैं। फिर उनका लड़का शहर में सीखने के लिए जाता है। उसको गाँव से नफरत पैदा होती है। फिर वह गाँव में रहने के लिए भी नहीं आता। बाप तो बचपन से गाँव में रहा, लेकिन उसका लड़का बचपन से शहर में सीखा। इस तरह वह पढ़ा-लिखा बनता है, तो गाँव को छोड़कर शहर में भाग जाता है। फिर उसकी गाँव के लोगों के साथ मैत्री नहीं हो सकती। वह लड़का गाँव में कुछ काम नहीं करता और फसल के समय आता है। ऐसी हालत में उसको फसल भी ठीक मिलती नहीं, क्योंकि वह गाँव में रहता नहीं, देखभाल करता नहीं। उसके और गाँववालों के बीच में वैर-भाव पैदा होता है। तो फिर उसको गरीबों का डर लगता है और तब अपने बचाव के लिए पुलिस को अपने पास बुलाता है। कहता है कि ये सारे गरीब लोग कम्युनिस्टों से मिल गये, हमको बहुत डर है। अब पुलिस तो कोई स्नेह-भाव से काम करना जानती नहीं। पुलिस के पास क्या ताकत है? उनका वह डंडा उनकी ताकत है। इस तरह जहाँ गाँव में मामला चला, तो क्लेश और द्वेष बढ़ता जाता है। इसलिए गाँव को अगर सुखी करना है, तो यह निश्चय कर लो कि हम अपने बच्चों को गाँव में ही तालीम देंगे और सब बच्चों को इकट्ठी तालीम देंगे।

गोकुल का जीवन

"इस तरह सारे गाँव के लड़के एक साथ खेलेंगे-कूदेंगे, तो आगे

जाकर अपनी जमीन भी सब मिलकर ही करेंगे। तब वे श्रीमान् के लडके गरीब के लडको से डरेंगे नही। फिर जैसे श्रीकृष्ण भगवान् अपने घर का मक्खन सबको खिलाता था, उसी तरह वे लडके अपने घर की चीज सबोको खिलायेंगे। इसका नाम है—गोकुल। 'गोकुल' का अर्थ है—जो मक्खन हो, शक्कर हो, गन्ना हो, सब मिलकर खाये। चोर की तरह घर के अन्दर बैठकर छिप करके मीठी-मीठी चीजे खाना, यह गोकुल नही है। सबके साथ अगर खायेगा, तो कितना प्रेम आयेगा और कितना अच्छा लगेगा खानेवालो को भी। लेकिन वह खाने के लिए चुप-से बैठता है, तो उसके खाने मे हिस्सा लेने के लिए मक्खियाँ आती है। अब वह मक्खियो से तो प्रेम नही कर सकता। इस तरह उसके प्रेम की भावना अतृप्त रहती है। फिर वह अपने घर मे बिल्ली रखेगा, कुत्ता रखेगा और कुत्ते को, बिल्ली को खिलायेगा, दूध पिलायेगा। इस तरह वह कुत्ते से, बिल्ली से प्रेम कर सकता है। लेकिन अपने गाँव के लोगों से डरता है। तो, यह सारी समस्या तब हल होगी, जब सब मिलकर के स्कूल मे प्रेम से इकट्ठा पढना-लिखना, अभ्यास करना शुरू कर देंगे।"

सब समस्याओं का हल नयी तालीम

विनोबा ने नयी तालीम की पद्धति का रमणीय चित्र भी खींच दिया. "गरीब-अमीर जहाँ सबके बच्चे साथ-साथ काम करेंगे, साथ पढेंगे। जब कभी मै सोचता हूँ कि ये सारी समस्याएँ कैसे सुलझेंगी, ये सब दु ख कैसे दूर होंगे, तो मुझे यही सूझता है कि नयी तालीम शुरू करनी चाहिए। बच्चो की तरह बडो को भी तालीम मिलनी चाहिए। बच्चो को तालीम स्कूल मे मिलेगी। बडो को जीवन मे मिलेगी।"

फी शादी एक कुआँ

गाँव मे आज एक जगह शादी का उत्सव था। हर साल करीब बीस-पचीस शादियाँ होती है। विनोबा ने "गणित" शुरू किया : ३६ करोड लोग। ४०-५० का आयुर्मान। ४०-५० साल मे १८ करोड शादियाँ
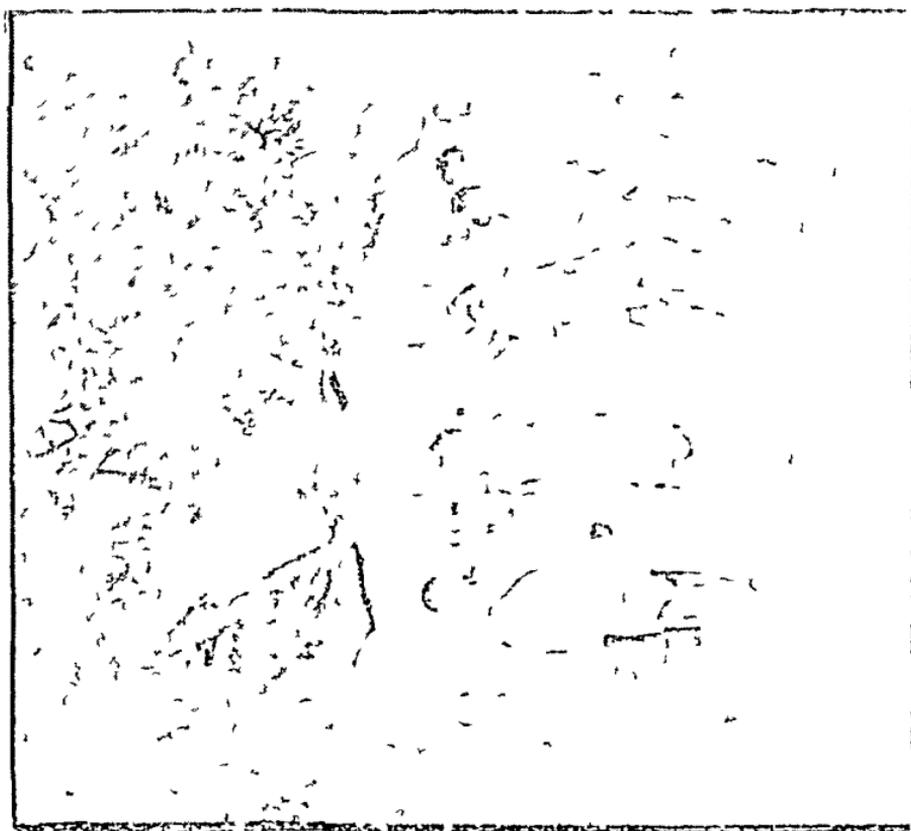
ठीक रास्ते नहीं होते है, तो खेतों में से ही जाना पडता है ।
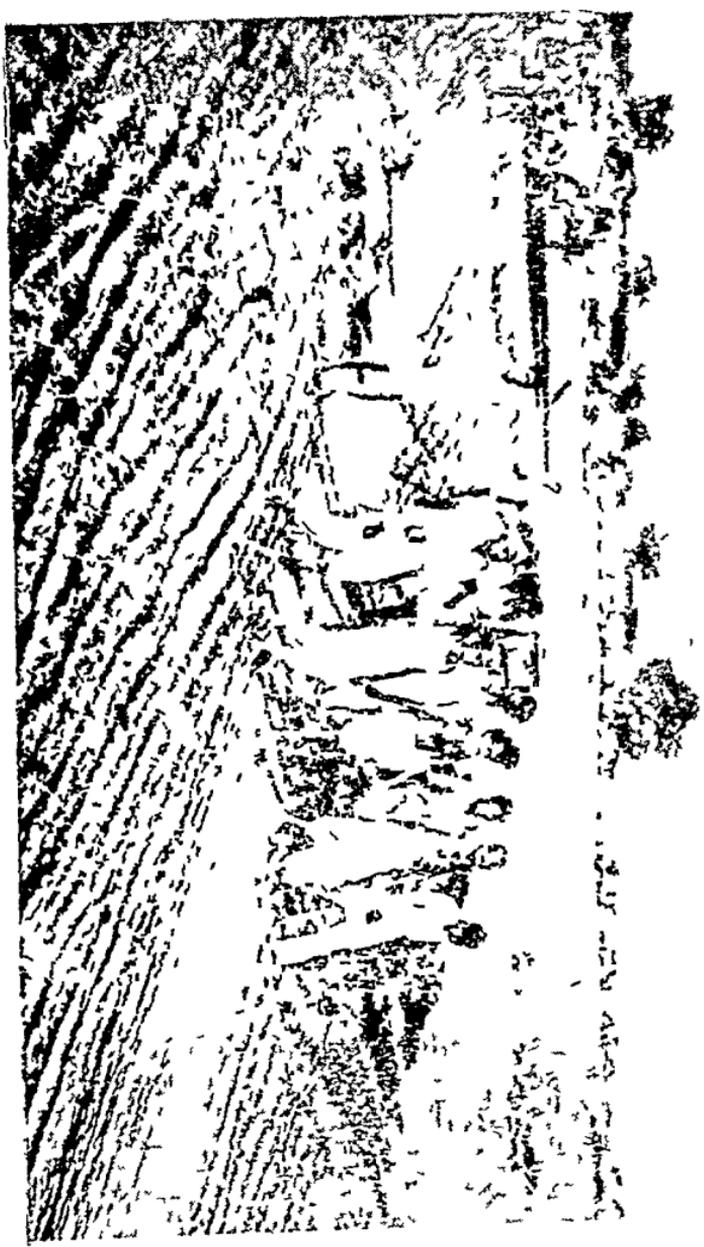
होंगी। फी शादी एक कुआँ—यह सिलसिला रहा, तो चालीस-पचास साल में १८ करोड कुएँ खुद जायेंगे। याने पचास साल में इंच-इंच जमीन तरी की बन जायगी।"

विनोबा ने कहा

"भगीरथ तो स्वर्ग से गंगा लाये। आप लोग पाताल से सरस्वती लाओ—कुआँ खोदना शादी का एक हिस्सा समझो। जब तक कुआँ खोदने की तैयारी न हो, उतना पैसा भी जमा न हो, शादी मत करो।"

विनोबा ने विनोद किया .

"और अगर कुआँ बनने पर भी वरराजा खेती न करे, तो उसके नसीब फूटे और उसको अगर निराशा हुई, तो वही कुआँ उसे डूब मरने के लिए काम आयेगा।"

○ ○ ○

कम्युनिस्ट हिंदुस्तान में टिक नहीं सकते : १३ :

देवरकोण्डा
२७-४-'५१

आज पूरब दिशा मे चलना था। सवेरे की प्रार्थना और विदाई के बीच आधा घटा मिल जाता है। इधर सबसे विदा लेने का मूक कार्य-क्रम चलता, उधर भक्तजन विनोबा को तेलुगु भजन भी सुनाते रहते। इसी बीच श्री लक्ष्मी बहन सब साथियो को जलपान भी करा देती। योग-वियोग की समिश्र भावनाओं से अतःकरण भर आते। आज एक और बात विशेष हुई। प्रभात की उस मगल वेला मे शख के गभीर, बुलद और कर्ण-मधुर स्वर ने सबके हृदयों को आकर्षित कर लिया। इधर जैसे ही शख की आवाज रुकी, तो उधर वृक्षो की शाखाओ मे कही कोकिला ने मद राग आलापना शुरू किया। इतने मे पॉच बज गये और कूच हुआ। भजन-मडली ने पढरपुर के विठोबा का आवाहन किया—"रडैयो रडैयो पाढारीपुर मुरको रेपटिकि, मापटिकि, मनतनुमा, शाश्वतमो"[1]। गीत के राग मे स्वर और कदम मिलाकर चलने का आनद सहयात्री लूटने लगे थे।

गॉव की सीमा आयी तो विनोबा रुके, 'अदरिकि नमस्कारम्' किया और आगे बढे, तो इर्द-गिर्द पहाडियों की चित्र-विचित्र आकृतियों का लुभा-वना दृश्य सामने प्रस्तुत था। अरुणोदय का समय था। सामने क्षितिज पर रक्त-रेखाऍ खीची जा रही थी। लालिमा बढती जा रही थी। 'अन्तर मम विकसित करो' की भावना से सबके हृदय भगवान् सहस्ररश्मि के

---

१ आइये-आइये, पढरपुर को जायँगे। क्या शरीर शाश्वत है? कल या परसो—(उसे जाना ही है।)

स्वागत को तत्पर नजर आ रहे थे और इस पावन तथा स्फूर्तिदायी वातावरण को पोतना, वेमना, कबीर, तुकाराम, गाधी, रमण तथा अरविंद आदि भक्तजनों के सबध की चर्चा ने और भी पावन और प्रेरक बना दिया था। सारे इतने एकाग्र होकर विनोबा की वाणी का प्रसाद पा रहे थे कि देवरकोण्डा कब आ गया, पता भी नही चला। स्वागत-गान, जय-जयकार और अनेक उत्साह-भरी भावनाएँ भिन्न-भिन्न उद्घोषो का रूप लेकर सगुण होने लगी।

शहर का मुकाम था—नलगुडा जिले का प्रमुख स्थान था। बारह सौ मकानो मे दो सौ घर मुसलमानों के थे, चालीस-पचास बुनकरो के। हरिजन भी काफी मात्रा मे थे। दोपहर को छोटे-बडे जमीदारों से काफी चर्चा हुई। कुल जमीन ४५८ एकड मिली।

देहात और शहरो का फर्क

हैदराबाद से चलने के बाद अब तक प्राय सभाएँ देहातो मे ही हुईं। परन्तु उपस्थिति कहीं कही दस-दस, बारह-बारह हजार से भी अधिक रही। जाग्रति के लक्षण देहातों मे साफ दिखाई देते थे और इसका श्रेय कम्युनिस्टो को ही था। देवरकोण्डा, जिसका अर्थ होता है—देवो का पहाड—शहरी ढग का होते हुए भी जाग्रति मे वह देहातो से पिछडा हुआ नजर आया। न तो उन देहातो जैसी स्वच्छता यहाँ थी और न वैसी उपस्थिति। सभा मे मुश्किल से दो हजार आदमी होगे। देहातो मे स्त्रियाँ बराबरी से और कही-कहीं तो आधी से भी अधिक होती है। आज तो शायद स्त्रियाँ नाममात्र को ही थीं। देहातो की अपेक्षा लोग यहाँ दु खी भी कुछ कम होते है, क्योंकि दु.ख सारा देहातो के हिस्से मे ही आ चुका है।

क्राति का सामान

यह सारी हालत देखकर विनोबा ने प्रार्थना-प्रवचन मे कहा : "सुधार की आवश्यकता देहातों के बजाय शहरो मे मुझे अधिक दिखाई देती है, जहाँ न देहातो की तरह स्त्री-पुरुषो की स्वतत्रता है, न लडके-लडकियो की

संयुक्त पढाई है। शहर पिछड़े हुए है। क्रांति के सारे सामान तो देहातो मे मौजूद है। इन सबकी वजह यह है कि शहरो मे जमीदार, मालदार लोग होते है और होते है वकील, न्यायाधीश, मिलिटरी-पुलिस आदि, जो उन श्रीमानो की रक्षा करते हैं। और ये सब लोग ज्यादातर पुराने खयाल के ही होते है। इसीलिए गाधीजी को भी जो सहकार देहातो से मिला, शहरो से नही मिला। पुराने संतो का भी जितना काम गॉवो मे चला, शहरो मे नही चला।"

गाँव का कचरा : शहर

कारण बताते हुए विनोबाजी ने कहा :

"बात यह है कि हर गॉव मे जो कचरा होता है, वह सारा हवा से बहकर जहॉ इकट्ठा होता है, उस जगह का नाम है—शहर।"

प्रेरणा के अनुकूल हो जाइये

फिर शहरवालो को भी समझाया कि "भाइयो, आप लोगों ने देहातो से भर-भरकर पाया है—भू-दान के रूप मे परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। उस प्रेरणा के लिए आप सब अनुकूल हो जाइये, और दान का प्रवाह शहरो की ओर से देहात की ओर, पढे-लिखे लोगो की ओर से अपढ किसान की ओर जाने दीजिये। अगर ऐसा होगा, तो आप देखेंगे कि कम्युनिस्ट लोग गायब हो गये है। और आप यह भी देखेंगे कि जो काम मिलिटरी और पुलिस से नही हुआ, वह आपके प्रेम से हो गया।"

और अन्त मे कम्युनिस्टो को भी आगाह किया :

"मै अपने को गरीबो का प्रतिनिधि मानता हूॅ और मै कम्युनिस्टो को कहता हूॅ कि जब मै यहॉ आ पहुॅचा हूॅ और मेरी राय लोग कबूल कर रहे है, तो आप भी बुद्धिमानी से काम लीजिये और खुलेआम मेरी तरह सेवा मे लग जाइये। इस तरह अगर आप लोग करेंगे, तो आप देखेंगे कि आपका काम हिन्दुस्तान-भर मे फैल गया है। लेकिन कम्युनिस्टो को एक

मित्र के नाते मै आगाह कर देना चाहता हूँ कि अगर हिंसा का तरीका वे आजमाना चाहते है, तो हिन्दुस्तान मे उनका टिकाव नही रहेगा।"

कानून से क्यो नहीं ?

दोपहर देवरकोण्डा मे महत्त्वपूर्ण चर्चा हुई। एक भाई ने पूछा : "यह जमीन का सवाल आप कानून से क्यो नहीं हल करवा लेते ?"

उत्तर : "मुझे कानून से इनकार नहीं है। परन्तु कानून तो तब आता है, जब पहले लोकमत तैयार रहता है। अस्पृश्यता-निवारण का कानून बन सका, क्योंकि लोकमत उसके लिए अनुकूल था। कानून से सब काम होते ही है, ऐसा मै नहीं मानता। क्या जातिभेद कानून से मिट सकेंगे ? क्या अंतर्जातीय विवाह कानूनन कराये जा सकते है ?"

कम्युनिस्टों के काम की बुनियाद

प्रश्न : "यहाँ जो कम्युनिस्ट-आदोलन है, वह तो आर्थिक कारणों से है। उन्हें दूर करने से कम्युनिस्ट-आदोलन अपने-आप ही खतम हो जायगा। केवल व्याख्यानो से क्या होगा ?"

उत्तर : "मै ऐसा नही मानता। यहाँ के कम्युनिस्टो को यहाँ की आर्थिक हालत की कोई चिता नहीं है। उन्हें चिता है—सरकार को खतम करने की। खेत जल जाते है तो उन्हें बुरा नही लगता, बल्कि खुशी होती है कि सरकार के खिलाफ आदोलन करने का एक और मौका मिला। अगर उन्हे सेवा का खयाल होता, तो वे मेरी तरह काम मे लग जाते। तेलगाना मे लोग सेंदी-शराब इतनी ज्यादा पीते है। मै पूछना चाहता हूँ कि वे इसके खिलाफ क्या कर रहे है ? मै उन्हें खूब जानता हूँ। उनकी जाति सिर्फ यहीं नहीं है, हिंदुस्तान-भर मे है। मेरे मित्रों में भी कम्युनिस्ट है, जिन्होंने मुझे जेल मे सारा कम्युनिस्ट-वाङ्मय पढकर सुनाया है। उनका ध्येय राजनैतिक पहले है, आर्थिक बाद में। उनके काम की बुनियाद राज-नीति है। सत्ता आने पर वे अर्थशास्त्र ठीक कर लेना चाहते है।"

"व्याख्यानों से कुछ होगा या नही, यह तो आप लोग ही जान सकते है। केवल व्याख्यान से कुछ नही होगा, यह तो मै भी मानता हूँ। परन्तु आज जो लोग दान दे रहे है, उन्हे प्रेरणा भी व्याख्यानो से ही मिल रही है। अगर काग्रेसवाले काम करेगे, तो कम्युनिस्ट गायब हो जायेगे। आज भी कम्युनिस्ट प्रकाश मे आकर तो काम नही कर रहे है। जहाँ पिस्तौल हाथ मे ली कि आम जनता के पास खुलेआम आने का रास्ता बद हुआ।"

अन्न-संकट

प्रश्न : "क्या हमारे देश मे सचमुच अन्न-सकट है?"

उत्तर : "अन्न-सकट कही नही है। सकट तो यह है कि सब आलसी बन गये है। अन्न-सकट कहते है और जरा-सा भी अन्न निर्माण नही करते। किसान तो बेचारा अनाज का उत्पादन कर ही रहा है। उसका अनाज जरूरत के स्थान पर नही पहुँचता, यह उसका दोष नही है। इन सबका इलाज तो यही है कि आवश्यकताओ के बारे मे स्वावलम्बी बनना चाहिए और सबको कुछ-न-कुछ पैदावार बढाने का व्रत लेना चाहिए। इतने सारे लोग आप आये है। मै पूछता हूँ, आज भोजन तो सबने किया है, परन्तु क्या किसीने कोई पैदावार भी की है? गाधीजी ने कहा, अरे, कम-से-कम चरखा तो भी कातो। तो कहते है, स्वराज्य के बाद अब कातने की क्या जरूरत है? जिन साधनो से स्वराज्य मिला है, उन्हे छोडकर अब मानो स्वराज्य गँवाने का कार्यक्रम शुरू करना है। अन्न-सकट तो नही, पर बातो का सकट अधिक नजर आ रहा है। जो उठता है, अन्न-सकट पर सवाल करता है। अच्छा होगा, यदि हम बाते करने के बजाय जितना भी बन सके, पैदावार बढाने मे जुट जायँ।"

श्रम-विभाग

प्रश्न : "लेकिन क्या सबको पैदावार बढाने मे लगने की जरूरत है? श्रम-विभाग द्वारा यह नही हो सकता?"

उत्तर : "जी नही । आपका मतलब है कि कुछ लोग केवल खाया करेंगे, कुछ केवल सोया करेंगे, कुछ केवल खेला करेंगे । हरएक व्यक्ति खायेगा, सोयेगा, खेलेगा, पर खोदेगा नही, सींचेगा नहीं । क्यो नहीं ? सब कोई जानते है कि हरएक व्यक्ति हर काम नही कर सकेगा । पर कुछ बुनियादी काम होते हैं, जो सबको करने चाहिए । पडोस मे आग लगने पर हम यह नही सोचते कि कुछ लोग तो आग बुझा देंगे और म गणित के सवाल हल करता रहूँगा । परमेश्वर की अगर यही इच्छा होती कि हर मनुष्य एक ही काम करे, तो कुछ को केवल देखने के लिए एक बडी आँख, कुछ को केवल सुनने के लिए एक बडा कान और कुछ को बोलने के लिए एक बडा ग्रामोफोन दे देता । परतु परमेश्वर ने ऐसा नही किया । उसने हाथ-पॉव सबको दिये है । फिर अपनी जरूरतो के लिए हमे काम क्यो नही करना चाहिए ?"

प्रश्न . "लेकिन फिर भी श्रम-विभाग तो रहेगा ही ।"

उत्तर : "वही तो मैने कहा कि श्रम-विभाग करके रसोई हमने स्त्रियो को सौप दी । कई पुरुष ऐसे हैं, जो रसोई बनाना भी नही जानते ।"

प्रश्न "लेकिन अच्छा रसोइया तो अब तक पुरुष ही रहा है ।'

उत्तर : "क्योकि उसमे कमाई होती है । यही तो मे कहता हूँ कि जहॉ कमाई का सवाल आता है, वहॉ अक्सर पुरुषो ने स्त्रियो के धधे छीन लिये है । बुनने का काम पहले स्त्रियॉ करती थी । आज पुरुष करते है । यहॉ तक कि उनका रसोई करने का काम भी उन्होने छीन लिया है ।'

● ● ●

कम्युनिस्टों ने सारा नष्ट कर दिया : १४ :

निरडगोम
२८-४-'५१

अब फिर एक देहात की ओर जाना था। रास्ता कच्चा ही था। जिस मकान मे हमारा पडाव था, कम्युनिस्टों द्वारा वह जलाया गया था, जिसके चिह्न आज भी नजर आ रहे थे। मकान बहुत बडा नही था, लेकिन विनोबा ने इसी मकान मे ठहरना पसद किया।

विनोबा के पहुँचने के बाद थोडी ही देर मे लबाडे लोगों का एक दल उनसे मिलने आया। स्त्री-पुरुष, बच्चे, सब। स्त्रियाँ बडा लहँगा पहनी हुईं, पीतल और रूपे के जेवरो से पाँव से चोटी तक लदी हुईं। सेहत मजबूत। पुरुष से स्त्री कुछ होशियार नजर आती थी। ये लोग पहाडो मे अपने दल बनाकर रहते हैं। कभी कहीं, कभी कही। दो-दो, तीन-तीन साल एक-एक जगह रहते है। फिर स्थान बदल देते हैं। कोई स्थायी भी रहते हैं। कम्युनिस्ट इनसे लाभ उठाते है, ये उन्हे आश्रय देते है, खिलाते-पिलाते है, ऐसा इन पर आरोप है। सरकार ने इन सबको अपनी खेती से उठाकर गाँव मे बुला लिया था। इनकी काफी शिकायते थीं। यात्रा मे शिकायतें लिखने का और फिर उन्हें विनोबा के सामने रखने का एक विभाग ही चलता है। इनकी शिकायतें लिख ली गयी और विनोबा के सामने पेश की गयीं।

विनोबा ने इन लोगों से काफी देर विस्तार के साथ बातचीत की। इस बातचीत से न सिर्फ इनके रीति-रिवाज पर प्रकाश पडता है, बल्कि इनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति का मनोवैज्ञानिक विश्लेपण सहज ही मिल जाता है। इनके बारे में यह कहा जाता है कि ये लोग अपने दल

छोडकर दूसरों के साथ रहना पसद नहीं करते, न किसीको अपने साथ रखना ही पसद करते हैं। कुछ लोगों ने, प्रमुख लेखकों ने, ऐसी सिफारिश भी की है कि इन्हे, जैसे है वैसा ही रखा जाय, इनकी एक खास सस्कृति है, उसे न तोडा जाय। लेकिन इनके साथ की बातचीत से मालूम होगा कि हम लोग अपने इन भाइयों के बारे में कितनी गलतफहमियाँ रखते है।

बातचीत

विनोबा · "आपकी दरखास्ते मैने देखी है। मै कोशिश करूँगा कि आप लोगों की माँग पूरी हो। लेकिन एक-दो बाते मैं पूछना चाहता हूँ। मै आज के लिए बात नहीं करता। दस साल बाद के लिए ही सही। यह बताइये कि आप लोग गाँव के साथ रहना अच्छा समझते है या दूर रहना ही अच्छा समझते है ?"

लबाडे "महाराज, हमारी खेती ही वहाँ है। इसलिए वहीं रहना पडता है।"

विनोबा : "अगर खेती यहाँ मिल जाय तो ? तब तो सबके साथ रहना पसद करोगे ?"

लबाडे : "तब तो सबके साथ रहना अच्छा लगेगा, क्योंकि गाँववालों के साथ हमारा सबध रहेगा। आज चीजे खरीदने के लिए जो दूर से आना पडता है, वह नहीं आना पडेगा। जगली जानवर हमारी खेती खराब कर देते है। इसलिए हम खेती छोडकर कहीं जा भी नहीं सकते।"

विनोबा · "तुम लोगों की जमीन कितनी है ?"

लबाडे . "पाँच सौ एकड।"

विनोबा · "आदमी कितने हो ?"

लबाडे "पाँच सौ।"

विनोबा : "याने यहाँ गाँव के नजदीक जमीन मिल जाती है, तो आप लोगों को इधर रहने मे हरज नहीं है ?"

लबाडे : "जी नहीं।"

विनोबा : "अच्छा । अगर आपके साथ वहाँ जगल मे और दूसरे लोग भी रखे जायँ, अर्थात् उन्हें उतनी और जमीन मिल जाय और इस तरह एक नया गाँव बसाया जाय, तो आपको कोई आपत्ति है ?"

लबाडे : "नही, बल्कि हमे तो खुशी होगी । आज हम अकेले रहते है । कल एक नया गाँव बस जायगा ।"

विनोबा : "ठीक है । मै आप लोगो की बात पूरी समझ गया हूँ । अब मै कोशिश करूँगा ।"

इसके बाद उनके रहन-सहन के बारे मे भी चर्चा हुई । विनोबा ने कहा : "मै आप लोगो से एक बात और कहना चाहता हूँ । हम लोग माडवी गये थे । वहाँ तुम लोगो के एक नेता है । उन्होने अपने घर मे काफी सुधार किया है । स्त्रियों ने लहँगो और गहनों का यह भेष छोडकर सादगी का रहन-सहन अपनाया है । क्या आप लोग अपने रहन-सहन मे कुछ फर्क करना पसद नही करेगे ?"

लबाडे : "नही महाराज ! हम तो लबाडो की तरह ही रहना चाहते है ।"

विनोबा : "क्यो ? तुम्हारी स्त्रियो मे और दूसरी स्त्रियो मे भगवान् ने क्या फर्क किया है ?"

लबाडे : "फर्क तो कुछ नही है । लेकिन हमारी जाति के जो रिवाज है, वे हम चालू रखना चाहते है ।"

विनोबा : "लेकिन समय के अनुसार और जातियो ने सुधार किया है ।"

लबाडे : "आप चाहे तो जो छोटे बच्चे है, उनके जीवन मे सुधार कर सकते है । परन्तु हमारा जमाना बीत चुका । हम अपने पुराने रीति-रिवाजो को नही छोड सकते । नौजवान लोग सुधार करना चाहे, तो कर सकते है ।"

विनोबा : "ठीक । क्यो, और कोई बात कहनी है ?"

लबाडे : "हम गायो से हल जोतते है, तो पुलिस हमे रोकती है ।"

विनोबा : "सरकारी कानून तो रोकने का नही है । आप लोग गायो

से काम लें, तो मुझे हर्ज नहीं है, परन्तु गर्भिणी गाय से काम नहीं लेना चाहिए।"

लबाडे "गर्भिणी से काम नहीं लेंगे, क्योंकि उसमे तो हमें ही पाप लगेगा। परन्तु जब बैलों की कीमत पाँच-पाँच सौ, छह-छह सौ रुपया हो गयी है, तो हम गरीब लोग बैल कैसे खरीद सकते है ?"

विनोबा : "ठीक है। और कुछ तो कहने का नहीं रहा ?"

लबाडे "एक बात और है महाराज! हमे गाँव की रक्षा के लिए होम गार्ड मे लाजिमी तौर से भरती किया है। और यहीं रहना पडता है। हम यहाँ नहीं रहना चाहते। कम-से-कम रात मे तो भी हमें अपने खेतों पर जाकर सोने की इजाजत चाहिए।"

विनोबा : "सरकार को भय है कि तुम कम्युनिस्टों को आश्रय दोगे, उन्हें भोजन कराओगे।"

लबाडे. "अगर ऐसा भय है, तो या तो हमे यहीं पर जमीन और मकान दीजियेगा, या फिर हमे वहाँ खेतों पर पक्के मकान बनवा दीजियेगा, ताकि हम स्थायी रूप से रह सके और अपनी जमीन की रक्षा कर सके। हमें आजकल पुलिस बहुत तंग करती है।"

विनोबा. "किसीको पीटा तो नहीं ?"

लबाडे. "जब कम्युनिस्टों ने यहाँ घर जलाये और लूट-मार की, तब पुलिस ने हमें पीटा। हमसे मुफ्त मे मजदूरी भी करवायी।"

विनोबा. "और पूछा होगा कि बताओ, कम्युनिस्ट कहाँ है ?"

लबाडे. "जी।"

विनोबा. "तब उन्हे आप लोगों पर संशय था, इसलिए पूछा था। आप लोग भी पहाड मे रहते हो। कम्युनिस्ट भी पहाड मे रहते है। तो संगति का लाभ आपको मिल गया। और यह सजा भी मिल चुकी। अब जो कुछ हो चुका, उसकी शिकायत मत करो। अब यह बताओ कि आप लोगों मे कोई भूखे तो नहीं रहते ? सबको खाने को मिलता है ?"

लवाडे : "चंद लोगों को तकलीफ रहती है।"

विनोबा : "तो जिन्हें तकलीफ है उन्हें, जिन्हें तकलीफ नहीं है वे, मदद क्यों नहीं करते ? आप लोगों को एक साथ रहना चाहिए। सबकी एक गल्ला-बैंक रखनी चाहिए। उसमें से सबको अनाज मिले। आज साहूकार की जरूरत पड़ती होगी। फिर वह भी नहीं रहेगी।"

लवाडे : "महाराज, गल्ला-बैंक पहले यहाँ थी। लेकिन कम्युनिस्टों ने सारी लुटवा दी। हिसाब-किताब जला दिये। एक-एक गाँव में चालीस-चालीस, पचास-पचास खंडी अनाज रहता था। कम्युनिस्टों ने सारा नष्ट कर दिया।"

● ● ●

यज्ञ में सब दें

: १५ :

पेद्दामुगल
२६-४-'७१

करुण-रस उमड पड़ा

कूच करने के पहले विनोबा थोडा दही का नाश्ता कर लेते हैं, लेकिन आज उन्होंने नाश्ता नहीं किया। कारण, आज चार दिन हुए, पेट का दर्द फिर शुरू हो गया है। पिछले दो वर्षों से यह दर्द बन्द था। अब जब से पुन शुरू हुआ है, विनोबाजी को थकान महसूस होने लगी है, लेकिन इससे दिनचर्या मे कोई फर्क नहीं पडा है। ठीक पाँच बजे नियमानुसार वे निकल पडे, अगले पडाव के लिए। लोग सीमा तक भजन गाते हुए पहुँचाने आये। एक वृद्ध गृहस्थ, जो पहले दिन भी 'इकतारे' पर भजन सुना गये थे, साथ हो लिये और तल्लीन होकर तेलुगु मे भजन गाते रहे। अक्सर यह होता है कि सीमा पर विनोबाजी रुक जाते हैं, गाँववाले भी रुक जाते हैं, भजन-मडली का भजन भी रुक जाता है, परस्पर प्रणाम के बाद मधुर स्मृतियो की सौगात साथ लेकर दोनों अपनी-अपनी राह मुड जाते हैं। लेकिन आज का दिन अपवाद का बना। सीमा पर विनोबाजी रुके, जनता रुकी, वह वृद्ध भी रुका, लेकिन उसका गीत नहीं रुका, उसकी भक्ति-गगा बहती ही रही। उसके गीत के एक-एक चरण से करुण-रस निखर रहा था। सारा वातावरण भक्ति-भाव से ओत प्रोत हो गया। भक्त, भगवान् और दर्शक श्रोता सब सजल नयन थे। मानो कौशल्याजी राम को विदा कर रही हों। चलने का समय कब का हो चुका था। लेकिन उस भक्तराज वृद्ध को कौन रोक सकता था? थोडी देर इसी तरह वह प्रेम-प्रवाह जारी रहा, फिर हमने धीरे-से उस वृद्ध के पास जाकर,

कुछ देर चुपचाप खडे रहकर, अपने दाहिने हाथ से उसके कन्धे को अत्यन्त आदरपूर्वक छूकर इशारा किया कि अब इजाजत मिलनी चाहिए। इतना करना था कि करुण-रस और भी वेग से उमड पडा। एक अद्भुत अनुभूति थी। फिर कुछ क्षणो के बाद शान्ति हुई। और उस निस्तब्धता मे भी कुछ क्षण बीते। और फिर विनोबाजी के मुख से बिदाई-सूचक अपेक्षित वाक्य निकला : "अदरिकि नमस्कारम्!" "सबको नमस्कार!! अब जाइये! जाने दीजिये!!"

उस बूढे बाबा ने अपनी सारी शक्ति लगाकर गाधी बाबा का जय-जयकार किया। फिर अत्यन्त नम्रतापूर्वक विनोबाजी को नमन किया। दोनो, दोनो ओर बढे सही, लेकिन बडा प्रयत्न करना पडा!

पहाडियो से गुजरना था। एक के बाद एक, उन पर्वत-पक्तियो को छोडकर हम आगे बढने लगे। नयी-नयी पक्तियाँ नया-नया रूप लेकर सामने दिखाई देती। उनको पारकर यात्री-दल नयी पक्तियों मे प्रवेश करता। रास्ता ही ऐसा था कि हर मोड पर नयी पहाडी, नया मडल।

छह बजे यात्री-दल कलेवे के लिए रुका। फिर थोडा चलना शुरू किया ही था कि एक फर्लांग दूर से नूपुर-ध्वनि सुनाई दी। कुछ ही क्षणों मे लम्बाडी स्त्रियाँ दौडती हुई चली आयी। बात की बात मे पचासो इकट्ठा हो गयी। एक-एक करके सबने प्रणाम करना शुरू किया। बिना कही रुके तीर की तरह सतत चलनेवाले विनोबा को उन बहनो ने रोक लिया। एक बहन ने अपने सिर से टोकरी उतारकर विनोबाजी के चरणों मे रख दी। हम लोगो ने सोचा—"भिलनी के बेर" भेट मे रखे गये है। दूसरे ही क्षण मालूम हुआ कि टोकरी मे अत्यन्त सुन्दर बालिका विराजमान है। श्री महादेवी ताई ने उस बच्चे को तत्क्षण गोद मे उठा लिया। अब उस पर प्यार बरसना प्रारम्भ हुआ। वह भाग्यवान् बालिका विनोबाजी की गोद मे भी जा बैठी। थोडी देर हाथों में, फिर कन्धो पर, पुनः हाथों मे, इस तरह विनोबा उसे दुलारते और निहारते ही रहे, फिर वह

बालिका अपने माँ के पास पहुँच गयी। सबने पहले उस बालिका को निहारा, फिर विनोबा को और फिर एक-दूसरे को भी। उस बालिका ने 'हरि-कृपा' का स्मरण ताजा करा दिया। 'हरि-कृपा' सचमुच हरि-कृपा है। दिल्ली से जब कभी वह विनोबा के पास आती है, उन पर अपना एकाधिकार जमा लेती है।

उन बहनो की आँखो से प्रतीत होता था कि वे कुछ कहना चाहती है। पूछने पर उन्होंने शुरू किया "हमे बचाइये! हमारी खेती से हमे दूर मत कीजिये। ये मिलिटरीवाले हमें पीटते है। इन्हें रोकिये।" विनोबाजी ने उन्हे आश्वस्त किया। आधा मील दूर पर पुन एक गाँव आता था। सडक के दोनों ओर सैकडो स्त्री-पुरुष उसी लम्बाडा जाति के, अत्यन्त शान्त, विनोबा की प्रतीक्षा मे खडे नजर आये। विनोबाजी ज्यो ही पास पहुँचे, तो रघुराज का भजन प्रारम्भ हुआ। यात्रा जारी रही। गाँव के बाहर आधा मील दूर तक यह सारा गाँव-परिवार विनोबाजी को पहुँचाने आया। बायीं ओर से गायो का झुड भी चला आया। श्री लक्ष्मी बहन कुछ पीछे रह गयी थी। गायो की हिमायत लेकर उन्होने ऊँची आवाज मे कहा . "विनोबाजी, ये गो-माताएँ भी अपनी शिकायते लेकर आपके पास आयी है।" इतना कहते-कहते वे गायो-सहित विनोबाजी के निकट पहुँच गयी। शिकायत का सिलसिला जारी रखते हुए लक्ष्मी बहन ने कहा "यह लम्बाडे इन गायो को हल मे जोतते है।" विनोबाजी ने कहा "हमने तो कल ही इसकी इजाजत दे दी है। हाँ, गर्भवती गायों को नहीं जोतना चाहिए, इसका खयाल रखे।" गायो ने "बॉ" कर मानो विनोबाजी की बात पर मुहर लगा दी। "समता और स्वावलम्बन के इस युग मे भला वे भी पुरुष-जाति से पीछे क्यो रहेंगी? हम भी हल जोत सकती है।' यही शायद वे स्वाभिमानी गो-माताएँ कहना चाहती थीं।

करीब पौने आठ बजे पेदामुगल के मकान दिखाई देने लगे। कुछ

ही क्षणों मे प्रतीक्षा करनेवाली जनता भी उमड पडी। बाजा, शहनाई, भजन आदि के साथ सैकडों लोगो ने विनोबाजी का स्वागत किया।

डेरे की सारी व्यवस्था मे किसी सुसस्कृत मानस का हाथ नजर आता था। वैज्ञानिक ढग के सुव्यवस्थित शौचालय, ताड-पल्लवो की दीवारे, इन्ही दीवारो का स्नानगृह, पानी पीने के लिए मिट्टी के सुन्दर कलश, वैसे ही सुन्दर लोटे, सारा दर्शन एकदम कलापूर्ण था।

वोट और वेदात

शिकायतो की सुनवाई शुरू हुई। एक आदमी को पुलिसवालो ने मार डाला था। उसका कसूर यह था कि उसने कम्युनिस्ट को पकड रखा था, जिससे कि वह भागने न पाये। गोली अगर चलनी ही थी, तो कम्युनिस्ट पर, लेकिन चली पुलिस के उस मददगार पर। उसके बच्चे और पत्नी सहायता के लिए कब से अर्जियाँ दे चुके है, अब तक कोई सुनवाई नही। गाँववाले विनोबाजी से इन सबका अर्थ समझना चाहते थे। इस तरह रोज कोई न कोई नया घाव होता ही रहता था। अभी तो प्रारम्भ ही था। विनोबाजी ने सबको शान्त किया। उन्होंने प्रार्थना-प्रवचन मे लोगों को पुरानी बाते भूलने की तथा हिम्मत से निर्भयतापूर्वक जीवन की समस्याओ को हल करने की सलाह दी। उन्होने कहा कि "भाइयो, अब सारी हवा बदल गयी है। निजाम की सामन्त सत्ता गयी, चौधरी साहब का मिलिटरी राज्य भी गया, अब तो वेलोडी महाराज का जमाना है। वेलोडी आपके सेवक है, स्वामी नही, स्वामी तो आप सब है। आप सबको राज्य करने का हक जो मिला है। जैसा चाहो, राज्य चलाओ। आप सबको समान हक है, सबको एक वोट जो मिला है। एक मस्तक, एक वोट। भगवान् ने सबको एक ही मस्तक दिया है। रावण के समान कोई दस मस्तकवाला निकले, तो शायद दस वोट मिले। लेकिन अब रावण का जमाना खतम हुआ। और अब तो जो बडा जमींदार होगा, उसे भी एक वोट है, छोटे किसान को भी एक वोट है, खेतिहर मजदूर को भी

एक ओर पहाड, दूसरी ओर जगल, बीच मे पहाड से सटी नदी और साथ मे बालू। इस तरफ से उस तरफ, और उस तरफ से इस तरफ, पुलिस को चकमा देकर कम्युनिस्टो की कार्रवाइयाँ जारी रहती थी।

चारों ओर कम्युनिस्ट आन्दोलन की ज्वाला फैली थी, फिर भी यह गाँव सरचैल उससे अछूता है, क्योंकि यहाँ एक सेवक रहते हैं श्री नारायण रेड्डी, जिन्होंने अपनी भूमि पहले ही भूमिहीनों को बाँट दी है।

एक वोट है, स्त्री को भी एक वोट और पुरुष को भी एक वोट है। पढे-लिखे मनुष्य को भी एक वोट है, बिल्कुल अनपढ को भी एक वोट है। ठीक वेदान्त के ज्ञान की तरह। वेदान्त का कहना है कि हर मनुष्य को एक ही आत्मा होती है, उसी तरह हमारे राज्य मे हरएक को एक ही वोट होना है। इसलिए आप लोगो को डर छोडना चाहिए और समझना चाहिए कि इस देश मे वही होगा, जो आप चाहेंगे। और इसलिए मै कम्युनिस्टो को भी समझाता हूँ, भाइयो, अब पहाड की आड छोडो, जमीन पर उतरो, अब छिपने की जरूरत नही। पहाड मे भेडियो को, शेरो को, जगली जानवरो को छिपना चाहिए। उनको कोई वोट नही मिला है।"

मै कम्युनिस्टो को भाई मानता हूँ

फिर कम्युनिस्टो को आगाह करते हुए कहा "इन कम्युनिस्ट भाइयो को भी वोट का अधिकार मिला है, लेकिन वे अगर आग लगाना, लूटना-खसोटना और लोगो को तबाह करना, यही कार्यक्रम चलाना चाहेंगे, तो समझ लीजिये कि अब इस देश मे उनका कुछ नहीं चलनेवाला है।" विनोबाजी ने हैदराबाद जेल मे हुई कम्युनिस्ट मित्रो के साथ की बातचीत का भी जिक्र किया और कोई, यदि कम्युनिस्ट मिलना चाहे तो मिलने का निमत्रण भी दिया। थोडा विनोद भी किया · "मै तो कम्युनिस्टो को अपना भाई मानता हूँ। मै तो जानवरो को भी—जिनको वोट नही मिला है, अपना भाई मानता हूँ। फिर ये कम्युनिस्ट तो भाई है ही। इसलिए आप लोगो को समझना चाहिए कि कम्युनिस्ट जिस तरह से काम कर रहे है, उस तरह काम करने की अब कोई जरूरत नहीं है। आप लोग जमीन ही चाहते है न? अगर आप लोगो का राज्य होगा, तो आप जो जमीन चाहेंगे, सारी आपको कानून से मिल सकेगी।"

कानून और दान

और फिर कानून और दान का फर्क बताते हुए कहा . "लेकिन मुझे तो आपके इस गाँव मे भी ९३ एकड जमीन केवल मॉगने से मिल

गयी है। बड़े लोगो ने भी दी है, छोटे लोगो ने भी दी है। जिसके पास ४० एकड है, उसने भी ५ एकड दी है, जिसके ५ है, उसने भी यथाशक्ति दी है। तो आप देखेगे कि सबके दिल बदल रहे है और इस तरह अगर सब दिल बदल सकते है, तो कानून की कोई जरूरत नहीं रहती। प्रेम से ही सारी समस्या हल हो सकती है। जीवन के सारे कारोबार अच्छे चल सकते है।"

सारी जमीन सबकी

फिर सारे गॉव को एक परिवार समझने की दीक्षा देते हुए कहा. "देखिये, बारिश होती है तो आपके गॉव के हर घर पर बरसती है। सूरज की किरणे सबके दरवाजे पर पहुँचती है। मौत जब आयेगी, तो श्रीमान् और गरीब, सबके लिए आयेगी। दुनिया मे परमेश्वर ने सबको समान पैदा किया है। वह रक्षण भी सबका समान करता है। सबको समान मिट्टी मे पहुँचाता है। लेकिन रक्षण के मामले मे लोगो ने दखल देना शुरू किया, इसलिए रक्षण समान रूप से नहीं हो रहा है। यह दोष परमेश्वर का नहीं, मनुष्य का है। इसलिए मै आप सबको समझाना चाहता हूँ कि आप गॉववाले सारे एक हो जायॅ, **"समझ ले कि गॉव की सारी जमीन सबकी है।"**

बिगडी बुद्धि के लक्षण

मिले हुए दान का जिक्र करते हुए कहा : "आपके गॉव मे आज छोटे-बडे, सबने दान दिया है। इसका मतलब यह हुआ कि अब इस गॉव मे प्रेम का राज्य प्रारम्भ हो गया है। इसीको तो सर्वोदय कहते है। साम्ययोग भी इसीका नाम है और समाजवाद का भी यही लक्षण है। शब्द अलग-अलग है, अर्थ एक ही ' 'सर्वोदय'। एक कहता है मै राम का भक्त हूँ, दूसरा कहता है मै कृष्ण का हूँ, तीसरा कहता है मै अल्लाह का हूँ, लेकिन सही बात यह है कि जो राम है, वही कृष्ण है और वही अल्लाह। तो, जो झगडे होते है, वे बिगडी बुद्धि के लक्षण है।"

बड़ा कौन ?

अन्त में सबको सेवा की दीक्षा देते हुए कहा : "आप सब लोग एक-दूसरे की सेवा में लग जाइयेगा। मजदूरों का कर्तव्य यह है कि मालिक को पूरा काम दें। मालिक का फर्ज है कि पहले मजदूरों को खिलाये, पीछे खुद खाये। इस देश में पुराने जमाने में यही तरीका था। जो यजमान होता था, वह अपने कर्मचारियों को, गायों को, बैलों को, सारांश सबको खिलाकर फिर खाता था। यही बड़े आदमियों का लक्षण है। वे माता-पिता की तरह सबकी फिक्र रखते हैं। लेकिन आजकल बड़ा वह है, जो दूसरों का शोषण करता है यानी मानो अपने बच्चों को ही खाता है। यह तो राक्षस का लक्षण है। बड़ों में उदारता होनी चाहिए, छोटों में नम्रता होनी चाहिए। व में उदारता, प्रेम, नम्रता होगी, परमेश्वर की कृपा उस गाँव पर जरूर होगी।"

आज के दान की विशेषता यह थी कि अब तक की तरह वह केवल बड़े जमींदारों से प्राप्त नहीं हुआ था—बड़ों ने पहले ४० एकड़ दी। फिर विनोबाजी ने कहा : "केवल बड़ों से ही क्यों ? कम जमीनवालों से भी लेना चाहिए।" उन्हें भी बुलाया। उन सबको भी भूदान का उद्देश्य समझाया। उनकी ओर से दान-पत्र और दान, दोनों ज्यादा मिले। साढ़े तिरपन एकड़ का दान मिला।

विनोबाजी ने कहा : "यह मसला ऐसा नहीं है कि इसमें केवल ज्यादा जमीनवाले ही हिस्सा लें। यह एक यज्ञ है। यज्ञ में हर किसीको देना चाहिए। इसलिए जिस-जिसके पास जमीन है, वे सब दें। कमवाले सुदामा के तंदुल की तरह थोड़ी दें। परंतु दें सब।" ० ० ०

बढ़ते जुल्म और उनका इलाज : १६ :

ओटकापल्ली
२०-४-'५१

आगमनी के समय से लेकर तो सध्या तक लोगो की अपार भीड जुटी रही। जिस मकान मे विनोबाजी को ठहराया गया था, उस मकान का मालिक पुलिस द्वारा कत्ल कर दिया गया था। सन्यास रेड्डी नामक एक जमादार के जुल्मो की दर्द-भरी कहानियाँ लोगो ने सुनायी। उसने तीन स्त्रियो पर बलात्कार किया था। 'रगारेड्डीगुडम' के दो लोगों की हत्या हुई, तीन भाइयो को इस बुरी तरह से मार पडी कि पिता से सहा नही गया। पिता ने कुएँ मे पडकर जान दे दी। कई लोगो के घुटनो पर इतनी मार पडी कि शरीर मे विकृति हो गयी। ये सारी शिकायते विनोबाजी के सामने आयी। हमारी लक्ष्मी बहन और मदालसा बहन दुःखियो को ला-लाकर विनोबाजी के सामने पेश करती, उनकी करुण कहानी सुनाती। उस समय इन लोगो की मनःस्थिति भी बडी करुणा-भरी हो जाती, हृदय मे मानो ज्वालाएँ भडक उठती, और लक्ष्मी बहन तो, अपना एकमात्र सहारा पाकर भूला-भटका बालक माँ की गोद मे जैसे फूट फूटकर रोता है, वैसे बाबा के समुख रो पडती। उस दिन की दर्दभरी कहानियो के कारण सारा वातावरण बडा गभीर बन गया था। कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनो के अत्याचारो से पीडित जनता को आज पहली बार मौका मिला था कि अपनी दर्दभरी कहानी सुनाने और सात्वना और आश्वासन पाने के लिए इस फकीर के दरबार मे उपस्थित होती।

आज यहाँ पर भी, छोटे-बडे, सबसे मिलाकर २६२ एकड जमीन दान मे मिली। अब तक के दान मे यह सबसे ज्यादा था।

पुलिस और प्रजा

अपने प्रार्थना-प्रवचन मे विनोबाजी ने पहले कम्युनिस्टो के जुल्मो का जिक्र किया। फिर पुलिस का जिक्र करते हुए कहा कि "पुलिस को तो कम्युनिस्टो का बन्दोबस्त करने के लिए सरकार ने यहाँ भेजा था। परतु उनकी यहाँ पर मैने बहुत शिकायते सुनी। मैने सुना है कि उन्होंने लोगो को पीटा है। स्त्रियो को भी तकलीफ दी है। (कुछ गभीर स्वर मे) इन लोगो की हाजिरी मे मै कहना चाहता हूँ कि पुलिस को इस तरह ज्यादतियाँ करने का कोई अधिकार नही है। पुलिस को यहाँ पर प्रजा की रक्षा के लिए भेजा गया है। अगर वे ही प्रजा को तकलीफ देने लगे, तो सरकार की इज्जत घट जायगी। सरकार की ओर से पुलिस को कोई ऐसी आज्ञा नही है कि वे लोगो को तकलीफ पहुँचाये, इसलिए अगर आप लोगो को भविष्य मे पुलिस की तरफ से कोई तकलीफ हुई, तो आपको वह सब शाति से सहन करना चाहिए, और तकलीफ देनेवाले को सुनाना चाहिए कि तुम बुरा काम कर रहे हो, ऐसा करने का तुमको कोई अधिकार नही है। पुलिस अगर आप लोगो को तकलीफ देती है या पीटती है, तो रोना नही चाहिए, बल्कि नम्रतापूर्वक उसकी शिकायत ऊपर के अधिकारियो से करनी चाहिए। आप निर्भय बनेगे, तो पुलिस तकलीफ नही देगी। और अगर किसी कर्मचारी से गलती हुई, तो उसे काम पर से हटा दिया जायगा।"

विनोबाजी ने लोगो को समझाया कि "गाँव की रक्षा गाँववालो को करनी चाहिए। और गाँव की हिफाजत के लिए जो पुलिस आयी है, उसे हटा देना चाहिए।" कम्युनिस्टो के बारे मे कहा कि "वे गरीबो की मदद के नाम पर लोगो को कत्ल करते है। लेकिन मै कहना चाहता हूँ कि ऐसे बुरे काम करनेवालो से गरीबो को आशा नही करनी चाहिए। अट्ठावन साल के प्रयत्नो के बाद स्वराज्य आया है। स्वराज्य का लाभ उठाना है, तो प्रजा में शान्ति चाहिए। स्वराज्य के बाद प्रजा मे शान्ति नही रही, तो

सरकार की सारी ताकत प्रजा को शात रखने ही मे खर्च हो जायगी। जहाँ पुलिस के लिए करोडो रुपये खर्च होते है, वहाँ प्रजा की भलाई के लिए पैसा कहाँ से बचेगा ? और अगर प्रजा मे असतोष रहा, तो सरकार पुलिस पर खर्चा नही करेगी, तो क्या करेगी ? इसलिए अगर आप चाहते है कि यहाँ से पुलिस उठ जाय, तो आपका काम है कि आप यहाँ शान्ति रखे। पुलिस उठ जायगी, तो जो पैसा उस पर खर्च होता है, वह जनता की भलाई पर खर्च होगा।"

जमीन के साथ ग्रामोद्योग भी

जमीन के साथ ग्रामोद्योगो का और खासकर कताई का महत्त्व समझाते हुए उन्होंने कहा : "कम्युनिस्ट आपको यह बात नही समझाते। वे तो सिर्फ यही कहते है कि श्रीमानो को लूटो, बस काम हो जायगा। लेकिन श्रीमानो के पास जो कुछ चीजे है, वह मिल जाने पर भी आप सुखी नहीं होगे। काम करने से ही आप लोग सुखी होंगे। जमीन पर आपको सालभर पूरा काम नही मिलता। आपके पास बहुत समय बच जाता है। उस समय मे आपको उद्योग करना चाहिए। लेकिन आप कोई उद्योग करते नही और जरूरत की सारी चीजे बाहर से खरीदते है। जब तक आप चीजे बाहर से खरीदेंगे, तब तक आपके गाँव मे लक्ष्मी नही रह सकती। आप सुखी नही होगे। अगर आप लोग रोज सूत कातकर सालभर का कपडा घर मे तैयार कर लेंगे, तो घर-घर मे थोडी सपत्ति बढेगी। कोई घर नही, जहाँ कपडे की जरूरत नही—और कोई घर नहीं, जहाँ यह काम सभव नही।"

तीन परहेज—तीन लाभ

शाम हो चली थी, हवा भी बहुत तेज बहने लगी थी। तूफान का समा बन गया। विनोबाजी ने फिर तीनों बाते दुहरायीं "शान्ति रक्खो। निर्भय बनो। ग्रामोद्योगो को अपनाओ। अगर आप इन तीन बातो को अपनायेगे, तो आप देखेंगे कि कम्युनिस्ट यहाँ से खतम होंगे। पुलिस

यहाँ से चली जायगी और परमेश्वर की कृपा से आप सब लोग सुखी होंगे।"

सर्वोदय की परिभाषा क्यों नहीं ?

उस दिन अखबार मे जयप्रकाशजी का एक बयान निकला था, जिसमे कहा गया था कि अगर काग्रेसवाले सर्वोदय-योजना को स्वीकार करते है, तो वे अपनी पार्टी को विलीन करने को तैयार है। जयप्रकाश जी के बयान का जिक्र करते हुए विनोबाजी ने यात्री-दल के सभी सदस्यो को बुलाकर सर्वोदय-समाज के कार्यक्रम के बारे मे विस्तार से समझाया। उन्होने कहा "मै देख रहा हूँ कि काग्रेसवालो के सामने भी अन्त मे सर्वोदय के सिवा कोई कार्यक्रम नहीं है। आज तो उनके सामने कोई कार्यक्रम ही नही है। समाजवादियो के सामने अपना एक चित्र है। कम्युनिस्टो के सामने भी उनका एक अपना नक्शा है। लेकिन काग्रेसवालो के सामने चुनाव के सिवा और क्या है ? क्यो नही वे जयप्रकाशजी का आह्वान स्वीकारते।"

फिर उन्होने गाधी और मार्क्स का फर्क समझाया : "गाधीवालो पर आक्षेप है कि उन्होंने गाधी-विचार की परिभाषा नही बनायी। लेकिन परिभाषा के कारण विचार के विकास को लगाम लग जाती है। विचार के अनिर्बन्ध विकास के लिए यह आवश्यक है कि उसे पारिभाषिक मर्यादाओ से मुक्त रखा जाय। मार्क्स ने एक परिभाषा दी है, 'डिक्टेटरशिप ऑफ दी प्रोलेटेरियेट' की। हिन्दुओ ने भी वर्णाश्रम की एक परिभाषा बनायी है। नतीजा यह हुआ है कि क्या साम्यवादी, क्या हिन्दू, दोनो ही अपनी-अपनी परिभाषा की मर्यादा के बीच ही सोचते रहते है।"

संघटन का चित्र

फिर सघटन के बारे मे कहा : "हम पर यह आक्षेप है कि हम कोई सघटन नही बनने देते, परतु हमने तो सर्वोदय का शब्द दिया, उसका एक कार्यक्रम दिया, उसके साधन भी बतलाये, और सर्व-सेवा-सघ के रूप मे एक सघटन भी दिया। सघटन नीचे से ऊपर जाना चाहिए।

ऊपर से नीचे विचार आता है, संघटन नही। चित्र ऊपर से नीचे बनता है। मकान नीचे से ऊपर खड़ा होता है। संघटन वही टिक सकता है, जो मकान की तरह पक्की बुनियाद पर हो।"

कार्यकर्ताओं का हविर्भाग

भूदान-यज्ञ के सम्बन्ध मे अपने यात्री-दल की जिम्मेवारी को समझाते हुए कहा कि "आजकल हम सबको जो जमीन दे रहे है, उसमे आप लोगो को भी अपना हिस्सा देना चाहिए। अगर आपके पास जमीने है, तो जमीन का हिस्सा देना चाहिए। संपत्ति हो, तो संपत्ति का हिस्सा देना चाहिए। संपत्ति सिर्फ रुपयो-पैसो की नही होती। जिनके पास किताबे है वे किताबे दे, जिनके पास समय है वे समय-दान दे, श्रमशक्ति है तो श्रम-दान दे, बुद्धि है तो बुद्धि-दान दे। लेकिन ऐसा होना चाहिए कि हर-एक ने दिया है।"

वाहन की मर्यादा

पदयात्रा के प्रभावकारी परिणामो को समझाते हुए कहा कि "आप लोगो को ध्यान रखना चाहिए कि बिना पैदल चले लोगो से संपर्क नही आता। मोटर से चलियेगा, तो कार्यक्रम वैसा ही बनेगा जैसा मोटर इजाजत देगी। जहाँ मोटर जाने से इनकार करेगी, वहाँ आप नही जा पाइयेगा। लेकिन पाँव तो सब जगह जा सकते है। कही भी जाने से इनकार नही करते।"

करीब ४५ मिनट तक विनोबाजी कार्यकर्ताओं के सम्मुख अपने हृदय के उद्‌गार सुनाते रहे। ● ● ●

कम्युनिस्टों का आवाहन : १७ :

चलकूर्ती
१-५-'५१

पुन. दर्दभरी कहानियाँ

यहाँ भी कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनो के जुल्मो की दर्दभरी कहानियाँ सुनी। यह मालूम हुआ कि कम्युनिस्टो द्वारा १० आदमी मार डाले गये है। पुलिस-कार्रवाई के बाद भी रेटी की तेरह गाडियाँ जला दी गयी थी। पुलिस हाजिर होते हुए भी कुछ नहीं कर सकी। ४० मकान जला दिये गये थे। एक पुरुष और तीन औरतो को भालो से मार डाला गया था। बाँस और बडवा भी बहुत सारा जला दिया गया था। कुल नुकसान करीब ६० हजार रुपयों का बताया गया। नारायण स्वामी नाम के पुलिस-अफसर ने इर्द-गिर्द के गाँवो से रिश्वत के रूप मे बहुत रुपया लिया, ऐसी शिकायत भी सुनी। विनोबाजी का हृदय बहुत ही दु खी हुआ। इस कठोरता के वातावरण मे भी करुणा का दर्शन हुए बिना न रहा। एक भाई, जो बहुत दूर के गाँव के रहनेवाले थ, और सहज इधर से गुजर रहे थे, जब सुना कि बेजमीनो को जमीन दिलानेवाला कोई फकीर आया है, तो खुद आकर अत्यत नम्रतापूर्वक भक्ति-भाव से भूदान दे गये।

प्रार्थना-प्रवचन मे विनोबाजी ने सर्वप्रथम तो कम्युनिस्टो के और पुलिस के जुल्मो का जिक्र किया। उन्होंने कहा : "मैने यहाँ आते ही कम्युनिस्टो के जुल्मो की कहानी सुनी। यह बहुत ही दु खकारक घटना है। लेकिन दु ख करने से कोई लाभ नहीं होगा। हमे इसका इलाज करना चाहिए। कम्युनिस्ट लोग यह सब काम करते है, तो उनको भी काफी तकलीफ उठानी पडती है। वे लोग जगलो मे रहते है। कष्टमय और त्यागमय जीवन

बिताते है। लेकिन उनका रास्ता बिलकुल गलत है। आज हमारे देश की स्थिति ऐसी है कि उसमे हर आदमी की शक्तियो की आवश्यकता है। ऐसी हालत मे मै कम्युनिस्ट भाइयो से विनती करता हूँ कि आप लोग अपना तरीका छोड दीजिये और जनता की सेवा मे लग जाइये। मै नही जानता कि मेरी आवाज उनके कानो तक पहुँचती होगी या नही। लेकिन मै विश्वास करता हूँ कि किसी तरह मेरी बात उनके कानो तक जरूर पहुँच जायगी। मै इस इलाके मे शाति कायम करने के लिए घूम रहा हूँ। इसलिए उन लोगो से मेरी प्रार्थना है कि हमारे इस देश की हालत पर सोचे। स्वराज्य के बावजूद हमारे देश की हालत बहुत खराब है। खाने के लिए आवश्यक अनाज भी यहाँ पैदा नही हो रहा है। विदेशो से अनाज मँगाने की जरूरत पडती है। बिहार जैसे बडे प्रदेश मे अन्नाभाव से लोगो के मरने की खबर है। इतने बडे देश की यह हालत हमारे लिए अत्यत शरम की बात है।"

परस्पर ठगाई

सुजलाम्, सुफलाम् भारत-भूमि के प्राकृतिक वैभव का जिक्र करते हुए विनोबाजी ने पूछा कि "ऐसे महान् देश मे अनाज क्यो कम पैदा होता है? इसके कारण की हमे खोज करनी चाहिए। कारण यही है कि बहुत-से लोग बडी-बडी जमीनें अपने पास रखते हैं, किंतु उसमें अच्छी फसलें पैदा नही कर पाते। मजदूरो को मजदूरी कम मिलती है, इसलिए उन्हे काम मे दिलचस्पी नही होती। जमीन में उनकी कोई दिलचस्पी नही, इसलिए दिनभर काम करके भी वे चार घटे से अधिक काम नहीं कर पाते। मालिक और मजदूर मे परस्पर ठगाई चल रही है। देश का नुकसान हो रहा है। जमीन न तो श्रीमानो की है, न गरीबों की, वह है सारे देश की। फसल कम होती है, तो नुकसान देश का होता है। इसका उपाय यही है, जो आजकल मै गॉव-गॉव जाकर बता रहा हूँ। यहाँ भी हमे १०० एकड जमीन मिली। एक भाई, जो इस गॉव के नही, दूसरे

गाँव से आये हैं, उन्होंने जब सुना कि हम भूमिहीनों को भूमि देते हैं, तो वे भी अपने पास की जमीन देने के लिए आये और बहुत प्रेम से जमीन दे गये। इस तरह बड़े लोग, मध्यम श्रेणी के लोग और गरीब लोग, सबका सहकार मिलेगा, तो जमीन का ठीक बँटवारा होगा और उसकी पैदावार भी बढ़ेगी।

कम्युनिस्ट, आओ

"लेकिन जहाँ एक ओर मैं पैदावार बढ़ाने की बात करता हूँ, वहाँ कम्युनिस्ट लोग तो सारे गाँव का अनाज ही जला देने का काम कर रहे हैं। इससे तो लोगों की तकलीफ बढ़ती है। आज देश की जो स्थिति है, उसमें हमें अमीर गरीब, सबके सहयोग की आवश्यकता है। उसके बजाय अगर गाँव-गाँव में गरीब और अमीर का झगड़ा शुरू हो जाय, तो इससे भारत के देहातों में आग लग जायगी। गोकुल में आग लगी, तो भगवान् कृष्ण उसे पी गये। आज भी गाँवों में गरीबी और भूख की आग है, हमें उसे बुझाना है। उसके बदले अगर लोग और आग ही लगाना चाहेंगे, या आग लगाने का कार्यक्रम जारी रखना चाहेंगे, और दुश्मनी और वैरभाव बढ़ाने का काम करेंगे, तो दुनिया का भला नहीं होगा। भगवान् कृष्ण ने गोकुल के लोगों में, छोटे-बड़े सबमें, गोकुल हमारा, हम सब गोकुल के, ऐसी भावना भर दी थी। हमें यही भावना गाँव-गाँव में भरनी है। गाँव के गरीब-अमीर, सबके बीच प्रेमभाव बढ़ाना है। मैं इस काम के लिए अपने कम्युनिस्ट मित्रों का आवाहन करता हूँ कि 'आओ और यह काम करो। छोड़ो हिंसा का तरीका। उससे आपको भी तकलीफ हो रही है, और लोगों को भी तकलीफ हो रही है'।"

यम के दूत ?

पुलिस के जुल्मों के बारे में कल की तरह आज भी दुहराया। उन्होंने पुराण की कहावत की याद दिलायी कि "यम राजा बड़े देव हैं, लेकिन उनके दूत राक्षस के समान होते हैं। सरकार पुलिस को जनता की

मदद के लिए भेजती है और पुलिस जनता को लूटती है। 'क्यो? कम्युनिस्टो को मदद करोगे?' बस, लोगो से ऐसा कहते है और पीटते है। मै इसको भी माफ कर दूँ, लेकिन पीटते भी है और पैसा भी लेते है। आग बुझाने के बजाय उसमे केरोसिन उँडेलते है। यह तो सरकार का भी विद्रोह है और देश का भी विद्रोह है।"

पुलिस की व्याख्या

अन्त मे कहा : "मै पुलिसवालो को आगाह करना चाहता हूँ कि भाइयो, इस तरह लोगों को परेशान करना आपका काम नहीं है। आपको प्रजा के साथ प्रेम का व्यवहार करना चाहिए। अंग्रेजी मे पुलिस शब्द का अर्थ होता है—सेवा करनेवाला, रक्षण करनेवाला। आपको समझना चाहिए कि आप स्वराज्य के सिपाही है। स्वराज्य के सिपाही जनता के नौकर होते है, मालिक नहीं। पुलिस सभी बुरे होते है, ऐसा मेरा कहना नही है। लेकिन इस इलाके मे कई जगह पुलिस के हाथ से गलतियाँ हुई है, ऐसा मैने सुना है। कम्युनिस्ट गरीबो की सेवा के लिए आये और लूटने लगे। पुलिस प्रजा की रक्षा के लिए आयी और वह भी लूटने लगी। तो इस तरह कैसे काम बनेगा? शाति कैसे कायम होगी?

शांति का उपाय

"उसका उपाय यही है, जो मैने आजकल शुरू किया है। प्रजा के भीतर जाइये, उनका प्रेमभाव बढाइये, उनको हिम्मत दिलाइये, निर्भय बनाइये, भू-दान दिलवाइये और इस तरह अमीरो और गरीबो मे मेल कायम करवाइये। दोनों को दौलत के निर्माण मे जुटा दीजिये। हमे खेती का सुधार करना है, गायो का सुधार करना है, दूध बढाना है, अनाज बढाना है, यह सब कौन करेगा? हम सबको यह करना है। कांग्रेसवालो को, सोशलिस्टों को, कम्युनिस्टों को भी। तभी स्वराज्य के बाद यह देश सुखी हो सकेगा। अन्यथा एक-दूसरे के साथ लडाई शुरू होगी। स्वराज्य

के पहले हमें सुविधा थी कि हम अपनी जिम्मेवारी अंग्रेजों पर डाल सकते थे, अब वैसी सहूलियत नहीं है। अंग्रेजों की हुकूमत अब खतम हो चुकी है। अब अगर दुःख-दारिद्र्य रहता है, तो उसकी जिम्मेवारी हमारी है।"

सबसे दान

पेदामुगल में अधिक जमीन रखनेवाले और कम जमीन रखनेवाले—दोनों से जमीन माँगने का जो सिलसिला विनोबाजी ने शुरू किया, वह कल और आज यहाँ भी जारी रहा। पहले बड़े काश्तकारों ने कुछ जमीन दी, फिर औसतवालों को बुलाया। शुरू में वे लोग विनोबाजी से मिलने में सकुचाये। किंतु दो-तीन बार बुलाने के बाद आ गये। विनोबाजी ने उनके साथ बातचीत की, तो उनका संकोच दूर हुआ और उन लोगों ने दिल खोलकर जमीन दी। कुल सौ एकड़ जमीन मिली।

प्रधानमंत्री की आज्ञा

अक्सर कहीं रेडियो सुनने का न अवसर रहता है, न सुविधा रहती है। परन्तु यहाँ एक भाई के पास बैटरी का रेडियो था। शाम को पंडित जवाहरलालजी का भाषण था। भाषण में संयोग से वे ही भाव थे, जो विनोबा के आज के प्रार्थना-प्रवचन में हम लोगों ने सुने थे। देश की परिस्थिति का चित्रण था और देशवासियों का आवाहन था कि पैदावार बढ़ाने में मदद करें। हफ्ते में एक भोजन छोड़ने की अपील थी, क्योंकि देश में चावल की कमी थी। "देश के प्रधानमंत्री का सुझाव उसकी आज्ञा ही होती है, जिस पर हर नागरिक को अमल करना चाहिए।' विनोबा अपने को इसमें अपवाद कैसे मान सकते थे?

अल्सर की बीमारी की वजह से विनोबाजी अन्न में चावल के सिवा दूसरा कुछ ले भी नहीं पाते थे। दूध, दही और मुलायम चावल या चावल की कांजी। प्रधानमंत्री का भाषण सुना, तो उस रोज से चावल छोड़ दिया।

● ● ●

तीन यक्ष प्रश्न

: १८ :

राजावरम्

२-५-'५१

प्रेम की जीत

राजावरम् जाते हुए बीच के एक गॉव मे एक अद्भुत दृश्य दिखाई दिया। जब गॉव एक मील दूर रहा, तो पहले गॉव के छोटे-छोटे बालको ने जयजयकार द्वारा विनोबाजी का स्वागत किया। फिर उन्होने भजन गाना शुरू किया और विनोबाजी के पीछे-पीछे साथ हो गये। थोडी दूर चलने पर बडे लडके मिले और फिर गॉव के प्रौढ पुरुष। थोडा आगे चलने पर गॉव के समीप, गॉव के स्त्री-पुरुष, सब एक कतार मे अत्यत शान्त खडे प्रतीक्षा करते दिखाई दिये। गॉव बायें हाथ पर था। राजावरम् का रास्ता बाहर ही बाहर दायी ओर से गुजरता था। मोड पर पहले लोगो ने गॉव का रास्ता दिखाते हुए कहा : "महाराज, भीतर से।" छह मील चल चुके थे और करीब उतना ही चलना था। हम लोगों ने क्षमा मॉगी और आगे बढना चाहा। बहनो ने हाथ जोडकर अपनी प्रार्थना दुहरायी। हमने फिर क्षमा मॉगी और कुछ आगे बढ भी गये। अब बहनों ने घेर लिया। हमने रास्ता मॉंगना चाहा, लेकिन बात की बात मे एक, दो, तीन, चार, अनेक बहनो ने पू० विनोबाजी के और उनके सहयात्रियो के पॉव ऐसे पक्के पकड लिये कि छुडाना असम्भव हो गया। "तुका म्हणे कळ, पाय धरता न चाले बळ।" पॉव पकड लेने पर भगवान् का भी बल भक्त के सामने नही चलता। विनोबा, जो रास्ते पर कभी कहीं रुकते नही, सहसा हॅस पडे। इस बीच मदालसा बहन ने उन लोगो की हिमायत और वकालत

भी काफी कर ली। बहनों की जीत हुई। विनोबा के मुख से निकला—"चलो"—और वे गाँव की ओर मुड़े।

सब दुःखो पर एक ही इलाज

गाँव का कोना-कोना साफ-सुथरा, आँगन लिपा-पुता, चौक पूरे हुए, जगह जगह द्वार! गाँववालो की सूझ-बूझ, योजना-शक्ति, सब विस्मित कर देनेवाली थी। उनको कैसा आत्मविश्वास था कि विनोबा को गाँव मे लायेंगे ही। गाँव के भीतर, एक अच्छे स्थान पर सभा का आयोजन कर रखा था। व्यासपीठ आदि खूब सजा-सजाया तैयार था। विनोबाजी ने आसन ग्रहण किया, तो आरती आदि की रस्मो के बाद, थोडी देर बिलकुल शाति छा गयी। इस बाह्य शाति और प्रेम-प्रवाह के भीतर कितनी वेदना पडी थी, इसकी कल्पना उस निवेदन से मिल्ती है, जो गाँववालो ने विनोबाजी की सेवा मे पेश किया। विनोबाजी को इस गाँव के भीतर आने के कारण जो कुछ कष्ट हुआ और उनका जो समय बीता, उसके लिए क्षमा माँगते हुए लोगो ने नम्रतापूर्वक कहा. "नारायण स्वामी नामक जमादार ने सामूहिक जुर्माने के नाम से सारे गाँव से जबरन् पचास हजार रुपया वसूल कर लिया है और उसकी शिकायतों की अब तक कोई सुनवाई नही हो पायी है।"

विनोबाजी ने आश्चर्य से पूछा : "क्या यह वही नारायण स्वामी है, जिसकी शिकायत कल भी सुनी थी?"

कार्यकर्ताओ ने "हाँ" मे उत्तर दिया। विनोबा के दुःख का पार नही रहा। स्वराज्य की पुलिस का यह कैसा दर्दनाक रवैया?

विष का घूँट पीकर उन्होंने लोगो को सान्त्वना दी। "अच्छा किया, आप लोग मुझे यहाँ ले आये और अपना दु.ख बताया। सब दुःखो पर एक ही इलाज है—निर्भय बनो। भाई-भाई की तरह रहो। आज सब कैसे एक परिवार की तरह जुट गये हो? हमेशा ऐसा नही रह सकते? इसके लिए जिन्हें भूमि नही उन्हे, जिनके पास भूमि है, वे दे। मै आजकल यही

संदेश सुनाता जा रहा हूँ।" इतना कहकर, उनकी अर्जी लेकर विनोबा राजावरम् की ओर तेजी से बढे।

राजावरम् एक मील पर दिखाई दे रहा था। दायीं ओर पहाडियाँ अर्थात् बिना वृक्षो की—बायीं ओर एक बडा सुन्दर तालाब। थोडी दूर से **"राम भजे, रघुराम भजे"** का भावनापूर्ण भजन सुनाई देने लगा। बात की बात मे सैकडो लोगो का दर्शन हुआ और एक बडा जुलूस बन गया, जिसके साथ गाँव की पाठशाला मे हम लोग पहुँचे, जहाँ आज का डेरा था।

मालूम हुआ कि गाँव के सभी धनी मालगुजार लोग भय के कारण ग्राम छोडकर मिरियालगुडा चले गये है—वही रहते है। छोटे छोटे भूमि-वानो को बुलाकर उनसे बात की। भू-दान यज्ञ मे इन अल्प भूमिवान् भाइयो ने भी पचीस एकड की आहुति प्रदान की।

प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी ने कम जमीनवाले भाइयो द्वारा मिले दान की सराहना की और आशा प्रकट की कि मिरियालगुडा पहुँचने पर इस गाँव के दूसरे लोगो से भी जो अधिक भूमि रखते है, भू-दान प्राप्त करेगे।

भू-दान की भावना ने जनता के हृदयों मे काम करना शुरु कर दिया था। जिस-जिसके पास है, उसे देना चाहिए—यह देने की हवा बनती जा रही थी। रामराज्य की अरुणिमा दिखाई दे रही थी। विनोबाजी ने आज शायद इसीलिए प्रार्थना-प्रवचन मे रामराज्य का सीधा-सरल अर्थ समझा दिया : "रामराज्य क्या है ? वह कैसे प्रकट होगा ? आप लोगो को कठिन लगता है, किन्तु कठिन नही है। हम सबके भीतर घट-घट मे जो राम रम रहा है, उसे बाहर के जीवन मे प्रकट करना, यही रामराज्य है। यह कैसे हो सकता है ? सबसे पहली बात निर्भय बनने से और फिर प्रेम-मय बनने से अर्थात् राममय बनने से।

"निर्भय बनने के लिए, प्रेममय बनने के लिए—राममय बनने के लिए,
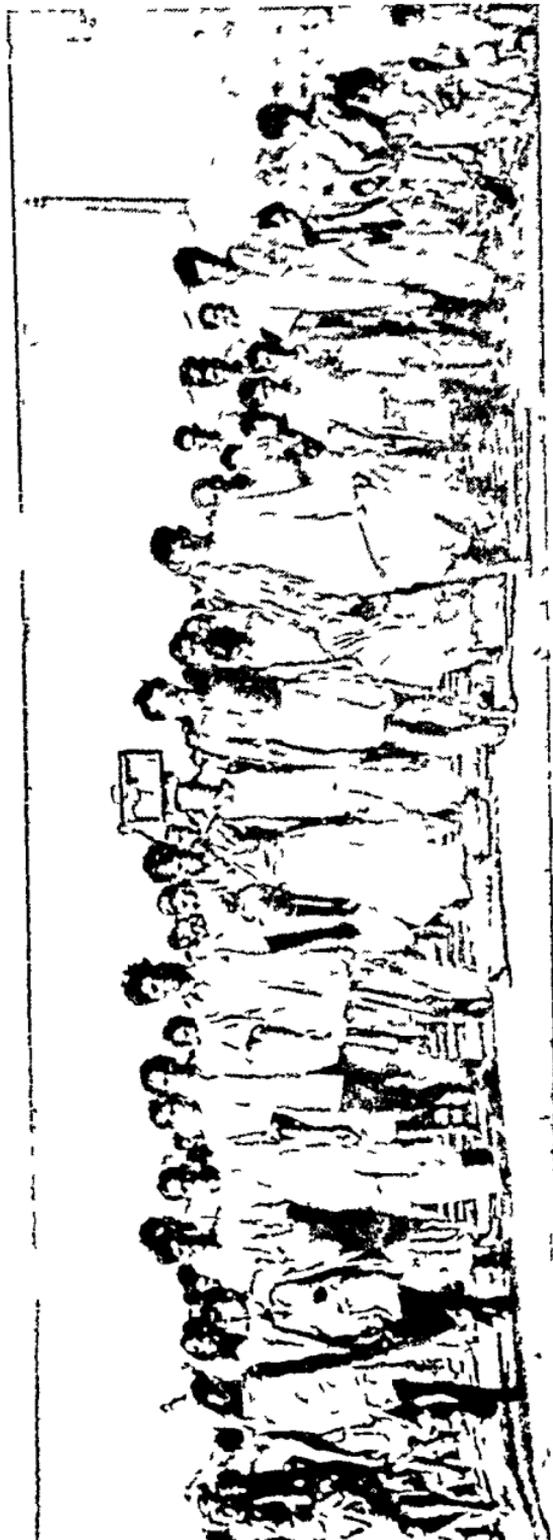
शांति सेना के सिपाही को अपने बीच पाकर तेलगाना की जनता में उत्साह की लहर दौड गयी

मुझे केवल जमीन नहीं चाहिए, आपका जीवन भी इस काम के लिए चाहिए।

राम का ही राज्य चारो ओर छा जाय, इसके लिए, भय-निवारण और मोह-निवारण, दोनो जरूरी है। मोह संपत्ति का और जमीन-जायदाद का।" विनोबा ने समझाया कि "जब इन छोटे-छोटे लोगो ने भी मोह छोड़ा और जमीन दी, तो बड़े लोग क्यो नही देगे ? वे भी देगे। और बड़े लोग भी जब देने लगेगे, तो भय का कारण ही नही रहेगा और दोनो के इस प्रेममय व्यवहार से गाँव भी प्रेममय बन जायगा। रामराज्य कायम होगा।"

एक ओर कम्युनिस्टो की कार्रवाइयो के फलस्वरूप बड़े लोगो का ग्राम-त्याग, दूसरी ओर पुलिस का त्रास, और इस कठिन परिस्थिति मे भी भू-दान के लिए छोटे-छोटे लोगो की यह हिम्मत-भरी पहल ! सुख दु ख के भावों से परे रहते हुए भी विनोबा के चित्त मे ये घटनाएँ जरूर असर लाती है।

आज रास्ते मे केशवरावजी ने महत्त्वपूर्ण प्रश्न पूछ लिये। केशवरावजी नलगुडा जिला के ही है—वकालत करते थे—कुछ वर्षों से कांग्रेस के काम मे सतत लग जाने के कारण वकालत छोड़ रखी है। पोतना का भागवत खूब कठ है। जब भी मौका मिलता है, सारे रास्ते पोतना का भागवत सुनाते रहते है। विनोबा भी प्रेमपूर्वक और सराह-सराहकर सुनते रहते है। खासकर सत्याग्रही प्रह्लाद का आख्यान, जो श्रोता और गायक, दोनो को ही बहुत प्रिय है।

"कुछ निराशा के भावो से केशवरावजी ने पूछा · विनोबाजी, दुनिया में अब तक अनेक साधु-सन्त हो गये, परतु दुनिया बदली-सी नजर नही आती।"

"ऐसा आपको क्यो लगता है ?" विनोबा ने आश्चर्य से पूछा। "फिर आप ऐसा तो कहते नहीं कि इतने राजा लोग आये परतु दुनिया बदली नही। दुनिया मे परिवर्तन हो चाहे न हो, राजा लोग तो आते रहने चाहिए। परतु साधु-सत आये, तो एकदम परिवर्तन दीख पड़ना

चाहिए। लोगो की यह अपेक्षा वेठीक नही है। ठीक ही है। परतु वस्तुस्थिति यह है कि जो परिवर्तन होता है, वह हमे दीखता नही। दुनिया कितनी बदल गयी है। द्रौपदी पॉच पति रखकर भी सती कहला सकती थी। आज वह बात नहीं रही।"

द्रौपदी की मिसाल से केशवरावजी चुप तो हो गये। परतु उनका समाधान नही हुआ। उन्होंने दूसरे तरीके से फिर वैसा ही प्रश्न पूछा :

केशवराव : "लेकिन क्या यह यकायक सभव है कि मनुष्य अपने पारिवारिक क्षेत्र से बाहर जाकर सारे समाज के लिए ही सब कुछ सोचने और करने लगे ? यह कब होगा विनोबाजी ?"

विनोबा : "होगा तब, जब किया जायगा। सभव जरूर है। मनुष्य अपने बाल-बच्चो को अपने खुद की अपेक्षा अधिक प्यार करता है या नही ? उनके लिए जी तोडकर मेहनत करता है या नही ? जिस न्याय से वह परिवारवालो के लिए यह परिश्रम करता है, उसी न्याय से वह समाज के लिए और ससार के लिए भी कर सकता है। जरूरत है उचित शिक्षण की, योग्य सस्कारो की। शिक्षण देने मे हम हारते है—फिर किसी भी तरह कुछ भी कर डालने की हमे जल्दी होती है। उससे कुछ तो होता है—पर वह नही होगा, जो हम चाहते है। हम जो चाहते है वह तो तभी होगा, जब हम पूरी तरह अपने विचारो के अनुसार चले। रास्ता वही शार्टेस्ट है और शुअरेस्ट भी।"

इस बार तसल्ली मिली। फिर भी एक और सवाल, जो प्राय सभी कार्यकर्ताओ के दिल मे—और खासकर राजनैतिक कार्यकर्ताओं के दिल मे उठता रहता है, केशवरावजी ने पूछ लिया—शायद इसलिए भी कि अब शीघ्र ही चुनाव भी आनेवाले है। तो सफाई हो जाना ठीक है।

प्रश्न : "हम जनता का व्यापक हित सरकार द्वारा कर सकते है या सरकार से बाहर रहकर ?"

उत्तर : "सरकार द्वारा जनता का व्यापक हित हो सकता है—पर

वह होगा मर्यादित। याने कम-से-कम। सरकार तो औसत भलाई ही कर सकती है। वह न तो बहुत बुराई कर सकती है, और न बहुत भलाई। आम जनता जिन्हें अपना प्रतिनिधि चुन देती है, वे लोग अच्छे हैं—परंतु कर उतना ही सकते हैं, जितना आम जनता हजम कर सकती है। सौ एकड़ से अधिक भूमि पास न रख सकने का कानून सरकार कर सकती है। परंतु केवल आवश्यकता से ज्यादा न रखकर बाकी सबकी सब भूमि दान कर देने का आदर्श तो व्यक्ति के जीवन में ही प्रकट हो सकता है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि बाहर रहकर सरकार और जनता, दोनों का मार्गदर्शन किया जाय। संतों ने ऐसा ही किया और उसीसे समाज आगे बढ़ पाया है।"

● ● ●

दोनों का डर

: १६ :

विरलापल्ली
३-५-'५१

राजावरम् से रवाना होते समय ग्रामवासी लोग भजन गाते हुए काफी दूर तक निकल आये। एक मील पर अहिल्या नदी थी। लोग चाहते थे कि विनोबाजी को नदी पार कराके ही लौटे। परन्तु बीच मे जब एक नाला आया, तो बाबा ने वही पर सबको रोक लिया और "अन्दरीकी नमस्कारम्" (सबको नमस्कार) कहकर ग्रामवासी जनो को लौटने का इशारा किया। लोग लौटने की मन:स्थिति मे नही थे, केवल आज्ञा-पालन की भावना से रुक गये। न जाने कितनी देर तक विनोबाजी की दिशा मे देखते रहे। ऑखे विनोबाजी की ओर, मन भी विनोबाजी की ओर, मुख से "रामम् भजे" का मधुर गीत।

अहिल्याजी को पार करके देवलापल्ली होते हुए विरलापल्ली पहुँचे। देवलापल्ली मे भीषण उदासीनता पायी। ऐसी कि अब तक कही नही थी। बाद मे मालूम हुआ कि हैजे के प्रकोप से लोग बहुत दुखी और परेशान हैं। इर्द-गिर्द नजदीक कोई दवाई का प्रबध नही। घर-घर मे मृत्यु की घटनाऍ घट रही है। मन:स्थिति ऐसी नहीं थी कि सत की अगवानी मे आते और पत्र-पुष्प से भेट करते। सकोचवश घर से बाहर भी नही निकले।

विरलापल्ली मे भी पुलिस मौजूद थी, कम्युनिस्टो द्वारा डेढ साल पहले तीन हत्याऍ होने की शिकायत थी। रात को दस बजे के बाद लोगो का बाहर निकलना पुलिस और कम्युनिस्ट, दोनो के कारण असम्भव हो गया था। लोगों के दिलो पर दोनो का खूब डर छाया हुआ था। जमीन भी आज कुल पॉच ही एकड मिली। लोगों मे गरीबी भी बहुत पायी गयी। जमीन यद्यपि कम मिली, भयभीत मनो को शाति और तसल्ली जरूर मिली। ● ● ●

नदी से बढ़कर कौन गुरु ? : २० :

वाडेपल्ली
३ तथा ४-५-'५१

पहाडी रास्ते से गुजरकर हिरन तथा अन्य वनचरो को देखते हुए सवेरे आठ बजे कृष्णा नदी के किनारेवाले इस गाँव मे जब विनोबाजी और उनके सहयात्री पहुँचे, तो सहसा सबको परधाम-आश्रम का स्मरण हुए बिना न रहा।

निवास पर पहुँचने पर वेदपाठी पडित लोगो ने वेद-मत्रो से पुष्पा-जलि अर्पण की। यात्रा मे यह तीसरा प्रसग था, जब इस तरह वेदपठन-युक्त स्वागत-समारोह हुआ था। विनोबाजी ने बाद मे बताया कि स्वर, सगीत और अर्थ, तीनों दृष्टि से पडितों का ज्ञान बहुत ही कम था। अब तक के सारे प्रसगो मे सरवेलवाला वेदपाठ सर्वश्रेष्ठ था, क्योंकि वहाँ विनयाश्रम के सीताराम शास्त्री ने स्वय वेद-मत्रो का गान किया था।

स्नानादि के पश्चात् विनोबाजी कृष्णामाई के दर्शन के लिए गये। जल से मस्तक धोया, वस्त्र भी भिगोया, लौट आये। ग्यारह बजे ग्रामवासी मिलने आये। यही पहला गाँव था कि दु ख-दर्द की कोई विशेष कहानी सुनने का मौका नही आया। १,६०० की आबादी में करीब सौ लोग खादीवाले भी थे। हरएक को थोडी-थोडी जमीन है, किसीको २ एकड, तो किसीको २० एकड। अधिक जमीनवाले लोग बहुत कम है। करीब सौ चरखे चलते है। मजदूरी अनाज मे प्रतिदिन चार सेर दी जाती है। यद्यपि कम्युनिस्टो द्वारा कोई कष्ट नही पहुँचा है, फिर भी पुलिस मौजूद है। लोगो को न विशेष दु ख है, न विशेष ज्ञान। न उनकी सेवा के लिए यहाँ कोई कार्यकर्ता कभी आये है।

कृष्णा के उस पार गुण्टूर जिला है। आवागमन के लिए नाव चलती रहती है। उधर से अनेक लोग विनोबाजी से मिलने आये थे।

कृष्णामाई

आज के प्रार्थना-प्रवचन मे शुरू मे विनोबाजी ने इस गाँव की समाधानकारक हालत पर सतोष प्रकट किया। फिर कृष्णामाई का दृष्टान्त देते हुए कहा : "यह कृष्णा तो परमेश्वर का रूप है, क्योंकि वह हमे नित्य शिक्षण देती है। उसके अखड प्रवाह मे अखड कर्मयोग का सकेत भरा है। कृष्णामाई के हृदय मे तनिक भी सकोच नही है। महाराष्ट्र मे जन्म लेकर उसने आन्ध्र देश को भी समान प्रेम दिया है। दोनो जगह के लोगो को समान लाभ पहुँचाया है। उसके मन मे भेदभाव नही है। गरीब-अमीर, सबको समान रूप से पानी पिलाती है। हरिजन, परिजन, गाय, शेर, यह भेद उसके पास नही है। उसकी उदारता का पार नही है। उसका एक ही उद्देश्य है—सागर मे विलीन होना। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह अखड बहती है और रास्ते मे सबका कल्याण करती जाती है।"

इतनी प्रस्तावना के बाद विनोबाजी ने मार्मिक प्रश्न पूछ लिया : "क्या ऐसी नदी से बढकर भी कोई गुरु हो सकता है? मुझे आश्चर्य होता है कि ऐसे महान् गुरु के होते हुए भी लोग गुरु की खोज मे भटकते रहते है।"

गुलामी का प्रबल सस्कार

दोपहर की बातचीत मे विनोबाजी ने यह इच्छा प्रकट की थी कि जब गाँव मे कोई अशाति नही है, तो पुलिस की आवश्यकता नही रहनी चाहिए। इसलिए उन्होने पुलिस को रवाना करने की सलाह दी थी। परतु लोगो ने चाहा कि पुलिस रहे। इस सम्बन्ध मे उन्होने अपना विचार जाहिर करते हुए कहा : "मुझे यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि आप लोग भी पुलिस चाहते है। कहते हैं पुलिस से हमारी रक्षा होती है। आपकी

बात सुनकर ऐसे आश्चर्य नही हुआ, क्योकि भारतवर्ष की गुलामी को मै जानता हूँ। सैकडो वर्षो तक दूसरे लोगो ने हमारी रक्षा की, कभी हमारे देश के राजाओं ने, कभी बाहर से आये हुए लोगो ने। लेकिन हमारा समय गुलामी मे बीता। मुझे खुशी होगी, यदि हमारे लोग इस स्वतत्र भारत मे अपनी मानसिक गुलामी को छोड सके।"

यहाँ जो पुलिस रखी गयी थी, उनसे भी विनोबाजी की बातें हुईं। पुलिस सज्जन और भावनावान् प्रतीत हुई। गाँवो मे उन्हे दूध आदि मिलने मे कठिनाई होती थी। विनोबाजी ने लोगो को समझाया कि उनके बस की सहायता वे पुलिस को जरूर करे।

गीता-संवाद

कृष्णामाई के किनारे आज विनोबाजी ने कविवर सियारामशरणजी के गीता-सवाद की प्रस्तावना लिख दी। कविवर ने अनुवाद तो बहुत पहले भिजवाया था। विनोबा ने अनुवाद की दृष्टि से कुछ सुझाव दिये थे, तो श्री किशोरलाल भाई के साथ बैठकर उन्होने सारा अनुवाद विनोबा की दृष्टि से दोहरा लिया था। यह अनुवाद सुधारा हुआ और दूसरी बार आया था। विनोबा ने आज समय निकालकर उसे देख लिया और तुरत प्रस्तावना भी लिखा दी, जिसमे कविवर के मनोयोग की प्रशसा करते हुए लिखा : "सियारामशरणजी जैसे भक्त-जन किसी तरह का दावा किये बिना केवल चित्त-शुद्धि के हेतु ऐसे प्रयत्न किया करते है। और उस प्रयत्न से उसी तरह का उपयोग अगर दूसरे चद भाइयो को हुआ, तो अपनी अपेक्षा से बहुत अधिक हुआ, ऐसा मानते है।"

× × ×

प्रवचन के बाद शाम को विनोबाजी सगम के तथा मदिर के दर्शन करने गये। उनके पहुँचने पर विधिवत् पूजन के बाद भावपूर्ण वातावरण मे भगवान् की आरती की गयी। चारो ओर जगमगाती दीपशिखाएँ, मत्रोच्चार, पुष्पाजलि, सारा समारोह बडा प्रेरक था। थोडी देर अपने को

भूल सके, ऐसा वातावरण सबने अनुभव किया। विनोबा तो आरती में इतने तन्मय हो गये कि हाथ से ताल देने लगे। मंदिर में पुजारी पूजा और आरती में मग्न था। मानव-मंदिर का पुजारी अपनी विश्वभावना में तल्लीन था। मंदिर में भगवान् की मूर्ति विराजमान थी। किंतु इधर हृदय-मंदिर में तो आत्माराम नित ही रममाण थे। इसलिए ज्यों ही आरती समाप्त हुई, विनोबा की आरती शुरू हुई। गगन का थाल था, रवि-चंद्र दीपक बने, तारिका-मंडल ने ज्योति जगायी, मलयानल का धूप जला और पवन चँवर ढालने लगा। नानक की पावन वाणी में आरती गूँज उठी। अनहद नाद बजने लगा। अमूर्त की सहस्र मूर्तियाँ और अनयना के सहस्र नयन। उस भाव-आरती में विनोबा तल्लीन हो गये। लोगों के लिए वामन का यह रूप और भी प्रिय हो गया। भक्त विनोबा अनंत में लीन थे। इर्द-गिर्द जनों का मानस उस परम भक्त के चरणों में लीन था। ● ● ●

कम्युनिस्ट होना गुनाह नहीं है : २१ :

पालखेड
५-५-'५१

वाटेपल्ली से पालखेड आते रास्ते में डेढ मील पर ही मूसा नदी को पार करना था। यह डेढ मील का रास्ता अत्यत कठिन, एक ऊँची पहाडी से गुजरता था। पहाडी, जो केवल ककरीली और ककर भी अत्यधिक नोकीले। रास्तेभर कसरत से बिखरे हुए।

काननु कठिन भयकरु भारी। घोर घामु हिम बारि बयारी ॥
कुस कटक मग कॉकर नाना। चलब पयादेहि बिनु पदत्राना ॥

और फिर ऐसे बिना पदत्राण के चलनेवाले विश्वात्मा को निहारकर ये पक्तियाँ भी याद आना स्वाभाविक था

चरन कमल मृदु मजु तुम्हारे। मारग अगम भूमिधर भारे ॥
कदर खोह नदी नद नारे। अगम अगाध न जाहि निहारे ॥

यह सब था, 'भालु बाघ वृक केहरि नागा' भी थे, परतु शाति-सेना के वीर गम्भीर सैनिक के लिए असुविधाएँ भी सुविधाएँ थीं। और उनका कदम बढता ही चला जा रहा था।

रास्ता किसी भी प्रकार के वाहन के लिए अनुकूल न था। अल्सर के रोगी के लिए दो-दो घटों से दही की खुराक आवश्यक थी। सारी मजिल तीन चार के खुराक की थी। एक सेवक सहयात्री सिर पर इस दूध-दही के खुराक की टोकनी लिये चल रहा था। और यह विकट रास्ता सवेरे के अँधियारे मे तय हुआ जा रहा था। पग-पग पर सब कुछ बिखर जाने का भय बना था। परतु धूपो मे भी वृक्षो को हरा-भरा रखने की चिता करनेवाला क्या दरिद्रनारायण के पुजारी की चिता नहीं करेगा?

तो फिर ककरीवाला रास्ता भी कुसुमवत् नही होगा ? इसी श्रद्धा से सेवक भी बढा जा रहा था। पौराणिक वर्णनो मे रास्ते के कॉटो का फूलों मे परिवर्तित होना सुना है। यहॉ तो मानो उसका साक्षात्कार ही हुआ जा रहा था।

आखिर पहाडी खतम हुई। पॉवो को मृदुलतम बालू का स्पर्श हुआ। मूसा का दृश्य भी बडा सुन्दर था। एक ओर पहाड, दूसरी ओर जगल, बीच मे पहाड से सटी नदी और इर्द-गिर्द बालू। इस तरफ से उस तरफ, और उस तरफ से इस तरफ कम्युनिस्ट पुलिस को चकमा देकर अपना काम करते रहते थे। कई कम्युनिस्ट यहॉ भूमिगत थे। सरकार का कहना है कि उनमे से एक-एक कम्युनिस्ट दस-दस, बीस-बीस हत्याओ के लिए जिम्मेदार है।

मूसा के बाद का सारा रास्ता रेगिस्तान-सा है। बीच-बीच मे लम्बाडों के समूहो को बसाया गया है। कम्युनिस्ट अब भी इन्हें पहाडो मे लौट चलने की प्रेरणा देते रहते है। इन्हीके यहॉ वे खाते-पीते हैं। फी रोटी एक रुपया इन्हें पुरस्कार मे मिलता है। लेकिन लम्बाडे अब समझ गये हैं, इसलिए जब कम्युनिस्ट आते है, तो दूर से ही हाथ जोडकर उनसे क्षमा मॉग लेते है। भय बना रहता है कि कही उन्हें भी कम्युनिस्टो की गोली का शिकार न होना पडे। लम्बाडो को अपनी जमीन नहीं है, जिसके लिए वे तरसते है। कम्युनिस्ट उन्हे जमीन की आशा दिलाते है।

जबरन् लेवी

अक्सर कार्यकर्ता लोग दोपहर मे आकर मिलते है और शका-समाधान कर जाते है। परतु तेलगाना मे जनता जाग्रत है, इसलिए जब जो शका मन मे उठती है, पूछ लेते है। प्रात.कालीन स्वागत-सभा मे एक अर्धनग्न किसान भाई ने पूछा : "महाराज, हमसे लेवी जबरन् ली जाती है।"

"क्योकि बिहार और मद्रास मे अपने देशवासी भाइयो के मर जाने का अदेशा है।" विनोबा ने समाधान किया।

किसान ने फौरन दूसरा प्रश्न पूछा :

"तो यहाँ तो मूसा भी है। उससे नहर निकलवाकर सिंचाई का अच्छा प्रबंध करवा दीजियेगा, ताकि फसलें अच्छी और ज्यादा आ सकें।"

"हाँ, मैं अभी मूसा ही पार करके आ रहा हूँ। तुम्हारा सुझाव ठीक है। और शाम की प्रार्थना में मैं इस संबंध में समझा दूँगा।"

किसान खुश हुआ। सभी खुश हुए—और शाम तक उन्होंने करीब पचानवे एकड़ जमीन भूदान भी जमा कर लिया।

वर्षा की सीख

शाम को तीन बजे से छह बजे तक विनोबाजी के यहाँ एक बड़ा दरबारे आम लगा रहा। शिकायतों की चालीस अर्जियों में से तीस का फैसला हुआ। बेगार को लेकर पुलिस के खिलाफ भी काफी शिकायतें थीं। इस बीच वर्षा भी जोरों की आयी। कोई स्थान सहारे के योग्य नहीं था। जिस झोपड़ी में विनोबाजी का निवास था, उसीमें खड़े होकर प्रार्थना करना निश्चय हुआ। वर्षा के बावजूद अर्जियों की सुनवाई जारी रही। कुछ देर में वर्षा रुकी। आसमान के नीचे खड़े होकर स्त्री-पुरुष, सबने प्रार्थना की। तेलगाना में जहाँ एक ओर से हिंसा और नास्तिकता का इतना आन्दोलन था, वहाँ वर्षा के बावजूद भी सैकड़ों लोग प्रार्थना में जुटे रहे। खड़े-खड़े ही विनोबाजी का प्रार्थना-प्रवचन हुआ। उन्होंने प्रारम्भ में वर्षा की आगमनी का दृष्टान्त देकर कहा 'देखिये, दोपहर की धूप के कारण आप लोगों को कितनी तकलीफ हो रही थी। लेकिन आखिर बारिश आयी, ठंडक आयी। इसी तरह मनुष्य अगर शान्ति से कष्ट सहा करता है, तो अच्छे दिन अवश्य आते ही हैं। सीता ने भी बहुत कष्ट सहन किये किन्तु आखिर उसे सुख मिला। आप लोगों को भी इस मुल्क में बहुत तकलीफ सहनी पड़ी है। थोड़ा और सहन कीजिये तो देखिये, कि आपके भी अच्छे दिन आ ही रहे हैं।'

प्रवचन में उपस्थित जनता को, पुलिस को और कम्युनिस्टों को तीनों

तो फिर ककरीवाला रास्ता भी कुसुमवत् नही होगा ? इसी श्रद्धा से सेवक भी बढा जा रहा था। पौराणिक वर्णनो मे रास्ते के कॉटो का फूलों मे परिवर्तित होना सुना है। यहॉ तो मानो उसका साक्षात्कार ही हुआ जा रहा था।

आखिर पहाडी खतम हुई। पॉवो को मृदुलतम बालू का स्पर्श हुआ। मूसा का दृश्य भी बडा सुन्दर था। एक ओर पहाड, दूसरी ओर जगल, बीच मे पहाड से सटी नदी और इर्द-गिर्द बालू। इस तरफ से उस तरफ, और उस तरफ से इस तरफ कम्युनिस्ट पुलिस को चकमा देकर अपना काम करते रहते थे। कई कम्युनिस्ट यहॉ भूमिगत थे। सरकार का कहना है कि उनमे से एक-एक कम्युनिस्ट दस-दस, बीस-बीस हत्याओ के लिए जिम्मेदार है।

मूसा के बाद का सारा रास्ता रेगिस्तान-सा है। बीच-बीच मे लम्बाडों के समूहो को बसाया गया है। कम्युनिस्ट अब भी इन्हे पहाडो मे लौट चलने की प्रेरणा देते रहते है। इन्हीके यहॉ वे खाते-पीते हैं। फी रोटी एक रुपया इन्हें पुरस्कार मे मिलता है। लेकिन लम्बाडे अब समझ गये है, इसलिए जब कम्युनिस्ट आते है, तो दूर से ही हाथ जोडकर उनसे क्षमा मॉग लेते है। भय बना रहता है कि कही उन्हे भी कम्युनिस्टो की गोली का शिकार न होना पडे। लम्बाडो को अपनी जमीन नही है, जिसके लिए वे तरसते है। कम्युनिस्ट उन्हे जमीन की आशा दिलाते है।

जबरन् लेवी

अक्सर कार्यकर्ता लोग दोपहर मे आकर मिलते है और शका-समाधान कर जाते है। परतु तेलगाना मे जनता जाग्रत है, इसलिए जब जो शका मन मे उठती है, पूछ लेते है। प्रात.कालीन स्वागत-सभा मे एक अर्धनग्न किसान भाई ने पूछा . "महाराज, हमसे लेवी जबरन् ली जाती है।"

"क्योकि बिहार और मद्रास मे अपने देशवासी भाइयो के मर जाने का अदेशा है।" विनोबा ने समाधान किया।

किसान ने फौरन दूसरा प्रश्न पूछा

"तो यहॉ तो मूसा भी है। उससे नहर निकलवाकर सिचाई का अच्छा प्रबध करवा दीजियेगा, ताकि फसले अच्छी और ज्यादा आ सके।"

"हॉ, मै अभी मूसा ही पार करके आ रहा हूॅ। तुम्हारा सुझाव ठीक है। और शाम की प्रार्थना मे मै इस सबध मे समझा दूॅगा।"

किसान खुश हुआ। सभी खुश हुए—और शाम तक उन्होने करीब पचानवे एकड जमीन भूदान भी जमा कर लिया।

वर्षा की सीख

शाम को तीन बजे से छह बजे तक विनोबाजी के यहॉ एक बडा दरबारे आम लगा रहा। शिकायतो की चालीस अर्जियो मे से तीस का फैसला हुआ। बेगार को लेकर पुलिस के खिलाफ भी काफी शिकायते थी। इस बीच वर्षा भी जोरो की आयी। कोई स्थान सहारे के योग्य नही था। जिस झोपडी मे विनोबाजी का निवास था, उसीमे खडे होकर प्रार्थना करना निश्चय हुआ। वर्षा के बावजूद अर्जियो की सुनवाई जारी रही। कुछ देर मे वर्षा रुकी। आसमान के नीचे खडे होकर स्त्री-पुरुष, सबने प्रार्थना की। तेलगाना मे जहॉ एक ओर से हिसा और नास्तिकता का इतना आन्दोलन था, वहॉ वर्षा के बावजूद भी सैकडो लोग प्रार्थना मे जुटे रहे। खडे-खडे ही विनोबाजी का प्रार्थना-प्रवचन हुआ। उन्होने प्रारम्भ मे वर्षा की आगमनी का दृष्टान्त देकर कहा 'देखिये, दोपहर की धूप के कारण आप लोगो को कितनी तकलीफ हो रही थी। लेकिन आखिर बारिश आयी, ठडक आयी। इसी तरह मनुष्य अगर शान्ति से कष्ट सहा करता है, तो अच्छे दिन अवश्य आते ही है। सीता ने भी बहुत कष्ट सहन किये, किन्तु आखिर उसे सुख मिला। आप लोगो को भी इस मुल्क मे बहुत तकलीफ सहनी पडी है। थोडा और सहन कीजिये तो देखिये, कि आपके भी अच्छे दिन आ ही रहे है।"

प्रवचन मे उपस्थित जनता को, पुलिस को और कम्युनिस्टो को, तीनो

को लक्ष्य कर उन्होंने कुछ बातें साफ-साफ कहीं। उन्होंने यह इच्छा प्रकट की कि कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों उनकी सभा में शरीक हों। "जो प्रार्थना में शरीक होते हैं, वे सब भाई-भाई बन जाते हैं। इसलिए कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनों के लिए जो मुझे कहना है, मैं यहाँ उनके सामने कह देता हूँ।"

बेगारी से इनकार करो

शुरू में लोगों को अपनी जिम्मेवारी और शक्ति का भान कराते हुए कहा. "अगर पुलिस बिना मजदूरी दिये आपसे काम करवाती है, तो आपको काम करने से इनकार कर देना चाहिए। मैंने सुना है कि उन्होंने आपसे मुफ्त में काम करवाया है। अगर उन्होंने ऐसा किया है, तो यह उनकी गलती है। आइन्दा अगर आप पर कोई ऐसी जबरदस्ती करे, तो आप उन्हें मेरा नाम बताकर कह देवें कि विनोबा आये थे, उन्होंने मुफ्त काम करने की मनाही की है।"

पुलिस सरकार की बेइज्जती न करे

फिर पुलिसवालों से कहा "आप लोग स्वराज्य के पुलिस हैं। हमारा स्वराज्य सारी जनता का राज्य है। अर्थात् पुलिस जनता की स्वामी नहीं, सेवक है। उनको जनता की सेवा करनी है। पुलिस को यहाँ भेजने में सरकार का मनशा यही है कि वे जनता के दिलों में प्रवेश करें और शान्ति कायम करें। इसके विपरीत अगर पुलिस जुल्म, जबरदस्ती करती है, तो उनको यहाँ भेजने का मनशा सिद्ध नहीं होता है और भेजनेवाले की यानी सरकार की बेइज्जती होती है।"

कम्युनिस्टों द्वारा गरीबों की सहायता असंभव

फिर कम्युनिस्टों के बारे में कहा : "मैं देख रहा हूँ कि कम्युनिस्ट भाइयों ने यहाँ काफी उपद्रव मचाया है। लोगों ने जो उन्हें मदद दी है, वह तो कुछ भय के वश दी है और कुछ इस खयाल से कि कम्युनिस्ट गरीबों का भला करनेवाले हैं।

"किन्तु आपको मैं कहना चाहता हूँ कि आप लोग भय से सहायता

करना छोड दे। और अगर आपका यह खयाल है कि वे लोग गरीबो की सहायता करनेवाले हैं, तो मै कह देना चाहता हूँ कि वे गरीबो की कोई सहायता नहीं कर सकते। यह तरीका, जो उन्होने अपनाया है लूट का, डकैती का, खून का, इससे वे गरीबो का भला नही कर सकते हैं। अगर वे अपना हिसा का तरीका बदल देते है, तो मैंने उनको निमत्रित किया है कि वे मेरी प्रार्थनाओ मे शामिल हो जायँ।"

विनोबाजी का एक-एक शब्द कम्युनिस्टो के लिए स्पष्ट आवाहन के रूप मे था। लोगो के दिलो-दिमाग पर उसका जो असर हो रहा था, वह उनके चेहरो से साफ दिखाई दे रहा था। वे लोग गौर से विनोबाजी की बात सुनते थे। फिर एक-दूसरे की ओर देखकर विनोबाजी के वचनो का मानो अनुमोदन करते थे और फिर ध्यानपूर्वक विनोबाजी की ओर उनका दूसरा उद्गार सुनने के लिए उत्सुकताभरी आँखो से देखने लगते थे। विनोबाजी का स्वर भी थोडा बढता जा रहा था। तेलुगु मे अनुवाद करने-वाली श्री लक्ष्मीबहन भी तन्मय होकर विनोबाजी के भावो को अपनी वाणी द्वारा, आँखो द्वारा और दोनो हाथो की प्रक्रिया द्वारा मानो अपने-आपको भूल-कर प्रकट करती जा रही थी। विनोबाजी का अन्तिम वाक्य तो सबके हृदयो को जाकर भिड गया "गरीबो की सेवा, यही अगर कम्युनिस्ट होने का अर्थ है, तो कम्युनिस्ट होना कोई गुनाह नहीं है। तब तो हम सब कम्युनिस्ट है।"

पुलिस फौरन उठ सकती है

उस दिन जो फैसले हुए थे, उनका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा . "आप लोगो की बहुत सारी शिकायते सुन ली गयी और उनमे से बहुतो के फैसले भी हुए। जितना समाधान देना सभव था, दिया गया है। इतना ध्यान रखना चाहिए कि समय जरा कठिन है और कठिन समय मे तकलीफ सहनी ही पडती है। लेकिन किसीका यह मनशा नहीं हो सकता कि आपको तकलीफ पहुँचाये। अगर सरकार मुझे यहाँ आने का मौका देती है, तो उसका अर्थ यही है कि सरकार शान्ति-स्थापन करना चाहती

है। अगर वह शान्ति का मार्ग पसन्द नहीं करती और हर चीज डंडे से ही करना चाहती, तो मुझे यहाँ नहीं आने देती। लेकिन मुझे यहाँ आने की इजाजत दी गयी है। इतना ही नहीं, बल्कि कम्युनिस्ट नेताओं में जेल में जाकर मिलने की भी सुविधा दी गयी है। अर्थात् सरकार चाहती है कि अगर पुलिस को यहाँ से उठा लिया जा सके, तो बहुत अच्छा होगा। इसलिए अगर मेरे आने से आप लोगों के दिलों में निर्भयता पैदा होती है, तो सरकार यह पुलिस फौरन हटा लेगी।"

अंत में, सवेरेवाली सिंचाई की बातचीत का जिक्र करके विनोबाजी ने कहा : "आप देखते हैं कि पुलिस को यहाँ रखने पर सरकार को कितना खर्च करना पड़ता है। यह खर्च कहाँ से आता है? आप लोग जो टैक्स देते हैं, उसीमें से सरकार यह सब खर्चा करती है। आप सिंचाई के लिए मूसा नदी से नहर की माँग करते हैं। लेकिन नहर के लिए पैसा चाहिए और सरकार का पैसा तो पुलिस पर ही खर्च हो रहा है। इसलिए इच्छा रहते हुए भी सरकार नहर पर खर्चा नहीं कर पाती। इसलिए यहाँ से पुलिस जल्द-से-जल्द उठ जानी चाहिए। इसीमें सरकार का और आपका, दोनों का भला है। आपको इसके लिए अपने मन की तैयारी करनी चाहिए। हिम्मत के साथ कह सकना चाहिए कि हम आपस में लड़ेंगे नहीं। खुद अपने गाँव की रक्षा कर लेंगे। अगर सारा गाँव निर्भय बन जाता है और एक-दूसरे के बारे में सुरक्षितता का अनुभव करता है, तो पुलिस यहाँ से हट सकती है और नहर भी आ सकती है।"

विनोबाजी ने मूसा का नक्शा भी मँगवा लिया और नहर की संभावना पर भी विचार किया। मालूम हुआ कि नहर पहले थी, परन्तु मिट्टी से भर गयी है। लोगों का शरीर-श्रम और सरकार के साधन, दोहरे प्रयत्न से नहर बन सकती है। अतः कार्यकर्ताओं को इस दिशा में उचित संयोजन करने की सलाह देकर लोगों को भी श्रम-दान की प्रेरणा दी।

• • •

जिले-जिले में आश्रम

: २२ :

चिल्लेपल्ली
६-५-'५१

स्टेट कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष स्वामी रामानन्द तीर्थ ने यहाँ कुछ दिनो से एक आश्रम खोल रखा है। विनोबाजी का पडाव आज इसी आश्रम मे था। हैदराबाद से विनोबाजी से मिलने के लिए मालमन्त्री वी० रामकृष्णराव तथा स्टेट कांग्रेस के वर्तमान अध्यक्ष श्री बिन्दुजी भी आये थे। दोपहर को कार्यकर्ताओ की सभा भी रखी गयी थी। सभा के पहले विनोबाजी नित्य की तरह ग्राम-प्रदक्षिणा भी कर आये थे।

बेगार के लिए आन्दोलन क्यो ?

शाम की प्रार्थना-सभा मे उन्होने अपनी यात्रा का उद्देश्य और पिछले दिनों आये हुए अनुभवो का जिक्र करते हुए सबसे पहले लोगों को "निर्भयता" की दीक्षा दी। बेगार के बारे मे पहले रोज भी कह चुके थे। परन्तु यहाँ भी इर्द-गिर्द इतनी व्यापक पीडा इस मर्ज ने फैला रखी थी कि पुनः उस बारे मे कहना पडा। पडोसी प्रांत बरार का दृष्टान्त देकर विनोबा ने कहा : "तीस साल पहले बरार मे भी, अंग्रेजो के जमाने मे, बेगार के खिलाफ आदोलन हुआ और वहाँ यह प्रथा बन्द हुई। हैदराबाद राज्य मे उस जमाने के ये सब आन्दोलन नही हो पाये, इसलिए बेगार भी आज तक जारी है। लेकिन अब तो स्वराज्य आ गया है। ऐसी बातो के लिए आन्दोलन की जरूरत ही नही होनी चाहिए। जरूरत चाहिए सिर्फ हिम्मत की—लोगों के दिलो मे। हिम्मत पुलिस को साफ कह देने की कि 'काम जो चाहे लो, दाम देना होगा।' फिर भी पुलिस न माने तो

हिम्मत से कहना चाहिए कि 'आपको तनख्वाह इसलिए नहीं दी जाती कि आप ऐसे बुरे काम करें'।"

विनोबाजी ने आशा प्रकट की कि पुलिस भी अब समझ गयी है और आइन्दा ऐसा नहीं करेगी।

आश्रम का स्थान होने के कारण विनोबा ने रचनात्मक कार्य के स्वरूप और उसके प्रशिक्षण की योजना के बारे मे विस्तार से समझाया तथा आशा प्रकट की कि गाँव गाँव मे नहीं तो कम-से-कम जिले-जिले मे तो भी ऐसे आश्रम स्थापित किये जायँगे। "पद-यात्रा के कारण शांति का वातावरण निर्माण हो रहा है। कार्यकर्ताओं का काम है कि उससे लाभ उठाये और सेवा के काम मे जुट जायँ।" ● ● ●

मुझे तो आपकी जिंदगी सेवा में लगानी है : २३ :

मिरियालगुडा
७-५-'५१

दो विचारधाराओं का झगड़ा

राजपुरम् मे ही मालूम हो गया था कि वहाँ के धनी-मानी लोग भय के कारण मिरियालगुडा आकर रहने लगे है। बडा गाँव होने से और पुलिस वगैरह का ठीक प्रबन्ध होने के कारण लोगो ने यहाँ अपने को सुरक्षित समझा होगा। गाँव मे पहुँचते ही विनोबा ने भूमिवानो से और खासकर राजपुरम् के लोगो से मिलने की इच्छा प्रकट की। अपने दर्द का इलाज पूछने के लिए मरीज तो पहले ही उपस्थित थे।

"हम आप लोगो के गाँव गये थे। आप वहाँ नही थे। हमारे रहते आप वहाँ आ जाते, तो बहुत अच्छा होता। हम गाँववालो से कुछ कहते। बताइये, भय कुछ कम हुआ है या नही अब?"

"पुलिस के बिना तो हम अपने गाँव नही जा सकते।"

"जा सको, इसके लिए क्या इलाज हो सकता है?"

"सरकार की तरफ से इन्तजाम होना चाहिए, इतना ही हम जानते है। और कोई तरीका हम नही जानते।"

"कितने रोज आप गाँव की नाराजी लेकर गाँव से अलग रह सकते है?"

"गाँव नाराज नही है। गाँव तो हमारी जमीन को जोतता है और हमे मुआवजा भी देता है। हमे तकलीफ तो इन पार्टीवालो[१] से होती है। सरकार कहती है हमारा साथ दो। पार्टी कहती है हमारा साथ दो। न्यूटरल

---

[१] कम्युनिस्ट पार्टी के लिए यहाँ केवल 'पार्टी' शब्द रूढ है।

तटस्थ रहने का कोई इलाज बताइये। अगर हम जालिम होते, तो अब जो गरीब लोग पीछे रह गये है, वे खुशहाल रह पाते। लेकिन उनमे से भी लोग मारे जा रहे है।"

"आखिर पार्टी वाले चाहते क्या है?"

"अपनी हुकूमत चाहते हैं। चाहते है कि सबको गुलाम बनाये। कम्युनिज्म मे सबको खाना-कपडा जरूर दिया जाता है, परन्तु गुलाम बनाकर और गुलाम रखकर।"

"कम्युनिज्म की कौन-सी किताबे आप लोगो ने पढी है?"

"कुछ तेलुगु मे, कुछ उर्दू मे पढी है।"

विनोबा ने देखा कि इन लोगो को कुछ गहराई मे ले जाना चाहिए। ऐसे भी कम्युनिस्टो के प्रचार के कारण इधर के लोग काफी बुद्धिमान् नजर आते है। फिर ये लोग तो ब्राह्मण थे और उनके साहित्य का अध्ययन भी कर चुके थे। विनोबा ने समझाना शुरू किया :

"वास्तव मे यह झगडा दो विचारधाराओ का है। मै किसी व्यक्ति-विशेष का दोष दिखाना नहीं चाहता, परतु आप देखेगे कि यह सारी लडाई धनैषणा मे से निकली है। धनैषणा छूटती नही। फिर वह स्वतत्र भी नही है। पुत्रैषणा और दारैषणा के साथ वह बँधी हुई है।"

"क्या रशिया मे लोगो को बाल-बच्चे और परिवार नही है?"—सहसा और आवेश मे उन लोगो ने पूछ लिया। उतनी ही शाति से उन्हे उत्तर मिला :

"जरूर होगे। लेकिन उन लोगो को भी धनैषणा छोडनी होगी। वैसे, अपने यहाँ ब्राह्मण तो पहले भी थे, परतु वे अपने पास धन नही रखते थे। इसका अर्थ यह नहीं कि उनके परिवार नही था या बच्चे नहीं थे। अगर उनके लिए निपुत्रिक रहने का विधान होता, तो आज ब्राह्मणो का वश ही डूब जाता। ब्राह्मण की जो व्याख्या शास्त्रकारो ने की है, उसमे यह बात मुख्य है कि वह पास मे सपत्ति न रखे। धन छोडनेवाले की

कीर्ति तो और बढ जाती है। लेकिन वन छोडने से लोकैषणा छूट जाती है, ऐसा नहीं है। लोकैषणा तो आत्मज्ञान से छूटती है।"

प्रश्नकर्ता देशमुख थे। देशमुखों मे ब्राह्मण भी होते है, जो आम तौर पर पढे-लिखे होते है। और हमारे देश मे वेदात का सस्कार तो प्राय सबको ही रहता है और दिलो-दिमाग मे उलझन भी उतनी ही रहती है। बातचीत जारी रही। देशमुख ने कहा : "एक-दो ज्ञानी ही ऐसे होगे। बाकी सब तो ऐसे ज्ञानी नहीं बन सकते है। वेदात और अनुभव, दोनो का कहना है कि खाना खाते है, तो काम-वासना बढती है।"

"यह गलत है। मै रोज खाता हूँ, पर मुझे तो नहीं होती कामवासना। कामवासना होती है जरूरत से ज्यादा खानेवाले को। कम्युनिज्म क्या खाने को मना करता है?"

खिलाकर खाने का विचार

फिर उनको वेदात की परिभाषा मे समझाना शुरू किया

"आप लोग 'माता भूमि पुत्रोहम् पृथिव्या.' कहते हैं न? क्या माता चाहती है कि एक को उसका प्यार मिले, अनेको को न मिले? आपने वेदात की बात कही, लेकिन वेदात तो वासना का नियमन करने का आदेश देता है। घर मे दो बालक पैदा होते ही आपको खुद दूध न पीकर बच्चो के लिए दूध रख छोडने की इच्छा होती है। आप उनके लिए दूध छोडने लगते है। परिवार मे हम रहते है, इसलिए जैसे परिवार के लिए वासना-नियमन जरूरी है, वैसे ही समाज मे हम रहते है, इसलिए समाज के लिए भी वासना-नियमन जरूरी है। बिना वासना-नियमन के ससार सुखी नहीं हो सकता। वासना-परित्याग तो उससे भी कठिन है। खैर, कम्युनिज्म मे खराबी इतनी ही है कि अच्छी चीज भी बुरी बन जाती है। सन्यास के लिए यद्यपि सिर मुंडाने का और गेरुआ पहनने का नियम था, जबरन् सबको सन्यासी बनाया जाता, तो क्या शकराचार्य

का काम चलता ? कम्युनिज्म मे यह सारी जबर्दस्ती है। समझाने की शक्ति का प्रयोग करने के बजाय लोग बदूक की शक्ति से काम लेते है। समझाने के लिए चाहिए धीरज। वह उन लोगो मे है नही। रूस मे उन्होने मारकाट का तरीका आजमाया है। यहाँ वह चलनेवाला है नही, क्योंकि यहाँ की भूमि मे विचारशक्ति से काम होता है, और लोगो मे सब विचारवालो को सुनने की उदारता है। परतु यदि हर नये विचारवाला अपने विचार-प्रचार के लिए मारकाट से काम लेगा, तो उसका विचार यहाँ की भूमि मे जम नही पायेगा। कम्युनिज्म का विचार यहाँ की भूमि के लिए नया नही है। पुराने जमाने से यहाँ जो विचार चलता आया है, और जो अभी पुन. गाधीजी ने भी समझाया, वह सबको खिलाकर खाने का विचार है। यहाँ घर का बडा आदमी पहले परिवार को खिलायेगा, गाय-बछडो को खिलायेगा, नौकर-चाकर को खिलायेगा, फिर खुद खायेगा। और अतिथि आ गया, तो सबसे पहले उसे खिलायेगा। सबको खिलाकर खाना, यह बडे आदमी का लक्षण था। लेकिन आज जो खुद को बडा समझता है और समाज मे बडा समझा जाता है, वह शेर की तरह पहले खुद खाता है। लोगो को रहने के लिए झोपडी भी नसीब न हो, परतु खुद बडे मकानो मे रहता है। बताइये, ऐसे आदमी को आप बडा ज्ञानी कहेगे या बडा बेवकूफ ? इसलिए जरूरत इस बात की है कि अपने आसपास के लोगो के लिए कुछ किया जाय।"

मुखिया मुख सो चाहिए

फिर मजदूर-समस्या, उत्पादन की समस्या, ग्रामोद्योगो की समस्या आदि सभी प्रश्नो पर प्रकाश डालकर सभी समस्याओ के हल के लिए भूदान की आवश्यकता बताते हुए कहा :

"इसलिए हम गॉव-गॉव जाकर समझाते है कि परमात्मा ने जिनके पास जमीन दी है, वे अपनी जमीन बॉट दे, तो आज नही तो कल जिस

कम्युनिज्म के विचार का आपको भय लगता है, उसके प्रतिकार की शक्ति भी आपमे आयेगी। आखिर जमीनवालो का भी कोई एक अलहदा वर्ग तो नही होगा ? क्या आप लोग आपस मे लडते नही ? परतु प्रवाह के विरुद्ध जाकर धीरज के साथ कुछ नैतिक बल प्रकट करने का सामर्थ्य आप लोगों ने नही प्रकट किया। जो भी सरकार हो, उसका साथ देने की पूरी कोशिश आप लोगो की रही। पहले आपने निजाम का साथ दिया। और अगर कम्युनिज्म आया, तो आप उनका भी साथ देंगे। आप लोग देशमुख है न ? देश के मुखिया है। '**मुखिया मुख सो चाहिए, खान-पान को एक।**' मुख अपने पास कुछ नही रखता। जो कुछ रखता है, पेट रखेगा। मुखिया तो सदा देता ही रहेगा। और यदि सौ हाथो से लिया, तो हजार हाथो से देता रहेगा। दसगुना लिया, तो सौगुना देगा बीज की तरह। मुखिया तो समाज के ट्रस्टी हैं। आप ट्रस्टी बनेंगे, तो आप लोगों की भी रक्षा कर सकेंगे। पुलिस आप सबकी कब तक रक्षा करेगी ? और कब तक सरकार भी आपके लिए पुलिस यहाँ रख छोडेगी ? और अब तो चुनाव भी सामने आये है ? जो लोग चुनकर आयेंगे वे यह सारा खर्च राज्य पर न डालकर देशमुखो पर डाले तो ? और आप अपने पैसो का उपयोग पुलिस के लिए करने के बजाय जनता की भलाई के लिए करे तो ?"

कब तक डरते रहोगे ?

विनोबा का प्रवाह जारी ही था। किंचित् रुककर कुछ विशेष हमदर्दी से कहा . "भाइयो, जब देशमुख वर्ग निकला, तब वह लोगो की सेवा के लिए ही निकला था।"

क्षणभर वे पुन. रुके। इस बीच एक भाई ने कहा

"महाराज, सेवा तो हम आज भी करते है।"

"आपका जैसा खयाल है, बात वैसी नही है। कोई एकाध

सेवा भी करता होगा। परन्तु रवैया यही है कि "एरडनी चोरी ने सुईनो दान*।"

देशमुख किसी तरह अपनी सग्रहशीलता के लिए सरक्षण चाहते थे। पुनः शास्त्रो का आधार लेकर कहा . "महाराज, शास्त्रो ने भी तो कुछ रखने को कहा है ?" तब विनोबा को कहना पडा : "शास्त्रो की बात छोड दीजिये। शास्त्रो की बात मानते, तो यह परिस्थिति ही न होती। आपसे तो मेरा यही कहना है कि आप लोग देना शुरु करे। कम्युनिस्ट तो खतम होनेवाले है, क्योकि उन्होने रास्ता गलत अख्तियार किया है। परतु आप कब तक अपने गॉव से भगे-भगे यहॉ रहनेवाले है ? जहॉ जमीन है, वहॉ न रहे—डर के मारे बाहर-बाहर जिदगी बिताये। कैसी अशोभनीय हालत है यह !! आखिर डरते भी कब तक रहेंगे ? और क्या यहॉ मिरियालगुडा मे मरना नही होगा ? क्या यहॉ आप अमरपद लेकर आये है ? शेर के डर से क्या हिरन जगल छोड देता है ? सॉप के डर से क्या हम घर छोड देते है ? इतने पर भी, याने हिम्मत करके अपने गॉववालो के बीच रहने पर भी, यदि कुछ हो गया, तो डरना क्या है ? हृदय मे प्रेम रखकर मरना चाहिए। आज राजवरम् छोडकर यहॉ आये है। अगर यहा भी वे लोग हथियार चलाये, तो क्या हैदराबाद भगोगे ? इसके बजाय सेवा करते-करते मृत्यु आ गयी, तो कितना अच्छा होगा। गाधीजी ने जिदगी-भर सेवा की और अत मे उन पर गोली चली—तो क्या उन्हे दु ख हुआ ? उनकी जीवन-भर की सेवा अत मे सफल हुई—और अत्यत धन्य होकर वे चले गये। ऐसी सेवा करते हुए भी अगर मौका आया और किसीने मार डाला तो मार डाला। उसमे दु.ख की कोई बात नही।

'मेरा काम तो खतम हुआ। आप लोग अपना काम करे। मै तो

---

* गुजरात की कहावत, जिसका अर्थ साफ है कि चोरी इरडी की की और दान सूई का दिया।

वामन बनकर आया हूँ। आप कुछ जमीन आज देंगे। पर मुझे तो आपकी जिंदगी सेवा मे लगा देनी है।"

थोडी देर एक सन्नाटा-सा छा गया। आज तक किसीने इस तरह साफगोई की नही थी—नेक राह बतायी नही थी। एक फकीर आया, और जिंदगी की ही मॉग कर रहा—फिर जमीन का तो सवाल ही क्या? उन लोगो ने सात सौ एकड जमीन शाम तक इकट्ठा कर ली। अब तक जो भूमि मिली थी, उसमे यह अक सबसे ज्यादा था। ● ● ●

मेरे जैसे को भी बलिदान देना होगा : २४ :

मिरियालगुडा

७-५'-५१

—२—

गरीबो की पिटाई

न्यायालय मे रोज की तरह आज भी काफी अर्जियाँ आयी थी। तहसीलदार और पुलिस अफसर, दोनो हाजिर थे। एक किसान को चलकूर्ति की पुलिस ने इतना पीटा था कि उसकी पीठ पर अठारह जगह बेंत के बल उठे थे। देखनेवाले सभी सिहर उठे। प्रशांत महासागर मे भी तूफान के आसार नजर आये—"इस मामले को आगे ले जाना होगा। इस भाई का पूरा बयान लिख लो।"—विनोबा के मुख से सात्त्विक प्रकोप प्रकटा। थोडी ही देर मे पुलिस का वह सूबेदार, जिसके इलाके मे और शायद जिसके इशारे से भी, उस किसान की पिटाई हुई थी, वहाँ आ पहुँचा था। उसने सफाई दी कि जमादार की गलती हुई है। इस बीच किसान भी कुछ साहस समेट पाया। कारण बताते हुए उसने कहा: "हुजूर, इन लोगो के लिए मुफ्त दूध नहीं जुटा सका, इसके लिए मेरी पिटाई हुई है।"

शिकायते प्रार्थना के बाद भी रात के ९ बजे तक आती रही।

दोनो रास्ते गलत

शाम की सभा मे विनोबा खूब दिल खोलकर बोले। चाहते थे कि तरजुमा न करना पडे, क्योकि काफी लोग उर्दू जाननेवाले थे। परन्तु जब सभा मे इस बारे मे पूछा गया, तो लोगों ने तरजुमे का आग्रह किया। तो लक्ष्मी बहन खडी हो गयी। प्रारम्भ मे विनोबाजी ने भारत के उज्ज्वल

अतीत का चित्र खीचा, फिर अग्रेजो की गुलामी के कारण उसकी जो दुर्दशा हुई—आर्थिक, सामाजिक और सास्कृतिक, वह थोड़े मे दिग्दर्शित की तथा निजाम के राज्य मे देशमुखो, जागीरदारो एव रजाकारो से प्रजा को जो कष्ट हुए, उसका भी बयान किया। किसानो के हाथ से जमीन निकलकर इन धनी वर्ग के हाथ मे कैसे गयी, यह सब बताया और नलगुडा जिले की परिस्थिति पर भी प्रकाश डाला।

जमीन के बॅटवारे के सम्बन्ध मे बोलते हुए कहा :

"अब इस मसले को हल करने के लिए दो रास्ते है। एक कत्ल का, दूसरा कानून का। कत्ल का रास्ता यही कि श्रीमानों को कत्ल करो, उनकी जमीने छीन लो और गरीबो को दे दो। यह मार्ग कम्युनिस्टो ने अख्तियार किया है, जिसे उन्होने रशिया से सीखा है। वहॉ की किताबे उन्होने पढी, और वे विचार उनके दिमाग मे भरे गये। लेकिन यह हिंदुस्तान में चलनेवाली बात नही है। इसकी बहस मे मै नही पडूॅगा। परतु आपने देखा कि यहॉ नलगुडा मे यह मार्ग बहुत अपनाया गया। लेकिन इसका कोई अच्छा परिणाम नहीं आया है। और मै जानता हूॅ और कहता हूॅ कि यह रास्ता भारत मे नही चलेगा। दूसरा मार्ग कानून का। सरकार कानून मौके पर जरूर बनायेगी, सरकार का यह कर्तव्य भी होगा, लेकिन यह काम इस ढग से होना चाहिए कि केवल गरीब ही नहीं, बल्कि श्रीमान् भी उसमे अपना हित समझे। लेकिन आज क्या होता है? सरकार एक कानून बनाती है, तो व्यापारी उसमे लूप-होल देखकर उसे नाकाम बनाने की कोशिश करते है। इस वास्ते देश मे परिस्थिति बिगड रही है। अगर देश की सारी परिस्थिति सुधारनी है, तो केवल कानून से काम नही होगा।

भिक्षा का अधिकार

"इस वास्ते इस मुसाफिरी मे मैने एक नया प्रयोग शुरू कर दिया है। मै जन्म से ब्राह्मण हूॅ, मेरा भिक्षा मॉगने का हक है। तो मैने सोचा कि

भिक्षा के अधिकार को आजमा लूँ। इसलिए जहाँ जाता हूँ, वहाँ धनिकों को समझाता हूँ और गरीबों के लिए कुछ-न-कुछ माँगता हूँ और धनिक देते भी हैं। इस गाँव में ५-७ सौ एकड़ जमीन मिली है, लेकिन इसमें बड़ी बात यह है कि देनेवाले प्रेम से और समझकर देंगे, तो उनका जीवन पलट जायगा। अगर वे समझ गये कि बात क्या है, तो वे अपना सारा जीवन गरीबों की सेवा में दे देंगे। वामन अवतार में भगवान् ने तीन कदम भूमि माँगी थी, लेकिन वह तीन कदम भूमि त्रिभुवनव्यापी बन गयी। क्योंकि वामन अवतार के कारण बलि का परिवर्तन हो गया। उसी तरह से यह जो थोड़ी-सी जमीन देते हैं, वह यदि भक्ति-भाव से देते हैं, तो उनकी सारी जमीन उसमें आ गयी। अगर कानून बनेगा, तो क्या बनेगा? श्रीमान् लोगों के लिए कोई मर्यादा बाँध दी जायगी। लेकिन कोई भी सरकारी कानून २० एकड़वाले के पास से ३ एकड़ नहीं ले सकता, लेकिन जहाँ हृदय में परिवर्तन होता है, वहाँ यह हो सकता है। मुझे ऐसा दान मिला है।

न च कंकणेन

"संपूर्ण ऐश्वर्य में जनमे हुए भगवान् बुद्धदेव सब कुछ छोड़कर निकल पड़े। उनके हृदय में यह बात आ गयी कि राजा बनकर गरीबों की सेवा मैं नहीं कर सकूँगा। तो उन्होंने राज्य फेंक दिया और गरीबों की सेवा में लग गये। कोई भी कानून ऐसा त्याग नहीं करा सकता। मैं तो त्याग की एक हवा फैलाना चाहता हूँ। अगर यह हवा चली और सबके हृदयों को उसका स्पर्श हुआ, तो हर कोई कुछ-न-कुछ देने ही लगेगा। हर कोई समझेगा कि भगवान् ने जो हाथ दिये हैं, वह जानवरों को नहीं दिये हैं। 'दानेन पाणिर्न च कंकणेन।' हाथ देने से शोभते हैं, कंकण से नहीं शोभते। और न हाथ शोभते हैं दूसरों की कत्ल से, न दंड करने से। हाथों की शोभा तभी है, जब नम्रता से जुड़कर गरीबों को देने लगते हैं। तभी उसकी सार्थकता है।

कत्ल हो जाओ, तो परमेश्वर का उपकार मानना

"भाइयो, यह मानव-तनु भोगने के लिए नही, त्याग के लिए है। सारी मानवता का इतिहास त्याग से भरा है। जिन्होने त्याग किया, उनका स्मरण मानव करता है। आप जानते है राजा-महाराजा कितने ही हुए, लेकिन उनको कौन याद करता है? लेकिन रामकृष्ण, तुलसीदास, कबीर का नाम आज भी लिया जाता है। बहुत सारे बडे-बडे लोग आये-गये, लेकिन उनको कोई जानता नही है। अगर यह मेरी बात आपके हृदय मे पहुँच जाय, तो समझ लो कि कम्युनिस्ट खतम हो जाते है। जहाँ दया-भाव का उदय हुआ, समानता का प्रकाश फैला, वहाँ अधकार टिक नही सकता। मेरे पास धनवान् मिलने के लिए आये। उनको मैने वही बात बतायी। मैने कहा 'तुम श्रीमान् हो, परमेश्वर तुम्हारी परीक्षा करता है कि तुम गरीबो की सेवा मे कैसे लगते हो। तो सेवा का व्रत ले लो और जहाँ से भाग करके आये हो, वहाँ हिम्मतपूर्वक फिर जा बसो। वहाँ जाने के बाद अगर कत्ल हो जाओगे, तो परमेश्वर का उपकार मानना। छिपकर, डरपोक बनकर शहर मे आकर जिन्दा रहना मरने से बुरा है। लेकिन निर्भय कौन बनेगा? जो लोगो को लूटेगा, वह निर्भय बन सकेगा? निर्भय तो वह होगा, जो गरीबो पर प्रेम करेगा, सेवा का व्रत लेगा।' यह तो मैने उनको कहा, लेकिन केवल उनके लिए नही, आप सब लोगो के लिए यही बात है।

सार्वत्रिक गुमराही

"मै तो कहता हूँ कि कम्युनिस्ट कोई जानवर तो नही है। जानवर मेरी बात समझेगा नही, लेकिन दयाभाव से जानवरो का भी परिवर्तन हुआ सुना है। फिर ये कम्युनिस्ट कौन है? मानव है। उनमे से कई २० साल पहले हमारे साथ काम करते थे। उनमे से कइयो ने कधो पर खादी लेकर बेचने का काम किया है। आज भी उनका जीवन काफी त्यागमय है। तो ये क्रूर नही, गुमराह हैं। रास्ता भूल गये है।

उनको रास्ते पर लाना, यह भी मेरा काम है। श्रीमान् भी रास्ता भूल गये है, गरीब भी रास्ता भूल गये है। वे तो आज ताडी पीने मे मशगूल हो गये है। उनको मै भूमि दूँगा, तो वे कुछ दिनों मे जमीन बेचकर शराब पीयेंगे। काग्रेसवाले भी गुमराह है। वे अपने हाथ मे सत्ता किस तरह रहेगी, इसीकी फिक्र मे पडे है। गाधीजी ने सेवा का सबक सिखाया था, वह वे भूल गये हैं। इतने सारे लोग गुमराह हो गये है, यह मै निःशक होकर आपको कहता हूँ। सबोंसे मेरी प्रार्थना है कि गाधीजी ने जो मार्ग बतलाया था—सेवा का मार्ग—उस पर आ जाओ।

"गरीबो को यह समझना चाहिए कि पहले तो उनकी अक्ल गयी, पीछे लक्ष्मी गयी, गरीबो को यह कोई नही सिखा रहा कि दुर्गुणो को छोडो। तो हमको गरीबो के दुर्गुणों का निराकरण भी करना होगा। तब उनमे शक्ति आयेगी। श्रीमानों को भी रास्ता सिखाना है, गरीबो को भी रास्ता सिखाना है, काग्रेसवालों को भी। वे सीधे रास्ते पर नही आयेंगे, तो मेरे जैसे को भी बलिदान देकर उन्हे रास्ते पर लाना होगा।"

● ● ●

गृह और धन भी रक्षा के पवित्र स्थान : २५ :

कामारेड्डीगुडा
८-५-'५१

दूरदृष्टिवाला किसे कहे ?

रास्ते मे अक्सर कुछ गम्भीर बाते भी हो जाती है। इधर खासकर राजपुरम्, चिल्लेपल्ली आश्रम और मिरियालगुडा के बाद तेलगाना के भावी काम के बारे मे विनोबा के मन मे काफी विचार चलते रहे। रचनात्मक काम के बिना इस इलाके मे शाति नही होगी, ऐसा उन्हे लगता था। एक आश्रम अभी चिल्लेपल्ली मे उन्होने देखा था, जहाँ कुछ रचना-कार्य जड पकडने की उम्मीद थी। "परन्तु वहाँ भी काम तो तब होगा, जब आश्रम के सचालक महोदय वहाँ समय दे सकेगे। उन्होने अपने पीछे इतने ज्यादह काम लगा लिये है कि आश्रम के लिए शायद ही समय निकाल सकें।"

इधर काग्रेस के जिम्मेवार लोग कह रहे थे कि काग्रेस का काम भी हैदराबाद मे रुक-सा गया है। विनोबाजी ने इसका जिक्र करके कहा. "दो बरस पहले राजा प्रतापगिरजी की कोठी मे मैने काग्रेसवालो के मतभेद मिटाने की कोशिश की। उस समय लोग मान जाते, तो काग्रेस मे जो फूट पडी है, वह न पडती। लेकिन एक पक्ष ने माना, तो दूसरे ने नही माना। लोग मतभेद भूलना जानते नही। दूरदृष्टि रखते नही। यह समझना चाहिए कि मतभेद हमेशा टिकते नही। वे तो मिटने ही वाले है। यह जो समझ लेता है और इसलिए जो आज से ही सबके साथ प्रेमपूर्वक रहता है, वह दूरदृष्टिवाला समझा जाता है।"

गुण-ग्रहणता के बारे मे कहा : "मेरे जैसे आदमी के साथ निबाह

कर लेना कोई बडी बात नहीं है। वह तो मेरे कारण सभव होता है। जो मुझसे भिन्न या विरोधी विचारों के है, उनसे निबाहना बडी बात है। खूबी उसीमे है।"

बाते चल रही थी कि सामने कामारेड्डीगुडा दिखाई देने लगा। छोटा-सा गॉव, परतु यहाँ भी एक हत्या हो चुकी है। इसलिए लोग भयभीत थे। फिर भी दिन-भर इर्दगिर्द के लोगो का तॉता लगा रहा। शाम तक तो स्त्रियॉ भी खूब तादाद मे जुट गयी। प्रार्थना-प्रवचन मे विनोबाजी ने ग्रामवासियो को निर्भय बनने की प्रेरणा दी। "डरनेवालो का रक्षण ईश्वर भी क्या करेगा?" उन्होने पूछा। "परमेश्वर तो हमारी परीक्षा करता है कि मैने मनुष्य को बुद्धि दी है, देखे, वह उस बुद्धि का क्या उपयोग करता है।"

सब मिलकर सबकी चिन्ता करे!

फिर छोटे गॉवो को जीवन की कला समझाते हुए कहा: "ऐसे छोटे-छोटे गॉव यदि प्रेम से रहते है, तो बडे शहरों से भी ज्यादा ताकतवाले हो जाते है। क्योंकि बडे शहरो मे तो एक-दूसरे को पहचानते भी नहीं है। और छोटे-छोटे देहात मे तो हर कोई एक-दूसरे को पहचानता है। मानो सारा गॉव मिलकर एक कुटुब होता है। मै आपके गॉव मे थोडी देर घूम आया। मैने देखा, हरएक घर पर तोरण भी लगे थे। मानो सारे लोग मेरा स्वागत करने के लिए उत्सुक थे। मैंने हरिजनो के घर देखे, ब्राह्मणो के घर देखे, कोमटियो के और रेड्डियो के भी घर देखे। हरएक घर मे मैने वही चीज देखी। हरएक घर मे खाने-पीने की चीजे होती है, नहाने-धोने की जगह होती है। इस तरह हरएक घर मे वही नाटक चलता है, लेकिन किसीके घर मे खाने के लिए कुछ विशेष मिलता नही है, तो किसीके घर मे ज्यादा खा-खाकर बीमार पडते है। मतलब एक ही, गॉव के एक हिस्से में कुछ लोग चने खाकर रहें और दूसरे हिस्से मे मिठाइयॉ खाकर बीमार पडे, ऐसा क्यो होता है? इसलिए

होता है कि हम एक-दूसरो की चिता नही करते है। होना यह चाहिए कि सब मिलकर सबकी चिता करते हैं।"

सब जमीन सबकी

अत मे भूमि के सबध मे अपना विचार समझाते हुए कहा: "आज ही एक भाई मेरे पास आये, कहने लगे कि मेरे पास जमीन नही है, जमीन दिलाओ। आपके इस मुल्क मे जाहिर हो गया है कि मै जमीन देनेवाला हूँ। और हर गॉव मे कुछ न-कुछ भूमि लेता हूँ और वही दूसरो को देता हूँ। लेकिन आज आपके इस गॉव मे मुझे कुछ मिला ही नही है। कहते है कि यहॉ किसीके पास ज्यादा जमीन ही नही है। किसीके पास ५० एकड है, तो किसीके पास ४० एकड। तो मै कहता हूँ कि जिसके पास कुछ भी नही है, उससे ५० एकड जिसके पास है, वह ज्यादा है या नही? ५०० एकडवाले से ५० एकडवाले की जमीन कम है, लेकिन जिसके पास शून्य एकड है, उससे ५० एकडवाले के पास बहुत ज्यादा है। तो जिसके पास ५० एकड है, वह २-४ एकड क्यो नही देता? तो आखिर एक भाई ने ५ एकड जमीन दी है, ऐसी इत्तिला मुझे मिली। इस पॉच एकड मे से अब किसीको देना है, तो दे सकता हूँ। लेकिन भाइयो, इससे मसला हल नही होगा। मसला तो तभी हल होगा, जब गॉव की जितनी जमीन है, वह सबकी मिलकर है, ऐसा आप समझेंगे।

परमेश्वर की योजना

"तो मै कहना यह चाहता था कि यहॉ जितनी जमीन है, उसमे सब मिलकर पैदा करे और सब मिलकर खाये। जिसके पास ५० एकड जमीन है वह, और जिसके पास कुछ जमीन नही है वह, दोनो एक साथ काम करेगे और दोनो एक साथ भोगेगे। फिर यह लेने-देने का मामला ही नही रहेगा। लेकिन जब तक लोगो की अलग-अलग जमीन पडी है, तब तक जिसके पास ५० एकड है, वह यदि थोडी-सी देता है, तो उस देने-

वाले को भी लाभ होता है। मुझे तो कई गाँवो मे छोटे-छोटे लोगो ने दान दिया है। अगर यहाँ जमीन माँगनेवाले पडे है, तो देनेवाले होने ही चाहिए। यह परमेश्वर की योजना है। जहाँ वह भूख पैदा करता है, वहाँ खिलाने की व्यवस्था भी करता है। तो अगर गाँव मे माँगनेवाला है, तो देनेवाले क्यो नही होने चाहिए? इसलिए माँगनेवाला मिल जाय, तो उसको दे ही डालना चाहिए। जो देता है, वह जबरदस्ती से नही देता है, प्रेम से देता है। जिसने ५ एकड जमीन दी है, उसने ५ हजार दान दिया है। लेकिन ५ हजार दान दिया है तो ५ लाख का प्रेम कमाया है। तो ऐसा देनेवाला होगा, तो उसके वास्ते लोग मर मिटने के लिए तैयार होंगे।

प्रेम का उदय

"जिनके पास धन है, वे रात को सोते समय अपने घर के सारे दरवाजे खुले रखकर सोते है, ऐसा होना चाहिए। उनकी रक्षा करने का जिम्मा सारे गाँव का होगा। उनका घर और उनका धन गाँव के लिए एक पवित्र स्थान होगा। पवित्र स्थान का रक्षण सारे लोग करते है। यह केवल मै कल्पना की बात नही करता हूँ। पाँच हजार साल पहले हिन्दुस्तान के धनवान् लोग दरवाजे खुले रखकर सोते थे, ऐसा ग्रीक लोगो ने इतिहास में लिखा है। तो जहाँ के श्रीमान् उदार होते हैं, वहाँ उनकी रक्षा गरीब करते हैं। तब उन श्रीमानों को धन की रक्षा की फिक्र नही होती है। ऐसी स्थिति आज भी आ सकती है। कोई प्रयोग करके देखे कि उसमे क्या आनन्द है। फिर कम्युनिस्टो का कोई डर नही रहेगा। और पुलिस का भी कोई काम नही रहेगा। और ये पुलिस अपने बिस्तर उठाकर हैदराबाद चले जायेंगे और कम्युनिस्ट पहाड और जगल छोडकर अपने-अपने गाँव मे रहने के लिए आयेंगे। वे समझ जायेंगे कि श्रीमानों के हृदय मे प्रेम का उदय हो गया है।"

● ● ●

क्या माँगने से कोई देता है?　　　: २६ :

राजपेठ

९-५-'५१

पडाव पर पहुँचते ही थोडा आराम लेकर विनोबा गाँव-प्रदक्षिणा के लिए निकल पडे। अधिक मकान हरिजनो के ही है। कई मकानो के भीतर भी गये। हर मकान साफ-सुथरा, लाल मिट्टी से लिपा-पुता। सफेद खडी के अलपनाओ से सजाया हुआ। घरो मे बडे-बडे नाँद, जिनमे अनाज तथा अन्य वस्तुओ का सग्रह। प्रायः सभी मकान बिना दरवाजो के, फिर ताला-कुजी का सवाल ही क्या ? द्वारों के अभाव मे भी तोरण तो हर घर पर सजा था। दीवारो पर मिट्टी के ढेले रखकर उनमे आडी लकडी दे दी गयी थी, जिस पर तोरण खूब फब रहे थे।

कमरे मे पहुँचते ही हवा की कमी पायी, तो दम घुटने लगा। फौरन बाहर निकल आये, तो ग्रामवासियो की भीड पायी। एक वृक्ष के चबूतरे पर तथागत की तरह उदासीन बैठ गये। सुख-दुःख की चर्चा शुरू हुई।

"जमीन किन लोगो के पास नही है ? हाथ ऊँचा करे।"

बीस हाथ उठे।

"जिनके पास है, वे भी ऊँचा करे।"

कुछ हाथ उठे। कुछ सकोच से उठे-न-उठे-से प्रतीत हुए।

किसके पास कितनी जमीन है, इसकी भी चर्चा हुई। खुला दरबार था। कोई बात छिप नही सकती थी। बडी जमीनवाले कोई विशेष थे नही, सिवा एकआध के।

विनोबा ने अपनी यात्रा का हेतु समझाया और बेजमीनो के लिए जमीन की माँग की, तो एक भाई ने पूछा :

"क्या माँगने से भी कोई जमीन देता है ? लोग तो डंडे से ही मान सकते हैं।"

विनोबाजी ने उस आदमी की बात अपनी ओर से दुहराते हुए पूछा: "क्या यह सही है कि बिना डंडे के दान नहीं मिल सकता ? क्या आप लोगों के बीच कोई नहीं है, जो भूदान में अपना भी हिस्सा देवे ?"

सुदामा के तंदुल

विनोबाजी हिन्दी में बोल रहे थे। लक्ष्मी बहन तेलुगु में समझा रही थी। लोग कुछ असमंजस-से विनोबा की ओर देख रहे थे। कुछ क्षण ऐसे ही बीते। भौतिक निगाहों को निष्क्रिय दीखनेवाले वे क्षण थे, पर किसी शक्तिशाली अव्यक्त प्रक्रिया से खाली नहीं थे। थोड़ी ही देर बाद उसकी फलश्रुति प्रकट हुई। विनोबाजी ने एक भाई को खड़ा रहने के लिए कहा

"क्यों कुछ जमीन रखते हो ?"

"जी।"

"कितनी ?"

"सिर्फ एक एकड़।"

"परिवार में प्राणी कितने हैं ?"

'दस।"

'निर्वाह कैसे चलता है ?"

"मजदूरी से।"

"अपने भूमिहीन पड़ोसी को कुछ देना चाहोगे ?"

बेचारा असमंजस में पड़ गया। एक एकड़ में से क्या देता ? विनोबाजी ने अपनी बात जारी रखी. "देखो, संकोच की बात नहीं है। एक एकड़ का अर्थ चालीस गुंठा होता है न ? एक गुंठा दे सकते हो ?"

"अगर एक गुंठे से समाधान हो सकता है, तो ले लीजिये सरकार।"

"अरे, ये सुदामा के तंदुल हैं। वह भाई कहता है न कि माँगने से

नही मिलेगा। देखो, यही उसे मॉगने का चमत्कार दिखाई देगा। थोडा-थोडा सब दे, जिनके पास कम है वे कम दे, अधिक है वे अधिक दे, बिना दिये कोई न रहे।"

और फिर बूँद-बूँद बरसना शुरू हुआ। साठ आदमियो ने मिलकर ३० एकड का दान दिया। जिसने यह कहा था कि 'मॉगने से कोई नही देगा', उसने भी अपने दस एकड मे से एक एकड दे दिया।

जिनके पास ज्यादा जमीने थीं, वे गैरहाजिर थे। परन्तु कमवालो से भी विनोबाजी ने इतना सब सहज प्रेम-भाव से प्राप्त कर लिया था। एक-एक एकडवालो से भी एक-एक गुठा मिल चुका था। "अधिक जमीनवालो की चिंता नही है। वह तो आज नही, तो कल मिलने ही वाली है।"

आठ बजे दही लेते है। परतु आज साढे नौ बज गये। दरिद्र-नारायण को जमीन का भोजन चाहिए था और वह मिल रहा था। सेवक लोग बराबर पद्रह-पद्रह मिनट से दही की याद दिलाते गये--आग्रह करते गये—नाराजी की जोखिम उठाकर भी पूछते गये—परन्तु सामने मानो प्रत्यक्ष भगवद्-दर्शन था, तो उसकी तुलना मे दूध-दही की परवाह कौन करता ?

भीतर आये, दही लेकर सो गये। इधर बात की-बात मे गॉवभर मे बात फैल गयी। स्त्रियों की भावनाऍ उमड आयी। घर-घर की स्त्रियॉ आरती लेकर आने लगी। विनोबाजी तो सो रहे थे। हम लोगो ने रोकना उचित न समझा। माताऍ बहने आती—आरती उतारकर, आम रखकर भक्तिभाव से प्रणाम करके चली जाती। करीब एक घटे तक यह चलता रहा।

तीन बजते ही विनोबा ने पूछा : "अर्जियॉ नही आयी ?" कोर्ट का काम आज तीन के बजाय साढे तीन बजे शुरू हुआ। तीस तीस, चालीस-चालीस बरस पुराने झगडो के फैसले किये गये। एक भाई ने दूसरे

एक गरीब किसान की जमीन पर जबरन कब्जा कर लिया था। किसान भी तग आकर दूसरे गॉव मजदूरी करने चला गया। बडे जमीदार ने कहा कि यदि किसान इस गॉव मे आकर रहने को तैयार हो, तो मै जमीन लौटाने को तैयार हूॅ। किसान राजी हो गया। जमीन लौटा दी गयी। इस तरह अनेक मामले, जो कानून के सहारे सुलझ ही नहीं सकते थे, सुलझा दिये गये।

जब का तब

रोज जो दान-पत्र प्राप्त होते है, विनोबाजी उन पर उसी वक्त अपने दस्तखत कर देते है। आज शाम को देर तक दस्तखतों के लिए दान-पत्र नही आये। उनकी खानापूर्ति नही हो पायी थी, जो हो जानी चाहिए थी। इसमे कार्यकर्ताओं की कसौटी होती है। परन्तु विनोबाजी इसके लिए तैयार नही कि दान-पत्र बिना दस्तखत किये दूसरे रोज के लिए रह जायॅ। उन्हे इस विलब मे दरिद्रनारायण का नुकसान दिखाई देता है। अत कार्यकर्ताओं को आगाहकरते हुए उन्होने कहा : "जिस दिन के दस्तखत उसी दिन होने चाहिए। दूसरे रोज दस्तखत करवाने की अपेक्षा मुझसे नही रखनी चाहिए।" चार रोज के दान-पत्रो पर दस्तखत होना बाकी था। दौड-धूप करके कुछ आज, कुछ कल दस्तखत पूरे करवाये।

शाम को प्रार्थना के बाद भजन-कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। गरबर दाडिया, डबेल्स आदि अनेकविध साधनो से भजन-कीर्तन, नृत्य किया गया। देहातो मे होनेवाले ऐसे कार्यक्रमो के लिए विनोबाजी जरूर समय निकाल लेते हैं।

द्रव्य की व्याख्या

सायकाल के प्रवचन मे विनोबा ने प्रारभ मे सवेरे की घटना का जिक्र किया और गॉववालो को बधाई दी। जबरदस्ती और प्रेम का फर्क समझाया। फिर मोदक की मिसाल देकर कहा कि "मोदक की तरह सपत्ति भी समाजरूपी शरीर मे सतत एक स्थान से दूसरे योग्य स्थान पर बहती

रहनी चाहिए। इसीलिए तो उसका नाम द्रव्य है।" सामने बैठे हुए छोटे-छोटे बच्चों से उन्होने पूछा :

"कहो, तुम्हे हम लड्डू दे खाने के लिए, तो मुंह मे डालोगे या हाथ मे पकडे रहोगे ?"

"मुँह मे डालेगे।"

"केवल हाथ ही मे धरे रहोगे, तो क्या होगा ?"

"हाथ बेकार हो जायगा।"

"केवल हाथ या सारा शरीर ?"

"सारा शरीर।"

"और केवल मुँह में धरे रहो, तो ?"

"तब भी वही होगा।"

"और पेट मे धरे रखो तो ?"

"पेट का आपरेशन करना होगा।"

"सपत्ति को भी इसी तरह समाज मे और समाज के कल्याण के लिए सदा-सर्वदा वहते रहने दो। नही तो जो कुछ होगा उसका अनुभव अब तेलगानावालो को हो चुका है।"

तूफानी हवा मे शाम की प्रार्थना हुई। सबने खडे-खडे प्रार्थना और प्रवचन मे हिस्सा लिया। बारिश के बावजूद यह ऊपर का सवाद भी हुआ। आसमान मे बिजलियाँ चमकती थीं। तूफान और अँधेरे मे आशा की किरण जो थी।

यहाँ से ८ मील पर कल ही नलगुडा जाना है। नलगुडा, जो कम्युनिस्ट-आदोलन का केन्द्र है। उसीके समीप के एक देहात मे यह आज की घटना घटी थी। तेलगाना में छाये तूफान और अंधियारे मे मार्ग-दर्शन करनेवाली यह आशा की किरण थी।

● ● ●

जमीन नहीं, जीवन भी　　: २७ :

नलगुडा
१०-५-'५१

नल, नील, जामवन्त आदि वानर-सेना के स्मारक के रूप मे ही शायद इन पहाडो को ये नाम मिले थे। मूल शब्द है "नल्लकुडा" याने काला पहाड। शहर दो ऐसे बडे काले पहाडो के बीच बसा है। दूर से ही दिखाई देने लगता है। कहावत की बात छोड दे, तो भी पहाड दूर से भी बडे सुहावने प्रतीत हो रहे थे। दो मील तक स्वागत-समारोह, उद्घोष, लता-पल्लवो के द्वार, पुष्प-वर्षा, सब होता रहा। कम्युनिस्ट-आन्दोलन के इस केन्द्र मे राम के भक्त का कीर्तन भजन से अभूतपूर्व स्वागत हुआ।

जैसे दो सुन्दर पहाडो के बीच यह शहर बसा है, वैसे ही एक अति-रम्य मनोहर तालाब भी इससे सटा हुआ है। कुछ अच्छे मदिर भी यहाँ खडे है, जो करीब एक हजार बरस से अधिक पुराने है। मूर्तियो की शिल्प-कला से एलोरा का स्मरण ताजा हो आता है। एक विशाल मदिर के द्वार पर दो बडे हाथी खडे है। भीतर अनेक स्तभ है, जिन पर अनेक पौराणिक कथाएँ भी खुदी हुई है, जो लोकमानस पर दिखाई देनेवाले धर्म-विचार की प्रभाव के साक्षी है।

परतु इधर की घटनाओ ने तो साफ कर दिया था कि लोक-जीवन से अछूता रहनेवाला धर्म बहुत देर तक लोकमानस पर हावी नही रह सकता। यही कारण है कि स्वभाव से हिसा के प्रति रुचि न रखते हुए भी लोगो के द्वारा यहाँ इतना हिंसाकाड हो गया। परतु उनकी भावनाओ को पहचाननेवाला और उनके दु.ख-दर्द का इलाज बतानेवाला वैद्य उन्हे मिल गया, तो उनकी सहृदयता प्रकट होने लगी और यह जो ऊपर-ऊपर की आवेशपूर्ण लहरे थी, वे विलीन होने लगी।

कम्युनिस्टों के साथ नलगुंडा-जेल में

पडाव पर पहुँचते ही विनोबाजी जेल में कम्युनिस्ट राजबन्दियों से मिलने गये। जाना-आना और तीन मील हुआ। सवेरे करीब आठ-नौ मील चल ही चुके थे।

हैदराबाद-जेल के बाद कम्युनिस्टो के साथ यह दूसरी मुलाकात थी। बन्दियों की बातचीत का स्तर हैदराबादवालों से भिन्न था। वहाँ विनोबाजी से उनकी बात समझने की वृत्ति प्रकट हो रही थी। हैदराबाद के लोक-जीवन में आयी हुई चिन्ताजनक परिस्थिति को सुधारने के लिए मार्ग-सशोधन की इच्छा दिखाई दे रही थी। जिम्मेदार, विचारवान्, किन्तु लाचार लोगों से बात हो रही है, ऐसा आभास वहाँ हो रहा था। इसी बीच विनोबाजी ने जगह-जगह अपनी प्रार्थना-सभाओं में कम्युनिस्टों का आवाहन किया था कि मेरी तरह खुलेआम घूमो, प्रेम से समझाओ, माँगो और पाओ। हिंसा को त्यागो, अहिंसा को अपनाओ। नलगुंडा-जेल में सींखचों के भीतर भी विनोबाजी के विचार पहुँच चुके थे, लेकिन मुलाकात की बात-चीत से जाहिर था कि कम्युनिस्ट भाई उन विचारों से विनोबाजी के प्रति अधिक रुष्ट हुए थे। उनको लग रहा था, मानो विनोबाजी उनकी बुनियाद ही आमूल उच्छेदित करना चाहते हैं। इसलिए विनोबाजी की पदयात्रा और उनका विचार-प्रचार सब उनके लिए असह्य हो गया था। फलतः कम्युनिस्ट मित्रों ने तेलुगु में एक पत्रक निकालकर विनोबाजी के प्रति अपना तीव्र विरोध प्रकट किया था और भू-दान में मदद न करने के लिए तेलगाना की जनता के नाम अपील की थी। बातचीत के सिलसिले में इन सब बातों का भी जिक्र हुआ। विनोबाजी ने समझाया कि प्राप्त परिस्थिति में, जब कि चुनाव आनेवाले हैं, और अपना-अपना विचार समझाकर जनता का निर्णय प्राप्त करने का प्रजासत्तात्मक मार्ग सबके लिए खुला हुआ है, हिंसक तरीके को छोडकर विचार-परिवर्तन के मार्ग को

अपनाने मे उन्हें क्यो सकोच होना चाहिए ? अगर उनके विचारो मे बल होगा, तो लोग उनकी बात सुनेगे और उनको अपना प्रतिनिधि बनाकर धारासभा मे भेजेंगे, जहाँ वे चाहेंगे, वैसी भूमि-व्यवस्था कर सकेंगे। लेकिन विनोबाजी की बात सुनने के लिए इन भाइयो में आवश्यक धीरज का अभाव था। उन्होंने विनोबाजी पर आक्षेप भी लगाये कि वे जमीदारों को पुनः प्रतिष्ठा देने के लिए आये है। क्राति को उनके कार्यक्रम से धक्का पहुँच रहा है। प्रारभ मे उन मित्रों का रुख कुछ गरम ही रहा। परतु विनम्र विनोबा की साफगोई ने उनके हृदयो मे प्रवेश किया ही, जिसके कारण विनोबा खाली हाथ नहीं लौटे। विनोबाजी ने उन लोगों के मुँह से कहलवा ही लिया कि ठीक है, हम लोग कुछ समय के लिए आपको मौका देते है, आप अपने तरीके को भी आजमा लीजियेगा। जो अपने को विरोधी समझते है, उनकी भी सहानुभूति प्राप्त करके आगे बढने का विनोबाजी का यह राजमार्ग था।

जेल मे विनोबाजी कम्युनिस्ट बहनों से भी मिले। औरगाबाद के श्री चन्द्रगुप्त विद्यालकार की पत्नी भी यहाँ कैद थी। और भी कुछ बहनें थीं। हम लोगो ने श्री विद्यालकार के स्वास्थ्य आदि की खबरे उन्हें सुनायी। कुछ शिकायते हों, तो सुनने की इच्छा प्रकट की। कम्युनिस्ट भाइयों की तरह उनके साथ भी बाते करने की आवश्यकता हो तो विनोबाजी तैयार थे, यद्यपि समय बहुत हो गया था। बहनों की ओर से श्रीमती चद्रगुप्त ने ही बाते की। उस बहन की मुद्रा पर जेल-जीवन का कोई असर नही था। उसके हर शब्द मे उसकी दृढता टपक रही थी। उसने अपनी कोई शिकायत नही बतायी। यही कहा कि सरकार और जमींदार की ओर से गरीबो पर इतने जुल्म लादे जा रहे है। ऐसी हालत में विनोबाजी क्यों उम्मीद करते है कि उन लोगों से जनता का भला होगा ? कम्युनिज्म के सिवा लोगो का कल्याण नही होगा। प्रारभ मे उसके शब्दो मे आवेश था, आँखो मे ज्वाला थी, परंतु विनोबा की बातचीत ने उसे शात किया।

किसी सत से मिलने का शायद उसका यह पहला ही प्रसग था। 'क्षणमिह सज्जनसगतिका, भवति भवार्णवतरणे नौका' की याद आ रही थी।

विचार से ही विचारक को समझाना सभव

दोपहर को नगर के जमीदारों से बाते हुई। विनोबा ने समझाया .

"दो-तीन वर्षों से हम आपके यहाँ के कम्युनिस्ट-आदोलन के बारे मे सुनते रहे है। इसके पहले ही आने का सोचा था, अगर अब और अधिक देर करते, तो इस मसले का शातिमय हल निकलना मुश्किल हो जाता। यहाँ की समस्या मिलिट्री और पुलिस से हल होनेवाली नही है। जहाँ विचार का सवाल है, वहाँ पुलिस क्या कर सकती है? कम्युनिज्म केवल हथियारों के आधार से तो नहीं बढ पाया है। वह तो अपने विचार के कारण इतना फैला है। इसलिए हमें भी लोगों को अपना विचार समझाना चाहिए। विचार-क्राति से ही यह मसला शातिमय तरीके से हल हो सकता है। विचार समझाने के लिए हमे गॉव-गॉव लोगो के पास पहुॅचना होगा और पैदल ही पहुॅचना होगा। लोगों से मिलना होगा। उनका सुख-दु ख समझना होगा। आज पचीस रोज हुए, हमने करीब एक सौ गाँव अपनी ऑखों से देखे। पदयात्रा द्वारा परिस्थिति का जो चित्र हम देख सके, वह दूसरे किसी तरीके से हरगिज नही देख पाते।

"हैदराबाद से चलते समय हमने वहाँ की जेल मे कम्युनिस्ट भाइयो से भेट की। आज यहाँ भी उनसे मिले। ये कम्युनिस्ट भी हमारे भाई ही है। हमे चाहिए कि उनके विचारो को समझे, अपने विचार भी उन्हें समझाये। विचारो की छननी होना जरूरी है। अगर कोई यह समझता हो कि कम्युनिस्टों को मार डालने से कम्युनिज्म खतम हो जायगा, तो वह भ्रम मे है। विचार से ही विचार करनेवाले को समझाया जा सकता है। जो कम्युनिस्ट नेता जेल मे है, वे पिस्तौल की नीति को ही मानते हैं, ऐसा नहीं है। मेरी उनसे काफी बाते हुई हैं। मेरा विचार वे समझ गये है।

गाधीजी का विचार

"हमे गाधीजी ने जो विचार दिया है, उसमे हमे इस समस्या का हल दिखाई देता है। अब दुनिया मे दो ही विचार चलनेवाले है और उन्हीमे मुकाबला होनेवाला है। अगर श्रीमान् और गरीब का भेद रहा, तो वह देश के लिए ठीक न होगा। हम कहना चाहते है कि वह भेद यहाँ हमने देखा है और इसलिए अनेकविध तरीको से हमने लोगो को अपना विचार भी समझाया है। हम जमीन को माता कहते है, परतु यहाँ तो हमने देखा कि चद लोग उस पर कब्जा किये हुए है और अनेक लोग भूमिहीन हैं। तो, हमने लोगो से बाते की और पचीस रोज मे करीब पचीस सौ एकड जमीन भी हमे मिली।

जीवन-दान के लिए आवाहन

"परतु हमे केवल जमीन नही चाहिए। जमीन तो एक सकेत है—इशारा भर है। आखिर केवल जमीन दे देने से काम पूरा नही होगा। हमे तो जीवन चाहिए। इसलिए हमने तो लोगो को जीवन देने के लिए भी आवाहन किया है। माता-पिता के हाथ मे बच्चो का जीवन सुरक्षित रहता है। बुद्धिमान् और साधनवान् लोगों को भी चाहिए कि देहात के लोगो के जीवन की जिम्मेदारी अपने ऊपर ले। आप लोग जो शहरो मे रहते है, ऐसे साधन भी रखते है। इसलिए आप चाहे, तो यह कम्युनिज्मवाला मसला आसानी से हल कर सकते है।

देते रहने का उसूल

"श्रीमान् और गरीब, दोनो के हित परस्परविरोधी है, यह विचार गलत है। यह तो आज की समाज-व्यवस्था का दोष है, जो ऐसा विरोध दिखाई देता है। इस विरोध को मिटाने का मार्ग है—देते रहने का उसूल। इसलिए आप लोगो से भी मेरा कहना है कि आपको देना चाहिए। देते रहना चाहिए, यह उसूल सभीने समझाया है। फकीरो ने, साधु-सतो ने, सबने। आप नलगुडा के नागरिक है। आप पर तो अधिक जिम्मेदारी है।

सहकार का अभाव

"हम लोगो मे परस्पर सहकार का बहुत अभाव रहता है। हम आपस मे बैठकर सोचते नही। जमींदार और जनता मे सहकार नही। सरकार और जनता मे सहकार नही। इन सबमे आपस मे मेल-जोल नही। यहाँ तक कि कार्यकर्ता-कार्यकर्ताओ मे भी आपस मे मेल-जोल नही। सस्थाओ मे भी आपस मे विचार-विनिमय और सहकार नही। नही तो देश की शक्ति जो बिखर रही है, ये जो टुकडे-टुकडे हो रहे है, वे न होते। पहले तो ये काग्रेसवाले प्रायः गाधीवाले ही थे। उनमे से ही समाजवादी बने। उनमे से ही साम्यवादी भी बने। अब काग्रेसवालो मे भी आपस मे पक्ष-भेद बढते जा रहे है। इस तरह अधिकाधिक टुकडे होते ही जा रहे है। नतीजा यह हो रहा है कि सबकी शक्ति नष्ट हो रही है और देश का नुकसान हो रहा है।"

देने की त्रिविध मर्यादा

अपने भाषण मे विनोबाजी ने कानून की निरर्थकता पर भी प्रकाश डाला "कानून से जो मिलेगा, वह प्रमाण मे कम-से-कम होगा—एक मर्यादा मे ही मिलेगा। परन्तु मै तो गरीबों से भी ले रहा हूँ। मै मानता हूँ कि जिसको हाथ मिला है, उसे देने का सुख भी मिलना चाहिए। कानून से जमीन का मसला हल नही होगा और न तो कम्युनिज्म का ही होगा। कम्युनिज्म का मसला तो देने से हल होगा, उदार दिल से और सतत देते रहने से।"

देने की त्रिविध मर्यादा भी बनायी

१ झगडेवाली जमीन मत दो,

२ दूसरे का देखकर मत दो,

३ केवल जमीन देकर ही समाधान मत मानो।

सौ एकडवाला अपनी पूरी सौ एकड जमीन देकर सन्यासी फकीर भी बन सकता है और अपना जीवन भी दे सकता है।

आश्वासन

नलगुडा जिले का स्थान था। सरकारी अधिकारी ऐसे तो बीच के पडावों पर भी बराबर मिलने आते थे, परन्तु यहाँ तो सभी पुनः मिलने आये और जिले की परिस्थिति के बारे मे विचार-विनिमय किया। अब तक जो-जो शिकायते पुलिस के बारे में आयी थी, वे उनकी निगाह मे लायी गयी। लोगों से जबरदस्ती 'येट्टी' याने बेगार ली जाती थी, आइन्दा के लिए हिदायतें दी गयी कि येट्टी कतई नही ली जायगी। बजारे लोगों के गिरोह की तक्लीफे थीं, उन्हें उनकी इच्छा के अनुसार जमीनों पर बसाना तय हुआ। नारायण स्वामी और सन्यास रेड्डी ने पैसा भी खूब वसूल किया था और जुल्म भी खूब बढाया था। उन्हें नौकरी से रुखसत दी गयी। जो शिकायते यात्रा के दरमियान ध्यान मे आयी थी, अधिकारियो को बतायी गयी, और उन्होंने जहाँ फौरन अमल करना था, अमल किया। जहाँ जॉच की आवश्यक्ता थी, जॉच का प्रबन्ध करके शीघ्र कार्यवाही का आश्वासन दिया। कम्युनिस्टों ने शिकायत की थी कि उनके व्यक्ति-स्वातन्त्र्य की दरखास्तें बीच मे ही पुलिस द्वारा दबा ली गयी है। यह बहुत गभीर शिकायत थी। कलेक्टर तथा पुलिस, दोनो ने इस बारे मे आश्वासन दिया कि फौरन जाँच करके आवश्यक कार्यवाही की जायगी। इसके सिवा सिचाई आदि के बारे मे भी कहा गया। गॉव-गॉव के लोग भी आये थे कि हमारी शिकायतो के बारे मे क्या किया जाता है। उन लोगो को भी अधिकारियों से मिला दिया गया। सभी प्रकार से लोगों को आश्वासन मिलता गया। जिले मे कम्युनिस्ट और पुलिस, दोनो के कारण जो आतक और भय छाया हुआ था, उसके निवारण मे इससे काफी मदद पहुँची। बाते मामूली थीं, परतु भय के वातावरण में बडी आश्वस्त करनेवाली थीं।

जेल के कम्युनिस्ट भाइयो ने शिकायते की थीं कि उन्हें पानी अच्छा और पर्याप्त मात्रा में नहीं मिलता, अखबार नहीं दिये जाते, किताबे नही मिलतीं, बाहर सोने नहीं दिया जाता तथा मुलाकाते नही दी जातीं।

इन शिकायतों के बारे मे भी अधिकारियो से बाते हुईं और ये सभी शिकायते फौरन दूर कर दी गयी।

जाग्रत किसान खामोश न बैठेगा

हैदराबाद की उस विशाल सभा के बाद आज की यह पहली सभा थी, जहाँ विनोबा के भाषण का तेलुगु मे अनुवाद नही करना पडा। स्त्रियाँ भी कसरत से हिंदी-उर्दू जाननेवाली थी। एक माह के बाद विनोबाजी अखड प्रवाह से बोल सके और अपने भावो को सीधे जनता तक पहुँचा सके। विनोबाजी ने बताया कि कैसे कम्युनिस्ट-आदोलन के कारण भारत के कोने-कोने मे नलगुडा का नाम पहुँच चुका है। अगर यही परिस्थिति जारी रही, तो देश को कितना खतरा है, इसकी कल्पना भी उन्होने दी। इसका इलाज बताते हुए उन्होने भूदान यज्ञ का महत्त्व समझाया और बेजमीनो को जमीन देने का आवाहन किया. "अगर यह जमीन का मसला हल न हुआ और शान्तिमय तरीके से हल न हुआ, तो सदियो की नीद के बाद जो किसान जाग उठा है, वह खामोश न बैठेगा। फिर उसके असन्तोष का परिणाम सारे देश को भुगतना पडेगा।"

उन्होने कम्युनिस्ट भाइयो के साथ की बातचीत का भी जिक्र किया और उनके ध्येय का औचित्य मानते हुए भी उनके रास्ते को गलत बताकर लोगो को उनके दबाव मे न आने की सूचना दी।

जेल के अधिकारियो ने आज दो राजबदी कम्युनिस्ट बहनों को रिहा भी कर दिया था, जो जेल से सीधे विनोबाजी के पास मिलने आ पहुँची थीं। दोनो ननद-भौजाई थीं—कम्युनिस्ट-विचारो से भरी हुईं। दो साल से जेल मे थी। दोपहर को जेल मे इनसे भेट भी हुई थी। इनके भाई, पति आदि परिवार भी कम्युनिस्ट-विचारो का है और जेल मे ही है। विनोबा ने बहुत देर तक उनसे बातें की। रात मे वे वही पद-यात्री दल की बहनो के साथ रही तथा सवेरे अपने गाँव सूर्यपेठ चली गयीं। उन्हे अपने घर सुरक्षित पहुँचाने की सारी सुविधाएँ कर दी गयी।

मृत्यु से डरना नहीं है

सोने के पहले एक पिता-पुत्र विनोबाजी से मिलने आये। कितने ही दिनों से वे अपना गाँव छोड़कर नलगुडा आकर बसे थे। विनोबा के भाषण से प्रभावित होकर वे सलाह पूछने आये कि क्या किया जाय। विनोबाजी ने कहा : "निर्भय होकर जरूर अपने गाँव जाओ, गाँववालों का प्रेम संपादन करो। मृत्यु से डरना नहीं है, इतना याद रखो।" दोनों ने हिम्मत की—तय किया कि जायँगे। उठते समय नमस्कार किया और सौ एकड़ का दान-पत्र भी भेंट किया।

● ● ●

प्रेमगढ़ी उत्तमगढ़ी

: २८ :

पज्जोर

११-५-'५१

क्या भगवान् की कोई अलग जगह होती है ?

उस रोज, नलगुडा के उस ओर, राजपेठ मे हमने लोगो की भक्ति-भावना का दर्शन किया। एक एकडवाले ने भी एक गुठा दिया और छोटे-छोटे भूमिवानो ने तीस एकड दिया। आज नलगुडा के समीप का ही दूसरा गॉव पज्जोर है, यहॉ भी भारतीय सस्कृति का अद्भुत दर्शन हुआ। छोटा-सा गॉव है, साफ-सुथरा लिपा-पुता। गॉव की रक्षा के लिए एक गढी भी है। ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए विनोबा निकले, तो बीच-बीच मे कुछ घरो मे प्रवेश करते गये। लोगों की रहन-सहन निहारते गये। नाई के घर गये, कुम्हार का घर देखा, हरिजनों के घरों को निहारा। कही पूजा का सामान देखा, कहीं दूध-दही की हॅडियॉ देखी, हरिजन बालकों को देखा कि चेचक से भरे पडे है। सबको बडा क्लेश हुआ। एक बहन के घर पोतना का भागवत, गीता की पुस्तक आदि भी देखी। उससे सहज पूछा "तुम्हारा भगवान् कहॉ है ? जगह बताओ।" अर्थात् विनोबाजी तो उसके घर का 'देवालय' या 'उपासना' का स्थान देखना चाहते थे। उस बहन ने विनोबा की ऑखो मे अपनी ऑखे गडाकर प्रति-प्रश्न पूछा : 'क्या भगवान् की कोई अलग जगह होती है ? वह तो विश्वव्यापी है। उसके लिए देवालय की क्या जरूरत ? मेरा भगवान् तो मेरे साथ ही रहता है।"—इतना कहकर वह बडी तेजी से भीतर गयी। 'आज मेरे घर सत के चरण लगे है। सबको प्रसाद लेना होगा'—कहकर

उसने अपनी हँडिया का दही सबको बाँट दिया। विनोबा ने भी सबके साथ प्रसाद ग्रहण किया।

भारत के इस पुरातन वैभव को इन छोटे-छोटे गाँवो में आज भी ऐसा सुरक्षित पाकर हृदय भक्ति-भाव से ओत-प्रोत हो जाता है। यह है हमारी सस्कृति और शिक्षा का नमूना। क्यो न ऐसी माताओ की कोख से आत्मज्ञानी सतान निपजेगी ? वह बहन डेरे पर भी आयी। विनोबाजी को उसने भजन भी सुनाये। उसका वह मकान-बैठक और रसोई के बीच के द्वार पर एक हाथ टेककर उसका खडा रहना—उसकी वह भव्य मूर्ति, आबदार आँखे, निःसकोच व्यक्तित्व, विनोबाजी के साथ की उसकी बातचीत और अत मे दही-मही वितरण, सारा दृश्य आज भी चित्त पर कैसा सजीव अकित है।

लक्ष्मी बहन का स्वास्थ्य आज ठीक नही था। हम लोगो को अनुवाद की चिंता थी, क्योंकि हर कोई विनोबा के भाषण का अनुवाद नहीं कर सकता। उन्होंने शब्द-रचना और भावों को अब ठीक समझ लिया है और तद्रूप होकर अनुवाद करती है। विनोबा भी उनके स्वास्थ्य की चिंता कर रहे थे कि इतने में मच पर लक्ष्मी बहन आ पहुँची और नित्य की भाँति अनुवाद करने बैठ गयीं। तेलुगु मे स्थितप्रज्ञ के श्लोक आदि सारी प्रार्थना होने के बाद विनोबा ने प्रारभ मे उस देहात को देख जो खुशी उन्हे हुई थी, उसे प्रकट किया। फिर गाँववालों के साथ की बातचीत का जिक्र करते हुए पाँच पाडवो की तरह एकरूप होकर, एक-कुटुब-भावना से रहने की प्रेरणा दी। पाडव पाँच ही थे, फिर भी जगलो मे भी वे अपनी रक्षा कर सके, क्योंकि वे किसी और गढी के सहारे नहीं रहते थे, केवल प्रेम-गढी ही उनकी एकमात्र गढी थी।

●●●

नित्य-धर्म की दीक्षा

: २९ :

चरकूपल्ली

१२-५-'५१

शून्य मे से सृष्टि

सारा गॉव खाक हो चुका था। लोग भयभीत थे। कितने ही पचास मील की दूरी पर भारत की सरहद मे जा बसे थे। गॉव का देशमुख गॉव मे गैरहाजिर था। निराशा और निरुत्साह का वातावरण गॉव मे था। लेकिन विनोबाजी के आगमन के कारण बहुत दिनो के बाद गॉव मे कुछ रौनक छायी थी। खॅडहरो की लिपाई-पुताई हुई थी। चौक पूरे थे। दीपक जले थे। तोरण और बदनवार बॅधे थे।

लेकिन दर्द जाहिर था। मिलनेवालो का तॉता बॅध गया। शिकायतो की दर्खास्तो पर दर्खास्ते आने लगी।

विनोबा ने सबको सात्वना दी। परतु उन्हे तो निराशा के वातावरण को आशा और उत्साह मे बदल देना था। "भूमिहीन कितने है और कौन है ?" पृच्छा की। उन सबको खडा कर दिया। तीस लोग गिने गये। अब उनके लिए विनोबा ने मॉगना शुरू किया और हकदार होकर मॉगने लगे।

शून्य मे से सृष्टि निर्माण हुई। एक-एक एकडवालो से मॉगना शुरू किया और देने का एक अद्‌भुत सिलसिला चल पडा। बात-की-बात मे तीस एकड जमीन का दान मिल गया। भगवान् की इस कृपा से इधर भक्तो की ऑखे भीगी। उधर प्रकृति ने भी सहानुभूति प्रकट की।

पहले खूब जोरो की ऑधी आयी और ऑधी के बाद मेहा भी बरसने लगा। मई कडी तप रही थी। बूॅदो ने ठडक छा दी। सबने अतर-बाह्य शाति का अनुभव किया। इतने मे घटी ने प्रार्थना की सूचना

दी। सभी भगवान् का भजन गाने और आर्षवाणी का प्रसाद पाने के लिए नये उत्साह से उठे। दान बरसा, मेहा बरसा, अब ऋषि की वाणी भी बरसने लगी।

गरीबों का धर्म

"आपके गाँव मे भूमि-दान का जो सिलसिला चला, उसका मुझे बहुत आनंद हुआ है। इसमे कुछ तो गरीब लोगो ने भी दिया है। असल मे जो लेना है, वह श्रीमानो से लेना है, लेकिन गरीबो को भी पुण्य की प्रेरणा, दान की प्रेरणा चाहिए। गरीबों को भी आपस मे एक-दूसरो की फिक्र करने का धर्म समझना चाहिए। भगवान् ने गीता मे समझाया है कि एक पत्ती दे दो, एक फूल दे दो, एक फल दे दो। जो थोडा भी देता है, भगवान् उसकी भी रक्षा करता है। आप लोगों ने सुदामाख्यान सुना है। दामाख्यान में सुदामा एक मुट्ठीभर चावल लेकर भगवान् के पास जाता है और उसके तदुल से भगवान् प्रसन्न होते है। शुकदेव ने भागवत मे इसका वर्णन किया है। आज हमारी एक बहन ने पूछा कि जो गरीब है, उनसे दान क्यों लेते है? लेकिन आज हमारे देश मे ऐसे भी लोग है, जिनके पास जमीन बिलकुल नही है और न आज के खाने के लिए ही कुछ है। तो, जिनको खाने को भी नहीं मिलता, ऐसों की सेवा करना गरीबो का भी धर्म होता है। आखिर भगवान् ने गरीबों के उदार दिल तो रखे ही है। इसलिए जो देता है, वह सौ गुना पाता है। आपने देखा कि यहाँ पर एक धोबी खुद होकर जमीन देने के लिए सामने आया। उसका नाम तो किसीने नही लिया था। वह गरीब है, यह जाहिर बात है। फिर भी उसने दान दिया, इसलिए भगवान् सतुष्ट हुआ होगा। इस तरह यह दान की हवा उत्तरोत्तर बढती जायगी, ऐसी मै आशा करता हूँ।

छठा हिस्सा समाज का

"हरएक को यह व्रत लेना चाहिए कि जिसके पास कुछ नही है, ऐसा आदमी माँगने के लिए आये, तो फौरन दे ही देना चाहिए। समझना

चाहिए कि ऐसा मॉगनेवाला हकदार है। गरीब के घर मे भी नया लडका जन्म लेता है, तो गरीब क्या करता है? पहले घर मे तीन थे, अब चार हो गये, तो चार मिलकर बॉटकर खाते है। अतः हम लोगो को समझना चाहिए कि अपने घर मे पॉच लडके है और यह छठा लडका समाज है। चाहे गरीब हो, चाहे श्रीमान् हो, उसे समझना चाहिए कि अपने घर मे जितने मनुष्य है, उससे एक ज्यादा है और वे उस ज्यादे मनुष्य का हिस्सा अलग रखे। यदि किसीके घर मे छह लाख की इस्टेट है और घर मे पॉच लोग है, तो उस इस्टेट के छह हिस्से करने चाहिए और समझना चाहिए कि यह छठा हिस्सा समाज का है। अगर किसीके घर मे पॉच रुपये की इस्टेट है, तो उसको भी इसी तरह बॉटना है।

जो कुछ है, सबका हिस्सा देना है

"इस तरह केवल भूमि और पैसे का ही हिस्सा नही देना चाहिए, बल्कि बुद्धि और समय का भी हिस्सा देना चाहिए। मतलब कि हमारे पास पैसा, शक्ति, बुद्धि, समय, जो भी कुछ है, उसका हिस्सा दूसरो को दान मे देना ही चाहिए। यह दान-धर्म नित्य-धर्म के तौर पर हमे शास्त्रकारो ने सिखाया है। जैसे हम रोज खाते है, वैसे रोज दान देना चाहिए।"

न डरो, न डराओ

विनोबा ने अत मे कहा "अब एक बात और कहना चाहता हूँ। घरो को आग लगाना, जानवरो को मारना, फसल जलाना आदि बिलकुल गलत तरीका है। यह अपवित्र तरीका है, यह मनुष्य धर्म नही है। इस तरह के मार्ग को चाहे कम्युनिस्ट अख्तियार करे, चाहे काग्रेसवाले करे, चाहे श्रीमान् करे, वह पाप ही है। इसलिए हम लोगो को यह निश्चय करना चाहिए कि हम किसी दूसरे को तकलीफ न देगे। हमे कोई तकलीफ देता है, तो उसके प्रतिकार का कोई अहिसक तरीका ढूँढना

चाहिए। लेकिन उसे तकलीफ न पहुँचानी चाहिए। हमें किसी मनुष्य को शत्रु नहीं समझना चाहिए। कोई जुल्म करता है, तो सहन न करना चाहिए, लेकिन उस मनुष्य के शरीर को तकलीफ देना, उसे लूटना, उसका घर जलाना यह बिल्कुल निकम्मी—खराब बात है। हम या तो सामनेवाले के घर को आग लगा सकें, तो लगाते हैं या डर के मारे भागने का प्रयत्न करते हैं। ये दोनों काम हमें न करने चाहिए और दोनों ही काम आपके गाँव में हुए हैं। हमने सुना है कि कुछ लोग यहाँ से 'यूनियन' में भाग गये हैं। यूनियन यहाँ से ५० मील से ज्यादा दूर होगा। इतने दूर भाग जाने का क्या मतलब है? अपना स्थान कभी न छोड़ना चाहिए और हिम्मत के साथ प्रतिकार करना चाहिए। इस तरह भाग जाना मानवता के विरुद्ध बात है। पशु ही ऐसा करता है। उससे कोई बलवान् आता है, तो वह भाग जाता है और कमजोर पर हमला करता है। यह जो जानवर का काम है, वह मानव को नहीं करना चाहिए। हमसे कोई बलवान् मिले, तो भी हमें उसका सामना करना चाहिए और कमजोर मिले, तो उसे हमसे जरा भी भय नहीं मालूम होना चाहिए। अपनी बात साफ बता देनी चाहिए और सज्जनों का मन अपनी तरफ खींच लेना चाहिए। जैसे धर्मराज ने बहुत सारे दुःख सहन किये, लेकिन सबकी सहानुभूति अपनी तरफ खींच ली। परिणाम यह हुआ कि भगवान् ने उन्हें सहायता दी। तो, काम यह करो कि डर के मारे भागना नहीं और विरोधियों को भगाना भी नहीं। किसीसे डरना नहीं, किसीको डराना नहीं। इतना अगर आप करते हैं, तो बहादुर साबित होते हैं और भगवान् की कृपा के पात्र बनते हैं।

न अहंकार हो, न तिरस्कार

"मेरे भाइयो, आपने जितना मेरे से सुना, उतना काफी है। जिन लोगों ने प्रेम से, खुशी से मुझे भूमि-दान दिया है, उनका मैं आभार

मानता हूँ। जिन्होंने जमीन दी है, उन लोगों को मन में अहंकार नहीं करना चाहिए और जिन्होंने जमीन नहीं दी है, उनके प्रति तिरस्कार भी नहीं होना चाहिए। जिन्होंने आज नहीं दिया है, जिनको देने की प्रेरणा नहीं मिली है, उनको कल भगवान् प्रेरणा देगा, तो वे अपने-आप देने लगेंगे। तो, अपने लिए अहंकार मत रखो, दूसरों के लिए तिरस्कार मत करो। ऐसा आप करोगे तो बहुत अच्छा होगा। आपका गाँव सुखी होगा और दूसरे गाँवों के लिए एक नमूना बनेगा।"

० ० ०

सर्वस्व-दान की दीक्षा

: ३० :

सूर्यपेठ

१२–५–'५१

नास्तिकवादी या निर्गुणवादी

वैसे नलगुडा जिले का आखिरी पडाव तो कल चदुपाटला मे है। परन्तु चदुपाटला छोटा गॉव है। जिले के कार्यकर्ताओ की सुविधा की दृष्टि से सूर्यपेठ को ही आखिरी पडाव माना गया। यहीं जिलेभर के कार्य-कर्ताओ को बुलाया गया। सूर्यपेठ, जिसमे चदुपाटला शरीक है, जिले के सभी सामाजिक, राजनैतिक आदोलनो का और दलबन्दियो का भी केन्द्र माना गया है। नास्तिको का केन्द्र भी वह है। उनका अपना एक 'एथिस्ट सेण्टर' भी शहर से नजदीक ही है, जो रास्ते मे दिखाई भी दिया। वेजवाडा के श्री गोरा की प्रेरणा से यहॉ काम चलता है। श्री गोरा एक अत्यन्त सज्जन और सेवाभावी व्यक्ति है। कुछ दिन बापू के साथ सेवा-ग्राम भी रह आये है। दीन-दुखियो की सेवा के लिए इनका हृदय तडपता है। विनोबाजी को रास्ते मे उनके इस केन्द्र की जानकारी दी गयी तो उन्होने समझाया .

"यह केन्द्र नास्तिको का नही, असत्-वादियो का है। सत्-असत्, दोनों रूप मे लोग मुझे पहचानते हैं, ऐसा गीता का वचन है। उपनिषदो मे भी असत्-रूप का वर्णन है। ये लोग एक तरह से निर्गुणवादी ही है।"

यह चर्चा चल ही रही थी कि सामने से गुलाबी धोतियॉ पहने भजन की मडली "राम भजे" के गीत गाती हुई आ पहुँची।

सवेरे ६ बजे जिले के कार्यकर्ताओ की सभा हुई। अधिकतर कार्यकर्ता काग्रेसी ही थे। पिछले दस-बारह दिनो मे जिले मे जो कुछ काम

हुआ, खासकर जो सात्वना लोगो को मिली और सामाजिक मसलो को सुलझाने का जो एक नया रास्ता प्रकट हुआ, उस पर विनोबाजी ने समाधान प्रकट किया। पदयात्रा के कारण जो वातावरण जिले मे बना है, उससे लाभ उठाने की जिम्मेदारी कार्यकर्ताओ की निगाह मे ला दी। फिर भूदान यज्ञ की पार्श्वभूमि बनाकर कहा .

अपने को ट्रस्ट मे परिवर्तित कर दो

"आज लोगो में जमीन की भूख जोरो से जाग्रत हुई है और वह ठीक भी है। जमीन है भी सबकी माता। तो, उसके लिए लोगो की माँग गलत नही है। पर वह सबको मिले कैसे? एक रास्ता कत्ल का है, जो कम्युनिस्टो ने यहाँ अपनाया है। पर वह इस देश मे चलनेवाला नही है। दूसरा कानून का है, जिसकी भी मर्यादाएँ है और उससे भी मसला नहीं हल होगा। इसलिए हमने यह भू-दान का रास्ता अपनाया है। यह तो सबका प्रेम सपादन करने का मार्ग है। जमीनवाले समझे कि हमारे पास जो जमीन है, उसमे सबका हिस्सा है। परतु यह ध्यान रहे कि मै कोई भीख माँगने नहीं आया हूँ। वामन बनकर आया हूँ। सर्वस्व माँगने मे और स्वीकारने मे मुझे सकोच नही है। रघुवश मे राजा का वर्णन आया है कि सर्वस्व दान कर देने के कारण वह इतना गरीब और साधनहीन हो गया कि माँगने के लिए उसके पास भिक्षापात्र भी नही रहा। दान तो निरतर देते ही रहना चाहिए और छोटे-छोटे दान तो रोज होगे भी। परतु जीवन मे कोई ऐसा क्षण भी आना चाहिए कि सर्वस्व-दान कर दिया और केवल एक आधार रखा, ईश्वर का। यहाँ के इस हिसामय वातावरण को देखकर और कम्युनिज्म का जो प्रचार लोगो मे हुआ है, उस पर सोचने पर हमे इसके इलाज के रूप मे यह सर्वस्व-दान का ही विचार सूझता है। इसलिए आपको अपनी सपत्ति का ट्रस्टी नही बनना है। उसे तो समाज को समर्पण कर ही देना है, आपको खुद अपने को भी एक ट्रस्ट मे परिवर्तित कर देना है।"

भू-दान के आवाहन पर लोगो ने अपनी जमीन का एक अंश देना शुरू किया ही था कि विनोबा ने तो सर्वस्व-समर्पण की बात समझाकर खुद को ही ट्रस्ट बना देने की प्रेरणा दी।

देने का सुख

सब कार्यकर्ता एकाग्र हो सुन रहे थे। कुछ लोगो ने दस-दस एकड का दान भी घोषित किया। एक व्यक्ति उनमे ऐसा था, जो भीतर-ही-भीतर बेचैनी का अनुभव कर रहा था। वह उठा। दुबली, श्यामवर्ण सुन्दर काया, मोटी आँखे, गभीर और चिंतनशील मुद्रा। कोदड रेड्डी ने हृदय का मथन सभा के सामने रखना शुरू किया।

"हमारे भाग्य से विनोबाजी का आगमन इस प्रदेश मे हुआ। उनके आने के बाद यहाँ की 'कम्युनिस्टो की समस्या' ने जो करवट बदली, वह किसीसे छिपी नही है। विनोबाजी ने रास्ता दिखा दिया है। लेकिन कार्यकर्ताओं के जीवन मे त्याग प्रकट हुए बिना लोगो पर असर नही होनेवाला है। अगर हमे इस काम को जारी रखना है और लोगो के पास जाकर जमीन माँगनी है, तो छिटपुट दान देने से काम न चलेगा। हमे चाहिए कि हम अपनी जमीन का एक हिस्सा प्रदान करें।"

कोदड रेड्डी सोच-समझकर ही खडे हुए थे। सवेरे से किसीकी खोज मे थे। बाद मे मालूम हुआ कि वे भाई की खोज मे थे। संयुक्त परिवार था, बिना आपस मे राय-मशविरा किये कोई कदम उठाने मे सकुचा रहे थे। लेकिन वेला भी टल न सकती थी। उन्होने नम्रतापूर्वक निवेदन किया :

'विनोबाजी, हम दो भाई है। मुश्तरका है। मै अपने हिस्से की जमीन का चौथा भाग भू-दान में अर्पण करता हूँ।" और एक सौ सोलह एकड का दान-पत्र भेट कर दिया।

बोलते-बोलते कोदड राव की आँखे सजल हो गयीं। देने का सुख

भीतर समा जो नहीं रहा था ! फिर तो और कार्यकर्ताओं ने भी अपना-अपना भाग देना शुरू किया ।

धन्य भूदान

कोदण्डराव रेड्डी के बडे भाई शाम की सभा मे पहुँच गये थे । छोटे भाई ने जो दान दिया था, उसकी खबर अब तक उन्हें मिल चुकी थी । सभा समाप्त होते ही वे विनोबाजी के पास पहुँच गये । कोदण्ड रेड्डी भी सकुचाते हुए पास आकर बैठ गये कि न जाने वे क्या कहेंगे । बिना सलाह किये दान-पत्र जो भर दिया था । भीड काफी जम गयी । प्रणाम करके बडे भाई ने निवेदन किया .

"विनोबाजी, मै एक शिकायत लेकर आपके पास पहुँचा हूँ ।"

"कहिये ।"

"हम लोग आज तक एक साथ रहे । सारा कारोबार मिल-जुलकर किया । शादी-ब्याह के खर्चे भी एकत्र किये । दोनो का सुख-दुख एक रहा और आज भी एक ही है । परतु आज इसने दूसरा व्यवहार कर डाला ।"

कोदण्डराव रेड्डी और भी सकुचाये । जाहिर था कि भाई दान की बात पर बिगडते दिखाई दे रहे थे । सभी लोग चुप थे । बडे भाई ने अपनी बात जारी रखी .

"मुझे यहाँ आने पर मालूम हुआ कि आपकी अपील पर कोदण्डराव ने अपने हिस्से की जमीन का चौथा हिस्सा अर्पण किया । अगर वह हमारी पूरी जमीन का चौथा हिस्सा दे देता, तो क्या मै उस पर नाराज होता ? क्या उसे मेरे प्रति ऐसा अविश्वास का भाव रखना उचित था ?"

यह कहते हुए बडे भाई का कठ भर आया । आदरपूर्वक उन्होंने भी अपने हिस्से की चौथाई जमीन का दान-पत्र विनोबाजी को अर्पण कर दिया । किसी पुराण की कहानी होती, तो लिखा जाता—'दोनो भाइयों पर आकाश से पुष्पवृष्टि हुई ।' धन्य कोदण्ड रेड्डी, धन्य भ्राता, धन्य भूदान !

पुनः कार्यकर्ताओं के बीच

सवेरे कार्यकर्ताओ की सभा तो था ही, पर वह खासकर भूदान के लिए ही हुई थी। कार्यकर्ताओं को कुछ शका-निरसन भी करना था। इसलिए प्रार्थना के बाद पुनः वे लोग विनोबाजी से मिले। विनोबाजी दिनभर काफी थक गये थे, फिर भी सभा मे बैठ गये। कार्यकर्ताओं के लिए समय देना ही चाहिए, इस खयाल से कम्युनिस्ट-आदोलन के कारण मार्क्स की विचारधारा के बारे मे कार्यकर्ता भी काफी सोचने लगे थे। एक भाई ने पूछा :

गाधी और मार्क्स

प्रश्न : "मार्क्स कहता है कि इन्सान की फितरत मे हिसा है।"

उत्तर : "मार्क्स ऐसा नही कहता। बहुत-से लोग बिना मार्क्स को पढे ही बात करते रहते है। वे मार्क्स को ठीक पढते नही, इतना ही नहीं, पढने के लिए आवश्यक बुद्धि का भी उनमे अभाव होता है। अगर मार्क्स इन्सान को फितरतन् हिंसानिष्ठ मानता, तो एक दिन स्टेट के 'विदर अवे' होने की बात कैसे करता ?"

प्रश्न : "क्या महात्माजी जर्मनी मे होते, तो वहाँ की परिस्थिति मे हिंसा को नही अपनाते ?"

उत्तर : "नही, क्योकि वे भीतरी सूझ पर निर्भर रहते थे, जब कि मार्क्स परिस्थिति पर निर्भर रहता है। वह परिस्थिति से बनता है।"

टंडन और कृपालानी

उन दिनो टडनजी और कृपालानीजी, दोनो मे काग्रेस के चुनाव को लेकर होड थी। कार्यकर्ताओं के मन मे यह उलझन थी कि किसका साथ दिया जाय ! पूछा :

प्रश्न : "टडनजी और कृपालानीजी मे किनका रास्ता सही है ?"

उत्तर : "यह सवाल आपको या तो टडनजी से पूछना चाहिए या कृपालानीजी से या उन दोनों से सबद्ध किसी व्यक्ति से।"

प्रश्न : "लेकिन हम कार्यकर्ता तो आपका मार्गदर्शन चाहते है।"

उत्तर . "तो, दोनो को नमस्कार करके चुपचाप देहात के लोगो की सेवा मे जुट जाइये।"

नेहरूजी की विदेश-नीति

प्रश्न : "नेहरूजी की विदेश-नीति के बारे में आपकी क्या राय है ? 'न्यूटरल' रहने से कभी ऐसा तो नही होगा कि मौका पडने पर हमारा कोई साथी ही न रहे।"

उत्तर : "अरे भाई, साथी नही रहेगा, तो दुश्मन भी तो नहीं रहेगा ?"

भूल जाओ

एक भाई . "आपने अभी मार्क्स के बारे मे बताया कि वह परिस्थिति से बनता है · "

विनोबा · "अरे भाई, मार्क्स का नाम रटते रहने से हमे कोई लाभ नहीं होनेवाला है। आप तो अपने सर्यपेठ के बारे मे ही सोचिए।"

दूसरा भाई "बापू काग्रेस को नही रखना चाहते थे। क्या आज भी काग्रेस की आवश्यकता है ?"

विनोबा : "जैसे मैने उनसे कहा कि मार्क्स को भूल जाओ, वैसे आपसे भी कहता हूॅ कि बापू को भूल जाओ।"

प्रश्न : "लेकिन हमे यह बताइये कि टडनजी और कृपालानीजी के सघर्ष का क्या परिणाम आयेगा ?"

उत्तर : "उनके सघर्ष से हमे क्या प्रयोजन है ? आज यहाॅ इतने लोगो ने जमीनें दी, उन्हें किसने रोका ? मैने कहा न आपसे कि उनको भूल जाइये और देहात की सेवा मे लग जाइये। वही आपके सवाल का जवाब है।'

ऋषि-मुनियो से लाभ

प्रश्न : "ऋषि-मुनियो से समाज को क्या लाभ है ?"

उत्तर : "वे है कहाॅ ? जरा बताइये तो सही ? कहीं देखा भी है ?'

प्रश्नकर्ता : "वे तो हिमालय मे जाकर बैठते है।"

उत्तर : "याने आपका सवाल यह है कि समाज से अलग रहकर चिंतन-मनन करनेवालों से देश का कोई लाभ हो सकता है ?"

प्रश्नकर्ता : "जी।"

उत्तर "जैसे कोई वैज्ञानिक विज्ञान शाला मे प्रयोग करता है, वैसे ही चिंतन-मनन करनेवाले लोग समाज की ओर से एकांत मे मनोवैज्ञानिक प्रयोग करते रहते है। अगर उनके प्रयोग का कोई परिणाम आया, तो समाज को लाभ दिखाई देगा ही। समाज की ओर से वे प्रयोग हुए, यह मानना चाहिए।"

सेवा की मर्यादा

प्रश्न : "सेवा व्यक्तिगत करना ठीक है या संस्था के आधार से ?"

उत्तर : "याने भोजन हाथ से करना अच्छा या चम्मच से ? ऐसा सवाल है यह आपका। प्यासे को पानी पिलाना, बिच्छू काटा है तो दवाई देना, इन सब बातों के लिए हम संस्था की बाट नहीं देखते। उसी तरह ऐसे बहुत-से काम होते है, जिनके लिए संस्था की जरूरत नहीं होती। किंतु कुछ काम ऐसे भी होंगे, जिनके लिए संस्था की जरूरत होगी।"

चुनाव

प्रश्न : "अब चुनाव आ रहे है। इस बारे मे आप कुछ सुझाव देंगे ?"

उत्तर : "चुनाव मे झूठ और हिंसा न हो, इतना पथ्य भी आप लोग पालेंगे, तो हिन्दुस्तान का कल्याण होगा।"

प्रश्न : "हमारे आपसी चुनावों के बारे मे ?"

विनोबा : "आपको यह अक्ल होनी चाहिए कि दोनों मे से एक अपनी उम्मीदवारी वापस ले ले।"

खतरे की सूचना

"नलगुडा जिले के कांग्रेसवालों से मुझे खास तौर से कहना है कि जिन्होंने अब तक जमीन नहीं दी, वे जमीन दें। वरना नलगुडा मे कांग्रेस-वाले जिंदा नहीं रहेंगे। पंडित जवाहरलालजी आकर भी आप लोगों को नहीं बचा सकेंगे।"

• • •

यूरोप की सीख

: ३१ :

चदुपाटला

१४-७-'५१

जो परशुराम न कर सका, वह कम्युनिस्ट कर सकेंगे ?

सूर्यपेठ से चदुपाटला पहुँचते समय रास्ते मे दो स्थानो पर अत्यत उत्साहभरा भारी स्वागत हुआ। एक जगह सैकडो लडके एक कतार से शात और प्रसन्न खडे थे। विनोबाजी आये, तो लडके उनके साथ हो लिये। विनोबा ने उनका हाथ पकड लिया और फिर तो विनोबा और वालक, दोनों ही दौडने लगे।

दूसरी जगह भजन-मडलियों ने खूब स्वागत किया। उनके साथ विनोबाजी भी चदुपाटला तक कीर्तन करते, गीत गाते गये। चदुपाटला पहुँचने पर भी उन लोगो का मधुर भजन-कीर्तन जारी रहा। ताल मृदग, सब सजावट ऐसी सुदर थी कि खूब समॉ बॅध गया, यहॉ तक कि विनोबाजी उन लोगो के नृत्य मे भी शरीक हो गये।

गॉव खूब सजाया गया था। फिर भी वीरान मालूम होता था। गॉववाले काफी सख्या मे अगवानी मे आये थे। २००० की वस्ती, २१०० एकड जमीन, खुश्की-तरी मिलाकर। जिनके पास पॉच एकड जमीन हो, उन्हे हाथ ऊँचा करने के लिए कहा गया। कोई हाथ नही उठा। पॉच एकड से ज्यादावाले काफी हाथ उठे। पॉच एकड से कमवाले भी काफी उठे। और नहीवाले हाथ भी काफी उठे। तब विनोबा ने कहा कि "इन वेजमीनो को जमीन मिलनी चाहिए। कैसे मिले ? कम्युनिस्ट कहते है : मारो, चीरो, काटो, जमीन का बॅटवारा करो। तो, क्या इससे ये

मरेंगे ? परशुराम ने २१ बार प्रयत्न किया। फिर भी ये नष्ट नही हुए। तो, जो काम परशुराम नही कर सका, वह क्या ये कम्युनिस्ट कर सकेंगे ? यहॉ जो विषमता है, उसको दूर करने का इलाज यही है कि जिनके पास है, वे नहीवालो के लिए दे। हम सब पॉच अगुलियों की तरह रहें, जिनमे छोटी-बडी भी है। नही है, ऐसा नही। पर ऐसा भी नही है कि एक दो इन्च की है, तो दूसरी दो फीट की। किन्चित् फर्क है और उतना रह सकता है। अगर ज्यादा फर्क होता, तो इन पॉचो से मिलकर आज जो काम होता है, वह कभी होता ? आप लोगो को पॉच पाडवो की तरह रहना चाहिए। तभी इस देश मे जो तकलीफ है—कम्युनिस्टो की, पुलिस की, मिलिट्री की, वह सब मिट सकती है।"

विनोबा की अपील पर सवेरे की सभा मे ही कुछ लोगों ने भू-दान घोषित किया।

संगठन के लिए भाई की हत्या

आगे चलकर मालूम हुआ कि विनोबाजी का वह भाषण सहज प्रेरणा से होने पर भी यहॉ की परिस्थिति के लिए एकदम अनुकूल था। गॉव की प्रदक्षिणा की गयी। कुछ मकान तो बिलकुल उजडे हुए थे। लोगों ने डी० व्यकटेश्वर राव का मकान भी बताया। उनके परिवार के लोगो से परिचय कराया। डी० व्यकटेश्वर राव इस कम्युनिस्ट-आन्दोलन के नेता है। दो हजारवाली इस छोटी-सी बस्ती मे उन्होंने चालीस अच्छे कार्यकर्ता निर्माण किये थे, जो आगे उनके आन्दोलन का आधार बने। नलगुडा जिले के सारे हत्याकाण्ड की प्रेरणा यही से मिली। रावी नारायण रेड्डी के विचार व्यकटेश्वर राव की तरह उग्र नही थे, अधिकतर नौजवान व्यकटेश्वर राव के साथ हो गये। व्यकटेश्वर राव चार भाई थे। तीन एक विचार के थे, परन्तु बडा भाई पार्टी का साथ देने को राजी नही हुआ। चदुपाटला मे ही नही, नलगुडा जिले मे और हैदराबाद की कम्युनिस्ट पार्टी मे व्यकटेश्वर राव का बडा सम्मान था। व्यकटेश्वर राव

ने अपने भाई को एक माह की मुहलत दी। अगर एक माह के भीतर वे पार्टी का साथ देने का फैसला करते है, तो उनके हक मे ठीक है। वरना वे कोर्ट-मार्शल कर दिये जायँगे।

बडे भाई ने ही व्यकटेश्वर राव को लिखा-पढाकर बडा किया था। उन्हे यकीन था कि आखिर भाई है। चाहे जो कुछ कहे, मेरे साथ कोई आत्यतिक व्यवहार तो नही करेगा। एक माह हुआ। भाई का रुख बदला नही, बल्कि लापरवाही नजर आयी। चदुपाटला मे इजलास हुआ। भाई से जवाब तलब किया गया। भाई ने पार्टी का साथ देने से इनकार किया। व्यकटेश्वर राव के हुक्म से भाई को गोली से मार डाला गया।

गॉववालो ने भयभीत होकर सारा किस्सा सुनाया। कौन जाने, आज भी व्यकटेश्वर राव के दूत वहॉ हों और विनोबाजी की विदाई के बाद फिर इन लोगो पर नयी आफत न आ जाय।

व्यकटेश्वर राव की सारी जमीन पर सरकार ने कब्जा कर लिया था। गॉव के अनेक नौजवान या तो जेल मे लबी सजाऍ काट रहे थे या 'अण्डर ग्राउण्ड या भूमिगत' थे। गॉव पर अजीब दहशत और बेबसी छायी हुई थी।

सरकार की ओर से इस छोटे-से गॉव में बीस मिलिट्री गार्ड को रखा गया था।

सारे इलाके मे यह गॉव 'स्टालिनग्राड' के नाम से मशहूर था।

और इसी गॉव मे अमेरिका के 'टाइम्स' पत्र के सवाददाता भी आ पहुँचे। विनोबाजी ग्राम-प्रदक्षिणा कर रहे थे, तब यह भाई भी साथ थे। एक उजडे मकान मे राज रेड्डी का परिवार था · पत्नी, बहन, सास। राज रेड्डी के बारे मे मालूम हुआ कि जेल मे ही उन्हे मार डाला गया है। उनका एक जेल से दूसरे जेल मे तबादला हुआ था। मिलिट्री की निगरानी मे रवानगी हो रही थी। राज रेड्डी ने भागने की कोशिश की, तो गोली का शिकार होना पडा। बात हाईकोर्ट मे गयी थी और पुलिस ने कोर्ट के सामने अपनी भूल का इकबाल किया था।

प्रेम का मार्ग

प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी ने गॉव की परिस्थिति के बारे मे तथा गॉववालो के प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा कि "कम्युनिस्ट होना कोई गुनाह नही है। कम्युनिस्ट होने का अर्थ इतना ही है कि गरीबो की सेवा मे लग जाना है।" खून-खराबी के तरीके का निषेध करते हुए उन्होने कहा कि "यह तरीका बिलकुल गलत तरीका है।" व्यकटेश्वर राव के बारे मे आशा प्रकट की कि "मै अगर उनसे मिला, तो उन्हे समझा सकूँगा।" उन्होने कहा कि "यह खून-खराबी का रास्ता हमारे युवको ने यूरोप से सीखा है, जहॉ सबके पास हथियार है। हमारे हथियार-हीन लोग तो प्रेम के मार्ग से ही ऊँचे चढ सकते है। प्रेम के रास्ते से श्रीमान् और गरीब, दोनो का भला हो सकता है।"

● ● ●

विनोवा   अगर इस उम्र मे भगवान् की कृपा से और एक बेटा तुम्हारे घर पैदा हो, तो उसे अपना हक दोगे या नही ?

किसान ·   जी। जरूर!

विनोवा .   तो समझ लो कि मै तुम्हारे घर बेटा पैदा हो गया और मुझे गरीब का हक दो।

जैसे हवा, पानी, और सूरज की रोशनी सबके लिए है, वैसे भूमि भी भगवान् ने सबके लिए निर्माण की है।

बहनो, कुदाली चलाती चलो! : ३२ :

नायकमगुडा

१५-५-'५१

आज वरंगल जिले मे प्रवेश था। एक मकान, जिसमे हवा का प्रवेश नही था, विनोबाजी के लिए पसंद किया गया था। लेकिन अपरिग्रही विनोबा को अपने और आकाश के बीच ऐसी दीवारो के परदे का परिग्रह कैसे बर्दाश्त हो? दो तीन मिनट भी भीतर न रुक पाये होगे कि बाहर निकल आये। "कोई पेड वगैरह हो, तो जरा देखता हूँ" कहकर निकल पडे। श्री महादेवी ताई के जी मे पहले ही से धडकन थी कि न जाने आज क्या होगा। रोकने की किसीकी हिम्मत नही थी, क्योकि उस मकान मे किसीके लिए भी अधिक देर टिकना सभव न था। विनोबा ने स्थान की खोज शुरू कर दी थी। मकान से दक्षिण दिशा मे खुला मैदान देखकर उधर ही निकल पडे। पास मे ही दो बडे वट-वृक्ष थे। उनकी छाया मे आसन जमा दिया। स्थान बहुत प्रसन्न प्रतीत हुआ। सामने विशाल तालवन था। बगल मे अर्धवर्तुलाकार भव्य तालाब पर बीचोबीच दूर तक जाता दिखाई देनेवाला भव्य पुल! मानो किसी धनुष की डोरी पर बाण चढा हो और इस प्रतीक्षा मे हो कि अब हुक्म हुआ और अब निकला कि दशोदिशाओ मे विनोबा का सदेश फैला दूँ।

थोडी देर मे तो काम भी शुरू हो गया। कुछ महत्त्व की चिट्ठियाँ लिखवायीं और फिर पासवाले तालाब पर चले गये, जहाँ अनेक जलचर क्रीडा कर रहे थे। विनोबा रुक गये और काफी देर तक उनको निहारते रहे। इतने मे गाँववाले आये और उन्होने गोफ का खेल शुरु किया। वट-वृक्ष मे ही गोफ का सिरा बँधा, नृत्य भी शुरु हुआ और गोफ की

गुॅफाई भी शुरू हुई। नृत्य के साथ उनके भावपूर्ण लोकगीत भी शुरू हुए।

इधर श्री महादेवी ताई का भी उत्साह दुगुना हुआ। गॉववालो का अपनी ओर से भी कुछ आतिथ्य होना चाहिए, इसलिए छोटी मृदुला से कुदालीवाला गीत गाने को कहा : "भाई कुदाली चलाते चलो, मिट्टी से सोना बनाते चलो।" गीत शुरू हुआ और सबने साथ दिया। गीत देहातवालो को भी पसद आया। इस अवसर को भी ज्ञान के अवसर मे बदलने की दृष्टि से विनोबा ने पूछा : "इस गीत मे केवल भाइयो का ही आवाहन क्यो है? बहनो का क्यो नहीं? लोगो को कुछ भ्रम ही हो गया है कि स्त्रियॉ कुदाली चला नही सकती, बढईगिरी कर नही सकती। यह सारा बिल्कुल गलत है। पवनार मे वह हमारी बिंदी बहन कुदाली तो चलाती ही है, और भी कितना ही काम कर लेती है। बढईगिरी मे सिर्फ आरीवाला काम कुछ ज्यादा ताकत का है, जो शायद स्त्रियॉ न कर पाये। लेकिन बाकी का सारा काम करने मे तो कोई भी हर्ज नही। खूब अच्छा सुव्यवस्थित कर सकती है। इसलिए ऐसे गीतो मे "बहनो, कुदाली चलाती चलो" भी कहना चाहिए, जिससे स्त्रियो को भी ऐसे कामो की प्रेरणा मिले।

भूदान का सूत्र-पंचक

प्रार्थना का समय हो गया था, प्रार्थना बस शुरू होने को ही थी कि बहुत जोरो की ऑधी आयी और फिर उस ऑधी मे ही प्रार्थना हुई। ऑधी ने विनोबा को अधिक बोलने भी नहीं दिया। फिर भी, गत माह के अनुभवो का सार बताकर विनोबा ने नये जिलेवालो को अपनी जिम्मेदारी का अहसास करा दिया। सरकार, कार्यकर्ता और जनता, तीनो के लिए उन्होने अपने भाषण मे हिदायते दीं :

१ शाति-सैनिक के नाते सब जगह जाकर शाति और प्रेम कायम किया जाय।

२ लोगो की शिकायतें सुनकर उन्हे फौरन मौके पर ही सुलझाने की कोशिश की जाय ।

३ जितना भी दान दिया जा सके, दिया जाय ।

४ जमीन पानेवाले जमीन का अच्छा उपयोग करें ।

५ सरकार का कर्तव्य है कि जिनके पास साधन नहीं हैं, उन्हें जमीन को जोतने के लिए आवश्यक साधन मुहय्या करा दे ।

पागला हवा—बादल दिने

प्रार्थना समाप्त होते-होते हवा ने खूब जोर लगाया । तूफान शुरू हो गया । बदन को बूंदो का परस होने लगा । परस, जिसमे विनोबा को परमेश्वर के सहस्र-सहस्र हाथो का ही परस प्रतीत होता है । सहारे के लिए फिर सब सवेरेवाले मकान की ओर चल पडे । बीच-बीच में चमकनेवाली बिजली रास्ता दिखाने लगी, क्योंकि लालटेन तो जैसे ही जलता, बुझ जाता था । हवा मे मस्ती थी । वातावरण मे मस्ती थी। मुसाफिर मे मस्ती थी । "मन मस्त हुआ" फिर किसको किससे बोलने की फुरसत हो सकती थी । शायद इसी मस्ती मे रवि ठाकुर ने गाया था—"पागला हवा—बादल दिने, पागोल आमार मन जेगे उठे ।" जब एक सहयात्री ने उस गीत का स्मरण दिलाया, तो विनोबा को "जेगे उठे" बहुत यथार्थ मालूम हुआ ।

● ● ●

ग्राम-संरक्षण की समस्या : २३ :

मेडपल्ली

१६-५-'५१

बहुत देरी से मुकाम पर पहुँच सके, क्योकि तेरह मील का फासला बताया गया था और चौदह मील हो चुका था। छोटा गाँव, फिर भी पुलिस का डेरा है, क्योकि कम्युनिस्टो द्वारा पाँच हत्याएँ की जा चुकी है, अपने ही रिश्ते मे। पटेल की विधवा पुत्री ने पटेल की इच्छा के विरुद्ध एक कम्युनिस्ट के साथ शादी कर ली थी। कम्युनिस्टो ने उस लडकी के जरिये पटेल से पैसे ऐंठना शुरू किया। लडकी की माँग पर पिता भी देने के लिए मजबूर हो जाता। पुलिस को पता चल गया। पुलिस जैसे ही गाँव मे आयी, पटेल घबराया—पैसा देने से इनकार कर दिया। कम्युनिस्टो की नाराजी के लिए इतना काफी था। एक दिन मौका पाकर घर मे घुस गये और पटेल की हत्या कर दी। वरंगल जिले मे मेडपल्ली पहले कम्युनिस्टो का केन्द्र ही था। परतु जब पुलिस आयी, तब से उनकी हलचल यहाँ बहुत कम हो गयी थी। इसी तरह और भी चार घरो मे हत्याएँ हुई थी।

इस देश का स्वभाव

विनोबा ने घर-घर जाकर दु:खी विधवाओ से देर तक बाते की। उनको सात्वना दी, हिम्मत दी। आश्चर्य की बात यह कि पटेल के घर मे वह लडकी मौजूद थी, जिसके कारण उसके पिता की हत्या हुई थी। लडकी को कम्युनिस्टो के प्रति सहानुभूति थी और पिता ने इमदाद देने से इनकार किया, इसमे उसे पिता की भूल नजर आती थी। अपनी दु:खी विधवा माँ के साथ रहते हुए भी उसे पिता के हत्यारों से कोई शिकायत नही

थी। माँ को यह सब मालूम था, फिर भी उसने पुत्री को अपनाया था। उसका कम्युनिस्ट पति जेल मे था, यह तो एक कारण था, परन्तु सबसे बडा और स्वयंभू कारण तो यही था कि वह माता थी और यह पुत्री थी। और, सद्भाव और सहनशीलता इस देश का स्वभाव है, जो अभी कायम है।

लेकिन विनोबा को देखकर वह अपने दिल का जख्म नहीं छिपा सकी। हृदय भर आया। फूट-फूटकर रोने लगी। लडकी किसी तत्ववेत्ता की तरह तटस्थ भाव से सारा देखती रही।

अमेरिकन 'लाइफ ऍण्ड टाइम' का पत्रकार भी यह सब देखकर आश्चर्यचकित हुए बिना नहीं रहा। जैसा कि विनोबाजी कहते है—तेलगाना की समस्या शस्त्रो से नही, विचार-परिवर्तन से ही सुलझ सकती है, इसमे उसे भी सदेह नहीं रहा।

दोपहर को गॉव के कुछ बडे लोगो से बाते हुई। गॉव की परिस्थिति विनोबा देख ही चुके थे। गॉववालो को समझाया

"यहॉ जो हो रहा है, उसकी ओर दुनिया की नजर है, क्योकि यह सवाल अकेले तेलगाना का या हिन्दुस्तान का नहीं है—सारी दुनिया का सवाल है।"

गॉव मे पुलिस का डेरा तो था ही। विनोबाजी ने सवेरे लोगो से पूछा था कि भविष्य मे इस गॉव मे पुलिस रखने न रखने के बारे मे गॉववाले सोचे, ताकि फिर सरकार को वैसी सलाह दी जा सके। पुलिस रहेगी, तो खर्च गॉववालो को बर्दाश्त करना पडेगा, यह बात भी विनोबाजी ने समझायी थी। गॉववालो की राय जानने की इच्छा से उन्होने फिर वह सवाल लोगो से पूछा।

गॉव के एक प्रतिष्ठित भाई ने जवाब दिया "मेरी इन्फरादी राय तो यह है कि पब्लिक की इमदाद से गॉव की रक्षा की जाय और पुलिस को रवाना किया जाय।

विनोबा अर्थात् गॉव की रक्षा की जिम्मेवारी गॉव उठाये। आज तो हालत यह है कि कम्युनिस्ट आते है, खून-खराबियॉ करते है और अडर-ग्राउड हो जाते है। गॉव मे से कुछ लोगो की सहानुभूति रहे बिना तो वे इतनी हिम्मत कर नही सकते। फिर गॉव मे कुछ लोग तो ऐसा कहनेवाले भी होगे कि हमे पुलिस की जरूरत नही है। "जरूरत है" कहनेवाले भी कुछ लोग होगे। लेकिन पुलिस का खर्चा तो सारे गॉव पर पडेगा। वह कुछ लोगो पर ही लागू होगा, कुछ पर नही—ऐसा तो हो नही सकता।

विनोबाजी गॉववालो के साथ प्रकट चितन-सा कर रहे थे, ताकि गॉववालो को भी सोचने की आदत हो। पटेल—पटवारियो से राय पूछने पर पटवारी ने उठकर कहा —पुलिस को रखना होगा, तो खर्चा भी देना होगा। यह खर्चा सरकार ही दे सकती है।

विनोबा : लेकिन सरकार के पास पैसा तो आप लोगो का ही है न? वह दूसरे जिले का पैसा यहॉ क्यो खर्च करेगी? हम सबको मिलकर इस मसले का हल निकालना चाहिए।

फिर लोकमानस का विश्लेषण करके कहा :

"लोगो मे तीन प्रकार होगे। कुछ कम्युनिस्टो को मदद करनेवाले होगे, कुछ काग्रेसवालो को मदद करनेवाले होंगे, कुछ ऐसे होगे, जो दोनो को नही करना चाहेगे। इसलिए हम अब आपसे पूछते है कि आप लोग, जो गॉव के जिम्मेवार लोग है, क्या गाँव की जिम्मेवारी उठा सकते है?"

ग्यारह सौ लोगो की बस्ती थी। विनोबाजी ने सौ पीछे एक के हिसाब से ग्यारह लोगो की एक समिति बनाने की सलाह दी, जो गॉव के सुख-दुःख, शिक्षण-रक्षण, दवाई सफाई आदि की चिन्ता करे। विनोबा ने प्रश्न भी पूछा :

"क्या आज ऐसी चिता कोई करता है, सारे गॉव की?"

"जी नही।"

"जानवर भी एक-दूसरे की चिंता नहीं करते। बताइये, उनके और हमारे जीवन में क्या फर्क हुआ? हम सवेरे गाँव-प्रदक्षिणा करने गये थे। और बाते तो हमने देखी ही, परतु एक बात यह भी देखी कि एक बहन क्षयरोग से बीमार है। पति ने उसको त्याग दिया है। मके में रहती है और सब लोग साधनहीन है। तब उसके बारे में गाँववालो ने कुछ सोचा है?"

"जी नहीं।"

"तब बताइये, इसे गाँव कहा जाय या जगल? और फिर इस जगल मे बसनेवालो को क्या कहा जाय? और उनकी फिक्र कौन करे? हैद्राबादवाले? हैद्राबादवाले तो जगल मे रहनेवाले शेरो के शिकार के लिए कुछ शिकारियो को भेज देगे।—ऐसे शेर यहाँ होगे भी, जो हर किसीसे बराबर लडते रहते होगे?"

इस गभीर वातावरण मे भी, विनोबा के इस प्रश्न ने एक बार तो सबको हँसा दिया। विनोबाजी ने जवाब जानना चाहा, तो एक भाई ने उठकर कहा :

"जी हाँ, है।"

"कितने?"

"करीब दस।"

इस पर एक बार तो पुन सबको हँसी आयी। परतु समस्या को सुलझाना जरूरी था। विनोबा ने समझाया कि हर बात मे बच्चो की तरह सरकार की ओर ताकना उचित नहीं है। गाँव के मसले गाँववालो को तय करना चाहिए।

झगड़े के लिए कम्युनिस्टो की जरूरत नहीं!

ग्यारह सौ मे से छह सौ भूमिहीन थे। इसलिए इस विषय को भी छेडना जरूरी था। विनोबा ने कहा

"जिस गाँव मे इतने बेजमीन हो, उसमे अशाति रहने के लिए कम्यु-

निस्टो की कोई जरूरत नही। वहाँ तो किसी भी निमित्त से झगडा पैदा किया जा सकता है। कभी वह हरिजन और गैर-हरिजन के निमित्त से होगा, कभी और किसी कारण से होगा। लेकिन मै आपसे पूछता हूँ कि अगर हम भूमि को माता मानते है, तो ग्यारह मे से छह लडको को माँ का स्नेह, प्यार नसीब ही न हो, माँ के पास पहुँचने का उन्हे अधिकार ही न हो, केवल पाँच लोगो को ही पूरा अधिकार हो, तो यह कब तक चलते रहना सभव है? इसलिए मेरा कहना है कि अपने भूमिहीन भाइयो के लिए कुछ जमीन दे दो। मै केवल श्रीमानो से ही माँगता हूँ, ऐसा नही है। एक-एक एकडवाले भी दे। मै यह केवल कल्पना की बात नही कर रहा हूँ। मुझे एक-एक एकडवालो ने, कइयो ने दिया है। कोई कवि इन घटनाओ का साक्षी रहा होता, तो उसे स्फूर्ति हो सकती थी एक महा-काव्य लिखने की।"

बोलते-बोलते विनोबाजी गभीर हो गये। गरीबो से मिले दान का नैतिक मूल्य उनकी वाणी की तरह उनकी आँखो मे भी चमक उठा। ❂ ❂ ❂

जटायु बनकर टूट पड़ो : ३४ :

चिरुमावरम्, कान्हापुरम्

१७-१८-५-'५१

मंजिल बारह मील की थी। सवेरे मेंटपल्ली से चले, तो दो मील पर ही गोकेनापल्ली में और उसके आगे नेलकोंडापल्ली में लोगों ने भाव-भीना स्वागत किया। चारों तरफ पहाड़ियों से घिरे इस प्रदेश के साथ उत्तर गोहरण के संस्मरण जुड़े हुए हैं। कोंडापल्ली विराट महाराज का स्थान बताते हैं। यहाँ ६"×१८" की बड़ी-बड़ी ईंटें पायी जाती हैं। गोकेनापल्ली गोकर्ण का अपभ्रंश है, जहाँ से अर्जुन गायों को घुमाकर विराट नगर ले गया। कीचकवध का संबंध भी इस भूमि से लोग लगाते हैं। इस छोटे से गाँव में एक सौ भूमिहीन हैं और पचास एकड़ से अधिक भूमि रखनेवाले भी तीन ही लोग हैं। बाकी जो हैं, वे कमवाले हैं। गरीब लोग अधिक हैं। फिर भी दरिद्रनारायण के प्रतिनिधि की माँग पर भूदान के लिए लोगों ने जमीन दी।

ता० १८ को पड़ाव कान्हापुरम् में था। मंजिल दस मील की थी, परंतु रास्ते भर स्वागत समारोह और भजनानंद के कारण पता नहीं चला कि किधर रास्ता निकल गया।

राजनीति और रामनाम

इतना जुल्म कम्युनिस्टों द्वारा हुआ है, लोगों में भय इतना छा गया है, फिर भी लोगों की भक्ति-भावना में कमी नहीं हुई, बल्कि उभार-सा आ गया है। शायद यही इनकी प्रकृति का सही दर्शन है। भूमि दान की प्रेरणा में यह भक्ति-भावना स्रोत का काम कर रही हो, तो आश्चर्य नहीं। जब से तेलंगाना की यात्रा शुरू हुई, प्रवचन समाप्त होने पर विनोबाजी रोज

बराबर कुछ समय के लिए भजन सुनते रहते है। कोई गॉव अब तक ऐसा नही पाया, जहॉ इसका अभाव महसूस हुआ हो या अपवाद करना पडा हो। गॉववाले बडे प्रेम से इसमे हिस्सा लेते है। किंतु सार्वजनिक कार्यकर्ता, खासकर राजनैतिक कार्यकर्ता इस सम्बन्ध मे उदासीन रहते है। उनकी इस नित्य की उदासीनता को देखकर विनोबाजी ने उनके मुखिया को ललकारकर कहा :

"ऐ राजनीतिवालो, अरे रामनाम से सबध रखो, नही तो तुम्हारी सस्था खतम हो जायगी।"

इधर रामनाम का महत्त्व विनोबा समझा रहे थे कि उधर 'राम भजे' से वातावरण गूँज उठा। दीपार्ति, कलश, श्रीफल से कान्हापुर-निवासियो ने मुदमगलमय स्वागत किया। पचास घरो का गॉव, हर घर, हर रास्ता, हर मकान, ऑगन, देहलियॉ, दीवारे सारा इतना मनोहर सजा था कि मानो किसी मदिर से होकर गुजर रहे हो। इन्च-इन्च जमीन ने कलाकार के कर का परस पाया था। उस गॉव को निहारकर विनोबाजी को अपने गॉव गागोदा की याद हो आयी। कहने लगे : "मेरे जन्म के समय गागोदा की खानाशुमारी भी पचास ही घर की थी।" इतने थोडे समय मे यहॉ के लोगो के साथ विनोबाजी को पारिवारिकता का ऐसा अनुभव हुआ कि अपनी दिनभर की दिनचर्या उन्हे बताकर फिर दूसरे रोज सवेरे की प्रार्थना आदि का भी जिक्र किया। इतना ही नही, उन्हे सवेरे की प्रार्थना मे आने का निमत्रण भी दिया। अक्सर वे ऐसा करते नही।

लड़की की वीरता

जिस पटेल के यहॉ विनोबाजी ठहरे थे, उसकी राम-कहानी भी बडी दर्दनाक थी। पटेल गाधीनिष्ठ मनुष्य है। कम्युनिस्टो ने उसका घर काफी जला दिया था, जिसके चिह्न दुरुस्ती के बाद भी अब तक दिखाई दे रहे थे। जब कम्युनिस्ट घर मे घुसे, तब पटेल घर मे नही था। केवल उसकी लडकी और उसकी ३ वर्ष की दुधमुँही बच्ची थी। उसने बडे धीरज और

कुशलता से काम लिया। उसने हिम्मत से आगन्तुकों से बातें कीं। पिता की अनुपस्थिति का जिक्र किया। ऐसे कामों से बाज आने को कहा। किसी तरह वह बच गयी। गाँववाले तो भयभीत होकर पुलिस को इत्तला देने दौड़े। इधर कम्युनिस्ट घर का धान, मूँगफली, और घास आदि जलाने लगे, पर जब लौटने लगे तो खेत में पटेल को पाकर उसे रोका और पैसे की माँग की। पार्टी में शामिल होने को कहा। इनकार करने पर उसे इतना पीटा कि सर और पाँव में गहरी जख्में हुईं। वह कैसे बचा, इसीका आश्चर्य। सामनेवाले के हाथ की स्टेन-गन पटेल ने छीन ली और एक फर्लांग फेंक दी। कम्युनिस्ट अपनी बंदूक लेने दौड़ा, पटेल दूसरी तरफ भाग निकला। कम्युनिस्टों ने पीछा किया, तो पटेल एक मकान में जा छिपा। कम्युनिस्टों को उस मकान की ओर आते देख पटेल एक कुएँ में जा गिरा। बहुत खोजने पर भी कम्युनिस्टों ने उसे कहीं नहीं पाया। तब शिकार छोड़कर उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ा।

इधर पुलिस और मिलिटरी ने कम्युनिस्टों का पीछा किया, परंतु तब तक तो वे फरार हो चुके थे। जब कुएँ में से पटेल ने आवाज दी, तो मिलिटरीवालों ने उसे बाहर निकाला।

इस तरह दस माह तक सतत यहाँ पुलिस का डेरा जमा हुआ था।

स्वयं अधिकारियों ने भी बताया कि पुलिस इधर अधिक संख्या में है, जिसकी आवश्यकता नहीं। लोगों की सहानुभूति अधिकाधिक कैसे प्राप्त हो, इसीकी चिन्ता अधिकारियों के दिलों में थी। लोगों में खेती-कानून के सुधार की माँग प्रतीत हो रही थी, क्योंकि जमीन के मामले में जनता जाग्रत नजर आ रही थी। सरकार की ओर से भी लगानदारी शासन, टेनेन्सी एक्ट को शीघ्र लागू करने के लिए चंद-रोजा रजिस्टर तैयार किये जा रहे थे, जिनके जून तक मुकम्मिल होने की उम्मीद थी। परंतु उसके जरिये भूमिहीनों की समस्या कैसे सुलझेगी?

ऐसे समय भूदान का कार्यक्रम एक अनोखी जाग्रति और आशा की किरण लेकर यहाँ पहुँचा है, ऐसी अधिकारियो की राय थी ।

इस छोटे-से गाँव मे काफी शिक्षित नवयुवक पाये गये । उनमे भावना है, पर उन्हे उचित मार्ग-दर्शन मिलना चाहिए । विनोबाजी ने उन लोगो से आत्मीयता से बाते की । बातचीत से यह भी मालूम हुआ कि मधिरा के यगलराव, गोलपाडू के कृष्णा रेड्डी और कान्टापुर के रगराव आदि कुछ लोग बिना कारण ही जेल मे बद है । इधर परिवारवाले कष्ट पा रहे है । उपस्थित अधिकारियो ने भी इस शिकायत की सत्यता को स्वीकार किया ।

इन सबके बारे मे ऊपर लिखकर उन्हे यथासभव तुरत रिहा कराने की जिम्मेवारी विनोबा ने अधिकारियो पर सौपी । हर रोज की तरह आज भी विनोबाजी की अदालत का काम चला, जिसे जिले के इन बडे-बडे अधिकारियो ने भी गौर से निहारा । स्थानीय झगडे तो आसानी से तय हुए ही, लेकिन आसपास के गाँवो के भी कुछ मामले तय हुए, क्योंकि सबधित दोनो फरीक हाजिर थे । इतने मे प्रार्थना की वेला हुई और कोर्ट समाप्त हुआ ।

जीते जी बुरा काम नही करने दूँगा

प्रार्थना प्रवचन मे विनोबा ने पूछा : "जब पटेल के घर मे कम्युनिस्टो ने आग लगायी, तब गाँववाले क्या कर रहे थे ? या तो वे दरवाजा बद करके बैठे थे, या उन्हे सन्तोष हो रहा था कि घर जल रहा है, तो अच्छा है ।" फिर लोगो की भयभीत मनोवृत्ति के बारे मे कहा : "हम लोग कैसे डरपोक बन गये है ? कितने निष्क्रिय हो गये है ? किसीके ऊपर जुल्म हो रहा हो, तो हम केवल देखते रहते है । उसकी मदद के लिए नही जाते । डरते है कि कही हम पर ही न बीते । खतरा उठाने की वृत्ति नही है । यह कोई निवृत्ति या ज्ञान का लक्षण नही है । यह तो आलस्य और कायरता है । लोग कहते है कि "हमारे हाथ मे शस्त्र नही है । सामनेवाला शस्त्र

लेकर आये, तो हम क्या कर सकते हैं?' क्यों नहीं कर सकते हैं? हम पिस्तौलवाले का हाथ पकड़कर उसे उसकी भूल समझा सकते हैं और इतने पर वह हमें मारेगा, तो आनंद के साथ भगवान् का नाम लेकर मर सकते हैं।

विनोबाजी ने जटायु की मिसाल देकर कहा : "रावण कितना बलवान् था! जटायु जानता था कि मैं रावण के हाथ से सीता को मुक्त नहीं कर सकूँगा, लेकिन उसने राम का काम करते-करते मरना पसंद किया। उसने कहा, मेरे जीवन में इससे बेहतर और क्या अवसर आ सकता है? वह जानता था कि रावण उसे मार डालेगा, फिर भी वह उस पर टूट पड़ा। कहने लगा, अपने जीते जी तुझे बुरा काम नहीं करने दूँगा।

● ● ●

दानं समविभागः   : ३५ :

कोदनूर

१६-५-'५१

कान्हापुर के लोग सवेरे प्रार्थना मे तो शरीक हुए ही, काफी दूर तक पहुँचाने भी आये। और भी आना ही चाहते थे ,किंतु विनोबा ने रोका और प्रेमपूर्वक सबको विदा किया। लोगो के हृदय भर आये। जिसके घर मे ठहरे थे, उस पटेल का कदम लौटने के लिए उठता नही था। उसने अगले पडाव तक चलने की आज्ञा मॉगी। पडाव तक बाबा को पहुँचाकर पुनः-पुनः भक्तिभावपूर्ण प्रणाम करके भीगी ऑखो विदा ली। सहयात्रियों से भी प्रेमपूर्वक मिले। उसे ऐसा ही लग रहा था कि परिवार से बिछुड रहा हूँ। कान्हापुर ग्राम और वहॉ के ग्रामवासी, दोनो की चिरस्मृति हम सबके अंतःकरण मे अमिट रह गयी।

दुःखदायक कहानी

कोदनूर एकसौ अस्सी घरो का गॉव है। करीब २४०० एकड भूमि है। गॉव मे एक पिता-पुत्र की निर्मम हत्या हुई है। विनोबाजी उसी घर मे ठहरे है। पडोस के अनतवरम् मे भी एक पटवारी मारा गया है। ६ मील पर एक सब-इन्स्पेक्टर का भी खून हुआ है। पुलिस और भय, दोनो के खेमे तने हुए है।

ग्राम-प्रदक्षिणा मे विनोबाजी ने देखा कि हरिजनो के मकान बहुत ही छोटे-छोटे है। बहुत दुःख हुआ। उनके मकानो के लिए आवश्यक जमीन का प्रबध दोपहर को ग्राम के प्रमुख व्यक्तियों की सभा मे ही हो गया। उसी सभा मे थोडी जमीन एक दाता ने अपनी इच्छा से विद्यालय के लिए भी दी। भू-दान-यज्ञ मे भूमि छोटे-छोटे लोगो ने ही विशेष दी।

गाँववाले काफी सख्या मे मिलने आये। विनोबा ने समय भी उन्हें पर्याप्त दिया। बोले, "आपके इस जिले को रावण के जिले की प्रख्याति है। जिधर जाओ उधर सुनते हैं यहाँ एक खून हुआ, वहाँ दो खून हुए। और फिर बदोबस्त के लिए सरकार को पुलिस भेजनी पडती है। सारे हिन्दुस्तान की पुलिस इस समय तेलगाना मे आयी हुई है। मद्रास, पजाब, उत्तर-प्रदेश, सब जगह का पुलिस-विभाग यहाँ पहुँच गया है।"

कुछ देर रुककर, उन लोगो की मुद्राओं की ओर कुछ गभीर निगाह डालकर विनोबा ने पूछा :

"तो, यह जो आप लोगों के यहाँ हो रहा है, उसका क्या यही उपाय है कि पुलिस को यहाँ अखड काल के लिए रखा जाय? हम तो इस उद्देश्य से आये है कि शाति का कोई उपाय ढूँढा जाय।"

फिर नल्गुडा जिले के एक मास के प्रवास के कुछ अनुभव बताये। रामायण, महाभारत से अनेक दृष्टांत देकर समझाया : "भाइयो, आप जानते है कि कौरव पाडवों मे आपसी झगडों के कारण अनेक अक्षौहिणी सैन्य नष्ट हुआ और आखिर मे पाडवों के पक्ष में सात और कौरवो के पक्ष तीन, ऐसे कुल सिर्फ दस लोग शेष रहे। और फिर भगवान् कृष्ण ने जब अपने घर जाकर शाति से रहना चाहा, तो वहाँ भी यादवो मे झगडा हुआ। कृष्ण ने उन यादवों को बहुत समझाया, परन्तु यादव भी तेलगाना-निवासियों की तरह थे—ताडी-शराब खूब पीते थे। नही माने। अन्त मे सारे के सारे बर्बाद हुए।"

विनोबा का हृदय भर आया। शायद सोचते थे—तेलगानावासी अगर न सँभले, तो न जाने उनका भी क्या हाल होगा!

थोडी देर बाद पुनः बोले . "भाइयो, आप लोगो मे भी ऐसी ही आपसी लडाइयाँ चल रही है। लोग हमे कहते है कि गरीबो के पास जमीने नही है, इसलिए झगडे होते है। यह सही है, परन्तु यह भी सही है कि झगडे होते रहेंगे, तो गरीबो के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। यहाँ

पुलिस आकर बसेगी और कायम के लिए बसेगी। ऐसी दुःखदायक कहानी आप लोगों की है।"

द्वेषभाव ऐसे मिटेगा

फिर बोले : "ऐसे जब हम इस तेलगाना में आये, तो हमें सूझता नहीं था कि क्या करेंगे। लेकिन हमने सोचा कि घूमेंगे तो रास्ता मिलेगा, भगवान् दिखायेगा। पोचमपल्ली में भगवान् ने रास्ता दिखा दिया। भाइयो, प्रेम से जमीन थोडी भी मिलती है, तो गरीबों को संतोष होता है। फिर कम्युनिस्टों का काम वहाँ नहीं रहता।

"आपके गाँव में ७७४ लोग है। फी आदमी औसत तीन एकड जमीन आती है, जब कि दूसरे गाँवों में एक एकड का प्रमाण भी मुश्किल से पडता है। और ऐसा होते हुए यहाँ के १८६ घरों में से ६८ घरों में जमीन नहीं है। तब बताइये, यहाँ शांति कैसे रहेगी? और अगर लोगों ने दान दिया, तो अशांति क्यों रहेगी?"

फिर कम्युनिस्टों के बारे में कहा :

"मैं तो उनसे भी हैद्राबाद में तथा नलगुडा में मिला। अगर उनके लोग यात्रा में मुझसे आकर मिलें, तो मैं मिलने को तैयार हूँ। मैं चाहता हूँ कि मेरी आवाज उनके पास पहुँचे। मैंने उन्हें जेल में समझाया है कि केवल इस हैद्राबाद में ही आपकी पार्टी गैरकानूनी है। क्यों खून-खराबी में पडे हो? हिंसा त्यागो। औरों की तरह तुम भी चुनावों में हिस्सा ले सकोगे।

"अगर आप लोगों को दान करने की और कम्युनिस्टों को हिंसा छोडने की बुद्धि हुई, तो इस देश में शांति कायम हो सकेगी। कम्युनिस्ट आपका द्वेष करते है, परंतु आपके जीवन में प्रेमभाव प्रकट हुआ, तो उनका द्वेष-भाव टिकेगा नहीं।"

लोगों ने कुल दस एकड दान दिया। दान बहुत कम था। परंतु प्रेम से दिया, तो विनोबा ने मंजूर कर लिया।

गरीब के घर मे भी परमेश्वर आता है

प्रवचन के प्रारम्भ मे कान्हापुरवासियो का प्रेम, यहॉ के हरिजनो की स्थिति, उनके मकानों के लिए मिली जमीन, विद्यालय की जमीन, सबका जिक्र करके फिर अपने मिशन की अब तक की पार्श्वभूमि बताकर कहा "भाइयो, यह जो मै दान मॉग रहा हूॅ और आप देते चले जा रहे है, तो यह कोई उपकार नही किया जा रहा है। शास्त्रकारो ने दान की अच्छी व्याख्या बतायी है। उन्होंने कहा है "**दान समविभाग**" अर्थात् अपने पास जो चीज है, उसे दूसरो को देने की बात इसमे है। समान विभाजन की बात है, न कि उपकार की। माता-पिता जमीन कमाते है, फिर भी अपने बच्चो को हिस्सा देते है। मै पूछता हूॅ, जमीन लडके ने तो नही कमायी, फिर देते क्यो है? तो कहते है कि 'हमारा लडका है।' तो मै पूछता हूॅ कि क्या लडके माता-पिता के होते है? अगर वे मॉ-बाप के होते, तो उनके मन के मुताबिक वे तैयार होते। माता-पिता तो यह भी नही जानते कि लडका होनेवाला है या लडकी। वे यह भी नही जानते कि उसकी शक्ल कैसी होगी। वे यह भी नही जानते कि उसके विचार क्या होगे, वह हमे अनुकूल होगा या प्रतिकूल। अर्थात् जो बच्चे होते है, उन पर माता-पिता का कोई हक नहीं होता, परमेश्वर का हक होता है। तो अगर आपके घर मे परमेश्वर आता है, तो आप उसको भूमि देते है, उसी तरह गरीब के घर मे वही परमेश्वर आता है। इसलिए होना यह चाहिए कि जितने लडके-बच्चे है, वह सारे परमेश्वर के है और उनकी चिता सारा गॉव करता है। तो आपके पास जितनी भूमि होती है, उसके समान हिस्से करके अपने हरएक बच्चे को आप देते हो, वैसे ही कुछ हिस्सा गरीबो को भी देना चाहिए। और यह समझना चाहिए कि जैसे घर के बच्चों का जमीन पर हक है, वैसा गरीबो का भी उस जमीन पर हक है।"

फकीरी और प्रेम-कानून

कानून के बारे मे कहा: "मेरे हाथ मे कानून दो, तो मै फौरन

आपको फकीर बना दूँगा और जहाँ मैने आपको फकीर बनाया, कि आप देखेंगे कि सबको सुख ही सुख मिलता है।

वत्सलता का सुख

"जैसे माता-पिता अपने लडके की चिंता करते हैं, वैसे गरीबों की चिता करनी है। जिस तरह माता के स्तन का पान करने के लिए बच्चों का मुँह स्तन को छूता है, तो माता को आनद होता है, उसी तरह कोई जमीन माँगने को आयेगा, तब ऐसा आनद होना चाहिए।

"जैसे गाय का दूध लेनेवाला उसके पाँव बाँधकर दूध लेता है, वैसा हमको नही लेना है। लेकिन, जैसे गाय का बछडा हक के साथ उसका दूध लेता है और गाय भी दिल खोलकर देती है, वैसा मुझे आपसे लेना है। आप देखते है कि आपने मुझे ज्यादा दान नही दिया है, लेकिन जितना दिया है, उससे हवा बदल गयी है। इस तरह उदारता से दिल खोलकर देते चलो, तो आप देखेंगे कि हवा मे क्या फर्क होता है।'

"मुझे मालूम नही था कि कम्युनिस्टो की समस्या का हल इतना आसान होगा। लेकिन यहाँ आने पर ध्यान मे आ गया कि यह समस्या आसान है। आप उदार दिल से दान देने लगेंगे, तो कम्युनिस्ट वैसे ही खतम हो जायेंगे। मै जानता हूँ कि कम्युनिस्टो के नेता विचारवान् है। वे समझ गये है कि इस तरह खून-खराबी से काम नही चलेगा। लेकिन उसके साथ-साथ उदार दिल से गरीबों को अपनाने लगोगे, तो काम ठीक होगा। आज यहाँ दस एकड दान मिला है। मै आशा करता हूँ कि सोने के समय तक और भी मिलेगा।"

प्रार्थना के बाद थोडी देर भजनानद चला। और जैसे ही भजन खतम हुआ, एक भाई ने उठकर कहा : 'सरकार, मेरे दो एकड दान मे लिख लिये जायँ।'

● ● ●

आपके घर एक लड़का और पैदा हो गया : ३६ :

वैरा

२०-५-'५१

ये हत्याएँ

वैरा नदी के किनारे वसा हुआ यह छोटा-सा गाँव, नदी के बाँध और रेलवे की सुविधा के कारण काफी महत्त्व का है। लेकिन यहाँ पहुँचते ही इर्द-गिर्द मे कम्युनिस्टों द्वारा हुई हत्याओ की शिकायते आने लगी। एक मील पर रेड्डीगुडा मे चिरगुर वेकटरामय्या को मार डाला गया था। लक्ष्मी नरसिहम् को मारने की कोशिश की गयी थी।

गाँव कुछ वडा होने से इर्द-गिर्द से काफी लोग वडे सवेरे से ही जमा हो गये थे। सवेरे की सभा भी आज काफी महत्त्व की हुई। डेढ घटे तक विनोबाजी वोलते रहे। दोपहर मे भूमिवानो की सभा में भी एक घटा वोले। फिर शाम को भी विस्तार से समझाया। और फिर रात मे सोने के समय तक लोग आते ही रहे और विनोबा भी उनसे बाते करते ही रहे।

आपसी झगड़ो का भूदान पर असर

नलगुडा मे कार्यकर्ताओं मे दो ही वर्ग दीखे। एक कम्युनिस्टों का, जो गुप्त था और एक काग्रेसवाला का, जो इस काम मे सहयोग दिये जा रहा था। इधर वरगल मे कम्युनिस्टो का सघटन तो व्यवस्थित दिखाई दिया। लेकिन काग्रेसवाले खूब उदासीन मालूम हुए। उनके आपसी झगडो के कारण वे यात्रा मे भी ठीक सहयोग दे नही पाये।

एक भाई ने विनोबाजी से पूछ भी लिया कि "चूँकि इस जिले मे काग्रेस का काम ठीक नही चल रहा है और आपसी झगडे चलते रहते है, भूदान के काम पर भी उसका असर पडता है।"

विनोबाजी ने कहा : "आपका कहना ठीक है। हमारे काम पर यहाँ के आपसी झगडो का असर पड रहा है, यह हम देख रहे है। परतु हम साफ कर देना चाहते है कि हमने अपने काम का जो तरीका अख्तियार किया है, उसके कारण वह काम किसी एक सस्था से खास सबध रखता है, ऐसी बात नही है। वह न तो काग्रेस से सबध रखता है, न अन्य किसी राजनैतिक दल से। परतु इसमे शक नही कि यहाँ जो कुछ काम होगा, उसका असर सारे देश के वातावरण पर होगा, क्योकि कम्युनिस्ट पार्टी तो देशभर मे है। और इसलिए अगर हम प्रेम से यह जमीन का मसला हल नही करते है, तो देश के लिए एक खतरे की बात होगी, यह समझ लेना चाहिए। क्योंकि ऐसे खतरो के लिए इस देश मे इस समय वातावरण अधिक अनुकूल है।"

समानता की कल्पना

दूसरे एक भाई ने पूछा . "क्या गाधीजी होते, तो वे इस मसले को ऐसा ही हल करते ? आप तो सबको समान ही बनाना चाहते है। क्या गाधीजी इसे पसद करते ?"

"गाधीजी इस मसले को कैसे हल करते, मै नही कह सकता" विनोबा ने अत्यत नम्रभाव से उत्तर दिया, "हरएक मनुष्य का सोचने का तरीका जुदा हो सकता है। उसका अनुभव भी जुदा होता है। इसलिए किसी दूसरे के अनुभव के बारे मे हम चर्चा नही कर सकते और न चर्चा करने से कोई लाभ ही होता है। अब रहा प्रश्न समानता का। तो हमारा प्रयत्न सबको समान बनाने का तो नही हो रहा है। सामान्य दया का प्रश्न मैने आप लोगो के सामने रखा है। मुख्य प्रश्न है, सबको थोडी-थोडी भूमि देने का। इससे कुछ विषमता तो दूर होगी ही। परतु जो समानता आयेगी, वह पॉच अगुलियो के समान होगी। ऐसी समानता आने की आज जरूरत भी है।"

यह तो मैंने यज्ञ शुरू कर दिया है

प्रश्न . "आपके प्रयत्नो से अभी तेलगाना मे शाति होती दीखती है। आपके आने के बाद भी वह टिककर रह सकेगी, ऐसा आप मानते हैं?"

उत्तर • "अगर आप सब कोशिश करे, तो क्यो नहीं टिकी रहेगी? रहनी चाहिए--रह सकती है। परतु यह नहीं हो सकता कि आसपास लोग भूखे हो, दु खी हो और हम सुख से खाते रहे, सुख से जिंदगी बसर करते रहे। इसलिए मैने यह जमीन माँगना शुरू किया है। लेकिन लोगो का खयाल है कि मुझे सिर्फ श्रीमानो से लेना चाहिए। मेरा विचार ऐसा नहीं है। यह तो मैंने एक यज्ञ शुरू किया है। इसलिए जमीन ज्यादा मिलनी चाहिए, इस बात का उतना महत्त्व नहीं है, जितना ज्यादह लोगों से मिलने का महत्त्व है। अब तक मुझे ३५०० एकड से अधिक जमीन मिली है, परतु कुल करीब तीन सौ लोगो से ही मिली है। बहुत सभव है, कोई एक बडा जमीदार मुझे बहुत ज्यादह जमीन दे दे। परतु हरएक मनुष्य से लेने मे जो आनद है, वह सिर्फ एक ही आदमी से लेने मे नहीं है। गोवर्धन पर्वत उठाने मे छोटे-बडे, सबने हाथ लगाया, तो फिर भगवान् ने भी अपनी अगुली लगा दी और पर्वत खडा हो गया।

शबरी के बेर

"मै तो यहाँ की हवा बदल देना चाहता हूँ। मै यहाँ आया, तो कार्यकर्ताओ ने कहा कि यहाँ तो कोई बडे जमीदार है नहीं। पचास-पचास एकडवाले है। लेकिन मै तो भाई का हक माँगता हूँ। आप अगर पाँच है, तो मुझे छठा मानकर दीजिये। छह हो, तो सातवाँ दीजिये। सात हो, तो आठवाँ दीजिये। नलगुडा मे हमारे साथ के एक भाई ने हमे अपनी जमीन का चौथा हिस्सा दिया। तो फिर औरों ने भी दिया। परन्तु एक भाई के पास केवल चार गुठे ही थे। उसने भी एक गुठा दिया। क्या उसका दान कम महत्त्व का है? शबरी के पास बेरो के

सिवा क्या था ? वह एक गुठा जमीन शबरी के बेर से कम महत्त्व नही रखती।

"इस तरह अगर सारे लोग यज्ञ मे हिस्सा लेते है, तो देखते-देखते हवा बदलती है और मसला हल होता है। इतना ही नही, देश के कितने ही निर्माण-काम हमे करने हैं। उन सबके लिए वातावरण तैयार हो जाता है।"

प्रधानमत्री का पत्र

प्रार्थना के बाद विनोबाजी नदी के किनारे टहलने के इरादे से निकले। तो हैदराबाद-सरकार के प्रचार और प्रकाशन-विभाग के प्रमुख श्री विनोदराव मिलने आये। भक्तिभाव से प्रणाम किया और एक मुहर-बंद लिफाफा देकर बोले "पडितजी की तरफ से आया है।"

घूमने निकल ही चुके थे। रास्ते मे ही लिफाफा खोलकर पढ लिया। इधर तेलगाना मे जो कुछ काम हुआ, उसकी जो जानकारी उन्हे मिली थी, उससे वे बहुत प्रभावित थे। विनोबा के स्वास्थ्य के बारे मे भी पत्र में चिता प्रकट की थी। पत्र पढने पर विनोबा बोले · "इतने काम मे रहकर भी कितनी फिक्र रखते है।" परतु उन्हे यहाँ की सब खबरे मिलती कहाँ से है ? अखबारो मे तो विशेष कुछ आता नहीं है। नही आता है, यही अच्छा है। कुछ काम होने पर लोगो को उसकी जानकारी मिल ही जाती है। काम ही न हो और खबरे छपती रहे, यह अच्छा नहीं है।

लौटकर आये, तो अँधेरा हो चुका था। विनोबाजी ने बाहर तकिये के सहारे श्री विनोदराव से कुछ देर बाते की। रास्ते मे भी बाते हुई थी। विनोदराव चाहते थे कि यदि विनोबाजी जवाब लिख दें, तो वे अपने साथ ही ले जायेगे। विनोबा ने बाद मे जवाब भेजने की बात कहकर विनोदराव को विदा किया।

आपके घर का छठा लड़का !

इतने मे दो-तीन भाई विनोबा से मिलने आये। "आपने सुबह चर्चा

में गरीबो से भी जमीन मॉगने की बात कही। यह कैसे सभव है ? गरीब लोगों को तो अपने परिवार का पोषण करना ही मुश्किल होता है। उन्हें तो आपकी ओर से ही और मिलना चाहिए।"

"आपके कितने लडके हैं ?"

"आठ लडके है।"

"जमीन कितनी है ?"

"पाँच एकड है।"

"आपकी उम्र क्या है ?"

"करीब पचास।"

"क्या आपको उम्मीद है कि अब भी कोई सतान आपके घर मे आ सकती है ?"

"(कुछ सकोच से) यह कौन कह सकता है ? परतु भगवान् की कृपा हुई, तो असभव क्या है ?"

"मान लीजिये कि इस उम्र मे भी आपके घर मे और एक लडका आ गया, तो उसे भी आपके पॉच एकड मे से अपना हक मिलेगा या नहीं ?"

"जी, क्यों नहीं मिलेगा ?"

"तब आप देरी क्यो कर रहे है ? समझ लीजिये कि मै आपके घर मे नौवॉ लडका पैदा हो चुका हूँ। फिर मुझे लडके का हिस्सा दीजियेगा या नही ?"

सुननेवाले की ऑखों मे ऑसू चमक गये। उसने अत्यत भक्तिभाव से विनोबा को प्रणाम किया और पॉच एकड में से नौवें हिस्से का दान-पत्र प्रसन्न मन से भर दिया। ● ● ●

क्रांति की कीमिया

: ३७ :

तन्निकल्ला
२१-५-'५१

अत्यत छोटा-सा गॉव, यात्रियो के लिए बनी एक छोटी सी छपरी मे निवास। सामने घनी अमराई। सवेरे तीन-चार घटे तक, लिखने-पढने के लिए, बाबा ने यह आम की छाया ही पसद की।

पडितजी को पत्र लिखा, जिसमे उनके प्रेमपूर्ण पत्र के लिए धन्यवाद मानते हुए अपनी श्रद्धा को दोहराया कि "अहिसक मार्ग से सभी सामाजिक तथा आर्थिक मसलो का हल निकल सकता है। लेकिन उसके लिए हृदय-शुद्धि की आवश्यकता है। ऐसी हृदय-शुद्धि हम कहाँ से लायें, यही सवाल है। लेकिन अगर उसीके लिए हम कोशिश करते रहेगे, तो वह जरूर कभी-न-कभी हासिल होगी, ऐसा विश्वास रख सकते हैं।"

गॉव की प्रदक्षिणा हुई, तो मालूम हुआ कि यहॉ भी हत्याकाड हुआ है। लोग बहुत गरीब है। कुछ के पास जमीने है, पर वे भय के कारण बाहर चले गये है और आज जब लौटने का अवसर था, अभागे लौट भी नही पाये है।

जाहिर है कि तेलगाना मे भूदान के कारण जो दर्शन हो रहा था, उसने विनोबाजी की इस मूलभूत श्रद्धा को बलवती कर दिया था।

इतने मे अखबार आये। दिनाक १६ मई, १९५१ को ससद् मे भारतीय सविधान-सशोधन-विधेयक उपस्थित करते हुए और उसे प्रवर-समिति को सुपुर्द करने का प्रस्ताव करते हुए प्रधान-मन्त्री ने जो भाषण किया, उसमे तेलगाना मे चल रही विनोबाजी की पद-यात्रा का भी जिक्र किया। उन्होने कहा :

"तेलगाना मे आज क्या हो रहा है, मै सदन को बतलाना चाहता हूँ। आज वहाँ की परिस्थिति का सामना बिलकुल ही भिन्न और नये तरीके से किया जा रहा है। यह तरीका शान्ति और अहिंसा का है। हम देख रहे है कि उस उपद्रवग्रस्त क्षेत्र मे अपनी दुर्बल काया लिये विनोबा भावे निश्चिन्ततापूर्वक परिभ्रमण कर रहे है और अपनी वाणी और कार्यों के द्वारा अत्यन्त व्यापक प्रभाव उत्पन्न कर रहे है। वे जो कुछ कर रहे है और उसका जो कुछ परिणाम हो रहा है, वह इतना अधिक है कि कदाचित् ही किसी सबल और सशस्त्र सैन्य द्वारा सभव होता। यदि आज भी वह इतना प्रभावपूर्ण है, तो उसके आधार पर हम इस बात की परिकल्पना तो कर ही सकते है कि भविष्य मे इसका प्रभाव अनिवार्यत बहुत अधिक पडेगा। यह स्पष्ट है कि सैन्य-शक्ति का प्रभाव वर्तमान काल के लिए भले ही उपयुक्त हो, किन्तु अन्ततोगत्वा वह इतना प्रभावी सिद्ध न हो, इतनी ही अपनी कटु स्मृतियाँ भी पीछे छोड जाय।"

पडितजी के निवेदन के बाद रिपोर्ट मे लिखा है कि विधान-सभा मे बहुत देर तक तालियाँ पिटती रहीं।

बयान सभी सहयात्रियो को बहुत ही अच्छा लगा। सभव है, पत्र लिखने के बाद पण्डितजी को तुरन्त पार्लियामेण्ट मे भी बोलने की प्रेरणा हुई हो। सहयात्री विनोबा की प्रतिक्रिया जानने को उत्सुक थे। "भगवान् का काम है, तो उसके प्रचार की चिता भी वही करता है" इतना कहकर विनोबा शाकर-भाष्य पढने मे तल्लीन हो गये।

यज्ञ-प्रक्रिया

इजलास का काम दोपहर से प्रार्थना के समय तक चलता रहा। जितनी शिकायते आयी थीं, उन सबके फैसले देकर विनोबा सीधे प्रार्थना-स्थल पर पहुँचे। अमराई मे हजारो स्त्री-पुरुष जमा हो गये थे। कल विनोबाजी ने चर्चा मे कहा ही था कि मैने यह एक यज्ञ शुरू किया है। इसके पहले भी एक बार उन्होने 'यज्ञ' मे सबको भूदान देने का आवाहन किया था। उसी यज्ञ-

प्रक्रिया का उन्होने आज विस्तार से विवेचन किया। बोले : "जब जब अशाति पैदा होती है, हमारे बुद्धिमान् लोग यज्ञ शुरू करते है। तो, मैने इस मुल्क मे प्रवेश किया और यहाँ की अशाति देखी, तो सोचा कि मुझे भी यहाँ यज्ञ शुरू कर देना चाहिए और यहाँ के खून, मार-पीट और झगडो के लिए शाति-यज्ञ के सिवा क्या उपाय हो सकता था ?"

फिर यज्ञ के स्वरूप की चर्चा करते हुए कहा "मुझे पहले सूझता नही था कि कौन-सा यज्ञ शुरू किया जाय।...पशु-बलि यज्ञ से तो मनुष्य को कोई लाभ नहीं था। लेकिन काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि पशुओं की बलि से लाभ हो सकता था। वे ही पशु है, जिनका राज्य हमारे मन पर चलता है। मेरे ध्यान मे आया कि इस जमाने मे द्रव्य-लोभरूपी पशु से जो तकलीफ हो रही है, वह शेरो से भी ज्यादा है। लोभरूपी पशु से हर जगह तकलीफ हो रही है। इसलिए मैने भूदान माँगना शुरू किया है। लोगो ने लोभरूपी पशु का पूरा बलिदान तो किया नही है, परतु थोडा-थोडा भूमिदान देना शुरू किया है।"

फिर विनोबा ने समझाया कि "जैसे किसी महायज्ञ मे सबको हिस्सा लेना होता है, भूमिदान-यज्ञ मे भी सबकी ओर से आहुति अपेक्षित है, जिससे सबकी चित्त-शुद्धि हो।" लेकिन "जिनके पास भूमि नहीं, वे इस यज्ञ मे कैसे हिस्सा ले सकते है ? यह बात सही है कि वे भूमिदान नही दे सकते। वे तो भूमि पानेवाले है। उनको जब भूमि दी जायगी, तो उस पर वे अच्छी तरह मेहनत करेंगे। देश की पैदावार बढायेंगे। उनका यही यज्ञ कहा जायगा।"

सवेरे एक कांग्रेसी मित्र ने कहा : "विनोबाजी, आप भूदान मे हृदय-परिवर्तन की शक्ति की बात करते है। परंतु हमे महसूस नही होता कि उसमे ऐसी कोई शक्ति मौजूद है।"

क्राति की कीमिया

अपने प्रवचन मे इसका जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा : "उस

भाई का वह सवाल सुनकर ही मै समझ गया कि उनकी आँखे बंद हो गयी है। वे देखते नहीं कि यह तो हृदय-परिवर्तन का काम चल रहा है। अगर किसीका हृदय-परिवर्तन पर विश्वास नहीं है, तो उसका हिंसा पर विश्वास है और उस मनुष्य को कम्युनिस्टो की पार्टी मे ही दाखिल होना चाहिए। जिनका हृदय-परिवर्तन पर विश्वास नहीं है, वे कांग्रेस में रहते है और काम करते हैं किसलिए? कांग्रेस एक ऐसी संस्था है, जिसको गांधीजी ने पाला-पोसा है, बुद्धि दी है। यह मेरी बुद्धि भी उन्हींकी देन है। इसलिए कांग्रेसवालो से कहता हूँ कि आप लोग इसे समझो, तो आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। बात ऐसी है कि किसी चीज मे क्या ताकत है, दूर दृष्टि से देखना होता है। हरएक लोभी बन गया, तो गॉठ बॉधकर रख देता है। अगर भूदान का कुछ मजा वह चखता है, तो गॉठ खुलती है। जहॉ उसके हृदय की गॉठ खुलती है, वहीं आत्मशुद्धि होती है। हृदय-शुद्धि हो गयी, तो विशेष दर्शन होता है। जब दर्शन होता है, तब जीवन पलट जाता है। जहाँ जीवन पलट गया, वहॉ समाज मे क्रांति होती है। समाज मे क्रांति चंद लोगो के हृदय-परिवर्तन द्वारा होती है। चंद लोगों के हृदय-परिवर्तन से समाज मे विचार फैलता है, उस विचार के अनुसार कानून बदलते है, समाज-रचना बदलती है। तो यह सारी कीमिया क्रांति की होती है, जो हृदय-परिवर्तन से होती है। यह एक जादू है। इसका अर्थ कोई गणित-शास्त्र के मुताबिक नहीं समझा सकता। उसको समझने के लिए कल्पना-शक्ति की आवश्यकता है। कल्पना-शक्ति भी पारदर्शक होनी चाहिए। ऐसी प्रतिभावान् कल्पना-शक्ति जहॉ है, वहॉ यह जो काम चल रहा है, उसका महत्त्व समझ मे आयेगा।"

● ● ●

खम्मम
२२ ५ '५१

कम्युनिस्टो से सबक सीखना चाहिए

जिले का प्रमुख शहर होने से आम जनता मे तो मानो उत्साह की बाढ आयी थी। शहर मे पहुँचते ही एक जगह एक छात्रावास का शिलान्यास किया गया और फिर विनोबा कम्मा हॉस्टेल पहुँचे, जहाँ आज का पडाव था। 'कम्मा' जाति के लोग रेड्डी ही होते है, खेती का पेशा है। अपने को रेड्डियों से ऊँचा मानते हैं। पहले जमाने मे शासक वर्ग मे से रहे है। रहन-सहन का ढग खर्चीला होता है। रॉयल सीमा के कुछ जिलो मे अधिक तादाद मे और अधिक प्रभावी भी है।

जिले-भर से कार्यकर्ता लोग जमा हो गये थे, उन्हें बुलाया भी था। पडाव पर पहुँचने पर एक पेड के नीचे विनोबा दही लेने के लिए बैठे। जिला-काग्रेस के अध्यक्ष श्री बम्मकट सत्यनारायणराव मिलने आये। ऐसे इनसे मिलने की ख्वाहिश विनोबा की नलगुडा जिला से ही थी। वरगल का प्रोग्राम बनाने के बारे मे इन्हे कई बार बुलाया भी था। न खुद आये, न किसी प्रतिनिधि को भेजा। जब केशवरावजी ने और मित्रो की सलाह से प्रोग्राम बनाया, तो उसे इन्होने नापसद किया। यात्रा मे इनके जिले के कार्यकर्ता भी बहुत कम साथ रहे। विनोबाजी रोज देख रहे थे कि काम नही हो पा रहा है, जिसकी वजह और कुछ नही है, कार्यकर्ताओ के आपसी झगडे ही है और परिणाम यह हो रहा है कि गरीबों के लिए जमीन हासिल करने के काम मे रुकावट पैदा हो रही है। तो, जिलाध्यक्ष से कुछ स्पष्ट बाते करना विनोबाजी ने उचित समझा।

"दौरे मे आप लोग दिखाई नही देते, क्योंकि इस दौरे की अपेक्षा

आप लोगो को अन्य सभाएँ महत्त्व की मालूम होती है। यह सब आप लोगो के आपसी झगडों का नतीजा है। आपको समझना चाहिए कि अगर आप लोग इस समय इस यात्रा मे हमारे साथ रहते है और कुछ काम करते है, तो काग्रेस की प्रतिष्ठा है। आपके साथ न रहने से हमारी कोई अप्रतिष्ठा नहीं होगी। हम तो अपना काम करते चले जायँगे। पर आप लोगो की प्रतिष्ठा खतम हो जायगी।"

फिर आपसी झगडो के सबध मे कहा · 'आप लोगो को अब आपके यह आपसी झगडे छोड देने चाहिए। यह हम बिल्कुल बर्दाश्त नहीं कर सकते कि आप लोग छोटे-छोटे ग्रूप्स बनाकर लडते रहें। इस मामले मे आपको कम्युनिस्टो से सबक सीखना चाहिए। उनके सिद्धान्तो की बात छोड दीजिये, परतु उनमे आपस मे कितना भाईचारा है। नल्गुडा मे हमने कार्यकर्ताओ मे ऐसी फूट नहीं देखी। परतु यहाँ वह नजर आ रही है।"

पद-लोलुपता

इस फूट और आपसी झगडे की कारण-मीमासा करते हुए कहा

'स्वराज्य के पहले हम सबके सामने अग्रेजो को यहाँ से निकालने का एक महान् कार्य था। आप लोगों के सामने भी निजाम का सवाल था। परतु अब स्वराज्य मिल जाने के कारण आप लोगो के सामने वैसा त्याग का कोई कार्यक्रम नजर नहीं आ रहा है। ऐसे समय प्रत्यक्ष सेवा के काम मे लग जाना चाहिए, जो नहीं हो रहा है। सबको एक होकर रहने के लिए जो कुछ भी जरूरी है, वह सब आप लोग कीजिये। अगर आप लोगो मे किसी पद के लिए आपस मे कोई होड हो रही हो, तो समझदारी इसीमे है कि किसी एक को फौरन हट जाना चाहिए।"

दरिद्रनारायण का हिस्सा

कार्यकर्तागण तथा स्थानीय लोग काफी जमा हो गये थे। विनोबा ने देखा कि दरिद्रनारायण का कुछ काम हो सकता है। बापू की तरह

विनोबा भी दरिद्रनारायण के लिए माँगने का कोई अवसर जाने नहीं देते। उपस्थित मित्रों से उन्होंने भू-दान का जिक्र किया और जमीन की माँग भी की, तो जिस 'कम्मा' हॉस्टेल में ठहरे थे, वहीं के व्यवस्थापक ने पचास एकड का दानपत्र भेंट किया और फिर काम को गति मिल गयी।

एक के बाद एक दानपत्र मिलते गये।

पुत्र, सुहृद्-शोक

भीड कुछ कम हुई। विनोबा विश्राम के लिए अपने कमरे में आकर बैठे। 'कम्मा' हॉस्टेल के व्यवस्थापक भी पीछे-पीछे आये और नम्रता से पास बैठ गये। उनका भक्तिभाव देखकर विनोबा ने उनसे अपना हाल बताने को कहा। विनोबा की स्नेहभरी वाणी सुनकर उनके हृदय का बाँध टूट गया और फूट-फूटकर रोने लगे। कुछ कहते नही बनता था। कुछ दिन पहले एक रोज जब उनका जवान लडका भोजन कर रहा था, तब कम्युनिस्टों ने उसे उसी हालत में मार डाला।

उनका दुःख उतना ही नहीं था। उनकी दृष्टि से सर्वोदय में श्रद्धा रखनेवाले उनके दो अत्यंत निकट के मित्र श्री शंकरय्या और सीतारामय्या बिना कारण जेल में बंद थे। यह भी कार्यकर्ताओं के आपसी फूट का ही एक परिणाम था कि परस्परविरोधी दल के कार्यकर्ताओं की झूठी शिकायत पुलिस से की जाय, ताकि वे जेल में बंद कर दिये जायँ और बाहर राजनैतिक दाँव-पेंच के लिए रास्ता साफ हो जाय।

"निजाम के राज्य का अनुभव तो हम ले चुके हैं। दिल्ली का राज्य याने हम तो रामराज्य ही समझते थे। परंतु स्वराज्य-सरकार के राज्य में भी ऐसा अन्याय जारी रहे, इससे हमें बहुत दुःख और निराशा होती है।"

रियासती प्रजा के दिलों में अब तक कितनी श्रद्धा और भावना कायम है!

उन दो कार्यकर्ताओं की गिरफ्तारी के लिए सरकार के पास भी कुछ कारण होंगे ही। परंतु आपसी फूट का कारण सभी ने मुख्य बताया।

चेतावनी

दोपहर को भूमिवान् और कार्यकर्ता, दोनों पुनः मिलने आये। सवेरे विनोबा काफी बोल ही चुके थे। भीड के कारण भी थकावट काफी थी। शाम को फिर बोलना ही था। फिर भी जब स्वय चक्रवर्ती राजा बलि मिलने आये, तो विनोबा को विश्राम कहाँ? मन में काफी चिंतन भी चल ही रहा था। परिस्थिति अब विनोबा से छिपी नही थी, इसलिए पुन कुछ साफ शब्दों मे बाते हुई :

"मै देख रहा हूँ कि इस इलाके मे देहातवाले काग्रेसियों से तग आ गये है। और इधर एक ऐसा यज्ञ शुरू हुआ है, ऐसा आदोलन चल रहा है, जिसका अखिल भारतीय महत्त्व है। ऐसी परिस्थिति में अगर कार्यकर्ता और जनता गफलत मे रही, तो परिणाम अच्छा नही होगा।

"हमारा रिवाज यह रहा कि हम किसीके दिल को दु ख नहीं पहुँचाते। लेकिन हम कहना चाहते है कि आप लोगों ने बिल्कुल गलत काम किया है। यहाँ तो एक गोवर्धन पर्वत उठाने का काम सामने खडा है, जिसमे आपको चाहिए था कि आप अपनी सारी ताकत जुटा देते। मै चाहता हूँ कि पुलिस अब इस इलाके से उठ जाय। लेकिन अगर आप लोगों का रवैया ऐसा ही रहा, तो पुलिस को यहाँ से हटाने की सलाह मै नहीं दे सकूँगा। नतीजा यह होगा कि पुलिस और मिलिटरी का खर्च यहाँवालों को बर्दाश्त करना होगा।"

उज्ज्वल अतीत

लोगों को देश की स्थिति और जागतिक पार्श्वभूमि मे उनका कर्तव्य समझाते हुए बोले

"हमारे यहाँ के लोग सारी दुनिया को एक समझने की बात आसानी से समझ लेते है। बच्चे तक समझते है। लेकिन यूरोप की हालत ऐसी नहीं है। उन लोगों के देश हमारे यहाँ के छोटे-छोटे प्रान्त-जैसे है। परन्तु वे लोग प्रेम से रहने के बजाय आपस मे लडते रहते है।

उनकी वे लडाइयाँ स्वतन्त्र राष्ट्रो के बीच की लडाइयाँ होती है। इसके विपरीत हमारे यहाँ शकराचार्य ने चार दिशाओ मे चार मठों की स्थापना की। मलाबार का आदमी हिमालय मे जाकर साधना करता था और समाधि लेता था। उस समय कोई रेलवे आदि तो थी नहीं। लेकिन लोगो के हृदय विशाल थे, भावना व्यापक थी। आज सुविधाएँ अधिक है। चद घटो मे दिल्ली पहुँच सकते है, लेकिन दिल तग हो गये है, भावनाएँ सकुचित हो गयी है।"

सकुचित अभिनिवेश

आजकल जो प्रान्ताभिमान विशेष रूप से प्रकट हो रहा है, उसको उद्देश्य करके कहा :

"हमारा आदर्श था **दुर्लभं भारते जन्म**। परन्तु आज हममे, आन्ध्र राष्ट्र, महाराष्ट्र आदि अलग-अलग प्रान्तो के लिए अभिमान और अभिनिवेश प्रकट हो रहा है। यूरोप की बराबरी का हमारा देश। इतनी भिन्न भाषाएँ। बगाल का निवासी तमिल से अपरिचित, फिर भी एक-दूसरे को भाई-भाई समझते हैं, क्योकि सतो द्वारा यहाँ एकता की भावना का पोषण हुआ है। एकता की भावना देश-भर मे उन्होने फैलायी है। परन्तु आज हमे भाषा और जाति के लिए कुछ ज्यादा आकर्षण हो रहा है। पहले सारा देश एक माना जाता था। किसी भी प्रदेश मे जाइये, नदी के लिए गगा शब्द का प्रयोग सामान्य था। गोदावरी भी गगा थी, कृष्णा भी गगा थी और गगा तो गगा थी ही। कोई फ्रेंच किसी जर्मन को अपना नही मानता। लेकिन भिन्नप्रातीय और भिन्नभाषी होते हुए भी मै आपके लिए पराया नही हूँ। आप मुझे अपना ही मानते है। यह है भारत की खूबी! उसकी विशेषता!! यह देन है, जो हमें मिली है।"

कम्युनिज्म का कारण

फिर तेलगाना की परिस्थिति पर प्रकाश डालते हुए कहा :

"इस देन का महत्त्व हम नही समझ रहे है और आपस मे

द्वेष करते रहते हैं। यह आपसी द्वेष ही है, जिसकी कोख से यहाँ कम्युनिज्म का जन्म हुआ है। दो भाई आपस मे लडते है और एक-दूसरे को कम्युनिस्ट समझकर गिरफ्तारियाँ करवाने की कोशिशे होती हैं—यह सब मैंने यहाँ देखा है। ये सारे लक्षण यादवो के है और उनकी तरह विनष्ट होने के है। यही यादव है, जो महाराष्ट्र मे जाधव के नाम से पहचाने जाते है। वे लोग भी शराब पीते थे। बर्बाद हुए। यहाँ भी वही दृश्य दिखाई देता है। एक समय था, जब यहाँ काकतीय राज्य था। लेकिन शराब और अन्य व्यसनो के शिकार बनकर लोग ऐसे तबाह हो गये कि फिर यहाँ अब तक कोई पुरुषार्थ नही प्रकट हुआ।"

चुनाव पवित्र, वोट पवित्र

फिर लोकसत्ता का महत्त्व समझाया

"आज देश मे गरीबो की सरकार है। उसकी अपनी मर्यादाएँ है। लेकिन आपको वोट के रूप मे एक बडी दौलत मिली है। सारी शक्ति गरीबो की उन्नति मे लगाने का अवसर मिला है। ऐसे समय हम पारस्परिक दुश्मनी मे अपनी शक्ति बरबाद करे, गाँव-गाँव मे फूट का जहर फैलाकर लोगो को तबाह करे, यह गलत है। वोटिंग का हक तो स्त्री पुरुष सबके लिए समान रूप से मिला है। चुनाव एक पवित्र वस्तु है। वोट एक पवित्र कर्तव्य है। हो सकता है कि उम्मीदवार हमारे पिता हो, परन्तु हमारी कसौटी के अनुसार वे योग्य न हो, सच्चे न हो और अच्छे सेवक न हो, तो उन्हे हम वोट नही देंगे। जिसे हम वोट दे, उसकी सच्चाई और अच्छाई, उसका सेवकत्व और उसका चारित्र्य, सब देखकर हमे वोट देना है, वरना पार्टीबाजियाँ बढेगी।"

रहना नहि, देश विराना है

विषय बढ रहा था और प्रार्थना का समय भी हो रहा था, इसलिए इस चर्चा को समेटते हुए प्रस्तुत कार्य के बारे मे कहा

"मैं इस मुल्क मे इसी खयाल से घूम रहा हूँ कि शाति का कोई मार्ग

ढूँढ सका, तो ढूँढूँ । आगे फिर बारिश का मौसम आ रहा है। चुनाव के दिन भी आ रहे है। मैने देखा कि यहाँ श्रद्धा है, शक्ति है। इसके बावजूद भी अगर अशाति है, तो शाति का कोई और भी आसान तरीका ढूँढे, तो उसमे से यह भूमि-दान-यज्ञ प्रकट हुआ। जो लोग अपने को जमीन का मालिक समझते है, उनसे मै पूछता हूँ कि अगर तू जमीन का मालिक होता, तो जमीन के पहले तू यहाँ से कैसे जाता? लेकिन जमीन ही तेरी मालिक है। अरे भाई, हम तो दूसरे देश के रहनेवाले है। **'रहना नहि, देश विराना है।'** हमे अगर यहाँ भेजा गया है, तो हमारी कसौटी करने के लिए ही।

गुमराही का लक्षण

"जहाँ लोग सिदी पीते है और नित्य *जासूसी उपन्यास पढते रहते है, वहाँ अक्ल जैसी किसी चीज का अस्तित्व मुश्किल ही है। यह गुमराही का ही लक्षण है कि अपने ही लोगो की हत्या करके कुछ काम करने की इच्छा होती है, दूसरे के पास जो सम्पत्ति है, उसके लिए द्वेष पैदा होता है। उसके पास जितना धन है, वह क्यो नही देता—ऐसा हम सोचते है। जब देने का सवाल आता है, तो दूसरों का इन्तजार करते है। मरने का सवाल आता है, तब हम किसीकी राह नही देखते, क्योंकि जाना ही पडता है। जन्म लेने के समय भी हम किसीका इन्तजार नही करते। फिर किसी पुण्य-कार्य के लिए हम क्यों किसीकी राह देखे?

कम्युनिस्ट-आदोलन की जिम्मेदारी

"आज हर कोई यहाँ के कम्युनिस्ट प्रॉब्लम की जिम्मेदारी दूसरे पर डालना चाहता है। लेकिन जरा हम अपने भीतर सर्चलाइट डालकर देखे, तो पता चलेगा कि इस समस्या की जिम्मेदारी हम सब पर है। हमारे भीतर जो लोभ है, जो पाप-वासनाएँ भरी है, वह हमें नही दीखती। अपनी भूल कैसे दुरुस्त हो सकती है, यह हमे देखना चाहिए। दूसरो के दोष देखने मे कोई लाभ नही। अपने भीतर के दोषो को देखो और

फिर कम्युनिस्ट प्रॉब्लम हल करने की कोशिश करो। रास्ता सूझेगा। देखो कि एक एकड़वाला भी एक गुंठा देता है। उसकी महानता और उदारता का खयाल करो। मैं तो जिंदगीभर उसे नहीं भूल सकता। मेरे लिए उस एक गुंठे की कीमत बहुत ज्यादह है। जो केवल अपने लिए पकाता है, वह पाप खाता है, ऐसा शाप भगवान् दे गये। वेदों ने कहा है कि जिसने केवल अपना कुटुम्ब पालन किया और उसीके लिए धनादि संपादन किया, उसने तो वध का ही संपादन किया है। इसलिए जब मैंने उसे कहा कि आठ लड़कों में और नौवाँ आये, तो उसे हक दोगे या नहीं, तो उसने 'हाँ' कहा और जब मैंने समझाया कि मुझे ही नौवाँ मान लो, तो फौरन उसके समझ में आ गया और उसने पाँच एकड़ में से भी मुझे नौवाँ हिस्सा दे दिया।

भिद्यते हृदय-ग्रंथिः

"हम कहना चाहते हैं कि इस वक्त यहाँ जो काम हो रहा है, उसकी ओर सारे देश का ध्यान लगा हुआ है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि गांधीजी का भी लक्ष्य इधर है और वे खुश होंगे कि लोगों ने मेरा रास्ता ठीक समझा है और उस पर चल रहे हैं। यह ऐसा रास्ता है कि "भिद्यते हृदयग्रंथि."—आपके हृदय की शंकाएँ दूर होनेवाली हैं। फिर भी अगर कोई शंका रही हो, तो आप बता सकते हैं। मुझे विश्वास है कि यदि आप इस यज्ञ में अपना हविर्भाग देंगे, तो आपको अपने को मानव कहने का आनंद मिलेगा। आप देखते हैं कि जमीन तो जमीन ही की है, वह और किसीकी नहीं है। अंग्रेजों ने भी माना था कि जमीन पर हमारा ही कब्जा है। पर वह नहीं रहा। जमींदार अगर अपने को जमीन के मालिक मानते हैं, तो वे भूल कर रहे हैं। इसलिए यह जो प्रेम का मार्ग निकला है, उसे अपनाओ। जो कुछ देना है, प्रेम से दे जाओ। जबर्दस्ती से लेने के लिए तो पुलिस और मिलिटरी है ही, वह मेरा काम नहीं है।"

मानो सारा हृदय ही निचोडकर रख दिया था। आज विनोबा हिंदी मे ही बोल रहे थे। अनुवाद की आवश्यकता नहीं थी। लोगों पर असर भी अच्छा हुआ। एक महाराष्ट्र के भाई दिनकरराव चुपचाप सब सुन रहे थे। उन्होंने पाँच सौ एकड भूमि दी। प्रार्थना तक कुल एक हजार एकड हो गयी।

आज दिनभर विनोबा मुसलसल बोल ही रहे थे। शाम को प्रार्थना के बाद भी लोग आकर बैठ गये। अब कल विनोबा अगले पडाव जायेंगे। एक सेवक ने कहा "जाने से पहले कुछ सदेश देकर नहीं जाइयेगा?" ऐसे मीठे प्रश्न को सुनकर विनोबाजी का हृदय भी द्रवित हो गया। बोले

"हम चाहते हैं कि हैदराबाद मे सर्वोदय-समाज कायम हो। उसमें परखे हुए सेवक तैयार हों। उनके काम की रिपोर्ट हमें मिलती रहे। हो सकता है कि फिर हमें पुनः इधर आने का आकर्षण हो या इधर कहीं रहने की भी प्रेरणा हो। परन्तु वैसा काम होना चाहिए।" • • •

भक्ति-मार्ग बढ़ाना है, शक्ति-मार्ग नहीं : ३६ :

पिंडिपोल
२३-५-'५१

पावन दान

पाँच बजने मे पाँच मिनट कम होंगे। विनोबाजी अब कूच करनेवाले ही थे अगले पडाव के लिए, कि एक बहन ने आकर निवेदन किया : 'मै कल शाम को भाषण सुनकर घर लौटी, घर के लोगो से चर्चा हुई। मेरे पास दो एकड जमीन है। मेरे केवल एक लडका है। एक एकड आप स्वीकार करे।'

बाबा उससे कुछ कहे या पूछे, उसके पहले उसने फिर कहा 'एक और प्रार्थना ! साथ मे एक गाय भी दे रही हूँ, स्वीकार हो।'

विदाई की वेला मे उस बहन की वह भावना, वह प्रातःकालीन दान देखकर सभी प्रभावित हुए। गुसाँईजी ने ऐसे ही अवसर के लिए शायद गाया था "दीनन को देत दान भूपण बहुमोले।" ऐसे उस बहुमोल भूपण का सगुन लेकर विनोबाजी पिडिपोल पहुँचे।

गाँव की दुर्दशा

गाँव मे चार सौ मकान है। पचीस सौ की बस्ती। कई लोग बाहर है। बारह युवक जेल मे बन्द है। एक घर के तो पाँच मे से चार भाई जेल मे है। विनोबाजी का निवास आज इसी मकान मे है। परन्तु उस पर पुलिस का कब्जा है। बुढ़िया माँ को दोहरा दुःख है। बच्चे जेल मे, वह बिना घर-बार के। बच्चो मे कोई स्टेशनमास्टर था, तो कोई स्कूल-मास्टर। परन्तु साम्यवाद का विचार सब पर हावी हो गया था। इन लोगो ने गाँव के देशमुख लोगो की जमीन पर गरीब भूमिहीनो को जबरन कब्जा

दिलवा दिया था। जिन्होंने जमीनें स्वीकारी थीं, उन्हें भी अनधिकृत वस्तु कब्जे मे रखने के जुर्म मे सजाएँ भुगतनी पडी। सारा गॉव दु:खी था। परन्तु विनोबा की आगमनी के कारण पुन: जीवन छा गया था।

गॉव-प्रदक्षिणा के बाद गॉववालो से बाते हुईं। शुरू मे गॉव की सर्वसामान्य सुख-दुःख की चर्चा हुई। शिक्षण, रक्षण, शाति आदि सभी बाते निकलीं। लोगो को शिक्षण का महत्त्व भी रक्षण की योजना से कम नहीं मालूम होता। बालक पढना चाहते है, परन्तु स्थान नहीं है। बारह लडकियॉ भी पढ रही है। अक सुनकर विनोबा ने हिसाब बताना शुरू किया। पचीस सौ की बस्ती मे बारह सौ स्त्रियाँ, जिनमे से बारह लडकियॉ पढती है। केवल एक फीसदी। वोट का अधिकार सौ फीसदी स्त्रियो को और शिक्षण पाये केवल एक फीसदी। लडके सब सीखे, लडकियॉ क्यों न सीखे? विनोबा ने गॉववालो के सामने एक-एक समस्या पेश करना शुरू किया।

एक घण्टा स्कूल

मदरसे के मकान के लिए सरकार पर निर्भर न रहने की सूचना देते हुए विनोबा ने अपने एक घण्टेवाले स्कूल की कल्पना समझायी—ऐसा स्कूल, जो कहीं भी चलाया जा सकता है। गॉववालो की इस कल्पना को कि मकान के अभाव मे बच्चे नहीं आ रहे है, विनोबा ने भ्रम बताया। समझाया कि दिन मे लडके खेती मे जानवर चराते है, कुछ कमाते भी है। सवेरे-शाम के वर्ग होगे, तो बालक और बडे, सभी पढेगे। पचीस सौ लोग है, तो एक घण्टा रोज के हिसाब से दस साल मे सब सीख लेंगे—लडकियॉ और लडके, सभी।

मकान के बारे मे कहा कि गॉव का कोई भी मकान काम मे आ सकता है। जहॉ हम बैठे है, वही क्यो न हो? मकान-मालिक ने याने उस वृद्धा ने उत्साह से स्वीकार तो कर लिया, परन्तु अपनी लाचारी बतायी कि मकान पुलिस के कब्जे से स्कूल के लिए दिलवाना होगा।

गुलामी का असर

विनोबा की यात्रा वरंगल जिले मे चल रही है और वरंगल से हम अब बहुत नजदीक है। विनोबा ने कुछ गम्भीर चर्चा छेड़ते हुए कहा "आप सब लोग नही जानते होगे, फिर भी कुछ तो जानते ही होगे कि जिस जगह हम बैठे है, वहाँ एक जमाने मे काकतीय राज्य था। उसके पहले शालिवाहन का था। लेकिन देशभर मे तो उस समय एक ही समय मे अनेक राज्य थे। जैसे यहाँ काकतीय था, हैदराबाद मे निजाम था, नीचे हपी मे विजयानगरम्। कुछ ऐसे भी थे, जो आसपास के गाँवो मे वर्ष मे एक बार जाते और जो कुछ लूट मे मिल जाता, वह वसूली के रूप मे ले आते। लेकिन किसीको एक-दूसरे की हरकतो और हलचलो का पता भी नही रहता था। उधर शिवाजी ने स्वराज्य स्थापना की, तो इधर के लोगो को पता भी नहीं। इधर लोग सिंदी पीने मे मस्त थे और मुसलमानो की हुकूमत के शिकार बन चुके थे। जहाँ राजा लोग एक-दूसरे को जानते थे, वहाँ आपस मे लड़ाइयाँ भी काफी होती थीं। निजाम के राज्य मे लोग सिर्फ शासन के ही गुलाम नहीं बने, मजहब के भी गुलाम बने। उस समय मुसलमान बनने से सामाजिक प्रतिष्ठा भी बढती थी।

"निजाम के शासन के कारण लोगो के दिलो-दिमाग पर गुलामी का जो प्रभाव बना रहा, वह अब तक कायम है। कम्युनिस्टो के द्वारा भी लोगो के दिलो पर एक तरह से गुलामी का ही सस्कार बलवान् होता गया। हर गाँव मे किसीका खून, किसीके घर मे आग, किसीकी जायदाद की बर्बादी—यह सब क्या हो रहा है? जिनके पास कुछ धन सपत्ति, जमीन है, वे कजूस है और जिनके पास नही है, वे बहकावे मे आकर गलत तरीके अख्तियार कर रहे है। क्या श्रीमान् और गरीब आपस मे बैठकर अपने गॉव के मसले पर सोच नहीं सकते? एक परिवार की तरह रह नही सकते? माता-पिता की तरह श्रीमान् अपने गरीब भाइयो के सुख-दुःख

मे हिस्सा नही ले सकते ? गरीब लोग अपने प्रेम से श्रीमानो को निर्भय नही बना सकते ? पिंडिपोल की यह जो बुरी हालत हुई है, उसका यही कारण है कि आपस मे एक-दूसरे पर विश्वास नहीं है और हिंसा पर प्रायः सबका विश्वास है। यों इस देश को स्वराज्य मिल गया। उसका एक ही कारण है कि बापूजी के मार्गदर्शन से देश एक हो गया। देश मे सहसा एक सामूहिक शक्ति प्रकट हुई। परन्तु आज स्वराज्य के बाद वह कही दिखाई नहीं दे रही है। इस प्रदेश मे कम्युनिज्म को क्षेत्र मिल गया है, उसका भी यही कारण है कि गरीबों को पूछनेवाला कोई रहा नही। सेवक लोग जागते, इधर आते, तो यहॉ काम करने का कितना मौका था !

बूँद-बूँद बरसो

"अब यह भूदान यज्ञ शुरू हुआ है। मुझे कार्यकर्ताओ ने बताया कि देशमुख गॉव मे नही है, इसलिए दूसरे लोग भी देने मे हिचकिचाते है। बडे आदमी की तरफ देखते है, लेकिन कोई यह न समझे कि इस यज्ञ मे सिर्फ बडे लोग या श्रीमान् लोग ही हिस्सा ले सकते है। बारिश बूँद-बूँद सब तरफ बरसती है। वैसे हर कोई दे। एक और आधा एकड-वाले भी थोडा-थोडा दे।

कल्याण का मार्ग

"आज तक यह खयाल रहा कि जो काम हो, वह बडे आदमी के जरिये, बडे आदमी के सहारे हो। लेकिन आप जानते है कि श्रीकृष्ण हस्तिनापुर गये, तो कहॉ ठहरे ? दुर्योधन के यहॉ नहीं ठहरे। विदुर के घर ठहरे। जो कम-से-कम जमीनवाला है और फिर भी देता है, हमारी फेहरिस्त मे उसका नाम सबसे पहला रहेगा। हमे भक्ति-मार्ग बढाना है, शक्ति-मार्ग नही। ये शक्ति-मार्गवाले इतने उन्मत्त हो गये है कि सारी दुनिया इनके भय से तोबा-तोबा करने लगी है। इसलिए हम तो भक्ति की प्रतिष्ठा बढाना चाहते है। वह भक्त श्रीमान् ही हो, यह जरूरी नहीं है। श्रीमान् न हो,

यह भी जरूरी नहीं। कोई एकाध हो भी सकता है। वह अगर हमारे मार्ग पर चलता है, तो उसका कल्याण होगा, नहीं तो उसका भाग्य। हम क्या कर सकते है? इसलिए जमीन देते समय श्रीमानो की ओर देखना ठीक नही। यह भू दान की गगा आपके द्वार से गुजर रही है। जिसे उसमे स्नान करके पावन होना हो, वह स्नान करे, जिसे गदा ही रहना है, वह वैसा ही रहे। इसलिए दान देने के लिए गाँव के देशमुख की ओर देखने का खयाल बिल्कुल गलत है।

मै भी लूटने आया हूँ

"एक बात आप ध्यान मे रखिये कि कम्युनिस्टो के समान ही मै भी लूटने के लिए आया हूँ। परन्तु कम्युनिस्ट रात को लूटते है, मै दिन को लूटता हूँ। वे पिस्तौल से लूटते है, मै प्रेम से लूटता हूँ।"

धर्म-हानि

प्रार्थना-प्रवचन मे गाँव की परिस्थिति पर अपना दु ख प्रकट करते हुए विनोबा ने लूट-खसोट की जमीन स्वीकार करनेवाले भूमिहीनो को साफ कहा कि "आपकी इसमे धर्म हानि हुई है। आपने जमीन स्वीकार की याने आपकी कम्युनिस्टो से सहानुभूति है। उनका तरीका आपको मान्य है। श्रीमानो से जबरन जमीने छीनना आप खराब नही मानते है। मै इस विचार को नही मानता। यह खतरनाक विचार है। हो सकता है, जमीनवालो के पास जमीन कुछ अन्यायपूर्वक भी आयी हो। लेकिन उसका अर्थ यह नही कि अन्यायपूर्वक छीनी भी जाय। उन्हे समझाकर, प्रेम से माँग सकते है या कानून से ले सकते है। अब लोकसत्ता है। पर सबसे उत्तम मार्ग प्रेम का मार्ग है, जो परमेश्वर का मार्ग है।"

बहने सत्याग्रह करे

जो युवक जेल मे बद है, उनकी माताएँ, बहने, स्त्रियाँ विनोबाजी से मिलने आयी थी। उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए विनोबाजी

ने समस्त स्त्री-जाति को आवाहन किया। उन्होंने कहा : "अगर अपने लडके, भाई या पति मानते नहीं, गलत राह पर जाते है, तो स्त्रियो का काम है, बहनों और माताओ का काम है कि अपने पति के विरुद्ध, अपने भाई और पुत्र के विरुद्ध सत्याग्रह करे, उनके साथ सपूर्ण असहयोग करे। आवश्यक हो, तो उपवास भी करे।" • • •

वलपाला
२४-५-'५१

मजिल तेरह मील थी। रास्ते मे तिरमल्ला सकेशा नाम का गॉव मिला। रजाकारो ने यहॉ अठारह हत्याऍ की है। गॉव पूरा जला दिया गया है। गॉववालो ने रजाकारो का प्रतिकार भी किया और उनका एक आदमी भी मारा, लेकिन आखिर उन्हे हारना पडा और भागना पडा।

वलपाला पहुॅचने पर मालूम हुआ कि अनेक कम्युनिस्ट कार्यकर्ता भूमिगत है। कुछ जेल मे भी है। कम्युनिस्टो द्वारा चार कत्ल भी किये गये है। जनसख्या तीन हजार है। जमीन तीन हजार एकड से कम है। सात सौ के करीब मकान है, पर जमीन केवल नब्बे घरो मे ही है। याने छह सौ से ज्यादा घर भूमिहीनो के है। ग्रामोद्योग सारे खतम है।

पानी या डडा ?

गॉव-प्रदक्षिणा मे विनोबा ने सारी परिस्थिति का सूक्ष्म निरीक्षण किया, बुनकरो से बाते की। हरिजनो के सुख-दु ख समझे। लौटने पर गॉववालों से भी बाते हुई। उन्हे समझाया कि कैसे सारा देश यहॉ की हालत से चिंतित है और सरकार द्वारा जो इलाज चल रहा है, वह इलाज नही है। सरकार ने पुलिस रखी है, जो शाति नही कायम कर सकती। आग बुझाने के लिए पानी ही चाहिए। पुलिस के पास तो डडा है।

गॉवो की महिमा

विनोबा ने फिर समझाया कि कैसे शाति का रास्ता खोजते-खोजते वे इस ओर आये है और मोटर से नही, पैदल आये है। क्योकि "मोटरवाले के दिलो-दिमाग पर मोटर की गति का और पेट्रोल के स्वभाव का असर

होता है। सामने किसीको देखा, तो मोटर मे बैठनेवाला चिढ जाता है। कही-कही तो मैने देखा है कि भीतर बैठनेवाला बाहर चलनेवाले को पीटता भी है। फिर, पैदल चलने से तो हम छोटे-छोटे गॉवो मे भी जा सके है। पहाडो और जगलों मे भी घूम सके है। जिन गॉवो मे अशाति छायी है, उन गॉवो को देख सके है। उनमे से कई गॉवो के लिए तो मोटर का रास्ता भी नही है।"

इन गॉववालो का स्वभाव-दर्शन कराते हुए कहा :

"यह आपका हिंदुस्तान देश बहुत ही उदार है। दिलो-दिमाग पर दुःख छाया हुआ होता है, फिर भी हॅसते रहते है। यह सत-महिमा है।"

शहर और देहात का फर्क बताते हुए समझाया कि कैसे शहरी जीवन मे कृत्रिमता आ गयी है, जब कि देहातो मे आज भी भक्ति का, स्नेह का दर्शन होता है। "कई लोग गॉव छोडकर चले गये, अच्छा नही किया। आप उन्हे आश्वासन दीजिये कि आपकी रक्षा हम करेंगे। तब वे जरूर आयेंगे। अमीर-गरीब मे ऐसी शान्ति और परस्पर विश्वास कायम हो सके, उसके लिए जिनके पास जमीन है, वे दे।"

ज्ञानरूप अस्त्र

नब्बे लोगो मे से बहुत कम याने केवल बाईस लोगो ने जमीन दी थी। उनमे से एक भाई ने तो बीस एकड दी। परन्तु सबने नही दी थी और जिन्होने दी, उन्होने भी कम दी थी। इसलिए उन सबकी ओर इशारा करके विनोबाजी ने कहा :

"आज कुछ लोगो ने अपने पास की जमीन लोगो को दी भी है। लेकिन अभी तो कजूसी से दे रहे है। वे कजूसी इस वास्ते करते है कि भला किसमे है, वह वे समझते नही है। मै उनको समझा रहा हूॅ, वे नही समझते है, तो और समझाऊॅगा। मेरे पास समझाने के सिवा कोई अस्त्र नही है। और मै कहता हूॅ कि ज्ञानरूप अस्त्र के सिवा दूसरा कोई भी अस्त्र दुनिया मे कारगर नही है। भगवान् ने कहा है कि ज्ञान प्राप्त करने से लेशमात्र

पाप नहीं रहता। ज्ञान से सब पाप नष्ट होते हैं। सारा सञ्चित पाप भस्म हो जाता है। इस तरह ज्ञान प्राप्त करना और दूसरों को देना, निरंतर सुनाना और समझाना चाहिए। इस तरह मेरा काम यहाँ पर मैंने शुरू कर दिया है। मैं कह रहा हूँ कि इस गाँव में ६० पटेदार हैं, तो सारे ६० लोग मुझे जमीन दें। तो मैं समझूँगा कि आप सब लोग गाँव के बारे में विचार करने लगे हैं। जिसके पास दो एकड़ है, वह भी २-४ गुंठे दे। आप लोगों ने मेरे स्वागत के लिए हरएक घर पर तोरण लगाये हैं। मैंने गरीबों के घर पर भी तोरण देखे, श्रीमानों के घर पर भी देखे। लेकिन मैं तो जमीन माँगता हूँ, तो हरएक घर से मुझे जमीन मिलनी चाहिए। जिनके पास थोड़ी जमीन है, वे भी देते हैं, तो जिनके पास ज्यादा है, वह शरमायेंगे और देंगे। उपनिषद् में कहा है, शरम से भी दो, लेकिन दो। क्योंकि देने से लाभ है। "श्रिया देय, ह्रिया देय, भिया देय, संविदा देय, श्रद्धया देय, अश्रद्धया अदेयम्।" ज्ञानपूर्वक दो, लज्जा से दो, भय से दो, विचार से दो, श्रद्धा से दो, लेकिन अश्रद्धा से मत दो। कोई लज्जा से देगा, कोई ज्ञानपूर्वक देगा, दोनों चलेगा। क्योंकि जिसमें लज्जा होती है, उसमें भी ज्ञान होता है। किसीको शराब पीने की लज्जा मालूम होती है और लज्जा के कारण वह शराब नहीं पीता है, तो बहुत अच्छी बात है। लज्जा होती है, इसका मतलब शराब पीना खराब है, इसका ज्ञान हो गया है। आप लोग लज्जा के कारण नंगे नहीं रहते हैं, लेकिन छोटे बच्चे लज्जा के अभाव में नंगे रहते हैं। जहाँ आपको ज्ञान हो गया कि नंगा रहना अच्छा नहीं है, वहाँ शरम शुरू होती है। तो जब कोई लज्जा से भी देता है, तो मैं कहता हूँ कि उसको ज्ञान हो गया है।'

हृदय मत खो बैठो

जिस भाई ने बीस एकड़ जमीन दी थी, उसकी थोड़ी सराहना भी की। परन्तु यह भी कहा कि "उससे हमें संतोष नहीं होता है। बूँद बूँद बारिश की तरह थोड़ी-थोड़ी जमीन सबसे मिलनी चाहिए। तब मैं समझूँगा कि

यह विचार आप समझ गये। जिनके पास जमीन नहीं है, उन लोगो को जितना दु.ख होता होगा, उससे ज्यादा हमको होना चाहिए। हम जानते है कि किसीको बिच्छू काटा, तो उसको कितना दुःख होता है। लेकिन उसका दुःख देखकर हमे ज्यादा दुःख होता है। क्योंकि उसका जो दुःख है, वह शारीरिक है और हमे जो दु.ख होता है, वह मानसिक होता है। तो जिनके पास जमीन नही है, खाने को नही है, उनको शारीरिक दुःख होता है, लेकिन वह दु.ख देखकर हमारे हृदय को दुःख होता है। परन्तु हॉ, हम अपना हृदय खो बैठें, तो हमे दुःख नहीं होगा।"

● ● ●

महबूबाबाद
२५-५-'५१

अहिंसा की उपासना आवश्यक

शहर का मुकाम है, इसलिए प्रात काल की स्वागत-सभा में ही कुछ बाते कर ली। बोले "अशाति तो अच्छे विचार और अच्छे कारणों से भी फैलती है। आखिर कम्युनिस्ट चाहते क्या है? यही न कि गरीब जनता जाग्रत हो जाय? तो इसमे बुरा क्या है? उनका रास्ता अगर बुरा लगता है, तो दूसरा अच्छा रास्ता बताना चाहिए।

"मुझे अब अहिंसा की शक्ति का थोडा अनुभव आपके इस प्रदेश मे हो गया है। मै आपसे कहना चाहता हूँ कि अहिंसक शक्ति की भी उपासना करनी पडती है। हिंसक शक्ति के विकास के लिए बडे-बडे देशों मे कितना प्रयत्न किया जाता है, फिर अहिंसा क्या ऐसे ही बिना प्रयत्न और पुरुषार्थ के ही सिद्ध होगी? इस भू-दान-यज्ञ मे ऐसा प्रयत्न और पुरुषार्थ, दोनो है।"

सवेरे की सभा के बाद ही लोगो ने दान-पत्र भरना शुरू किया। कुछ भाइयो ने चौथा हिस्सा भी दिया। प्रार्थना के समय तक एक हजार एकड हो गये।

दोपहर विनोबाजी से मिलने के लिए गृहमत्री श्री बिंदु तथा मिलिटरी व पुलिस के मुख्य अधिकारी श्री नजप्पा आये। दोनो के साथ नल्गुडा और वरगल जिले की परिस्थिति के बारे मे काफी देर तक चर्चा हुई। जहाँ-जहाँ कुछ शिकायते सुनी थी, उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया गया। कुछ बाते तो उसी समय तय हो गयी। पिंडिपोलवाला मकान उस

बुढिया को फौरन लौटाने के लिए लिखित आज्ञा दी गयी। जेल मे कम्युनिस्ट मित्रो की जो दिक्कते थी, उनके निवारण की भी बातें हुई। कम्युनिस्ट नेता श्री नारायण रेड्डी और चन्द्रगुप्त चौधरी, दोनो को एक बार एक जगह मिलाने का सुझाव भी दिया गया। उन-उन स्थानो की चर्चा हुई, जहाँ से पुलिस हटायी जा सकती है। इसके अतिरिक्त सिंचाई आदि के बारे मे भी विचार-विनिमय हुआ।

कार्यकर्ताओ के सहयोग के बारे मे श्री बिंदु ने जानना चाहा, तो विनोबा ने उनकी उदासीनता और तज्जन्य खतरे की ओर श्री बिंदु का ध्यान आकर्षित किया।

परिवर्तन की निशानी

प्रार्थना का समय हो गया था। आज का प्रवचन शहरवालों की दृष्टि से महत्त्व का रहा।

भूमिदान के सम्बन्ध मे एक नया पहलू समझाते हुए विनोबा ने कहा "जिन्होने जमीन दी है, उन्होंने वह देने से पूरा काम कर दिया है, ऐसा मै नही मानता हूँ। उन्होंने जो उनके पास था, उसका थोडा-सा हिस्सा दे दिया। मैने वह स्वीकार कर लिया। इस वास्ते स्वीकार किया कि मै उनके प्रेम की वह निशानी समझता हूँ। उससे मै आशा करता हूँ कि वे अपने मन की शुद्धि करे। इस दान के आरभ के साथ-साथ उनके जीवन के परिवर्तन का आरभ हो जाना चाहिए। तो अगर जीवन-परिवर्तन की एक निशानी के तौर पर यह जमीन मिलती है, तो मै प्रसन्न हूँ। लेकिन अगर वह जीवन-परिवर्तन की निशानी नही है और केवल दान ही है, तो उससे कुछ नही हो सकता।"

दीनता मुझे सहन नहीं होती

फिर गरीबो, श्रीमानो और कम्युनिस्टो, तीनो को उद्देश्य कर कहा : "मै गरीबो को भी कहता हूँ कि तुम भी कुछ-न कुछ दो। एक एक, दो-दो, पाँच-पाँच एकड जमीनवालो से भी मैने लिया है। और उन्होंने खुशी से

दिया है। यह मैने क्यों लिया है ? मै जानता था कि वे गरीब हैं। फिर भी मैने क्यो लिया ? क्योंकि मै उनमे आत्म-विश्वास और सघटन-शक्ति पैदा करना चाहता हूँ। गरीब लोग एक-दूसरे से मदद करने लग जायँ, तो बहुत कुछ काम कर सकते है। मै नही चाहता कि वे दीन रहें और श्रीमानों के मुँह की तरफ ताकते रहे। इस वास्ते मे उनमे ताकत पैदा करना चाहता हूँ। मैं मानता हूँ कि उनके पास कम शक्ति नही है, श्रम-शक्ति उनके पास काफी है। किसीका मकान बनाना है और १०-५ अडोसी-पडोसी मदद करने लगे, तो फौरन मकान तैयार हो जाता है। इस वास्ते मै उनसे भी जमीन माँगता हूँ। मै श्रीमानों को और गरीबों को, दोनों को सबक दे रहा हूँ। मै नही चाहता कि गरीब लोग दीन बने, मै नहीं चाहता कि श्रीमान् डरपोक, दीन बने। लेकिन आज तो मै दोनों मे दीनता देखता हूँ। जो लोग शहर मे भागकर आये है, वे दीन नहीं, तो क्या है ? अगर श्रीमान् मदद नही करेंगे, तो हम जिन्दा कैसे रहेंगे, ऐसा गरीब को लगता है, तो वह दीनता ही है। इस तरह दोनों की दीनता मुझे सहन नही होती। फिर इन दोनों की दीनता का लाभ कम्युनिस्ट लेते है। कम्युनिस्टो को इसमे लाभ मालूम होता होगा, लेकिन उसमे उनका भारी नुकसान होता है। इन दीनों का लाभ लेने के कारण वे भी दीन बने है। कम्युनिस्ट गरीबों की सेवा करना चाहते है, इतना अच्छा उद्देश्य रखते है, तो फिर खुले मे क्यो नहीं रहते ? छिपते क्यो है ? आज इस गुफा मे, कल उस गुफा मे, आज इस पहाड में, कल उस पहाड मे अपने को छिपाते क्यो फिरते है ? वे लोग श्रीमानों का खून करते है, तो लगता है कि वे शूर हो गये। लेकिन बदूक के आधार पर कोई शूर नहीं बनता। उनके हाथ से बदूक छीन ली, तो वे भी दीन हो जायेंगे। तो मै कहता हूँ, दीन मत बनो। तुम्हारे काम के लिए हिन्दुस्तान मे बडा क्षेत्र है। जो तुम्हारा उद्देश्य है, वही मेरा है, लेकिन मै जैसा खुली हवा मे अकेला घूमता हूँ, वैसा आप क्यों नही घूमते ? क्योंकि

आपने गलत रास्ता लिया है। इसलिए शूर बनने के बजाय आप दीन बने है।

"इस तरह ये गरीब, श्रीमान् और कम्युनिस्ट, तीनो अत्यत दीन बने है। और इन तीनो को मै निर्भय बनाना चाहता हूँ। तीनो मेरे मित्र है। इस वास्ते तीनो पर मेरा प्रेम है। यह जो मैने काम शुरू किया है, वह दान का नही, लेकिन दीनता दूर करने का है। अगर किसीने दान दिया है और मन मे माना है कि इतना देने पर मेरा काम हो जायगा, तो वह समझा नही है। यह तो मै उनको एक दीक्षा देता हूँ, जैसे एक बटु को, जो नगा था, लॅगोटी पहनाते है। वह लॅगोटी नहीं, बल्कि उसको वेदाध्ययन, ब्रह्मचर्य की वह दीक्षा है। इस तरह यह दान नही, दीनता-निवारण की दीक्षा है। इस तरह मेरा जो काम हो रहा है, उसका मैने आपको दर्शन कराया है और इसको आप ठीक समझते है, तो कम्यु-निस्टो की समस्या हल कर सकते है।

सच्ची समस्या

"लोग पूछते है कि क्या यह लैण्ड-प्रॉब्लम दान से हल कर सकेगे? मै कहता हूँ कि यह जमीन की समस्या तो बिलकुल छोटी समस्या है। वह तो सहज ही हल हो सकती है। लेकिन मेरे सामने जो समस्या है, वह दूसरी ही है, मानसिक समस्या है। वरगल और नलगुडा जिले मे मिलकर ३० लाख जनसख्या है और कहा जाता है कि पिछले ५ साल मे यहाँ १००० खून हुए। मै कहता हूँ कि अगर इतना हुआ तो क्या हुआ? १ लाख मे ४-५ लोगो का खून हुआ। ३० लाख लोगा मे इतने खून हुए तो क्या बडी बात हुई? मलेरिया, कॉलरा, प्लेग से कितने मरते है, उसका हिसाब लगाओ। तो ये जो मर गये है, वह इतनी बडी बात नही हुई। लेकिन हम डरपोक बन गये है, यह बडी भारी समस्या है।"

गांधीजी का कारगर तरीका

प्रार्थना के बाद कार्यकर्ताओ की चर्चा हुई। एक भाई ने कहा:

"आपका कहना तो ठीक है, परन्तु हमारा अनुभव बताता है कि गाधीजी के याने अहिसा के तरीके से यहाँ का मसला हल नही होगा।"

"तो आपके पास कोई दूसरा तरीका हो, तो बताइये।" प्रश्नकर्ता काग्रेस के कार्यकर्ता थे, इसलिए विनोबा ने कहा, "आप लोग अपने अध्यक्ष से पूछिये या वेलोडी साहब से पूछिये। आप चाहे, तो आपकी ओर से मै पूछ सकता हूँ। आज आपके वेलोडी साहब क्या कर रहे है? करोडो रुपया मिलिटरी और पुलिस पर खर्च कर रहे है। क्या इससे मसला हल होगा? क्या कम्युनिस्ट शेर है, जो बदूको से खतम होगे? उनका तो एक विचार है। विचार का मुकाबला बदूको से कैसे होगा?"

"क्या आपको अब तक अनुभव नही हुआ कि हाथ मे हथियार लेने पर उसके परिणामो पर आपका काबू नही रहता? रजाकारो के जमाने मे आपके कुछ लोग तो जेल मे थे। लेकिन अधिकतर लोग बॉर्डर ऐक्शन मे उलझे हुए थे। उस समय कम्युनिस्टो ने रजाकारो के जुल्मो के खिलाफ जनता की सहायता की। उन्होंने जनता को समझाया कि चीन तक तो कम्युनिज्म आ ही पहुँचा है। अब थोडा जोर लगाओ कि भारत मे भी आया ही समझो। अब लोगो ने पहचान लिया कि कम्युनिस्टो के ये इरादे इरादे ही हैं। कम्युनिस्ट भी अब थक गये हैं और लोग भी थक गये है।

"गाधीजी ने जब स्वराज्य के लिए अहिंसक लडाई का तरीका बताया, तब भी लोग ऐसी ही शका किया करते थे। मै यह नही कहता कि केवल सत्याग्रह से स्वराज्य मिला। लेकिन अहिसक लडाई के कारण जो जाग्रति हुई, वह दूसरे तरीके से न होती। और जाग्रति न होती, तो स्वराज्य भी हमारे पल्ले न पडता।

"भाइयो, इस पर सोचो। यह भू-दान-यज्ञ केवल जमीन दिलाने का काम नही है। यह तो आज की हवा बदल देने का काम है।"

कहीं के नहीं रहोगे

फिर अन्त में कुछ गम्भीर इशारा देते हुए कहा : "मै जानता हूँ कि आज वेलोदी साहब की सत्ता है और आप लोगो को अब तक पूरी पाप्युलर गवर्नमेंट नहीं मिल पायी है। लेकिन अगर आप लोगों का खयाल हो कि पाप्युलर गवर्नमेंट आने के बाद आप इस कम्युनिस्ट समस्या को हल कर सकेंगे, तो आपका भ्रम है। बंगाल मे पाप्युलर गवर्नमेंट थी, फिर भी वे लोग अकाल की भीषण दुर्घटना को न रोक सके।

"इसलिए मै रोज आप लोगों को और खासकर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं को यहाँ ताकत लगाकर काम करने की प्रेरणा दे रहा हूँ। फिर भी आप लोग काम के बारे मे उदासीन दीखते है। अगर ऐसी ही हालत रही और आप लोगो ने काम नहीं किया, तो भगवान् ही आपकी रक्षा करे। जब आपको काम करना चाहिए था, तब आपने किया नही, इसलिए यह कम्युनिस्टो का आंदोलन हुआ। अब भी अगर नही जागोगे और सेवा मे जुट नही जाओगे, तो कही के नही रहोगे।"

• • •

इस भूमि पर वैकुंठ आ सकता है : ४२ :

मुकपाल

२६-५-५१

मंजिल बारह मील थी। धूप सिर पर बढ़ी जा रही थी। रास्ते में दो गाँव आये—अजोध्या और गोपासुबगल। पर दोनों जगह उदासीनता की छाया मिली। गोपासुबगल में देशमुख ने किसानों पर बहुत जुल्म ढाये थे। कइयों को बेदखल किया था। कइयों की जमीनें फरोख्त कर दी थीं। आखिर मामला श्री रंगा रेड्डीजी के पास गया और उन पर फैसला सौंपा गया।

मुकपाल के लोग भजन गाते हुए, नृत्य करते हुए, खँजड़ी आदि बजाते हुए अगवानी में आये। हम जिस मकान में ठहरनेवाले थे, उस मकान के मालिक ने तो हमारे साथ ही गाँव में प्रवेश किया था और मकान में भी।

समाज-धर्म की दीक्षा

गाँव-प्रदक्षिणा के बाद ग्रामवासियों से बातें हुईं। गाँवों के बढ़ते हुए कष्टों का अपना विश्लेषण सुनाते हुए विनोबा ने कहा "जहाँ जाते हैं, यही सुनते हैं कि कम्युनिस्टों से बहुत उपद्रव है। कम्युनिस्ट गत चार-पाँच बरसों से काम कर रहे हैं। पर वे जनता को कोई लाभ नहीं पहुँचा सके हैं। हर गाँव में झगड़े जरूर बढ़े हैं। पुलिस भी बढ़ी है। और इन दोनों के कारण लोगों के कष्ट भी बढ़े हैं।

"कोई स्वर्ग में जाने की इच्छा करे और मार्ग नरक का अपनाये, तो मुकाम पर कैसे पहुँचेगा? मैं अब आपसे पूछता हूँ कि कम्युनिस्ट गरीबों का भला चाहते हैं, तो यह सारा उपद्रव उन्होंने क्यों किया? उन्हें उपद्रव

करने का मौका कैसे मिला ? ऐसे मिला कि यहाँ श्रीमान् और गरीब मे प्रेम नही है और भेदभाव खूब है। हरएक मनुष्य मे अलग-अलग शक्ति रहती है। हम सबको मिलकर काम करना चाहिए। सबकी समान शक्ति तो नही बन सकती, न सब समान काम कर सकते है। स्त्री-पुरुष मे झगडा हो गया, तो ससार नही चलेगा। गरीब-अमीर मे झगडा हो गया, तो समाज नही चलेगा। इसलिए मैंने भूमिदान-यज्ञ शुरू किया है और सबसे माँग रहा हूँ। एक एकडवाले से भी और एक हजारवाले से भी। अब तक साढे पाँच हजार एकड मिले है याने साढे पाँच हजार लोगो के लिए जीविका का साधन हो गया है। कम्युनिस्टो ने जो जमीन दी, वह तो छीनी गयी है। परतु यह भूदानवाली जमीन जिन्हे दी जायगी, उनसे कोई वापस छीननेवाला नही है।

"मै चाहता हूँ कि हर कोई गाँव के लिए सोचे। इसीको जाति-धर्म या समाज-धर्म कहते है। रोज के चिंतन मे थोडा चिंतन गाँव का। घर में पाँच लडके है। पाँच हिस्से उनके, तो छठा हिस्सा गाँव का। इस तरह आप लोग करेंगे, तो कम्युनिस्टो के लिए काम ही नही रहेगा। वे देखेंगे कि वे जो करना चाहते थे, वह हो रहा है।"

पुल का काम

गाँववालों से बातचीत होने पर थोडा-थोडा भूदान सबने दिया। गरीबों ने दिया, मध्यम श्रेणीवाले ने दिया, अमीरो ने भी दिया। प्रार्थना के समय तक ७६ एकड जमीन हो गयी। प्रार्थना मे अनेक गाँवो से लोग आये थे। स्त्री-पुरुष, बच्चे, सभी आये थे। विनोबाजी ने कहा : "नदी के दो किनारो को जैसे पुल जोडता है, वैसे ही मै भी भूमिहीन और भूमिवानों के हृदयो को जोडने का काम कर रहा हूँ। ताली एक हाथ से नही बजती, दोनो हाथो से बजती है। काम श्रीमान् और गरीब, दोनों ने बिगाडा है। गरीब सद्‌गुणो के पुतले नही है। उनकी हालत बैलो से भी बदतर है। गाडीवाला सो जाता है, तब भी बैल चलता रहता है।

परंतु मालिक का खयाल नहीं रहा, तो मजदूर काम टालता है। अगर मजदूर ईमानदारी से काम करेगा, तो उसकी भी इज्जत बढ़ेगी। हमको दोनों में प्रेम-संबंध जुड़ाना है, बढ़ाना है। जिन्होंने आज भूदान दिया है, उन्होंने इसमें सहायता दी है। उन्होंने मानो सेवा का व्रत लिया है। अगर वे अपने व्रत को निरंतर सोचते रहेंगे और गरीब लोग ईमानदार रहेंगे, तो इस भूमि पर वैकुंठ आ सकता है।"

● ● ●

जीवन-रहस्य

: ४३ :

कल्लाडी

२७-५-'५१

मजिल तो बारह मील ही थी और धूप भी काफी थी। रास्ता बहुत रमणीय था। जगल मे से होकर गुजरना था। शुरू से आखीर तक जगल-ही-जगल था। बहुत दिनों के बाद इतना अच्छा और इतना घना जगल मिला था। बीच-बीच मे तालाब के कट्टे से गुजरना था।

काफी दूर तक एक कतार मे एक के पीछे एक चलना पड रहा था। फिर बीच-बीच मे अनेक प्रकार के मोड आते थे। तब सब सहयात्रियों को एक साथ अनेकविध मनोहर रूप-दर्शन होता था। वृक्ष भी मोड पर परस्पर अभिन्नता का अनुभव करते दिखाई देते थे। वृक्षों के पल्लवो की जालियो मे से तालाब का नीर और कमलवृन्दों के समूह बडे सुहावने प्रतीत होते थे। मार-काट और खून-खराबियो की जहरीली हवा मे यह सुखद-शीतल दर्शन श्रमपरिहारक ही था, फिर जब कि मई की धूप सिर पर चढी आ रही थी।

जगल शेरो के लिए प्रसिद्ध था। गाय-बैलो की शिकार आये दिन होती थी। और ऐसे ही स्थान है, जो कम्युनिस्ट भाइयों के लिए अनुकूल होते है। खतरो के बावजूद भी वे अपने को इन्ही जगलों मे सुरक्षित पाते है। यहाँ भी कोई हो, तो पता नही। उन्हे ऐसे स्थानो मे सहारा न मिले, इसलिए तेलगाना का कितना ही जगल कट चुका है। अपवादरूप बचा यह घना जगल इसलिए और भी सुहावना प्रतीत हो रहा था।

रास्ते मे इनगुर्ती नामक देहात मे बैंड आदि सहित करीब एक हजार लोगो ने स्वागत किया। दही-दूध भेट किया और दस एकड का दान-पत्र

भी अर्पण किया। हवा फैलती जा रही थी। सुंदर भजनों से सारा वातावरण तन्मय हो उठा। गायक खुद कवि होने से भक्ति-रस विशेष खिल उठा।

गाँव के बाहर डेरा था—पास में एक बहुत बडा मकान—बडी-बडी दीवारों से घिरा हुआ, बहुत बडा दरवाजा, जिस पर सगीनों का पहरा। छोटी मृदुला ने सहसा पूछ लिया कि वरंगल का जेल इसी गाँव में तो नहीं है? बाद में मालूम हुआ कि श्री राजेश्वरराव के इस प्रासादवत् निवास को देखकर और लोगों को भी ऐसा ही भ्रम हुआ था।

राजेश्वरराव गाँव के बडे धनी आदमियों में से माने जाते हैं। कम्युनिस्टों के भय से शहर में ही रहते हैं। आजकल घर में लडकी की शादी है, इसलिए आये हुए हैं। दूसरे कई लोग, जो गाँव छोडकर शहरों में जा बसे थे, आज विनोबाजी आये हैं, इसलिए लौट आये थे।

पहले निवास राजेश्वर गारू के इस घर में ही रखा गया था। लेकिन कार्यकर्ताओं में मतभेद हुआ और लोकापवाद के भय से निवास राजेश्वरराव के इस मकान के भीतर न रखकर पडोसवाले मकान में रखा गया। यद्यपि यह स्थान भी उन्हींका था। भोजन आदि का सारा प्रबन्ध उन्हींने किया था।

सहकारी खेती क्यों नहीं?

विनोबाजी ने राजेश्वरराव से जमीन के बारे में बात की। वे गाँव में सबसे बडे माने जाते थे, इसलिए उनके खिलाफ शिकायतें भी बहुत ज्यादा आ चुकी थीं। लेकिन विनोबा ने उनसे बात की, तो बिना किसी पूर्वग्रह के ही की, जैसा कि उनका तरीका है।

राजेश्वरराव ने भूमिहीनों के लिए जमीन देना स्वीकार किया, बशर्ते कि उनकी सहकारी खेती की योजना बने, जिसमें खुद राजेश्वरराव भी एक सदस्य रहे और उनकी भी खेती उसमें शामिल रहे। सब मिलकर सब खेती करें। अगर ऐसी सहकारी खेती की कल्पना विनोबाजी

पसद करते है, तो वे ढाई सौ एकड देना चाहते थे। वरना पचास एकड से फिलहाल अधिक देने का उनका इरादा नही था।

"आप फिलहाल पचास ही दीजिये" विनोबा ने कहा।

"आप सहकारी खेती के खिलाफ है ?"

"जी नही।"

"फिर यहाँ क्यो नही वैसा प्रबध कर देते ?"

"उन लोगो पर सहकारिता लादना नही चाहता।"

"उसमे तो उनको ही लाभ होगा।"

"तो वे फिर खुद उसे अपना लेंगे।"

"लेकिन मै तो उसी शर्त पर जमीन देना चाहता हूँ।"

"इसीलिए मै नही ले रहा हूँ।"

"उनका कोई नुकसान है ?"

"अगर आप लोगो को लाभ नजर आता है, तो पहले आप बडे लोग आपस में सहकारी खेती शुरू करे। इन गरीब लोगो को तो हिसाब वगैरह कुछ आता नही। काम तो इन्हे पूरी खेती पर करना होगा। इनके हिस्से मे कुछ नही आयेगा। जब तक इनके भीतर लोग लिख-पढकर सहकारिता के लाभालाभ को समझते नहीं और हिसाब आदि मे माहिर होते नही, तब तक मै उन पर सहकारिता की शर्त नहीं लादूँगा। तब तक बडे लोग रास्ता दिखाये। पर बडे लोग आपस मे ऐसी खेती करते नही, क्योंकि गरीब मजदूर के बिना उनका काम चलता नही और मजदूर का शोषण किये बिना वह सहकारी खेती पनपती नही। इसलिए मैंने तय किया है कि भूदान मे जिन्हे जमीन दी जायगी, उन पर सहकारिता की शर्त नही लदेगी। हाँ, वे लोग जमीन पाने पर खुद मिलकर तय करे या गाँव के अधिकतर लोग तय करे और वे भी उसमे शरीक हो जायँ, तो वह अलग बात है।"

राजेश्वरराव भावनावान् थे। विनोबा ने उनकी कमजोरी को ठीक

पहचाना था। उन्होंने भी निरपेक्ष भाव से अधिक-से-अधिक देने का निर्णय किया और पचास के बदले सवा सौ एकड भूमि दी। फिर उन्होंने अपना दुःख प्रकट किया कि पहले उनके मकान मे ठहरने की बात थी, परतु कार्यकर्ताओं ने वक्त पर वह प्रबंध मजूर नहीं किया। दोपहर उनके घर हो आने की प्रार्थना उन्होंने की, तो विनोबा ने मजूर कर लिया। उनका मकान देखा। घरवालों से सबसे मिले। वृद्धा माता ने भी भक्ति-भाव से विनोबा का स्वागत किया।

वे स्वय इतना बडा मकान अपने लिए नहीं रखना चाहते थे। इसलिए मकान के भावी उपयोग के बारे मे भी बाते हुई। किसी अच्छे, सार्वजनिक काम के लिए उसका उपयोग करने की योजना बन जाय, तो उसमे उन्होंने भी सतोष प्रकट किया।

सभा पहले बाहर ही होनेवाली थी। लेकिन राजेश्वरराव की इच्छानुसार विनोबाजी ने उनके मकान के ऑगन में ही सभा का आयोजन करवाया। ऑगन बहुत बडा था। मुख्य दरवाजा पूरा खोल दिया गया। आज पहली बार ही वह इस तरह खुला था। और पहला ही मौका था कि गॉव के गरीब लोग, हरिजन आदि ने उस मकान मे कदम रखा। कई लोगों को तो भीतर आने की हिम्मत नहीं होती थी। उन्हे समझा-समझाकर लाया गया। घर की स्त्रियॉ कभी इस तरह सर्वसाधारण समाज के साथ इसके पहले बैठी नहीं थीं। आज ही पहली बार गॉव की अन्य स्त्रियो के साथ बैठने का मौका उन्हे मिला। घर और घर के लोगो की कोई पूर्व पुण्याई ही आज जाग उठी थी।

नारद की परपरा

इस मकान मे विनोबाजी का आना, राजेश्वरराव को ऐसी प्रतिष्ठा देना और फिर उन्हीके मकान मे सभा का आयोजन करवाना, कुछ कार्यकर्ताओं को यह सारा बिल्कुल पसद नहीं था। प्रवचन के लिए विनोबा को यह सब सामग्री मिल ही चुकी थी। उन्होंने समझाना शुरू किया : "हम लोग

एक श्रीमान् के घर मे उतरे है। तो लोग पूछते हैं कि यह कहाँ तक उचित है। इस तरह का सवाल आता है, तो मुझे अच्छा लगता है, इसलिए नही कि प्रश्न मे कुछ बुद्धि है। लेकिन इस तरह का प्रश्न उठता है, तो स्पष्टीकरण करने का मौका मिल जाता है। जब यह सवाल मेरे कान तक आया, तो मैने उनसे पूछा कि श्रीमान् के घर में हवा जाती है क्या ? तो जवाब मिला, हाँ, जाती है। तो फिर मैने पूछा कि वहाँ सूर्यकिरणें जाती है क्या ? तो जवाब मिला, हाँ, वे भी जाती है। तो मैंने कहा, जहाँ सूर्य-किरण जाते हैं, जहाँ हवा जाने के लिए इनकार नहीं करती है, वहाँ मै क्यों नही जाऊँ ? जो सूर्य का काम है, जो हवा का काम है, वही मेरा काम है। अस्वच्छ हवा को साफ करना, अधकार को प्रकाश मे लाना, यह काम तो देवताएँ करती है, लेकिन जहाँ हवा जाने की हिम्मत नही करती और सूर्यकिरण जहाँ नही पहुँचते है, वहाँ भी मै जाने की हिम्मत करूँगा। किसी पहाड की गुफा मे मेरा सदेश पहुँचाने की जरूरत पडी, तो यद्यपि वहाँ हवा और सूर्य की किरणे नहीं जाती है, फिर भी मैं वहाँ जाऊँगा। वहाँ के लोगो को अपनी बात समझाने के लिए उस गुफा में जाऊँगा। हम लोग घूमनेवाले है। इस बात मे हमारे परम गुरु नारदमुनि हैं। वे सब जगह पहुँचते थे। वे आज के प्रोपेगडिस्ट के जैसे नहीं थे। हमे तो नारदमुनि की तरह हर जगह पहुँचना है, जहाँ कि हमारे पहुँचने से थोडा भी लाभ होता है। लोग कहते है कि श्रीमानो के घर आपके ठहरने से लोगो के मन मे गलतफहमियाँ फैलती है। तो मै कहता हूँ कि प्रजा को यह भी शिक्षण मुझे देना है और इसलिए भी हम घूम रहे हैं। हम तो जहाँ मौका मिला, वहाँ गये। यह नहीं कि श्रीमानो के घर मे ही गये। शुरू मे दो-चार दफा श्रीमानो के घर मे रहने का मौका मिला था, तो उससे हमे खुशी ही हुई थी।

गरीबों की एक और जाति

"हमारे हिन्दुस्तान मे मै देखता हूँ कि कही भी यह जाति का विचार

आ ही जाता है—सामाजिक क्षेत्र मे, राजकीय क्षेत्र में, धार्मिक क्षेत्र मे, सेवा के क्षेत्र मे भी। मैं सियासी विचारवाला नही हूँ। मै तो सेवक हूँ। फिर भी राजकारण क्या है, समाजशास्त्र क्या है, इसका निरन्तर अध्ययन करता हूँ। इस तरह हम तो जीवन की हरएक समस्या को सोचते है। हमारे लिए सारा जीवन मिलकर एक चीज है। उसमे चेतन जीव का, जड सृष्टि का और परमेश्वर का भी समावेश होता है। तो सब कुछ देख करके हम इस नतीजे पर आये है कि काग्रेसवाले, सोशलिस्ट या कम्युनिस्ट कोई भी जातीयता से बाहर नही जाते। मुसलमान लोग कहते है, हमको एक देश चाहिए। हम अपना अलग पाकिस्तान बनाना चाहते है। भाषावाले कहते है, हमारी भाषा का अलग प्रात चाहिए, हमारी रोटी अलग पकनी चाहिए। तो यह जाति बनाने का विचार हमारे दिमाग के अन्दर बैठ गया है। ब्राह्मणों ने मासाहार छोडा, शाकाहार स्वीकारा। यह तो उन्होंने बहुत अच्छा काम किया, लेकिन उसके साथ-साथ अपनी एक स्वतन्त्र जाति बना ली। फलाने के घर का नही खायेंगे, फलाने के साथ बेटी-व्यवहार नहीं करेंगे। तो, आजकल गरीब लोग भी अपना पक्ष, अपनी एक जाति बनाना चाहते है। वे श्रीमान् है, उसके यहाँ खाना नही खायेगे, उसके घर जाना नहीं चाहेंगे।

हम तो नारायण को पहचानते हैं

"लेकिन अग्नि को अगर आप कहेंगे कि तुम्हे चदन ही जलाना चाहिए, लाश को नहीं जलाना चाहिए, तो वह कबूल नही करेगा। वह तो कहेगा कि मै चदन को भी खाक बनाऊँगा और लाश को भी खाक बनाऊँगा। मेरे लिए स्पृश्य-अस्पृश्य, यह भेद नही है। मेरे पास जो आता है, वह खाक हो जाता है। तो, अग्नि का जैसा विचार है, वैसा ही सेवक का विचार होना चाहिए। अहिंसक सेवक हरएक स्थान में अपने को देखता है। तो मुझे जब पूछते हैं कि आज आप किस घर मे ठहरे हो, तो मै कहता हूँ, नारायण के घर मे ठहरा हूँ। नारायण लक्ष्मी के

साथ भी रहते है और लक्ष्मी को छोडकर भी रहते है। जब वे लक्ष्मी को छोडकर रहते है, तब वे दरिद्रनारायण कहलाते है और जब लक्ष्मी के साथ रहते है, तब श्रीमन्नारायण कहलाते है। तो हम नारायण को ही पहचानते है, क्योकि हम भक्त है और भक्त के लिए दुनिया मे नारायण के सिवा कोई नही है।

सोचने का गलत ढग

"तो इस तरह यदि हम श्रीमान् के घर उतरते है, तो उसे अपना रूप देने के लिए उतरते है, उसका रूप लेने के लिए नही। अगर दीपक अन्धकार मे प्रवेश करता है, तो अन्धकार को अपना रूप देता है। अन्धकार मे प्रवेश करने के लिए जो डरते है, उनके पास प्रकाश नही होता।

"लेकिन हम श्रीमानो के घर ठहरते हैं इतना ही आक्षेप हम पर नही है। और भी एक आक्षेप है। ये लोग कहते है कि आप श्रीमानो के पास से जमीन लेते है, तो उनकी प्रतिष्ठा बढती है। इस विचार मे सोचने का ढग ही ठीक नही है। ऐसे लोगो को तर्कशास्त्र के अध्ययन के लिए स्कूल मे भेजना चाहिए। श्रीमान् लोग बुरा काम करते है, तो अच्छा नही लगता और अच्छा काम करते है, तो भी अच्छा नही लगता। तो आप चाहते है क्या कि वे बुरा काम भी न करे और अच्छा भी न करे? अगर वह अच्छा काम करता है और उसकी प्रतिष्ठा बढती है, तो बिगडा क्या? यदि किसी शराबी ने हमको दान दे दिया और हमने वह लोगो मे जाहिर किया, तो क्या उतने से उसकी शराबखोरी का मडन होगा? शराबखोरी के बावजूद भी उसको अच्छा काम करने की प्रेरणा हुई, तो हम तो उसको समझायेगे कि तुम जब दान के लिए प्रवृत्त हुए हो, तो शराब छोडने की भी कोशिश करो। हमे तो सारासार विवेक लोगो को समझाना है। आखिर सब लोगो मे प्रेम-भाव प्रकट करना है। दुनिया के सारे गरीब नीतिमान् है, ऐसा नही कह सकते। श्रीमान्-गरीब, दोनों मे दोष हो सकते है, गुण हो सकते है। यह भी नही कि एक मनुष्य कायम के लिए बुरा

ही रहेगा। जो मनुष्य बुरा था, वह आगे भी बुरा ही रहेगा, ऐसा मानना सत्य पर, परमेश्वर पर अविश्वास प्रकट करना है। हम मानते है कि प्रत्येक मनुष्य सुधरने के लिए लायक है और इसीलिए हम घूमते है। नहीं तो हम आश्रम मे बैठे रहते। हमको यह लगता कि जो बुरा है, वह बुरा ही रहेगा, तो हमको यहाँ आने की जरूरत ही क्या थी? फिर मै इन कम्युनिस्टो के उपद्रवो को शात करने के लिए क्यो आता? फिर तो मुझे आश्रम मे रहकर तपश्चर्या ही करनी चाहिए थी या कम्युनिस्ट बनना चाहिए था। कम्युनिस्टो का मत है कि श्रीमानो को खतम किये बगैर देहातो का उद्धार नही होगा। लेकिन यदि श्रीमानो का भी कोई वर्ग होता, तो कुछ बात सोचते। हमने देखा कि तगटपल्ली में दोनो भाई श्रीमान् होते हुए भी आपस मे यादवो की तरह लड़ते थे।

यादवो की पुनरावृत्ति

"यहाँ इस मुल्क मे घूमने के बाद मै इस नतीजे पर आया हूँ कि यहाँ यादवो का फिर से नाटक हो रहा है। यादवो के दो लक्षण सुप्रसिद्ध है। एक शराब पीना और दूसरा आपस मे लडना। ये दोनो लक्षण इस तेलगाना मे मौजूद है। हम हरएक गाँव की जानकारी हासिल करते है। तो हम यह नहीं पूछते कि गाँव मे शराब पीनेवाले कितने है। लेकिन यह पूछते है कि न पीनेवाले कितने है। पहले पीनेवालो की सख्या पूछते थे। लेकिन यहाँ पर हमने देखा कि शराब पीने का रिवाज ही है। शराब यहाँ गङ्गाजल के समान हो गयी है। तब से हम हर गाँव मे पूछते है कि गङ्गा जल को न पीनेवाला भी यहाँ कोई है?

"शराब पीनेवालो मे क्लासेस भी नही है। श्रीमान् गरीब, दोनो एक हो गये है। शराब ने क्लास वार को खतम कर दिया है। तो, इस तरह से जहाँ शराब पीते है, आपस मे लडते है, वहाँ हम किस तरह से काम कर सकते है, यह सोचने की बात है।

स्वच्छ जीवन की प्रेरणा

"मेरा तो निश्चय हो गया है कि यहाँ पर सब लोगों को स्वच्छ जीवन सिखाना और प्रेमभाव सिखाना, यही यहाँ के सारे वातावरण के लिए औषध है। इस दृष्टि से यहाँ काम शुरू किया और देखता हूँ कि उसका असर भी अच्छा हो रहा है।

"आज जिन भाई के घर ठहरे हैं, उनके साथ खूब बातें की। उनका इतिहास भी सुन लिया। उनका इतना बडा मकान निकम्मा पडा है कि उसका क्या उपयोग करेंगे, पूछा। उनको कुछ सूझता नहीं है। उनको कुछ सूचनाएँ दी और कहा, आपके दान से मुझे संतोष नही है। आपके जीवन-परिवर्तन से मुझे संतोष होगा। फिर मैंने उनको कहा कि आप वर्धा आ जाओ और वहाँ क्या-क्या चलता है, देखो। मैं नही कह सकता कि इसका परिणाम क्या होगा।

परमेश्वर का खेल

"लेकिन आज हम जीवन का एक रहस्य बताना चाहते हैं। इस दुनिया का कोई भी मनुष्य कोई काम कर रहा है, ऐसा हम नहीं मानते। हम मानते है कि परमेश्वर ही सबको नचा रहा है। हमको सद्बुद्धि हुई, तो हम नहीं मानते कि वह हमारी है। हम मानते है कि वही सद्बुद्धि देता है और नाटक करवाता है। तो परमेश्वर जैसी प्रेरणा देगा, वैसा वह भाई भी करेंगे। लोग कहते हैं कि विनोबा यहाँ आ गये और सब वातावरण बदल दिया। लेकिन एक क्षण के लिए भी हम ऐसा नहीं मानते। भगवान् वातावरण बदल रहा है। तुलसीदासजी ने कहा है, ये सारे काठ के पुतले है और शतरंज का खेल खेल रहे है। शतरंज के खेल मे जो हाथी-घोडा ऊँट होते है, वह सब लकडी के ही होते है। सिर्फ एक लकडी लेकर तरह-तरह की चीजे बनायीं और उसको लेकर खेलनेवाला खेलता है। जब से यह दृष्टि हमको मिली, तब से हम बादशाह सरीखे रहते है, हमको दुःख

का खयाल भी नहीं होता। जहाँ दुःख होता है तब और जहाँ सुख होता है तब ऐसा मानते हैं कि यह परमेश्वर का खेल हो रहा है।

हमारी श्रद्धा

"लोग हमारे पास आकर कहते हैं कि ये कांग्रेसवाले और ये कम्युनिस्टवाले और श्रीमान् लोग ऐसा करते हैं, वैसा करते हैं। तो हम सब सुनते हैं और हँसते हैं। हम कहते हैं, कुछ नहीं हो रहा है। समुद्र पर लहरें आती हैं, जाती हैं, लेकिन उसका समुद्र को कुछ नहीं होता। हम इस मुल्क में आये, फिर भी हमको यह नहीं लगा कि हम खतरे में जा रहे हैं। सारी दुनिया में खतरा कहीं है ही नहीं। जिधर देखो, भगवान् के रूप दीखते हैं। और यह हमारी श्रद्धा है, इस वास्ते लोग दान देते हैं। हम उनसे माँगते हैं, तो वे 'ना' नहीं कहते हैं। भक्त माँगेगा, तो भगवान् इनकार कैसे करेगा?

"भाइयो, मेरे जीवन का यह रहस्य मैंने आपको कह दिया। तो मैं आज श्रीमन्नारायण के घर में ठहरा हूँ। कल दरिद्रनारायण के घर ठहर सकता हूँ और परसों मुझे कम्युनिस्ट के घर ठहरना पड़ा, तो वहाँ भी ठहरनेवाला हूँ।

मेरी माँग

"कम्युनिस्टों के बड़े-बड़े नेता हैदराबाद जेल में हैं। वहाँ उनको मिलने के लिए जेल में गया था। दो घण्टे चर्चा की। वे लोग खूब जानते थे कि उनके और मेरे विचार में जमीन-आसमान का अन्तर है, लेकिन दोनों के बीच में सगे भाई-भाई के समान बातें हुईं। मेरा विश्वास है कि आप एक-दूसरे पर प्यार करेंगे, तो ये सारी काल्पनिक समस्याएँ हल हो जायँगी। आज मैं जमीन माँग रहा हूँ, वह किसलिए? यह सारा गोरख-धन्धा मुझे क्यों चाहिए? मुझे भगवान् का बुलावा आयेगा, तो यह नहीं कहूँगा कि तैयारी के लिए १० मिनट दे दो। मैं तुरन्त जाऊँगा। मेरे पास ऐसी कोई इस्टेट नहीं कि जिसके लिए मैं १० मिनट माँग लूँ।

जमीन लेने-देने की यह सारी झझट क्यों कर रहा हूँ ? यह सारा प्रेम-भाव बढाने के लिए, एक निशानी के तौर पर कर रहा हूँ। इसकी खूबी लोग समझेगे, तो हजार हाथो से देने लगेगे। आज तो जिसके पास हजार एकड जमीन है, वह दस एकड देता है। तो मैं कहता हूँ कि तेरा काम है कि जितनी जमीन तेरे पास है, वह सारी-की-सारी गरीबो को दे दे, और खुद गरीब बन जा। जैसे परमेश्वर की भक्ति करते-करते आखिर परमेश्वर हो जाते है, वैसे ही गरीबो की भक्ति करते हैं, तो गरीब होना ही चाहिए। यह मेरी मॉग है, तिस पर भी लोग जो देते है, उतने पर सतुष्ट होता हूँ। कहता हूँ, जो दिया, सो दिया।

कर्ण का व्रत

"तो भाइयो, इस गॉव मे भेदभाव की भाषा छोड दो और जो कोई मॉगेगा, उसको देना ही है, ऐसा समझो। महाभारत मे कर्ण के व्रत का वर्णन है। उस कर्णव्रत के समान व्रत ले लो। वैसा व्रत लेगे, तो आप खोयेगे नही, बल्कि सहस्र गुना पायेगे। जो सुखी लोग है, उनका धर्म है कि वे दूसरो को सुखी बनाये। वेद-नारायण की आज्ञा है कि **"शतहस्त समाहर सहस्र हस्त सकिर"**—सौ हाथों से लेना, हजार हाथो से देना। तो लेने मे सौ हाथ होने चाहिए और देने में हजार हाथ होने चाहिए। जैसे मेघ समुद्र से लेता है, तो मीठा करके फिर भेज देता है। वैसे ही श्रीमानो का, बुद्धिमानों का काम है कि जितना वे गरीबो से लेते है, उससे अधिक और पवित्र बनाकर उनको वापस दे दे।"

● ● ●

कालात्मा की पुकार : ४४ :

गविचिराला (वरगल)

२८, २९-५-'५१

प्रात.काल पडोस के एक गॉव पर्वतगिरी के प्रार्थना-मदिर मे थोडी देर रुककर चलने का प्रोग्राम विनोवाजी ने मजूर कर लिया था। उस गॉव के लोग सवेरे ही निवासस्थान पर पहुँच गये और यहॉ से भजन गाते-गाते अपने गॉव ले गये। गले मे अवगीश, अरविंद, हनुमान, कबीर वगैरो के नाम के पट्टे लगाये हुए थे। आरती, पुष्पमाला तथा अनेकविध भाव-भग स्वागत और भजन कीर्तन का कार्यक्रम हुआ। फिर लोगो ने नौ एकड का दान-पत्र देकर विनोबा को विदा किया।

रास्ते मे एक काकापाक नाम का गॉव मिला। पूरा बेचिराग था। रजाकारो की ओर से बीस हत्याएँ हुई थीं।

गविचिराला पहुँचे, तो मालूम हुआ कि गॉव के प्रमुख व्यक्ति रामचन्द्र राव कम्युनिस्टो से डरकर हनमकोडा रहते है। उनके मकान मे करीब बीस हजार का अनाज था, जो कम्युनिस्टो ने लोगों में तकसीम कर दिया था।

गॉव छोटा था और वरंगल से बहुत दूर नही था। फिर भी गॉव-वालो ने बताया कि अनेक बरसो के बाद आज यहॉ कोई नेता आये है। न कभी कोई आता है, न गॉववालो के सुख-दु ख की खबर ही लेता है। विनोबाजी की आगमनी की खबर से सारे गाँव में आज अद्भुत उत्साह था। गॉव के वृद्ध लोगो से विनोबाजी ने विशेष रूप से और देर तक बाते की।

गविचिराले से वरगल जाते हुए रास्ते मे स्तभपल्ली का विद्यालय

देखा। वरंगल की सीमा में पहुँचे। राजधानी का स्थान होने से वरंगल में काकतीय साम्राज्य के पुराने अवशेष खूब देखने को मिलते हैं। किले का कुछ हिस्सा गिर गया है, तो शेष गिरा दिया गया है। बड़े-बड़े विशाल स्तंभ, उन पर खुदी हुई कलाकृतियाँ, पाँच विशाल द्वार, भीतर की बस्ती, शिवजी का मंदिर आदि सब इस छिन्न विच्छिन्न साम्राज्य की याद दिलाते हैं। विनोबाजी ने बहुत दिलचस्पी से इन सबका निरीक्षण किया।

वरंगल जेल के कम्युनिस्ट भाइयों के बीच

आज यहाँ भी जेल में कम्युनिस्ट मित्रों से मिलने जाना था। १० बजे विनोबाजी जेल के द्वार पर पहुँच गये। उन लोगों की इच्छानुसार उनके पाँच नुमाइंदों से बातें हुई। विनोबाजी ने अपनी यात्रा का उद्देश्य, रास्ते के अनुभव, इस समस्या की ओर देखने का उनका दृष्टिकोण, साम्यवादियों से उनकी अपेक्षाएँ, हैदराबाद और नलगुंडा जेल की मुलाकातें आदि सब बताकर एक बुनियादी सवाल पूछा कि "इस समय बाहर उनकी पार्टी की ओर से और पार्टी के नाम पर जो हत्या-पद्धति चल रही है, वह क्या उन्हें पसंद है? क्या आप लोगों की इस कार्यवाही के साथ सहानुभूति है?"

उन लोगों ने हँसकर जवाब दिया कि "यदि कम्युनिस्ट-पार्टी के काम के साथ कम्युनिस्ट ही सहानुभूति नहीं रखेंगे, तो फिर कौन रखेगा?" फिर उन लोगों ने विनोबा से शिकायत की कि "आप इन जागीरदारों को फिर से गाँवों में बसा रहे हैं, जहाँ से हम लोगों ने उन्हें निकाल बाहर किया था।" जागीरदारों के प्रति उन्होंने काफी असंतोष—मन का सारा जहर—प्रकट किया। विनोबा से कहा . "आप जहाँ भी जाते हैं, केवल हमारे बारे में ही बोलते हैं। पुलिस जनता पर कितना जुल्म कर रही है। उनके लिए आप कुछ नहीं बोलते।"

जाहिर है कि उन्हें ठीक रिपोर्ट नहीं मिलती थी। विनोबा ने तो जगह-जगह पुलिस के लिए कहा था, गाँवों में पुलिस न रहे, ऐसी कोशिश

की थी। कई अत्याचारी थानेदारों व सब इन्स्पेक्टरों को विनोबाजी की रिपोर्ट के आधार पर सरकार ने नौकरी से रुखसत भी किया था। लेकिन पुलिस से सबंधित विनोबा की टीकावाला मजमून काटकर ही शायद अख-बार इन्हें मिलते हों। फिर अखबारों में विनोबाजी के भाषणों की रिपोर्ट भी पूरी निकलती जो नहीं थी।

कम्युनिस्टों की सरकार से मुख्य शिकायत यह थी कि कहीं कुछ भी होता है, तो सरकार कम्युनिस्टों को बदनाम करती है और गोलियाँ चला देती है। इसलिए हमें जगल-जगल, पहाड़-पहाड़ भटकना पड़ता है। कम्युनिस्टों ने स्वीकार किया कि उनके द्वारा भी खून और कत्ल काफी हुए हैं—"परतु हम जो करते हैं, अपने बाल-बच्चों की इज्जत-आबरू बचाने के लिए, गरीबों को शोषकों से नजात दिलाने के लिए करते हैं। सरकार अपना रवैया बदले, तो हम भी अपना रवैया बदलने को तैयार हैं। सरकार स्टेनगन का प्रयोग करती है, तो हम उसके बिना कैसे काम करें?"

लेकिन विनोबा ने प्रारभ में जो मूलभूत सवाल उनसे पूछा था, उसका जवाब उन्होंने आखिर तक नहीं दिया। बिदा लेते समय पुनः सभी बहुत अच्छी तरह से मिले। कुछ स्त्रियाँ भी जेल में थीं। उनमें से कइयों ने कहा कि "हमारा कोई कसूर नहीं है। हम यदि इन्हें घर पर खाना नहीं खिलाती हैं, तो शूट करने की धमकी देते हैं। हमें तो बेगुनाह ही जेल में रखा है।"

परिवर्तन इसी तरह होगा

प्रार्थना-सभा का आज का भाषण ऐतिहासिक हुआ। विनोबाजी ने मानव-समाज के विकास की पार्श्वभूमि में कम्युनिस्ट-आदोलन के बारे में अपनी प्रतिक्रिया बतायी कि यहाँ की खून-खराबी की घटनाओं के बारे में मुझे जानकारी मिलती रही, परतु घबराहट कभी नहीं हुई, क्योंकि मानव-जीवन में जब-जब नवीन सस्कृति का निर्माण हुआ है, सघर्ष भी हुआ ही

है। रक्त की धारा भी वही है, इसलिए हमे शाति से सोचना चाहिए—शातिमय उपाय खोजना चाहिए।

विनोबाजी ने बताया कि उनकी पदयात्रा उस शातिमय उपाय की खोज का ही एक महत्वपूर्ण साधन है। भू-दान के बारे मे उन्होंने स्पष्ट कहा कि यद्यपि सद्भावना से जो कुछ मिलता है, मै ले रहा हूँ, परतु जो मै चाहता हूँ वह सर्वस्व-दान की बात है—जैसा पोतना ने कहा है—"तल्लि दडलु भगि धर्मवत्सल तनु दीनुल गात्र चितिन चुवाडू"—माता-पिता की तरह खुद भूखा रहकर बच्चो को खिलाने की बात है यह। वह शक्ति, वह प्रेम मै आपसे प्रकट करना चाहता हूँ।

जमीदारो व श्रीमानो को वापस गाँवो मे प्रतिष्ठा देने की कम्युनिस्ट राजबदियो की शका का जिक्र करते हुए कहा "मुझे उन लोगो से बहस नही करनी थी। लेकिन अगर यह बात सही है कि हरएक के हृदय मे परमेश्वर विराजमान है और हमारे श्वास-उच्छ्वास का नियमन वही करता है और सारी प्रेरणा वही देता है, तो मेरा विश्वास है कि परिवर्तन जरूर हो सकता है। अगर कालात्मा खडा है और कालात्मा परिवर्तन करना चाहता है, तो परिवर्तन होने ही वाला है, मनुष्य चाहे या न चाहे।" प्रवाह का दृष्टात दिया कि "जैसे तैरने की शक्ति से हमे मदद मिलती है, वैसे प्रवाह से भी मिलती है। हृदय-परिवर्तन के लिए भी कालप्रवाह मददगार होता है। आज तो सबकी भूमि तपी हुई है। ऐसी तपी हुई भूमि पर प्रेम के दो बूँद छिडकाने का काम अगर भगवान् मुझसे करवाना चाहता है, तो मै खुशी से कर रहा हूँ। अगर क्राति हो जाती है, श्रीमानो को अगर विचार जँचता है, तो उनके हृदय मे सघर्ष शुरू हो जायगा, परमेश्वर उन्हे सद्बुद्धि देगा, वे अन्याय छोड देगे। परिवर्तन इसी तरह हुआ करते है।"

वर्धा से तार आया कि दादीजी—जमनालालजी की वृद्धा माताजी—बहुत बीमार है। फलत. मदालसा बहन को आज वर्धा के लिए रवाना

होना पडा । पदयात्रा मे वे वर्षो से साथ थी । तेलगाना मे तो उनकी बहुत मदद रही । जहाँ भी सम्भव हो, स्त्रियों की सभा का आयोजन तो वे करती ही, परन्तु विनोबाजी के पीछे, गाँव गाँव मे भू-दान का काम चालू रखनेवाले कार्यकर्ताओ की खोज करना, उनसे सम्पर्क कायम करना आदि काम भी वे बराबर करती रहती। हरिजन, आदिवासी, लम्बाडे आदि लोगो के जीवन मे वे विशेष रस लिया करती। लम्बाडे लोगो की कन्याओ पर मुग्ध रहतीं कि इन्हे वर्धा ले जाकर महिलाश्रम मे शिक्षण दिया जाय । जा रही थी वह कुछ ही दिनो के लिए, परन्तु उनकी अनुपस्थिति सहयात्रियो को खटकनेवाली थी । ० ० ०

सोशलिस्ट मित्रों के बीच (१) : ४५ :

यल्कातूर्ति

२०-५-'५१

नया जिला, लम्बी मजिल। पद्रह मील और कच्ची सडक। रास्तेभर बादलो की छाया। बीच मे रुकने का रिवाज नही। परन्तु भीमावरम् के लोगो ने रोकना चाहा, तो रुक गये—"सब दानो मे श्रेष्ठ दान" भू दान का तत्त्व समझाया—गरीबो के लिए छह एकड पाकर आगे बढे।

यल्कातूर्ति करीमनगर जिले का हरिजन-प्रधान गॉव है। पॉच सौ जन सख्या केवल हरिजनो की है। कार्यक्षेत्र समाजवादियो का है, जिन्होने विनोबाजी के प्रवेश के साथ ही जिले का भू-दान का काम सहज भाव से सॅभाल लिया है—बिना किसी पूर्व योजना के।

पडाव पर पहुँचते ही रहे-सहे सभी कार्यकर्ता जमा हो गये। तरुणाई का उत्साह और जानने की लालसा—कुछ प्रश्न भी उन्होने किये। पहले अशाति के कारणो की चर्चा हुई, तो विनोबाजी ने कहा "कम्युनिस्ट तो निमित्तमात्र बने है। इस गॉव मे पॉच सौ हरिजन है। अगर अम्बेडकर यहॉ होते, तो वे भी बगावत पैदा कर सकते थे।"

प्रश्न . "यहॉ हरिजनों को काफी तकलीफ है और कौलदारो को भी। टेनेन्सी कानून बहुत प्रतिकूल है।"

विनोबा . "तो, सरकार तो आप लोगो के हाथ मे है—चार-छह माह का सवाल है—फिर आप जिन्हें भेजना चाहे, भेज सकेगे और फिर शिकायत भी नही कर सकेगे।"

प्रश्न "लोगो को चुनाव की जानकारी नही है।"

विनोबा "देना आप लोगो का काम है।"

श्न : "इस गवर्नमेंट के कारण भी अशांति बहुत है।"

विनोबा "हम आजकल बहुत गुलाम हो गये हैं। हर बात में गवर्नमेंट को याद करते हैं। मानो हमें कुछ करना ही नहीं है।"

सेटलमेंट या अनसेटलमेंट

फिर उन नौजवानों को सोचने के लिए कुछ मसाला मिले और सोचने की दृष्टि भी मिले, शायद इसी खयाल से खुद विनोबा ने ही एक सवाल उनके सामने रखा

"क्या आप लोग किसानों को लगान में वृद्धि करने के लिए कहने को तैयार हैं?"

ज० "यह कैसे हो सकता है?"

विनोबा "यही जवाब मुझे सारे सोशलिस्ट देते हैं। लेकिन आप लोग सोचते नहीं कि चालीस बरस पहले जो एक रुपया या आठ आना फी एकड़ लगान तय हुआ, वही आज कायम रखकर, आप कोई भी हुकूमत, बिना डेफिसिट के कैसे चला सकते हैं? चाहे वह सरकार फिर किसी भी पक्ष की हो। और मान लीजिये कि वही लगान रुपये में नहीं, पर वस्तु में होता—फी एकड़ चार सेर जवारी—तो आज सरकारी खजाने की हालत क्या होती? क्या फिर सरकार आज की तरह गरीब रह जाती? तो यह सेटलमेंट है या अनसेटलमेंट है, जो चालीस साल से एक ही चला आ रहा है? अनाज में लगान तय हो, तो 'लेवी' वसूल करने की भी आवश्यकता नहीं पड़ती। फिर तो 'देवी' ही आपको मिलती। अब आपको भी चुनाव लड़ना है। इसलिए जाहिर है कि आपके मुँह से भी ज्यादा लगान की बात नहीं निकलेगी। और सरकार को अगर गरीब नहीं रखना है, तो लगान तो बढ़ाना ही होगा।"

अमृत-निधि

श्रीमान् भी मिलने आये। रोज की तरह उनसे भी बातें हुईं। नये

इलाके मे प्रवेश था। इसलिए विस्तार से पुन. सारा समझाया। फिर भूमिसम्बन्धी अंक उनके सामने रखे, जो इस प्रकार थे :

एकड	एकड	भूमिवान्	
२०० से	६०० तक	१	७०
६० से	२०० तक	—	
५० से	६० तक	३	
४० से	५० तक	१०	
२० से	४० तक	५६	
१ से	२० तक	१८०	
		कुल २५०	

अंकों के आधार पर पुन चर्चा शुरू हुई·

"अब इन करीब ढाई सौ भूमिवानों मे बीस एकड से कमवाले ही १८० लोग है। २० से ऊपरवाले सत्तर है। और मै तो कुल ढाई सौ के पास से मॉगता हूँ। सुदामा के मुट्ठीभर तदुल से भी भगवान् खुश होते है। तो कमवाले कम दे, पर देना सबको है।"

जमीन के बॅटवारे की सारी योजना भी समझायी। गॉव-समिति की भी बात बतायी, जो एक ट्रस्टी की तरह काम करेगी और लायक आदमियो मे जमीन का बॅटवारा करेगी। उस निधि को आप बढा सकते है। शादी ब्याह के प्रसगो पर, पुत्र-जन्मोत्सव के अवसर पर और अगर कोई मृत्यु हुई तो उसके निमित्त भी। साराश, हर्ष-शोक, दोनो प्रसगो पर आप और नया दान देगे, तो आहिस्ता-आहिस्ता निधि बढती ही जायगी। और इस तरह नयी जमीन उन जरूरतमदो के काम आयेगी, जिन्हे अब तक न मिली हो। परन्तु मान लीजिये कि निधि मे बढती नही हुई, तो भी घटने का तो सवाल ही नही है। जमीन तो अमृत-निधि है।"

पचास फी सदी मार्क

गॉव मे कुल जमीन चार हजार एकड थी। विनोबा ने कहा . "फिलहाल आप लोग दो सौ एकड भी जमा कर ले, तो एक उदाहरण होगा। शहरों

मे मे अधिक-से-अधिक भूमि की अपेक्षा रखता हूँ, परतु देहातो मे लोग अधिक-से-अधिक कितने देते है, यह देखता हूँ। आपका गाँव तो सोशलिस्टो का गाँव है—सोशलिस्ट कार्यकर्ता भी काफी सख्या मे यहाँ है। ढाई सौ लोग देने की क्षमता रखते है। तो अब देखना है कि आप लोग कितने लोगों से दान दिलवाते है। सोशलिस्टो का नाम मने इसी-लिए लिया कि वे दानपत्र अधिक सख्या मे दिलवा सकते है। जो बडे लोग है, वे तो देने ही वाले है। उनसे जमीन लेने की जिम्मेवारी म सोशलिस्ट मित्रो पर नही डालता हूँ। ढाई सो मे से जो एक सो अस्सी है—बीस एकड से कमवाले—उनसे सोशलिस्ट लोग साठ दान-पत्र भी ला सके, तो मै पचास फी सदी मार्क उन्हे दूँगा। और आप जानते है कि तैंतीस फी सदी से कम मे तो कोई कामयाब भी नही होता।"

सोशलिस्ट मित्र तो सभा मे थे ही। एक प्रश्न उन्होने भी पूछ लिया "विनोबाजी! आपने यह सब समझाया वह तो ठीक है। परन्तु ये पढे-लिखे लोग ही इस बात को अधिक समझ सकते है। गरीब अनपढ तो कम ही समझते है।"

"हमारा अनुभव तो उल्टा है"—विनोबा ने मुस्कराकर जवाब दिया।

प्रार्थना का समय हो चुका था, इसलिए सभी लोग सीधे प्रार्थना मे पहुँचे। प्रारम्भ मे गत डेढ माह की यात्राक्रम का थोडे मे सार बताकर फिर अपने काम के बारे मे समझाते हुए विनोबा ने कहा

हम जातिभेद नही मानते

"आज कुछ लोग जाति-पाति का विचार नही रखते है लेकिन व दूसरे वर्गो की कल्पना करते है। वे कहते है कि गरीबो का और श्रीमानो का अलग-अलग वर्ग है और ये दो जातियो के हित एक-दूसरे के विरुद्ध है। तो, यह भी एक तरह का जाति भेद हुआ। इस तरह के किसी जाति-भेद को हम नही मानते। हम हरएक को मनुष्य के नाते पहचानते है। कोई मनुष्य कुछ अधिक भला होता है, कोई उतना भला नही होता यह

हम देखते है। फिर भी हम मानते है कि जो मनुष्य आज अच्छा नहीं दीखता, वह कल अच्छा होनेवाला है। क्योकि हरएक मे सद्भावना के बीज भगवान् ने बोये है। और परिस्थिति अनुकूल होती है, तो किसीके सद्भावना के बीज जल्दी अकुरित हो जाते हैं, किसीको परिस्थिति अनुकूल नही होती है, तो सद्भावना के बीज देरी से अकुरित होते है।"

अपना अनुभव बताते हुए कहा

"आज तक के जीवन मे हमने एक भी मनुष्य ऐसा नही पाया कि जिसमे सद्भावना न हो।"

सद्भावना को जाग्रत करने का रहस्य भी बताया : "गुणो के द्वार से मनुष्य के हृदय मे प्रवेश पाओ। किसीका विरोध किये बिना काम किये जाओ।"

मूल्याकन

जो कुछ काम पिछले एक माह मे हुआ था, उसके सबध मे अपना दृष्टिकोण बताते हुए कहा :

"लोग कहते है, आपको ८ हजार एकड जमीन मिल गयी, इससे क्या हुआ ? इससे झगडे का सवाल थोडे ही हल हुआ। हम जानते है कि ८ हजार एकड नही, ८ लाख एकड जमीन मिलने से भी सवाल हल होनेवाला नहीं है। लेकिन हम तो हरएक के हृदय मे प्रवेश करना चाहते है। तो हम हमारा काम इतना ही समझते है कि सबके हृदय मे जाग्रति पैदा करे। इस तरह हमने लोगो मे प्रचार किया, उनको कुछ चीजे समझायी। वे हमारी बात समझे है या नही समझे है, इसका हमको सबूत चाहिए, तो इस तरह सबूत के तौर पर हम जमीन दान माँगते है। अगर वे विचार समझे है और प्रेम से जमीन देते है, तो इसका अर्थ यह हुआ कि काम प्रेम से ही हुआ, न कि जमीन से। यह एक तरीका है, मूल्याकन करने का। ऐसा हिसाब नही करते कि ६ हफ्ते घूमा और आठ हजार एकड जमीन कमायी। हम तो यह हिसाब करते है कि हमने

प्रवास मे कितने सज्जनो के हृदय मे प्रवेश पाया। एक दीपक से ५० दीपक जलते है, तो हम देखते है कि कितने दीपक सुलग गये है। इसलिए अगर ऐसे कार्यकर्ता तैयार होते है कि जिनके हृदय मे प्रेम-भावना पैदा हुई है, जिनके हृदय मे परमेश्वर का भाव है, जो सेवा करना चाहते है, तो हम समझेगे कि हमारी यात्रा सफल हुई, हमारा काम हुआ। अगर ऐसे कार्यकर्ता, सज्जन नही तैयार हुए है, तो ८ हजार एकड क्या, ८ लाख एकड जमीन मिली, तो भी वह म सफलता नही समझता। हम तो सज्जनो का सघ स्थापन करना चाहते है।'

हमारे काम की कसौटी

श्री लक्ष्मी बहन की मिसाल देकर उन्होंने कहा "हर हफ्ते से वह हमारे साथ है। रोज हमारे भाषणों का अनुवाद करती है। लेकिन अनुवाद का हमे महत्व नही। हम देखते है कि लक्ष्मीबाई एक सज्जन बाई तयार हो रही है। इस तरह के सज्जन अगर १०-२० तैयार हुए, तो हम सफल हुए, ऐसा समझेगे। हमारे काम की हम यही कसोटी समझते है। बाहर से देखेगे, तो गरीबो को जमीन बॉट रहे है और हमारी मनशा भी है कि यह जमीन का मसला हल होना ही चाहिए। लेकिन इस समस्या को हम कठिन समस्या नही मानते। सज्जन-सघ की स्थापना करना यह बडी समस्या है। जो यहॉ पर कठिन काम है, वह हमने हाथ मे लिया है। उसके साथ-साथ यह समस्या भी हल होगी, ऐसा हम मानते है।'

दो आवश्यक व्रत

फिर 'सग्रह वृत्ति' के सबध मे समझाते हुए कहा "जैसे चोरी पाप है, यह ध्यान मे आया है, वैसे ही ज्यादा जमीन रखना पाप है यह ध्यान मे नही आया है। कोई कहते है, हमारे पास जो दस हजार एकड जमीन है, वह हमने सेवा का काम किया, इसलिए हमे मिली है। मे मानता हूँ कि लोगो ने सेवा की होगी, इस वास्ते उन्हे जमीन मिली होगी। जमीन मिली, यह ठीक है, लेकिन रखी काहे के लिए है? म यह नही

कहता कि जो जमीन मिली है, उसमे उस पानेवाले की गलती है। लेकिन उसने अपने पास रखी है, यह उसका पाप है। अगर यह भावना ध्यान मे आयी कि अधिक सग्रह रखना पाप है, तो समाज मे इज्जतवाले लोग अधिक जमीन नही रखेंगे। आप देखेंगे कि ऐसी भावना समाज मे आज नही है। जब यह भावना नही है, तो जो लोग अपने पास सग्रह रखते है, उनको दोष नही दे सकते। आज इस तरह का लोकमत नही है कि सग्रह भी पाप समझा जाय। यह भावना पैदा करना कानून का नही, सज्जनों का काम है और वह मै कर रहा हूँ। आप लोग भूमि देंगे, तो उसका मतलब भी आप समझ लीजिये। मतलब यह है कि गरीबो के बारे मे सोचना हरएक का फर्ज है। मै मानता हूँ और जानता हूँ कि इस कर्तव्य के भान के अभाव मे ही हिन्दुस्तान मे असतोष फैला है। एक बडी लडाई योरोप मे हो गयी, दूसरी की तैयारी चल रही है। ये सारी लडाइयाँ, ये सारी बाते किसलिए? इसलिए कि कुछ लोग काम करते है और बाकी बिना काम किये लाभ उठाना चाहते है, अपने पास सग्रह करना चाहते है। ये सारे महायुद्ध तभी खतम होंगे, जब सारे लोग समझेंगे कि हमे सग्रह अधिक नही करना चाहिए।

"और अगर सग्रह को कम करना है, तो शरीर-परिश्रम के बिना वह सभव नही है। तो एक है, शरीर-परिश्रम का व्रत और दूसरा है, अपरिग्रह का व्रत। ये दो व्रत समाज मे चले, तो हमारी प्रगति हो सकती है। इसके लिए भावना निर्माण होनी चाहिए और यह भावना निर्माण करने का काम मेरा चल रहा है। इस काम मे परमेश्वर ने जो थोडा यश दिया है, वह मै उसीको समर्पण करता हूँ। मुझे जय-पराजय नहीं चाहिए। मै जो काम करता हूँ, उससे मुझे आनन्द है। लोग मेरी आवाज न सुनकर कुछ दान नही देते, तो भी मुझे उतना ही आनन्द होगा, जितना आज होता है। सब लोग मेरी हँसी करते और कहते कि पैदल घूम तो रहा है, लेकिन बनता-बनाता नही है, तो भी मै आनन्द से नाचता कि मै

अपना काम ठीक तरह से कर रहा हूँ। जब समय अनुकूल होता है, तो लोग किसीका सुनते हैं, समय अनुकूल नहीं होता, तो नहीं सुनते।

पद्धति का महत्त्व

"लोग सुनें, न सुनें, उस पर मनुष्य के काम का आधार नहीं है। मनुष्य के काम की योग्यता तो उसके काम करने की पद्धति पर अवलम्बित है। मेरा विश्वास है कि इस काम में लोग योग दें या न दें, लेकिन सब लोगों में प्रेमभाव बढ़ाने का यह काम है, इस वास्ते यह काम सही है। इस वास्ते सही नहीं कि लोग जमीन दे रहे हैं। लेकिन इसलिए सही है कि वह सही ही है।

"अपने विचार मैंने आपके सामने रख दिये। इस गाँव में सोशलिस्ट काफी तादाद में हैं। ये विचार मैंने खास उनके लिए बताये हैं। वे बहुत अच्छी भावना रखते हैं। समाज में परिवर्तन हो, सुख की वृद्धि हो, सब तरफ आनन्द हो, ऐसा वे चाहते हैं। लेकिन इच्छा अच्छी होते हुए भी काम किस ढंग से किया जाय, यह वे नहीं जानते।

"अब मेरा व्याख्यान खतम होता है। अब थोड़ी देर भगवान् का स्मरण करेंगे। कल सुबह ५ बजे दूसरे गाँव के लिए निकलेंगे। उसके पहले जितनी भूमि की वर्षा कर सकते हो, उतनी कीजिये।"

विनोबाजी का आवाहन हुआ और एक भाई खड़ा हुआ। हाथ जोड़कर उसने कुछ कहना चाहा। सबका ध्यान उधर गया। उसके मुँह से बहुत नम्रता से शब्द निकले 'एक सौ पचीस एकड़ मेरी ओर से लिख लीजिये !!!'

लक्ष्मी अम्मा दाता के पास पहुँच गयी। बोली 'अपनी ओर से सवा सौ दिये, तो अपनी सहधर्मिणी की ओर से भी तो कुछ देना चाहिए न ?'

दस एकड़ का दान पत्र लक्ष्मी अम्मा की इच्छानुसार भी भर दिया।

दूसरे एक भाई ने एक एकड़ देना चाहा। जमीन तरी की थी।

अम्मा ने उस भाई से भी कहा 'घर में जो स्त्रियाँ हों—माता-पत्नी,

भगिनी-पुत्री, किसीके भी नाम से दीजियेगा। स्त्रियो की ओर से भी दान मिलना चाहिए।'

एक एकड तरी का और एक दान-पत्र उसने भी लिख दिया।

सोशलिस्ट मित्रो ने कहा : 'दूसरो से मॉगने के पहले हमे खुद अपना दान-पत्र भरना चाहिए।'

'ठीक ही तो है।'

उनमे से भी चार भाइयो ने दान-पत्र भर दिये। श्री बाबूराव ने, जो इस जिले की पदयात्रा का सयोजन भी कर रहे है, अपनी जमीन का चौथा हिस्सा दिया।

● ● ●

सोशलिस्ट मित्रों के बीच (२) : ४६ :

हुजूराबाद
२१-५-'५१

सर्टिफिकेट बताओ

मंजिल रोज के हिसाब से कम थी। केवल आठ मील। आकाश में काली घटाएँ खूब छा गयी थीं। बूँदें भी थोड़ी देर बरस गयीं, सुखद स्पर्श दे गयीं। रास्ते में सोशलिस्ट मित्रों के साथ अच्छी चर्चा हुई। शरीर परिश्रम के बारे में विनोबाजी ने बताया "अगर मेरा चले, तो मैं समाज व्यवस्था भी ऐसी ही बनाऊँ कि चार घंटे सबको उत्पादक परिश्रम करना पड़े। चाहे वह बढ़ई हो, चाहे प्रोफेसर। आज तो लोग व्यायाम और वायु सेवन के लिए घूमने जायँगे, परन्तु अपनी डाक नौकर के जरिये ही डलवायेंगे। सौ-सौ बार उठेंगे-बैठेंगे लेकिन चरखी नहीं चलायेंगे। तो, मेरी व्यवस्था में मैं आप लोगों से सर्टिफिकेट बताने को कहूँगा कि आपने चार घंटा खेती में काम किया है।'

फिर शहरी जीवन की चर्चा निकली, तो उन्होंने कहा :

"आज शहरवालों का जीवन कितना हास्यास्पद है। डेअरीवाला रोज गाय का दूध बोतल से दे जाता है और मिट्टी की गाय बनाकर बच्चों की जिज्ञासा पूरी करनी पड़ती है। जीवनभर आटे की रोटी खाते हैं, लेकिन पता नहीं होता कि गेहूँ क्या है—कहाँ पैदा होता है और कैसे पैदा होता है।"

सर्वस्व-दान

फिर दान के प्रमाण के सम्बन्ध में पूछा गया कि किसी बड़े जमींदार से, जिसके पास दस हजार एकड़ जमीन हो, अधिक से अधिक कितने दान की अपेक्षा रखी जाय? विनोबाजी ने फौरन कहा : "सर्वस्व-दान देकर फकीर

बने। इससे कम क्या अपेक्षा हो सकती है? परन्तु जमीन रखनी ही हो, तो पचास एकड अपने लिए रख ले और शेप १९५० अपने भूमिहीन भाइयो मे तकसीम करने के लिए निकाले। अगर श्रीमान् लोग ऐसा करे, तो देश मे क्राति हो जायगी। ऐसे आदमी को लोग पहले तो पागलखाने मे भेजना चाहेगे, परतु फिर जब समझ जायँगे, तो उसकी सूझ-बूझ की सराहना भी करेगे।"

सफेद बाजार

अर्थशास्त्र की बाते भी निकली। वस्तुओ की दर, मुनाफा आदि पर बहस हुई। विनोबा ने पूछा: "कोई आदमी अपने कबल का चार रुपया मॉगता हो, तो आप कम तो नही देगे, लेकिन क्या ज्यादा देने को तैयार होगे?"

किसीके मुँह से 'हॉ' का जवाब नही निकला।

"आप लोग बोलेगे: 'अजीब मनुष्य है यह।' लेकिन मैने चार रुपये मॉगने पर कबलवाले को छह रुपया दिया है, क्योंकि उसकी माँग ही गलत थी। बाजार मे ही उसका अर्थशास्त्र का वर्ग मैने लिया। कितनी मेहनत से तरकारियॉ पैदा होती है और उनकी खरीद मे सौदा चलता रहता है। यह सफेद बाजार हमारे राष्ट्र को निश्चय ही अनीति की राह पर ले जा रहा है।"

संगठन और क्रांति

दो रोज से सोशलिस्ट मित्र विनोबा के निकट परिचय मे आ रहे थे। विनोबा के विचारो का आकर्षण भी उनमे काफी दिखाई दे रहा था। लेकिन पार्टी का मोह था। विनोबा के पास तो न पार्टी, न सस्था और न सगठन। बिना सगठन के काम भी कैसे बढेगा? इसलिए उन्होने पूछा:

"आप अपनी एक पार्टी क्यो नही बनाते? बिना पार्टी या सगठन के आज कोई काम सभव नही दीखता।"

विनोबा को हँसी आये बिना नहीं रही। उन्होंने पूछा "पार्टी शब्द कैसे बना है, मालूम है ? अगर मैं भी पार्टी बनाकर अपने को दूसरों की तरह एक पार्ट में याने हिस्से में या टुकड़े में सीमित कर लूँ, तो आज मुझे जो सबकी शक्तियों का लाभ मिलता है, वह नहीं मिलेगा। फिर आप लोगों के ध्यान में एक बात अभी तक आयी नहीं दीखती है कि सर्वोदय तो सबकी उन्नति चाहता है। यह काम वह अपनी अलग पार्टी बनाकर कैसे कर सकेगा ? उसे तो 'होल' याने 'पूर्ण' या 'साबित' ही रहना चाहिए। पार्टी तो टुकड़े करती है। हम टुकड़े नहीं करना चाहते। हम तो टुकड़ों को जोड़नेवाले हैं। ये जितनी पार्टियाँ हैं, वे सब एक रोज सर्वोदय में आकर मिलनेवाली हैं, उसमें विलीन होनेवाली हैं।"

सोशलिस्ट मित्रों का समाधान नहीं हुआ। वे कहने लगे : "आपका कहना ठीक है। फिर भी कुछ-न-कुछ संगठन तो चाहिए ही। कृपालानीजी भी गांधी-विचारवाले हैं, पर वे भी संगठन को मानते हैं। स्वयं गांधीजी ने भी तो कांग्रेस के जरिये काम किया। संगठन के बिना कैसे होगा विनोबाजी ?"

विनोबा ने कहा "गांधीजी का जमाना दूसरा था। उस समय अंग्रेजों से मुकाबला था। तो, कांग्रेस के झंडे के नीचे सभी एक हो गये थे। लेकिन स्वराज्य के बाद गांधीजी ने भी कांग्रेस को विलीन कर उसे केवल सेवा-प्रधान लोक सेवक संघ में परिवर्तित हो जाने की सलाह दी थी। कृपालानीजी संगठन में विश्वास करते हैं, क्योंकि वे सत्ता में विश्वास करते हैं। हमारे यहाँ ये प्रयोग बहुत हो चुके हैं। मुहम्मद, रामदास, नानक, सबने संगठन किये, सत्ता का आधार लिया परन्तु नतीजे क्या आये ? मतभेद हुए, झगड़े बढ़े। आखिर वे संगठन तितर-बितर हो गये। फिर यह भी आप लोगों के ध्यान में नहीं आता कि क्रांति कभी सत्ता के जरिये नहीं होती। क्रांति तो सत्ता के बाहर रहकर ही होती है। बुद्ध ने क्रांति की, तो राज्य सँभालकर नहीं, राज्य का परित्याग करके ही की।"

सस्कृति और सौंदर्य

सस्कृति की चर्चा भी निकल पडी।

विनोबा ने कहा · "हम लोगो को न सस्कृति का खयाल है, न सौंदर्य का। हमारी रुचि का स्तर कितना गिर गया है। परसो हम एक गॉव मे ठहरे थे। मकान क्या था, एक जेल ही थी, यद्यपि भीतर से सुदर था। परतु इर्द-गिर्द, चारो तरफ भीषण कुरूपता का दर्शन हो, तो उस बीच सुदरता भी शोभा नही देती। गरीबी के बीच वैभव भीषण प्रतीत होता है। सभ्यता और सस्कृति का लक्षण यही है कि जिन लोगो के बीच हम रहते है, उनके जीवन के साथ हमारी एकरूपता हो। वरना सौंदर्य भी 'अग्ली' (कुरूप) दिखाई देने लगेगा।"

गलत हाथो मे अधिकार

प्रश्न : "रजाकारो के जमाने मे लोग बहुत परेशान थे। फिर 'पुलिस-एक्शन' हुआ, तो थोडे दिन लगा कि बडा अच्छा हुआ। लेकिन रजाकारो की जगह जिस पुलिस ने ली, उससे भी लोग कुछ तग-से आ रहे है। लोगो को ऐसा नही लगता कि बहुत फर्क हुआ।"

विनोबा : "हॉ, ये पुलिस हमारे आज के सरक्षक समझे जाते है। सरक्षक और सेवक, दोनो याने ये हमारे हनुमान् है। चालीस इच छाती, हाथ मे बदूक और चाहे जिसको गोली मार देने का अधिकार ! न ज्ञान, न चरित्र, न सेवा-भाव ! जो अधिकार सत्त्वगुणी लोगो के हाथो मे होने चाहिए, वे तमोगुणी लोगो के हाथो मे दे दिये गये है।"

पडाव नजदीक आ रहा था।

चर्चा को समेटते हुए विनोबाजी बोले : "कितनी दर्दनाक हालत है। पैगबर और ऋषि-मुनि आज के अपने इन अनुयायियो को देखकर क्या कहेगे ? इसलिए आज हमे सबके हृदय का प्रेम, सत्य, दयाभाव प्रकट कराना और उसके लिए हम मानव के हृदय मे प्रवेश करना चाहते है।"

● ● ●

जम्मिकुंटा

१-६-५१

नये ऋतु का सूचक नया मास और उसका भी नया दिवस! बादलों से घिरा आसमान! हवा में नमी! बूँदें बरसने लगीं, तो गाँव भी आ गया। मंदिर में निवास था। दिनभर मंदिर के अनेकविध पूजन-समारोह और आरतियों के मुक्त निनाद में ही विनोबा का कार्यक्रम चलता रहा।

रोज की तरह भूमिवान् तथा कार्यकर्ता मिलने आये। आज शुरू में एक गीत भी गाया गया—"भारत हमारा देश है।" फिर कार्रवाई शुरू हुई। जब से तेलगाना की यात्रा शुरू हुई, भूमिवानों की यह सभा बराबर जारी है और रोज उनके निमित्त कोई-न-कोई नया विचार मिलता रहता है। आज मानव जीवन के कुछ अत्यंत उपयोगी और अत्यंत महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विनोबाजी ने प्रकाश डाला।

स्वयं परमेश्वर भी खुश हुए बिना नहीं रहेगा

विनोबा ने समझाया "केवल जमीन लेना हमारा काम नहीं है। हम तो सज्जनता का प्रचार करना चाहते हैं। आज निरपेक्ष सेवा की भावना कम है। चाहे आप सोशलिस्टों में जायँ, चाहे कांग्रेसियों में, निरपेक्ष निस्पृह सेवा करनेवाले बहुत कम दिखाई देंगे। जेल जाकर आते हैं, तो उसका भी पुरस्कार चाहते हैं। जनता के लिए अपना वित्त और चित्त सारा दे देना बहुत कम पाया जाता है। दस-पाँच गाँवों में कोई एकआध ही ऐसा व्यक्ति मिलता है। इंद्रपद की लालसा रखनेवाले ही बहुत मिलते हैं।"

फिर जीवन की क्षणभंगुरता को समझाते हुए कहा "अब हमारी

ही हालत देखिये । हम वर्धा जा रहे है । लेकिन कौन कह सकता है कि हम वर्धा पहुँच ही जायँगे ? सभव है, हम कल का सवेरा भी न देख सके। सभव है, इधर ही कही समाधि बनानी पडे। इसलिए हमने यह भूमि माँगने का काम शुरू किया है। इसे केवल चित्त-शुद्धि का काम समझकर हम कर रहे है। इसलिए आप जमीन कितनी देते है, यह मद्दे नजर नही है। पत्र, पुष्प, फल, तोय, जो जितना दे, हम स्वीकार कर लेते है। कल हमे सवा तीन सौ एकड भूमि मिली। ज्यादा मिलने से खुश नही होना है, कम मिलने से नाराज नही होना है। यही हमारी कसौटी है। हमारे काम का यशापयश जमीन की तादाद पर नही, हमारे हृदय की हर्षशोक रहितता पर निर्भर है। आपकी भी कसौटी इसीमे है कि आप जो कुछ दे, समझ-बूझकर दे और निरहकार होकर दे। हम आपसे माँगने आये है—हमने अपने को वामन की भूमिका मे रखकर आपको चक्रवर्ती बलि राजा का पद प्रदान किया है। आप जो जमीन देगे, वह आपके गाँव के उन गरीब भाइयो को मिलेगी, जिनके पास न जमीन है, न जीविकोपार्जन के अन्य कोई साधन ही है। तब उसे लगेगा कि मेरे गाँववाले मेरी फिक्र करते है। उसे लगेगा कि यह दुनिया भी रहने के काबिल है और तब वह गीत भी गा सकेगा कि **'भारत हमारा देश है।'** जब आप लोग या आपके गाँव की कमेटी अपने गाँव मे जाकर पूछेगी कि जमीन किसे नही है, तो वे लोग समझेगे, कोई नया युग आया है। उस रोज उन्हे स्वराज्य का अनुभव होगा। ऐसे पन्द्रह अगस्त के रोज हर साल आप रोशनी जलाये, झडे फहराये, गीत गाये, लेकिन बेजमीन गरीब को उसमे कोई दिलचस्पी नही, उससे उसे कोई लाभ नही। लेकिन जब उसे जमीन मिलेगी और वह जानेगा कि उसीके गाँव के भूमिवान् ने दी है, बिना माँगे उसे मिली है तथा देनेवाला उसकी खोज करता हुआ उसके पास पहुँचा है, तो न सिर्फ वह खुश होगा, स्वय परमेश्वर भी खुश हुए बिना नही रहेगा।"

सारी चर्चा उस मंदिर में ही हो रही थी। एकादशी के निमित्त कल दान करनेवाले श्री राजेश्वरराव ने आज भी कुछ दान दिया और अपनी मोटर भेजकर अपने दूसरे रिश्तेदारों को बुलाया। उनसे भी जमीन दिलवायी और खुद भी दी। विनोबा ने कहा : "नये हाथियों को घेरने के लिए पुराने पालतू हाथी ही भेजे जाते हैं। राजेश्वररावजी अब दरिद्रनारायण के लिए पालतू हाथी का काम कर रहे हैं, जो नये-नये दाताओं को ला रहे हैं।" फिर आज जो दान उन्होंने दिया था, उस बारे में विनोबाजी ने सस्मित पूछा

"आज भूमि किस निमित्त से दी?"

"आज द्वादशी है और आप इस मंदिर में ठहरे जो हैं।"

अब लक्ष्मी बहन से नहीं रहा गया। बहनों की हिमायत लेकर उन्होंने कहा : "मैं रोज देखती हूँ, आप अकेले ही सारा पुण्य बटोरते जा रहे हैं। क्या घर में मेरी बहनों को एकादशी-द्वादशी नहीं होती? न उनको आप साथ ही लाते हैं, न उनके नाम से दान ही देते हैं। और एक नया दान-पत्र भरना होगा उनकी ओर से।"

उस दाता ने पचीस एकड़ का एक और दानपत्र अपने घर की स्त्रियों की ओर से भर दिया।

○ ○ ○

दोरा आ रहा है : ४८ :

पोतकापल्ली, कोलनूर
२,३-६-'५१

दोनो रोज फासला कम ही था। रेलवे लाइन से होकर गुजरना था। बूँद-बूँद वर्षा हो रही थी, इसलिए काली मिट्टी पॉव से लिपटती जाती थी। पोतकापल्ली से कोलनूर जाते हुए रास्ते मे एक छोटे-से गॉव से गुजरना था। एक नाई अपना डफ सेक रहा था। बाबा जैसे ही सामने से निकले, वह घबराता हुआ आया और पूछने लगा कि क्या महाराज निकल गये? 'अभी-अभी चले जा रहे है' सुनते ही उसका चेहरा एकदम फीका पड गया। म लूम हुआ कि लोग बहुत देरी से बाबा का इन्तजार कर रहे थे। समय का ठीक अदाज नही था कि कब गुजरेगे। वे अभी नाई से यह कहकर भीतर गये थे कि डफ की आवाज सुनते ही हम दौड आयेगे। इधर उसकी उलझन बढ रही थी, उधर विनोबा तेजी से आगे बढे जा रहे थे। बात की बात मे लोग एक-एक करके दौडने लगे। शुरू मे थोडे लोग विनोबा के पास पहुँच पाये, फिर तो सबने उन्हे घेर ही लिया। रुकने के लिए आग्रह करने लगे, पर बाबा चलते ही जा रहे थे। लेकिन छोटे छोटे बच्चो और स्त्रियो को दौडता देख आखिर वे रुक ही गये। पडाव पर आने की सूचना दी और फिर आगे बढे। इतने मे गॉववालो ने विनय की : "बाबाजी, दोरा आ रहा है, हमारा दोरा आ रहा है। वह दौड नही सकता, आप दया करके थोडा और रुकिये।"

विनोबा ने पीछे देखा, तो एक स्थूलकाय वृद्ध दौडने की कोशिश कर रहा है, लेकिन शरीर उसे इजाजत नही दे रहा है। विनोबा फिर रुक गये। दोरा ने पहुँचते-पहुँचते पॉच मिनट लगा दिये। दस बारह

फुट दूर पर अपनी पग-रखी छोडी। नजदीक आकर बहुत विनम्र भाव से चरण छुये और ऊपर देखा-न-देखा कि विनोबा ने सवाल कर दिया : "कितनी जमीन है?" दोरा का तो हाँफना भी बंद नही हुआ था, पेशी की उसे कल्पना भी नहीं थी। जवाब देना जरूरी था। उसके मुख से सहज भाव से निकल गया : "सवा सौ एकड!" उसका कहना पूरा हुआ कि वामन ने दोरा के सामने हाथ बढाकर पूछ ही लिया : "फिर गरीब के लिए क्या देते हो?"

दोरा क्या जवाब देता है? हाँ कहता है या ना? सबकी निगाहें दोरा पर गड गयीं। उसने पहले से तो कुछ भी नहीं सोचा था, लेकिन हाथ जोडकर तत्काल कह दिया : "पाँच एकड।"

दोरा के भीतर से कौन बोला? एक क्षण पहले दोरा को भी पता नहीं था कि उसे कुछ देना होगा। किसीने उसे आकर समझाया भी नही था। कोई महापुरुष इधर से गुजर रहे है, इसलिए दोरा और उसका सारा गाँव दर्शन करने जुटा था। लेकिन जो दर्शन दोरा के कारण सबको मिला, वह विशेष दर्शन था। यह दर्शन ठौर-ठौर मिलता ही जा रहा है। विनोबा जमीन माँगने निकले है या ध्रुव की तरह सबको भगवान् के दर्शन कराने निकले है? ● ● ●

पदोपल्ली
४-६-'५१

सोलह हजार की बस्ती, पर देहातो मे जो उत्साह नजर आता है, वह यहाँ नही है। कुछ तो प्रचार की कमी है, क्योकि कार्यकर्ताओ की ही कमी है। जो है दो-चार, वे मात्र सोशलिस्ट है। उनकी शक्ति की मर्यादा है। प्रभाव की भी मर्यादा है। शहरो मे तो उनका अभी प्रभाव जम ही नहीं पाया है।

कम्युनिस्टों का आदोलन इधर विशेष हुआ नही है, फिर भी डकैती और खून-खराबी से जिला अछूता नही है।

नलगुडा और वरगल की तरह यहाँ के श्रीमानो को कम्युनिस्टों का इतना भय नहीं कि गाँव छोडकर जाना पडे। फिर भी आज चद जिम्मेदार और साधनवान् लोग गाँव से बाहर है कि कही भू-दान मे जमीन देनी न पडे।

"ना तो नहीं कहते है न? भाग जाने का अर्थ ही है कि आज नही तो कल देगे।" विनोबा ने हम लोगो के लिए भाष्य किया।

चद लोगों की अनुपस्थिति के कारण भूमिवानों की सभा का नित्य-क्रम टला नहीं। जमींदार और पट्टेदार, दोनो आये। कार्यकर्ता भी काफी सख्या मे थे।

मालिक का हक

हैदराबाद प्रदेश की यात्रा भी अब जल्दी खतम होने को थी। विनोबाजी ने इसलिए कुछ अधिक विस्तार से समझाना उचित समझा

"हम देख रहे है कि स्वराज्य के बाद लोगो में सेवा-वृत्ति कम हो

रही है। भोग-वृत्ति बढ रही है। जो कुछ आदोलन दिखाई देता है, वह भी इस मकसद के लिए कि हुकूमत किन हाथों मे हो। हुकूमत है, तो अपने ही हाथों मे। फिर भी चूँकि चुनाव सामने आ रहे है, कशमकश इस बात के लिए है कि कौन चुना जाय—सत्ता किसे सोपी जाय। नौकर किसे बनाया जाय कि भरोसे से काम कर सके। बस, आजकल लोगो मे सारा आदोलन इसीलिए हो रहा है। इसमे गलत कुछ नहीं है, मालिक को हक है कि वह अपनी पसदगी का नोकर चुने।

अकरण, विकरण, सुकरण

"काम बहुत महत्त्व का है और मुश्किल भी है। हर कोई आपसे आकर कहेगा कि उसने और उसके पक्ष ने क्या-क्या किया। दूसरो ने क्या-क्या बुराइयाँ की, यह भी बताई जायँगी। इस तरह दूसरो के बारे मे तो कुछ अकरण, कुछ विकरण, दोनो का जिक्र करेंगे। यह भी बता देगे कि दूसरों के द्वारा सुकरण या योग्यकरण तो कुछ हुआ ही नहीं। हाँ, जिस पक्ष की सरकार होगी, वह पक्ष अपनी सरकार की बढिया तस्वीर लोगो के सामने रख देगा। लेकिन इस सारे आदोलन का हेतु सत्ता-ग्रहण और सत्ता-सरक्षण ही है।

"इसमे शक नहीं कि जिनके हाथ मे सत्ता है, वे चाहे तो बहुत कुछ कर सकते है। परतु जहाँ एक बार हम सत्ता मे जाकर बैठते है, तो एक पार्टी के 'डिसिप्लिन' मे जाकर बैठते है। फिर हमारी परिस्थिति और हमारी इच्छाएँ, दोनो मे खाई पडना शुरू होता है। हमारे काम की गति कुछ बढ सकती है। कुछ अधिक बन आने का भी आभास हो सकता है। हमारे पहले जो लोग थे, उनसे जो गलतियाँ होती थी, वे ही गलतियाँ हमसे शायद न हो, लेकिन दूसरी ओर नयी-नयी गलतियाँ होती हैं। डेमाक्रेसी मे यह सारा होता रहता है और देश की जो समस्याएँ है, वे अछूती ही रह जाती हैं।

चुनावो का शाप

"हिंदुस्तान की समस्या याने सिर्फ शहरो की ही समस्या नहीं है। हमारी समस्या तो हमारे देहातो की समस्या है। इन चुनावो के कारण लाभ तो शायद न मालूम क्या होगा, वह तो भविष्य बतायेगा। लेकिन जो नुकसान होनेवाला है, वह मेरे सामने स्पष्ट दिखाई दे रहा है। आज ही देश मे झगडे कम नही है। उन सबमे चुनाव के कारण एक नया झगडा शुरू होनेवाला है। अपने-अपने पक्ष का राग अलापनेवाले जब देहातो मे पहुँचेंगे, तो देहात का अग-अग इतना छिन्न-विच्छिन्न हो जायगा, पक्ष-भेद हर देहात मे इतने बढेगे कि फिर वहाँ कोई सार्वजनिक सेवा का काम होने की सभावना न रहेगी।

सत्ता की लड़ाई

"हमने अनेक गाँवो मे देखा है कि वहाँ कोई सेवक तो होता है, परतु वह किसी न-किसी पक्ष का होता है। उसको कोई सहकार्य न मिले और सेवा का मौका ही न मिले, ऐसी कोशिश दूसरे सब पक्षवालो से इसलिए होती रहती है कि कही उस सेवा के जरिये उसका प्रभाव न बढ जाय। सेवा से गाँव का लाभ होगा, यह तो ठीक है। पर बडी भारी हानि यह होगी कि हमारे खिलाफ पक्षवाले का प्रभाव बढ जायगा। हम इसे कैसे बर्दाश्त कर सकते है! तो, अब यह आपस की कौरव-पाडवो के बीच की लडाई इस देश मे शुरू हो गयी है। स्वराज्य की लडाई अग्रेजो के मुकाबले थी, इसलिए उसका ढग दूसरा था। आज सत्ता की लडाई है। अपने-अपने वीरों को तैयार किया जा रहा है। फिर कुछ लोग सत्ता मे चले जायँगे। और जो नही जा पायेंगे, उनके दिलो मे मत्सर शुरू होगा। फिर दूसरी प्रक्रिया शुरू होगी—दोष देखने और उन्हे जाहिर कर उनके बारे मे सतत टीका करते रहने की।

"हिन्दुस्तान का दुःख, जो असीम है और जिसे मिटाने की हमने गाधीजी के नेतृत्व मे कोशिश की, उसके मिटने की कोई उम्मीद नही

दीख रही है। दुःख न मिटेगा, तो असतोष बना रहेगा, बढ़ता रहेगा। सत्ताकाक्षी पक्ष उस असतोष से लाभ उठाते रहेंगे। इस तरह एक पार्टी सत्ता मे आयेगी, तो दूसरी पार्टी सत्ता से अलग होगी—पार्टियाँ आयेंगी और जायेंगी, लेकिन लोगो के दुःख दूर होंगे।

आत्म-शुद्धि का प्रयोग

"मुझे यह सब आप लोगो के सामने इसलिए कहना था कि गाधीजी ने स्वराज्य की लडाई के साथ भी अनेक रचनात्मक आदोलन जोड दिये थे। जब कि उनके पास कोई सत्ता नहीं थी, तब भी उन्हाने दीर्घदृष्टि से अनेक काम हमारे सामने रखे, हमसे करवाये। आत्म-शुद्धि का एक सामूहिक प्रयोग ही उन्होने हमसे करवाया।

"लेकिन अब हमारे कुछ लोग सोचते है कि अब तो स्वराज्य आ गया, अब इस कार्यक्रम की क्या जरूरत है, खादी की क्या जरूरत है, ग्रामोद्योगों की क्या जरूरत है? अब तो सभी विद्यालय राष्ट्रीय विद्यालय है, अलग से नयी तालीम की क्या जरूरत है? अब तो मिले बढनी चाहिए। अस्पृश्यता-निवारण की तो जरूरत ही नहीं, क्योंकि उसका तो कानून ही बन गया है। साराश, किसी बात की तीव्रता नहीं रही। जो कुछ कार्यक्रम गाधीजी ने हमे बताया और हमसे करवाया, उसकी या तो अब जरूरत ही नहीं या जरूरत है, तो सरकार उसे कर ही रही है। हमारे लिए करने का कुछ रहता ही नहीं, सिवा इसके कि हम चुनाव लडे और सरकार को चुन दे।"

विनोबा के शब्दो मे निराशा नहीं थी, परतु वेदना जरूर थी। यद्यपि प्रकट चिंतन चल रहा था, चिंता भी जाहिर थी। वे किंचित् रुके और पुन. प्रवाह शुरू हुआ .

"मै चाहता हूँ कि आप लोग गभीरता से इन समस्याओ पर सोचे। लोकशक्ति से ही सरकार शक्तिशाली बनती है। लेकिन जो लोग सरकार

की शक्ति से शक्तिशाली बनना चाहते है, वे उल्टा सोच रहे है। वे खुद भी कमजोर बनेगे और सरकार को भी कमजोर बनायेगे।

नेता और नौकर

"एक बात और है। आप लोग नेतृत्व के लिए भी सरकार की ओर देखते है, यह गलत है। नेता जब सरकार मे चला जाता है, तब वह नौकर बन जाता है—नेता नही रहता। सरकार मे जाते ही आपका 'मॅडेट' उस पर लागू होता है, वह आपके हुक्म के बाहर नही जा सकता। आपकी इच्छा के विरुद्ध आपसे शराब छोडने के लिए नही कह सकता। लेकिन जो सरकार मे जाता नही, बाहर रहकर काम करता है, उस पर कोई पाबदी नही कि लोग शराब-पसद है, तो उनके मन की ही बात हो। वह सुधारक है—नेता है, आपके बीच रहकर काम करता है। आपको अपने साथ आगे-आगे लेता ही जाता है। स्वराज्य के अदर क्राति के काम सरकार मे जाकर हम नही कर सकते, यह रहस्य आपको समझ लेना चाहिए। आक्रमण से आपकी रक्षा करने के लिए वे मिलिटरी बढा सकेगे। दगा-फिसाद बद करने के लिए वे ज्यादा पुलिस रख सकेगे, लेकिन आक्रमण और दगा-फिसाद के कारणो को वे दूर नही कर सकेगे, क्योकि सरकार तो लोकानुयायी होती है। लोगो को आगे ले जाने का, उनमे क्रातिकारी परिवर्तन करने का प्रयत्न अगर वह करेगी, तो उसे गद्दी से नीचे उतरना होगा।"

अनेक उदाहरण देकर विनोबा ने सरकार की मर्यादित शक्ति का विश्लेषण किया और अत मे कहा ·

युवको का आवाहन

"आप लोगो को—शहरवालो को लगता होगा कि अब स्वराज्य के बाद करने के लिए कुछ रहता नही। लेकिन ऐसा नही है। मैने परिस्थिति आपके सामने रख दी है। अब आपको सोचना चाहिए। तेलगाना का यह क्षेत्र सेवा के लिए बडा अच्छा है। सेवक को सेवा के क्षेत्र मे अगर खतरो का

मुकाबला करना पडता है, तो उसकी सेवा और भी तेजस्वी हो उठती है। ऐसे खतरे के स्थान इस प्रदेश मे है। इसलिए अगर नौजवान लोग सेवा के लिए आगे आना चाहे, तो उनके लिए स्वर्णसंधि है। कम्युनिस्टो मे मैने देखा कि पढे-लिखे नौजवान कितने उत्साह मे आगे आते है। लेकिन मुझे अपनी दो माह की यात्रा मे तो मुश्किल से दस-बारह सेवक मिले है। म आशा करता हूँ, इसके पहले कि मे हैदराबाद की सरहद छोडूँ, और कुछ नौजवान जरूर मुझे मिलेगे।'

फिर अपने काम के बारे मे भी कहा

बगावत का झंडा

"जैसा कि आपने अखबारो मे पढा, यह सही है कि मै अपनी ओर से ही यहाँ आया हूँ, किसी संस्था आदि की ओर से नही आया हूँ। आप लोगो से मुझे इतना ही कहना है कि जो समस्या तेलगाना के दो जिलों मे है, वह ओर जगह नही है—ऐसा न समझे। जहाँ जहाँ भी आप विषमता कायम रखेगे, वहाँ वहाँ उन दोनो जिलो मे जो कुछ हुआ, उसकी पुनरावृत्ति के लिए गुजारिश देगे। फिर अगर वहाँ ये कम्युनिस्ट प्रकट न होगे, तो ओर कोई प्रकट होगे। जहाँ चार हजार की बस्ती मे आठ-आठ सो हरिजन भूमिहीन रहते हो, जहाँ गदी और टूटी-फूटी झोपडियो के बीच महल खडे हो, जहाँ भुखमरी और भिखमगो के बीच मिष्टान्न भोजन चलता हो, वहाँ उस विषमता के खिलाफ बगावत का झडा कोई-न-कोई फहराये बगैर नही रहेगा।

पुन नेतृत्व सँभालिये

"मुझे भी पता नही था कि कोई रास्ता मुझे तेलगाना की समस्या हल करने का मिलेगा। पर भगवान् ने रास्ता दिखाया और मेरे शब्दो मे शक्ति भर दी। आप लोग देशमुख, जमीदार, सभी यहाँ है। आप लोगो ने अब तक अपने लोगो के बीच नेतृत्व किया है। आज आप देखते है कि आपके प्रति लोगो के क्या भाव है। पर मे आपसे एक कदम, पहला

कदम, उठवाना चाहता हूँ। आप अपने गरीब भाइयो के लिए जमीन का हिस्सा दीजिये और उनकी सेवा मे लग जाइये। भगवान् चाहेगा, तो आपका नेतृत्व पुनः बना रहेगा। आप अपने भाइयो के विश्वास-पात्र बन सकेगे।

एक एकड़वाला भी जमींदार

"और मै कह देना चाहता हूँ कि मै जमीदारो मे छोटे-बडे का भेद नही करता, यद्यपि सहूलियत के लिए मुझे वैसी भाषा का प्रयोग करना पडता है। मेरी दृष्टि मे तो जिसके पास एक एकड भी जमीन है, वह जमीदार ही है। क्योकि जमीन एक ऐसी चीज है, जिस पर किसी एक का हक नही है—सबका है। इसलिए आज तो जिनके पास कुछ भी जमीन है, वे सब एक पक्ष मे है—'है' वालो के और जिनके पास 'नही' है, वे दूसरे पक्ष मे है—'नही' वालो के। मै इन 'नही' वालो के लिए आप सबसे, जो 'है' वाले है, माँगने आया हूँ। मै एक हवा पैदा करना चाहता हूँ। विचार-क्राति चाहता हूँ। इसलिए आज शाम तक दरिद्रनारायण की थैली आप भर दीजिए और इस सदेश को सबके पास पहुँचाइये।"

इसके बाद एक-एक ने आकर दान देना शुरू किया और करीब साढे तीन सौ एकड जमीन का दान ऐलान हुआ। ● ● ●

कैसी धर्म-शून्यता

: ५० :

इसमपेठ
५-६-'७१

चौदह मील की मंजिल। जंगल और पहाड़ का रास्ता। किंतु न नल गुंडा के जंगलों की तरह छूटा हुआ वीरान जंगल और न पहाड़ ही वहाँ की तरह वृक्षहीन। घना सुन्दर जंगल और वैसे ही घने सुन्दर पहाड़। सारा इतना घना कि कहीं-कहीं बिना प्रकाश के रास्ते का दिखाई देना भी असंभव। अरुणोदय की लालिमा ने लताओं की जालियों में से निखरना शुरू किया है। हर किरण में होड़ हो रही है कि कौन पहले इस अनोखे यात्री के चरण छूता है। सूर्यलोक के उन निवासियों के पास पृथ्वी पर स्वर्ग उतारनेवाले इस जादूगर की कहानी कबकी पहुँच चुकी थी और प्रतिदिन बिना-नागा बड़े सवेरे उसका यात्रापथ आलोकित करके इस महान् यज्ञ में अपना सहयोग देने का काम उन्होंने स्वेच्छा से अपनी ओर ले लिया था। दु:खी, पीड़ित धरती की आर्तता को दूर करके उसके कण-कण को स्वतंत्रता का अनुभव करानेवाले इस वामन के चरण-युगल उन्हें इसलिए भी प्यारे थे कि वे ही इस अनोखी क्रांति के वाहक थे, आधारस्तंभ थे। बिना उनकी सहायता के विनोबा के द्वारा लोकमानस को इस नये धर्म की दीक्षा भी कैसे मिल पाती?

वातावरण की उस नयनमनोहरता में पास के एक सरोवर ने तो चार चाँद ही लगा दिये। वहीं एक शिला पर बैठकर सवेरे का कलेवा करके विनोबा ने उस समानधर्मा साम्ययोगी सरोवर का उचित गौरव भी कर लिया।

प्रकृति का वह ऐश्वर्य कम्युनिस्ट मित्रों का स्मरण दिलाये बगैर कैसे

रहता ? कारण ऐसे ही स्थान है, जहाँ हमारे ये भाई अपने को सुरक्षित पाते है, शेरो और अन्य हिंस्र पशुओ के बावजूद। करीमनगर जिले को उन्होने विशेष छूआ नही था। परतु यहाँ भी आठ-दस आदमियों की एक टोली है, जिसने इर्द-गिर्द की जनता को त्राहि-त्राहि कर रखा है और उस टोली का सपर्क कम्युनिस्टो के साथ है। पुलिस ने उन सबको गिरफ्तार किया है, पर अब भी दो फरार है।

हैदराबाद से चलते समय सरकार ने चाहा था कि सुरक्षितता की दृष्टि से कुछ हथियारबद पुलिस साथ रहे, तो अच्छा। लेकिन विनोबा ने ऐसे किसी प्रकार के प्रबध के लिए साफ इनकार कर दिया था। इसलिए पिछले दोनो जिलो मे भी रक्षको का जो दर्शन नही दिखाई दिया, वह यहाँ उपस्थित देखकर आश्चर्य हुआ। जगलो मे दोनो ओर तथा आगे और पीछे हथियारबद पुलिस चल रही थी। अर्थात् ही इतने फासले पर कि विनोबा का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट न होने पाये। अब जैसे ही उजियाला होने लगा, वे लोग एक-एक करके पीछे खिसकने लगे। मालूम हुआ कि यहाँ कम्युनिस्टो का, डाकुओ का और हिंस्र पशुओ का, ऐसा त्रिविध भय होने के कारण विनोबा की पूर्व-इजाजत के बिना ही और उनकी नाराजी की जोखिम उठाकर भी इस आज की ही मजिल भर के लिए यह खास प्रबध किया गया था और वह भी मात्र सवेरा होने तक के लिए।

पहाड से मैदान मे उतरे, तो ६ बज गये थे। सिवा छिटपुट पेडो और पौधो के कुछ भी नजर नही आ रहा था। थोडी दूरी पर झाडियो मे कुछ झोपडियाँ दिखाई दी। मालूम हुआ कि यही पडाव का स्थान है। अगवानी मे लोग आज तक के किसी भी पडाव से कम आये थे। पर जितने भी आये, मानो अपनी सारी हार्दिकता और भक्ति-भावना को आँखों की अँजली मे भर लाये थे। वे फूल, वे पत्ते और वह दीपक, श्रीफल आदि तो प्रतीक मात्र थे।

डाकुओं की पिपासा

ग्राम-प्रदक्षिणा ने सारा रहस्य खोल दिया। २८ मार्च की याने बिलकुल ताजी घटना बतायी गयी कि नौ आदमी आये, मिवैया के मकान को घेरा, बदूक की आवाज की, तो सिवैया जो मकान पर सो रहा था, पास के पोट्टपाल नामक गाँव मे भग गया। स्त्री-बच्चो ने जगल की शरण ली। भोजैय्या पर गोली चलायी, तो कुऍ मे कूदकर उसने अपनी प्राण-रक्षा की। मल्लैय्या के घर को घेर लिया गया। उसे बाँध डाला, बहुत पीटा, उससे रुपयो की माँग की और वे वसूल भी किये। कुल बीस मकान जला दिये गये, जिनमे मजदूरो के ग्यारह थे। चालीस हजार के करीब नुकसान हुआ। मूँगफली, चना, ज्वारी, सारा भस्म कर दिया गया। अवशेष आज भी गवाह दे रहे है। साढे पाँच बजे शाम से साढे तीन बजे सवेरे तक मे सारा काम तमाम हुआ। एक व्यक्ति को प्राणो से भी हाथ धोना पडा।

यह सब क्रोध क्या इसी गाँव पर बरसा ? तो मालूम हुआ कि आस-पास के भी कुछ गाँवो को इस पिपासा का शिकार होना पडा। जिस दिन ऊपर की घटना हुई, उसी रात को नजदीक के और दो गाँवो को भी ऐसा ही सब भुगतना पडा। पास के एक पोट्टनूर गाँव मे तो ६०-७० हजार का नुकसान किया गया। यहाँ एक कारण यह भी था कि एक बार इन डाकुओ की गिरफ्तारी हुई और मुकदमा चला, तो गाँववालो ने गवाह देने का जुर्म किया था।

इतना दु ख बरसा था। आधे से अधिक लोग गाँव मे नही थे। किसीका आतिथ्य करने या किसीके सामने अपना दुखडा रोने का भी अर्थ था, उसकी सजा पाने के लिए तैयार रहना। ऐसी सारी भीषण परिस्थिति मे भी भारतीयता यहाँ अपने सारे वैभव और वैशिष्ट्य के साथ उपस्थित थी। हर मकान सुन्दर लिपा-पुता था। दीवारो पर तरह-तरह की चित्रकारी की थी—रास्ते और आँगन सारे छिडकावा देकर

स्वच्छ किये गये थे। अपनी आत्यतिक पीडा को भूलकर भी ग्रामवासियों ने सारा वातावरण मगलमय बनाने की कोशिश की थी।

गॉव मे प्रवेश हुआ, तब से रात के दस बजे तक दरखास्ते जारी रही और शेप के लिए किसी भाई को पीछे छोड जाने का प्रबन्ध करना पडा।

इतना दुःख जहॉ हो, वहॉ सात्वना और मार्गदर्शन के सिवा और क्या हो सकता था। लेकिन वहॉ भी विनोबाजी ने भू दान मॉगा और पाया भी।

गलत तरीका

प्रार्थना के समय तक इर्द-गिर्द देहातो से अनेक लोग जमते गये। आज प्रार्थना मे भी मानो करुण रस बार-बार उमड आ रहा था। शुरू में विनोबाजी ने गॉव की परिस्थिति के बारे मे सहानुभूति के उद्गार प्रकट किये। फिर कम्युनिस्टो के बारे मे कहा

"आज भी उन लोगों को मै समझाना चाहता हूॅ कि जो तरीका उन्होने अख्तियार किया है, वह बिलकुल गलत है। इस तरह खून-खराबी और लोगों को तकलीफ देने से वे गरीबो की सेवा न कर सकेगे। यह तो मै इसलिए कहता हूॅ कि वे दावा करते है कि हम गरीबो की सेवा करना चाहते है। दो-तीन साल हुए, यहॉ उन्होने खून खराबियॉ की, लेकिन गरीबो की कुछ सेवा नही कर पाये। बल्कि सारे लोग उनसे तग आये है और उनको भी पहाडों मे छिपे रहना पडता है।"

जिस टोली ने इस गॉव मे आतक छाया था, उसके बारे मे विनोबा ने कहा "यह जो ८-१० लोगों की टोली घूम रही है, उनके कानो तक हमारी यह बात पहुॅचे, तो हम उनसे कहना चाहते है कि यह उनका मार्ग गलत है, वे इसे छोड दे। अगर वे किसी तरह हमे मिलते, तो हम उनको यह बात जरूर समझा देते। हम तो उनके साथ प्रेम का सबध रखते है और दूसरों के साथ भी प्रेम का सबध रखते है। क्योकि हम महसूस करते है कि वे गुमराह हुए है, उन्होंने गलत रास्ता पकडा है, फिर भी वे हमारे ही है।"

सह वीर्यं करवावहै

फिर ग्रामवासियों को शस्त्रों का आधार छोड़कर निर्भय बनने की प्रेरणा देते हुए उन्होंने कहा

"आखिर यह भी सोचना चाहिए कि डर किस बात का है ? मरने का डर ? अगर गाँव मे कोई पिस्तौल लेकर आता है और सारे लोग डरते है, तो यह भयानक वस्तु है। लोगों को आपस-आपस मे सहकार करना चाहिए। अगर सारे लोग मौके पर इकट्ठे होते है, तो गाँव को बचा सकते है। इस गाँव मे कुछ नही, तो भी २०० लोग है। अगर वे हिम्मत रखते और एक-दूसरे को हिम्मत देते, तो जो कुछ दुर्घटना हुई, वह न हो पाती। मै यह भी जानता हूँ कि ये जो लोग घूमते है, वे आप लोगों के घर मे ही कभी-कभी आकर रहते है। क्योंकि अगर कोई घर उनके लिए नही है, तो वे टिक कहाँ सकते है ? वे गाँव मे आते है, तो डर के मारे लोग उनको घर मे रखते है। इस तरह लोग डरपोक बनते है, तो उनको ये लोग और भी डराते है। मैने तो यह भी सुना कि एक गाँव मे एक कम्युनिस्ट आया, तो उसको देखने के लिए लोग भी आये थे। उसने उन लोगों के सामने एक मनुष्य को मार डाला। वह दृश्य सारे लोग भयभीत होकर देखते ही रहे। अगर उस वक्त सभी लोग उस पर एकदम हमला करते, तो वह १-२ लोगों को मारता, लेकिन आखिर पकड़ा ही जाता। हमारे सामने एक निर्दोष मनुष्य की हत्या होती है और हम डरपोक होकर देखते रहते है, यह तो बिल्कुल धर्मशून्यता है। ऐसे मौके पर तो अपनी जान खतरे मे डालकर भी उसको बचाना हमारा कर्तव्य है। अगर हम प्राण के लिए डरते है, तो वह तो जाता ही है, टिकता नही है। तो, इस वास्ते आप लोग डर छोड़ें और कोई प्रसग आयेगा, तो निडर होकर सामना करना सीखें।'

• • •

रुक्मिणी की भक्ति चाहिए : ५१ :

सेवाश्रम : मचेरिआल
६-६-'५१

करीमनगर जिला आज खतम हो रहा है, आदिलाबाद मे प्रवेश हो रहा है। वर्धा से आते हुए भी प्रवेश आदिलाबाद् मे से ही हुआ था, अब लौटते समय भी आदिलाबाद की ही सीमा मे से गुजरना है। जिले के विस्तार की कल्पना इससे आ सकती है।

आज की यात्रा मे शुरू मे जगल था, फिर दुतर्फा पहाडी, फिर दोनो तरफ खूब घने पेड और अत मे गोदावरी का सात फर्लांग विस्तृत पात्र। किनारे पर बडी-बडी चट्टाने और खूब बाला—बीचोबीच आर्षवाणी की तरह नित्यनूतनता का सदेशवाहक सरिता-नीर। दाहिनी ओर लबा-चौडा रेलवे का पुल। दो वर्ष पहले जब दक्षिण-भारत की यात्रा करके विनोबाजी सेवाश्रम की स्थापना के लिए यहाँ आये थे, इसी पुल से गाडी गुजरी थी। विनोबाजी के डिब्बे मे दक्षिण-भारत के लोगो द्वारा अत्यत भक्तिभाव से भेट किये गये अनेक सुन्दर मानपत्र और अन्य सभी उपहार रखे हुए थे। पुल के बीचोबीच गाडी आयी और विनोबा ने वे सारे मानपत्र तथा अन्य महत्त्वपूर्ण वस्तुएँ, जो एक साथ रखी हुई थी, गोदा-माता को समर्पित कर दी। साथ मे श्री अच्युत भाई थे, पर वे देखते ही रह गये। विनोबा के लिए यह कोई नयी घटना नही थी। बहुत पहले ही वे अग्निनारायण को अपने प्रमाण-पत्र समर्पित कर चुके थे और गगामाई की गोद मे अपनी कितनी ही कलाकृतियाँ बहा चुके थे। साथियो को भी सग्रह की हवा न लग जाय, इसलिए अपने बस का सब कुछ करने का अनुग्रह ही था वह कि वे मान-पत्र आदि सारी चीजे

नदी को भेट कर दी गयी थी। वे चीजे राष्ट्र की संपत्ति थी। दक्षिण-भारत की भावना की वह अनमोल निधि थी। इस तरह उसको नष्ट न करना चाहिए था, ऐसा आज भी लोग कहते है। परंतु समर्पण के लिए अनमोल निधि ही विनोबा योग्य समझते है।

करीमनगर जिले के लोगो ने विनोबा को प्रणाम किया, विनोबाजी ने उन्हें विदा दी और किनारे से ही लौट जाने का आदेश दिया। मचेरिआल के कुछ लोग इधर आ ही पहुँचे थे—अगवानी के लिए वर्धा से श्री वल्लभस्वामी तथा श्री राधाकृष्णजी बजाज भी आये थे। काफिला नदी को पार किये बढ़ता गया। सामने उस पार आगमन का उत्साह था और पीछे इस पार थी बिछोह की कष्टानुभूति। साथ मे दोनों जिले के भक्तजन थे। नदी के पात्र मे दोना ऐसे लगते थे कि मानो अपनी दोना गोद मे माता ने बालकों को उठा लिया हो।

किनारे पहुँचते-पहुँचते बूँदें बरसने लगीं। तेलगाना की सफल यात्रा के उपलक्ष्य मे मानो आकाश से वृष्टि ही हो रही थी। रणभेरियाँ बजने लगीं। अन्य अनेक वाद्य बारी-बारी से अपना-अपना स्वर पूरी सहृदयता से सुनाने लगे। पताकाएँ ऊँची-ऊँची फहराने लगीं। जयजयकार की दुदुभि से सारा वातावरण गूँज उठा। भगीरथ के दर्शनो के लिए जनता उमड पड़ी।

भिखारियों से आश्रम नहीं चलते

आश्रम मे ऋषियों की परंपरा के अनुकूल स्वागत-समारोह संपन्न हुआ, स्वामी सीताराम शास्त्री जो उपस्थित थे। आश्रम की स्थापना के समय से आश्रम के साथ उनका संपर्क और सहयोग रहा है। चंद युवक है, जिन्होंने आश्रम को अपना जीवन अर्पण कर दिया है। एक ट्रस्टी मंडल है, जो आश्रम के संचालन मे सहायता करता है। ट्रस्टियों को शिकायत है कि आश्रम का काम संतोषजनक नहीं चल रहा है, क्योंकि आश्रम मे लोग बहुत कम है। चहल-पहल नजर नहीं आती। एक भाई

ने तो यहाँ तक सुझा दिया कि मचेरिआल मे भिखारी लोग बहुत ज्यादा प्रमाण मे है, उनमे से कुछ चुने हुए लोगो को आश्रम मे क्यो न लिया जाय ?

ट्रस्टी महोदय का विचार सुनकर विनोबा को आश्चर्य हुआ। सचालको के विचार की सफाई होना आवश्यक था, इसलिए उन्होने कहा

"भिखारियो से आश्रम नही चला करते। आश्रम का काम संतोष-जनक ढग से तो तब चलेगा, जब आप अपने बच्चो को यहॉ भेजेंगे। वर्धा मे हमने आश्रम की स्थापना की, तो जमनालालजी ने अपने लडके-लडकियों को वहॉ दाखिल कराया। यह राधाकृष्ण भी वहॉ था। आठ-आठ घटे इन लोगो ने शरीर-परिश्रम का काम किया। आज राधाकृष्ण ग्रामसेवा मडल जैसी सस्था का सचालक है। यह मैने दृष्टात के तौर पर बताया। भिखारियो को भेजना हो, तो मेरे साथ भेज दो। मै घूमता रहता हूॅ, वे भी मेरे साथ घूमेगे। आश्रम को तो स्वावलम्बी बनाना है। काचन-मुक्ति का प्रयोग यहॉ करना है। क्या ऐसे प्रयोग भिखारियो से हुआ करते है ?"

आश्रमो के लिए दो पर्याय

विनोबा ने आश्रमवासियो से कहा : 'निपाणी' रहकर यहॉ का कोई काम नही होगा। पानी के लिए पवनार की तरह कुॅआ खुदना चाहिए। विनोबा ने आश्रमवालो के सामने दो पर्याय रखे—"एक तो शरीर-परिश्रम द्वारा आश्रम मे काचनमुक्त स्वावलबी जीवन का दर्शन प्रकट करना या फिर गॉव को सेवा की इकाई मानकर पाठशाला, दवाखाना, ग्राम-सफाई वगैरह कार्यक्रम अपनाना। दूसरे प्रकार मे सरकारी मदद भी ली जा सकती है, परतु पहला प्रकार स्वावलबन का है, जैसे परधाम आश्रम का है। वित्तच्छेद करने की हिम्मत हो, तो यह प्रयोग कर देखो। परिश्रम की आदत अभी जैसी चाहिए, वैसी नही है। परतु अगर आप लोग आज आवा

घंटा परिश्रम करते हैं, तो कल से रोजाना एक मिनट भी बढ़ायें, तो एक वर्ष के भीतर-भीतर किसी भी किसान की बराबरी से काम कर सकेंगे।'

आश्रमवासियों को शुरू से ही कांचन-मोचनी की उपासना का आकर्षण था। 'एक साधे सब सधे' ऐसी उनकी निष्ठा थी। इसलिए वही कार्यक्रम उन्होंने अपनाया।

दादीजी

सवेरे से इतनी देर चुपचाप बैठी मदालसा बहन ने सजल नेत्रों से प्रणाम किया। वे वर्धा से लौट आयी थीं। दादीजी अब नहीं रहीं। मदालसा बहन के पहुँचने के बाद दूसरे ही रोज वैशाखी एकादशी को सायंकाल चार बजे उनका देहावसान हुआ था। ठीक नौ वर्ष पहले इसी वेला में और एकादशी के दिन ही उन्होंने अपने प्यारे पुत्र जमनालालजी को विदा किया था।

जमनालालजी अक्सर कहते, अगर मुझमें कोई धार्मिकता, दयाभाव, सौजन्य, उदारता और स्नेहभाव है, तो वह सब मेरी माँ की देन है। रोज सवेरे वे तीन बजे उठकर माँ के पास बैठ जाते। वह तपस्विनी उन्हें रोज अच्छे-अच्छे भजन सुनातीं। मृत्यु के पहले-पहले तक वे कातती रहीं। वस्त्रपूर्णा की तरह उनके सूत का कपड़ा तैयार होता। जिस दिन गयीं, उस दिन भी नियम से प्रार्थना-भजन तो किया ही था।

एक गुजराती कवि ने लिखा है :

जननी जण तो भक्त जण का दाता का शूर।
नहि तो रह जै वाझणी मों गुमाविश नूर॥

श्री किशोरलाल भाई ने ठीक ही लिखा है कि श्री जमनालालजी जैसे भक्त, दाता और शूर, तीनों गुणों को धारण करनेवाले पुत्र को जन्म देकर दादीजी ने उपर्युक्त आदर्श सार्थक किया है।

'मदालसा बहन से दादीजी की मृत्यु का सारा हाल सुनकर विनोबा

मौन-समाधि मे लीन हो गये। दादीजी को भारतीय आत्मा की वह मौन श्रद्धाजलि ही थी।

तेलंगाना से बिदाई

सभा के लिए शहर मे जाना था। आयोजन बिदाई की सभा का ही था, यद्यपि प्रत्यक्ष बिदाई मे अभी देरी थी, क्योकि अभी दो-चार पडाव और भी इस जिले मे बाकी थे। समारोह का आयोजन पूरे उत्साह से किया गया था। लक्ष्मी बहन का हृदय आज न मालूम कैसी और कितनी भावनाओ से ओत-प्रोत था। उनसे कुछ कहते ही नही बनता था। विनोबा के पास आकर बैठी, तो विनोबा ने स्नेहपूर्ण भाव से पूछा : "कहो लक्ष्मी बहन, क्या कहना चाहती हो ?"

"आपको हमारी प्रार्थना माननी होगी।"—लक्ष्मी बहन ने बडी मुश्किल से जवाब दिया।

"क्या है प्रार्थना ?"

"आज तुला-दान का प्रबध है। तुला मे आपको बैठना होगा।"

लक्ष्मी बहन की भावना तो विनोबा समझ सकते थे। परतु ऐसे अनेक प्रलोभनो को वे अब तक कई बार सफलतापूर्वक इनकार कर चुके थे। उनका खयाल था कि लक्ष्मी बहन को समझाना कठिन न होगा, क्योंकि अत्यधिक भावुक होने पर भी वह विवेकी भी है। परतु लक्ष्मी बहन का बालहठ बना रहा। विनोबा की इनकारी के बावजूद वे यह आशा लेकर सभा-स्थान पर गयीं कि उन्हे किसी-न-किसी तरह मनवा लेगे।

सभा-स्थान पर पहुँचते ही विशाल जनसमुदाय ने उत्थानपूर्वक समादर किया। बिदाई की भावना और विजयोत्सव के सकेतों से सारा वातावरण अभिभूत नजर आया। मच को न जाने कितने भिन्न-भिन्न तरीके से सजाया गया था। लक्ष्मी बहन की कला-निपुणता ने साधनो के अभाव मे भी बडा सुसस्कृत और सुन्दर दर्शन उपस्थित किया था। पूरा मच कदली-स्तभो और आम्र-पल्लवों से सुशोभित था। सामने मिट्टी के

और ताम्र, लोह आदि विविध धातुओं के कलश, फिर जगमगाती दीवटे और ऊपर शीशे की छत मे इन सबका प्रतिबिंब। चारो ओर विविध रग की गूँथी और जुडी हुई सूत की लच्छियाँ भी ऐसी मनोहर प्रतीत हो रही थी, मानो 'ॐ' तत्त्व मे विश्व-हृदय ही पिरोकर रखा गया हो।

विनोबा ने जैसे ही मच पर आसन ग्रहण किया और जनता को अपने युगल हाथो से वदन करना चाहा कि ठीक उसी समय ऊपर से फूलो की वर्षा हुई और सामने लोगो ने पुन. एक बार करतल-ध्वनि से अपने नेता का अभिवादन किया। 'महात्मा गाधी की जय' से वातावरण गूँज उठा। वास्तव मे यह गाधी की और गाधी के विचार की ही जय थी, जिसे न सिर्फ राष्ट्र की जनता, किंतु स्वय राष्ट्रपिता भी अपने अव्यक्त व्यक्तित्व से निहार रहे थे।

इसके पहले कि विनोबाजी उपस्थित जनता से कुछ कहते, कुछ समारोह होना बाकी था। स्वामी सीताराम ने वेद-मत्रों का पाठ किया। चदन, तिलक, माला, आरती आदि के बाद शुरू मे मितभाषी, मधुर-स्वभाव, धीरगभीर, निष्ठावान् कोदड रेड्डी बोलने के लिए खडे हुए। उन्होने अब तक की प्राप्त भूमि के अक बताये। रोज यही काम उनके जिम्मे था। लोगो की दरखास्ते सुनने तथा उनके बारे मे विनोबाजी का निर्णय प्राप्त करने मे उन्होने बहुत बडा योग दिया था। हैदराबाद के भूदान-कार्य का भावी आकार उनके व्यक्तित्व मे प्रकट होना था। बैठने से वे पहले कुछ बोलना चाहते थे। मन बिछोह की भावनाओ के कारण कुछ भारी था। कितना बडा काम हो गया। काम तो हुआ ही, पर मगल कितना हुआ। यह सारा ईश्वरीय अनुग्रह था। कृतज्ञता के भावो से कोदड रेड्डी का हृदय ओतप्रोत था। आखिर वाणी के बजाय नेत्रो ने ही मदद दी। कोदड रेड्डी ने प्रणाम किया और आसन ग्रहण किया।

फिर श्री केशवरावजी उठे। गत सात सप्ताह से पदयात्रा के कारण

केशवरावजी ने अपने घर-बार या अन्य सार्वजनिक काम से मुक्ति-सी ही पा रखी थी। भूमि प्राप्त करने, यात्रा का संयोजन करने, कार्यकर्ताओं को जुटाने आदि का अनेकविध काम उन्होंने किया था। सबसे विशेष बात यह थी कि प्राय: रोज घूमते वक्त वे पोतना के भागवत से उत्तमोत्तम काव्य विनोबा को सुनाते रहते थे। न जाने उन्हें कहाँ से इतना सारा याद हो आता था। विनोबाजी की पदयात्रा के कारण वातावरण और व्यक्तियों में जो परिवर्तन हुआ, उसके वे साक्षी थे। इसके पहले के रजाकारों तथा कम्युनिस्टों के आन्दोलनों को भी वे देख चुके थे। निराशा से आशा और तिमिर में से ज्योति की ओर ले जानेवाले इस भूदान-आंदोलन और उसके प्रणेता के प्रति श्रद्धा-भक्ति समर्पण करके तथा भविष्य में भी इसी काम को करने की प्रतिज्ञा जाहिर करके प्रणामसहित उन्होंने भी अपना वक्तव्य समाप्त किया।

अब श्री लक्ष्मी बहन की बारी थी। विनोबा के सामने बालिका की तरह उनका हृदय अभिभूत हो उठता था। यात्रा में उन्होंने संत की और उनके सहयात्रियों की सेवा तथा चिंता में कोई कसर नहीं रखी थी। पडाव पर पहुँचने तक वे आगे आगे रास्ते के गाँवों को जगाती हुई चलती कि कहीं संत के दर्शनों से लोग वंचित न रह जायँ। पडाव पर पहुँचते ही पाकशाला में पहुँचकर अन्नपूर्णा की तरह सबके खाने-पीने का समुचित प्रबंध करती। सभी प्रकार की सभाओं और मुलाकातों में स्वयं उपस्थित रहकर जब भी आवश्यकता हो, अनुवाद का काम अत्यंत नम्रता से एक विद्यार्थी की तरह किये जाती, सीखने की दृष्टि से सब करती। वे जगह-जगह बहनों की सभाओं का संयोजन करती, उनमें खुद अव्यक्त रहकर सहयात्रियों के व्याख्यानों का आयोजन करती। रात को दस-ग्यारह भी बज जाते, परंतु जब तक सब खा न लें, खुद न खाती। सवेरे निकलने के पहले भी माँ की तरह सबकी चिंता करती, सोनेवालों को प्यार-दुलार से जगाती, किसीको चूडा-चबेने का, तो किसीको

दूध दही का कलेवा कराकर निकलतीं या फिर सोगात साथ ले चलतीं। फिर वह बीच-बीच में उत्तर-रामचरित या शाकुंतल आदि में से कोई श्लोक या श्लोकार्ध के निमित्त कुछ प्रश्न विनोबा से पूछ लेतीं, जिसके उत्तर से सभी को श्रवण-भक्ति का लाभ मिलता। विनोबा के बाल्जीवन की एक-एक बात उन्होंने विनोबा के मुख से बड़ी चतुराई से और भक्तिभाव से सुनी। वे अपने को धन्य समझतीं कि ऐसे महापुरुष का सत्संग पाया। अब तक की सारी आकांक्षाएँ पूरी करने के लिए ही मानो उन्होंने आज तुला का संयोजन किया था और विनोबाजी को आज वे तुला में बैठा देखना चाहती ही थीं। लेकिन दोपहर की चर्चा के बाद हिम्मत न हुई कि फिर से खुद प्रस्ताव करें। इसलिए वह काम तो उन्होंने स्वामी सीताराम पर सौंपा। यात्रीदल के हर व्यक्ति के बारे में अपने प्रेमोद्गार प्रकट करके जिनके कारण यह सब संभव हुआ, उनके चरणों में भी कुछ निवेदन करना चाहती थीं। लेकिन तब उनकी सारी भक्ति गंगा इतनी उमड़ आयी कि केवल चरण छूकर उन्हें बैठ जाना पड़ा। फिर श्री महादेवी ताई ने भी सभी सहयात्रियों की ओर से हैदराबादवालों को हार्दिक धन्यवाद दिये। उनके थोड़े शब्दों में भी सबके हृदय के उद्गार ठीक प्रतिध्वनित हो रहे थे।

तुलादान का आग्रह

अब स्वामी सीताराम उठे। उन्होंने विनोबा से प्रार्थना की कि तुला में बैठने की कृपा करें। उन्होंने अपनी सारी बुद्धि-शक्ति से समझाने की कोशिश की। धर्मग्रंथों के आधार दिये। कृष्ण का दृष्टांत दिया और प्रार्थना की कि तुलादान स्वीकार हो। स्वामीजी के निवेदन पर विनोबा मंच के सामने आये। तालियाँ गूँज उठीं। लोगों ने समझा कि अब जरूर तुला में बैठेंगे। तुला के एक पलड़े में सूत की जो विशाल राशि थी, वह भी लोगों को इस समय विशेष रूप से सुशोभित दिखाई देने लगी। लक्ष्मी बहन ने तुला सँभाली। अब विनोबाजी उसमें बैठेंगे, इस

आशा से सभी उनकी ओर एकाग्र देखने लगे। विनोबा ने मच के सामने आकर बोलना शुरू किया :

अनुसरण चरित्र का नहीं, भक्ति का !

"स्वामी सीताराम ने मुझे आप लोगों की ओर से तुला में बैठने के लिए कहा है। आप सबके प्रेम का मैं किन शब्दों में वर्णन करूँ ? मैं उसे अनुभव कर रहा हूँ। स्वामी सीताराम ने कृष्ण भगवान् का जिक्र किया कि उन्होंने भी अपनी तुला करवायी थी। ...लेकिन रुक्मिणी देवी ने तो एक तुलसी-दल ... ..." भावनाओं का वेग इतना अधिक हुआ कि विनोबा फिर आगे न बोल सके। कठ रुँध गया, आँखों से सरिता बह निकली। उसी भावावस्था में विनोबा कितनी ही देर खड़े रहे। सारी जनता भी उस पावन भाव-स्पर्श से पुनीत स्पदित हो उठी। वह उनको उसी गभीरता से एकाग्र मन से निहारती रही। सारा वातावरण एक अभूतपूर्व भक्तिरस से ओतप्रोत हो उठा। कितनी ही देर बाद फिर, जब बोलने का बल अनुभव किया, तो पुनः उस प्रशात गभीर वातावरण में उनकी वाणी प्रस्फुटित होने लगी : ... "हमें भगवान् के चरित्र का अनुसरण करना न चाहिए। हमें तो रुक्मिणी की भक्ति का अनुसरण करना चाहिए। फिर यह देह तो नष्ट ही होनेवाली है। जो चीज जानेवाली है, उसको महत्त्व देना ठीक नहीं ।"

उपस्थित जनों की भावनाओं का वर्णन करना कठिन है। सभी के नयनों में भक्ति-गगा साकार हो उठी। सूत की तुला न होकर भी हो ही गयी। सारा सूत विनोबाजी को अर्पण किया गया। प्रार्थना हुई। प्रार्थनोत्तर भाषण में विनोबा ने तेलगाना की जनता को, दाताओं को, सरकार को, सभी को धन्यवाद दिये। कार्यकर्ताओं के लिए खास तौर से कहा :

"आपको मैं धन्यवाद तो क्या दूँ ? आशीर्वाद देता हूँ कि खूब काम करो। जैसा प्रेम हम पर किया है, वैसा सब पर करो।"

एक और जबर्दस्त वार

दिनभर के इस मुद-मंगलमय और उत्साह-भरे प्रेरक समारोह को शाम को आयी एक खबर ने मानो विषाक्त कर दिया।

सोने से पहले खबर मिली कि नल्गुंडा के जिस सज्जन ने भू-दान में सौ एकड़ भूमि दी थी और जो अब तक अपने गाँव नहीं जा पाया था, विनोबा के भाषण से प्रेरणा पाकर अपने लड़के को साथ लेकर अपने गाँव गया था। कम्युनिस्टों ने उस लड़के को इसलिए मार डाला कि उसने अब तक उनका साथ देने से इनकार किया और अब भी साथ देना नहीं चाहता था।

विनोबा को इस खबर से बहुत ही दुःख हुआ। ऐसे कई घाव उन्होंने इस यात्रा में अब तक अनुभव किये थे। तेलंगाना-यात्रा की समाप्ति पर यह खबर मानो एक और जबर्दस्त वार ही था, जो कम्युनिस्टों ने अपने कार्य पर अपने हाथों कर लिया था। ० ० ०

अहिंसा को ट्रायल दीजिये : ५२ :

मचेरियल
७,८-६-'५१

नया रूप—नयी प्रेरणा

आज मृग नक्षत्र का महान् पर्व !

सारे देश के लिए अनेक आशाओ तथा आकाक्षाओ का क्षण !

सदा-सर्वदा केवल ईश्वरीय अनुग्रह पर अवलम्बित रहनेवाले किसान के लिए तो सुतराम् अद्वितीय महान् पर्व है ।

और उनके लिए, जो आज तक भूमाता की सेवा तो करते रहे, किंतु जिन्हे अपनी कहने के लिए एक इच भी भूमि नही—भूमि के एक कण पर भी जिनका प्यार या सेवा का स्वामित्व नही—उनके लिए भी ! उनके लिए तो एक नये युग का सदेश—प्रकाश की एक नयी ज्योति है । उनके उजडे खँडहरो को हरा-भरा करने का एक नया आश्वासन है । उनके दिलो मे दीपावली की आकाक्षा जगानेवाला पावन क्षण है !

सात जून !

पैतीस वर्ष पहले इसी समय भारत की एक महान् तपोभूमि गुर्जर-प्रदेश मे प्रेम और करुणा का सगम हुआ था ।

मछदर और गोरख की भेट हुई थी ।

बापू और विनोबा की प्रथम मुलाकात हुई थी ।

बापू के उस उत्तराधिकारी को पता भी न था कि पैतीस वर्ष बाद मुझे बापू के अपूर्ण काम को लेकर, अहिसा का सदेश गॉव गॉव, घर-घर पहुॅचाना होगा और उसके लिए भूदान की गगा का अवतरण भी होगा ।

बापू के महानिर्वाण के तीन वर्ष बाद, जब कि चारो ओर अँधेरा छाया-सा दीखता था, इस देश मे वामनावतार का चमत्कार हुआ ।

तीन वर्ष तीन घटिकाओं की तरह प्रतीत होने लगे हैं। नया रूप और नयी प्रेरणा लेकर मानो बापू ही पुनः हमारे बीच अवतरित हुए हैं।

भाषावार प्रांत-रचना

प्रातःकाल नित्य की भाँति आज विनोबाजी घूमने नहीं निकले। आज ९ बजे से हैदराबाद के कार्यकर्ताओं के प्रथम भूदान-सम्मेलन का आयोजन था। सात-साढ़े सात बजा होगा। विनोबा की गंभीर मुद्रा पर गहरा चिंतन प्रकट हो रहा था। चारपाई पर विनोबा विश्राम करते से दिखाई दे रहे थे, परंतु हृदय में पैंतीस वर्ष पूर्व की पावन स्मृतियाँ जाग उठी हों, तो आश्चर्य नहीं।

इतने में स्वामी सीताराम आये। उन्हें वक्त दिया गया था।

आज उन्हींकी अध्यक्षता में सम्मेलन होनेवाला था।

पर इस समय तो वे कुछ महत्त्व की बातचीत करने आये थे। बापू की अनुपस्थिति में बापू के उत्तराधिकारी से सलाह-मशविरा करने आये थे। स्वतंत्र आंध्र-प्रांत के निर्माण के प्रश्न पर प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू तथा राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद के साथ उनका पत्र-व्यवहार शुरू था। विनोबा को वे पत्र दिखाने और उनसे परामर्श करने आये थे।

यदि एक निश्चित तिथि तक आंध्र-प्रांत का निर्माण न हो सका, तो आमरण अनशन की बात उन पत्रों में थी। सरहदी जिलों के बारे में 'प्लेबिसीट' का सुझाव था। प्रांत न बनने की सूरत में, संस्कृति और भाषा को पहुँचनेवाले नुकसान की दलीलें थीं। स्वामीजी चाहते थे कि अपने इस आयोजन में विनोबा का आशीर्वाद और सहयोग प्राप्त हो।

किसी गहराई में से वृत्तियों को हठात् बाहर लाने का प्रयत्न करके विनोबा ने बोलना शुरू किया

"दिल्लीवालों की भूमिका भी हमें समझनी चाहिए। मैं नहीं मानता कि वे स्वतंत्र आंध्र-प्रांत करने के बारे में उदासीन हैं या स्वतंत्र प्रांत नहीं चाहते। परंतु उनकी भी दिक्कतें हो सकती हैं। आंध्र का निर्णय हुआ,

तो फिर कर्नाटक का भी होना चाहिए। कर्नाटक आज पाँच हिस्सों में विभाजित है, इसलिए उसकी कोई बात बन नहीं पाती। इस तरह दिल्लीवालों की दिक्कत बढ़ती जाती और नये-नये मसले पेश होते जाते हैं। इसलिए वे कहते हैं, ठहर जाओ, नहीं तो हमारे देश में पाकिस्तानी मनोवृत्ति निर्माण होगी। दिल्लीवालों के सामने दूसरे मसले भी हैं। कम्युनिस्टों का सवाल है, कश्मीर का सवाल है, पाकिस्तान का सवाल है। मैं खुद भाषावार प्रांत-रचना के पक्ष में हूँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि जनता का कारोबार जनता की भाषा में चलना चाहिए। परंतु जब हम कोई कदम उठाते हैं, तो देश की परिस्थिति और शासकों की दिक्कत, सबका खयाल करना जरूरी है।"

फिर उपवास के बारे में चर्चा हुई :

उपवास का अनौचित्य

"अब आपने उपवास करने की बात अपने पत्र में लिखी है। उपवास के लिए सबकी सहानुभूति होनी चाहिए। हम और आप, दोनों गांधीजी के अनुयायी हैं। दोनों एक विचार के हैं। लेकिन मुझे भी यदि आपके उपवास की बात न जँचती हो और मेरे जैसे आदमी को भी आप अपने उपवास का औचित्य न समझा सकें, तो क्या लाभ? फिर अगर उपवास करने की आवश्यकता हो, तो आप ही क्यों करें? क्या इसलिए कि आप आंध्र के हैं? उपवास जरूरी हो, तो आप-हम, सभी क्यों न करें? इसलिए मेरा खयाल है कि आपको उपवास का विचार छोड़ देना चाहिए।"

सरहदी जिलों के बारे में

फिर सरहदी जिलों के 'प्लेबिसिट' के बारे में भी चर्चा हुई। विनोबा ने कहा : "प्लेबिसिट के मैं बिलकुल खिलाफ हूँ। सरहदी जिलों के बारे में विवाद नहीं होना चाहिए। वे किसी भी प्रांत में रहें, तो उसके बारे में असंतोष न होना चाहिए। प्लेबिसिट चाहे जैसा 'हैंडल' किया

जाता है, उसमें बहुत खराबी है। इसलिए सरहदी जिलों के बारे में तटस्थता होनी चाहिए कि वे कहीं भी रखे जायँ। भाषा के नुकसान की बात गलत है। सरहद के लोग दोनों भाषाएँ जानते हैं। भाषा को नुकसान तब पहुँचता है, जब उस भाषा में लिखनेवाले अच्छे नहीं होते। जब तक तेलुगु में पोतना और महाराष्ट्र में ज्ञानेश्वर पड़े हैं, तब तक इन भाषाओं का कोई नुकसान नहीं होनेवाला है और न इन्हें कोई नुकसान पहुँचा ही सकता है।"

विनोबा ने अन्त में कहा .

"चुनावों के पहले तो आपको यह उपवास किसी भी हालत में नहीं करना चाहिए।"

शास्त्रीजी : "शायद चुनाव अभी न हों।"

विनोबा "मैं नहीं मानता। दिसम्बर-जनवरी में नहीं, तो मार्च में होंगे। नये बजट के पहले चुनाव हो जायँगे। चुनाव के बाद आपको सोचने का मौका मिलेगा। तब तक आपको मौन रहना चाहिए। फिर उपवास का कदम उठाने के पहले आपको जवाहरलालजी से मिलना चाहिए। उनकी भूमिका भी समझ लेनी चाहिए।"

शास्त्रीजी "आप इतना तो मानते हैं न कि आन्ध्र प्रांत अलग होना चाहिए?"

विनोबा . "मानने का सवाल ही नहीं है। सभी मानते हैं कि आंध्र का प्रांत अलग होना चाहिए। लेकिन मैं एक बात और आपसे कह देना चाहता हूँ। दो भाषाओं का एक प्रांत रहे या बने, तो भी मुझे कोई हर्ज नजर नहीं आता। उदाहरणार्थ महाराष्ट्र और गुजरात को लीजिये। ये दोनों एकत्र क्यों न रहें? व्यवस्था के लिए चाहें तो इनके अलग-अलग हिस्से रखे जा सकते हैं। फिर आज अगर बापू होते, तो कर्नाटक और आन्ध्र, दोनों से कहते कि जाओ, दोनों मिलकर निर्णय कर

आओ। लेकिन आज तो हमे ये सब काम 'सेटर' से करवाने है और उनकी स्थिति ऐसी है कि अभी हम आग्रह नही कर सकते।"

स्वामीजी चाहते थे कि उपवास के बारे मे विनोबाजी किंचित् भी अनुकूलता प्रकट करे। परतु विनोबा आखिर तक पूर्ण असहमति ही जाहिर करते रहे।

भावी संयोजन

सम्मेलन की कार्रवाई शुरू हो, इसके पहले हैदराबाद के भावी कार्य की दृष्टि से कुछ योजना के बारे मे विचार-विनिमय करना जरूरी था। एक समिति के निर्माण के बारे मे विनोबाजी गत दो-तीन दिनों से सोच रहे थे। एक नतीजे पर भी पहुँचे थे। हैदराबाद के सार्वजनिक जीवन से वे अब पूरी तरह परिचित हो चुके थे। यह उनकी हैदराबाद की तीसरी यात्रा थी। कार्यकर्ताओं तथा नेताओं से भी उनका अच्छा परिचय हो गया था। पुलिस-यात्रा के बाद जब वे यहाँ शाति कायम करने आये थे, तब की कमेटियो के कामो का उन्हे अनुभव था। यह काम तो इतना महान् था कि इसके सयोजन मे पूर्ण सावधानता की जरूरत थी। समिति का पक्षभेदो के प्रभाव से सुरक्षित रहना आवश्यक था, इतना ही नही, भिन्न-भिन्न पक्षवालो से कुशलतापूर्वक काम ले सकने की क्षमता भी उसमे होना जरूरी था। इन सभी दृष्टियो से विनोबाजी ने सम्मेलन के पहले ही कार्यकर्ताओ से कुछ महत्त्वपूर्ण चर्चा कर ली।

भूदान-कार्यकर्ता सम्मेलन

ठीक ६ बजे सम्मेलन की कार्रवाई शुरू हुई। स्वामी सीताराम ने सम्मेलन के सभापति का स्थान ग्रहण किया। अपने प्रास्ताविक भाषण मे उन्होने सम्मेलन का उद्देश्य समझाया तथा गत दो माह मे तेलगाना मे भू-दान की जो अभूतपूर्व घटना घटी, उसके लिए परमेश्वर को धन्यवाद दिये तथा तेलगाना के कार्यकर्ताओ को अपनी जिम्मेवारी का भान कराया।

सम्मेलन मे जिले-जिले के कार्यकर्ता आये थे। नेतागण भी आये थे। उपस्थिति अच्छी थी।

शुरू मे कार्यकर्ताओ ने अपने अपने विचार तथा अनुभव प्रकट किये। सबको तीन-तीन मिनट का समय दिया गया था। फिर विनोबाजी ने बोलना शुरू किया। शिवरामपल्ली-सम्मेलन का स्मरण ताजा हो गया। अभी-अभी तो वहाँ विनोबाजी ने तेलगाना-यात्रा का सकल्प जाहिर किया था। शाति सैनिक को हैदराबाद से विदा हुए अभी सात सप्ताह भी नहीं हुए थे कि तेलगाना की प्रयोगशाला मे अहिसा का शोधन हो गया। अहिसा की शक्ति का साक्षात्कार हुआ। एक प्रभावकारी पद्धति, प्रक्रिया हाथ आयी, जिसके जरिये आर्थिक, सामाजिक मसले सुलझाये जा सके।

विनोबाजी की वाणी से प्रयोगकारी की नम्रता, सैनिक की सतर्कता और भक्त की दृढता निखर रही थी।

प्रारभ मे उन्होने वर्धा से अब तक की यात्रा का स्थूल लेखा बताया। फिर अपनी यात्रा का उद्देश्य समझाते हुए कहा

"मन मे तो ऐसा था कि खतरे के मुल्क में जा रहे है, अगर इस खतरे का कोई उपाय मिल गया, तो अच्छा है। और अगर इस खतरे का खुद को ही अनुभव आया, तो भी अच्छा है, क्योंकि उसमे से शातिमय उपाय सहज ही सूझ सकेगा। ऐसा कुछ मन मे सोचा था। किंतु परमेश्वर की कृपा हुई और सारा वातावरण ही बदल गया।"

बुद्धिहीनता की पराकाष्ठा

कम्युनिस्टो की हिसा-प्रणाली के बारे मे उन्होने असदिग्ध शब्दो मे कहा : "वयस्क मत धकार के बाद भी हिंसक तरीके का परित्याग न करना एक ऐसी गलती है, जिसे कोई भी प्रजा और प्रजा की सरकार बर्दाश्त नही कर सकती।"

जो बाते अपनी बुद्धि को भी न जॅचती हो और जो देश-हितविरोधी

हाँ, 'डिसिप्लिन' और 'लायल्टी' के नाम पर उनसे चिपके रहने की कम्युनिस्टों की मनोवृत्ति को विनोबाजी ने बुद्धिहीनता की पराकाष्ठा बताया।

समिति-निर्वाचन का अहिंसक तरीका

भू-दान में जो नौ हजार एकड जमीन मिली थी, उसकी भावी व्यवस्था के बारे में उन्होंने कहा :

"इसके बारे में मुझे बहुत ज्यादा चिंता नहीं है। एक कमेटी मुकर्रर की जाय और वह ये जमीनें गरीबों के पास पहुँचा दे। इसी तरह और भी जमीनें माँगने का अधिकार उस समिति को दिया जाय। इस वास्ते एक समिति मुकर्रर करने का विचार कई दिनों से मेरे मन में आता रहा। कई नाम मेरे सामने आये। दूसरों ने सुझाये। मैं भी सोचता गया तो बड़े लोगों के—जो लोग सरकार में हैं उनके और जो जनता के साथ अच्छा सपर्क रखते हैं, उनके—नाम मेरे मन में आये। दूसरे सज्जनों के भी नाम आये। हमारे सर्वोदयवालों के भी नाम मन में आये। इस तरह कई नाम आये। लेकिन आखिर हमने सोचा कि अहिंसा का जो सीधा तरीका है, वही हमें अपनाना चाहिए। तो, एक दिन मेरे मन में आया कि जो लोग विशेष ज्यादा वजन नहीं रखते, ऐसों के नाम उसमें होने चाहिए और बाकी जितने पुराने लोग हैं, उनकी मदद हमें चाहिए। मान लीजिये कि समिति में दस-पाँच नाम हमने रख लिये, तो वे दस-पाँच लोग ही काम करनेवाले हैं, ऐसी बात नहीं है। इस काम में तो सारे-के-सारे शामिल होने चाहिए। यह जो समिति बनेगी, वह लोगों से जमीनें लेने और उनको गरीबों में बाँटने का काम याने मजदूरी का काम करेगी। जो मुश्किलें आयेंगी या समस्याएँ निर्माण होंगी, उन्हें मेरे सामने रखेगी। इस तरह की मजदूरी का काम जहाँ करना है, वहाँ ऐसी समिति उन्हीं लोगों की बनायी जाय, जिनका लोगों में खास वजन नहीं है, लेकिन जो काम करनेवाले हैं।

"सोचते-सोचते मुझे लगा कि जो लोग मेरे साथ रहे हैं और जिन्होंने

मेरा काम करने का ढग देखा है, ऐसे लोग चुनने चाहिए। सोचने पर तीन नाम मेरे सामने आये और मैंने उनको चुन लिया। एक तो आपकी यह लक्ष्मीबाई है, जो बहुत दिनों से तेलगाना मे आपका काम करती आयी है और जिनसे हमने भी काम लिया है। दूसरे, हमारे नलगोंडा के केशवराव, जिन्होंने हमारा काम करने का सारा ढग साथ रहकर बारीकी से देख लिया है और तीसरे हैं, आपके ये कोदडराव। और भी दो-चार थे, लेकिन हमें तीन बस हुए। ज्यादा की आवश्यकता नहीं लगी। ये तीनों लोग हमारी तरफ से जो जमीनें मिली है, उनको गरीबों के पास पहुँचाने और ज्यादा जमीन माँगने का भी काम करेंगे। अर्थात् जो जमीन देनेवाले और दिलानेवाले है, ऐसे सब लोग उनके साथ मुलाकात कर लेंगे। हमने इस समिति को कह दिया है कि हमारी इच्छा यह है कि ये जमीनें सीधे गरीबों के पास पहुँचें।"

मैं गहि न गरीबी

भूमिदान मे सारी जमीन विनोबाजी के नाम पर ही मिल रही है। इस बारे मे अपनी भावना प्रकट करते हुए उन्होंने कहा : "मैंने कोई व्यक्तिगत दान तो लिया नहीं है। हो सकता है कि हमारे नाम से दान देने की प्रेरणा लोगों को हुई हो। उसका उपयोग करना हो, तो करे। मुझे उसकी परवाह नहीं, क्योंकि मेरी दृष्टि से वह शून्य है। यह सारा काम गरीबों के लिए है। आज तक हमने उनका नमक खाया, परन्तु अभी तक उनको दिया कुछ नहीं। इसलिए अत्यत अनुतापयुक्त चित्त से यह काम हम कर रहे हैं। किसी प्रकार की उपकार की भावना तो हमारे मन में है ही नहीं। हाँ, सदमा जरूर है कि हम अब तक पूरी तरह गरीब न हो पाये। "नाथ गरीब निवाज मैं गहि न गरीबी"—भगवान् तो गरीब की ही रक्षा करते है। मै पूरी तरह से गरीब नहीं बना, तो मेरी रक्षा भगवान् कैसे करेंगे?"

मेरा नाम गरीबों का ही नाम है

बोलते-बोलते कृतज्ञता और वेदना, दोनों गगा-यमुना की तरह बह निकली। बहुत देर तक विनोबा कुछ भी न बोल सके।

"ठीक यही प्रार्थना मै करता हूँ"—विनोबाजी ने सारी शक्ति एकत्र कर पुनः बोलने का प्रयत्न किया: "लेकिन मुझे इस बात का सदमा है कि बावजूद अखड कोशिश के मै अभी तक परिपूर्ण गरीब नही हो सका। तो, परमेश्वर मुझे क्षमा करे, इतना ही भाव मेरे मन मे है। हम जो काम कर रहे है, उसमे गरीबों पर कोई उपकार नही हो रहा है। बल्कि हमे जो पश्चात्ताप हो रहा है, उसका यह प्रकाशन-मात्र है। इसलिए मेरे नाम का उपयोग करना जरूरी हो, तो मुझे कोई हर्ज नही है, वह गरीबो का ही नाम है।"

हिसा के बारे मे शका तो लाइये!

भूदान से होनेवाले अनेकविध लाभो का और उसके अन्यान्य पहलुओ का जिक्र करते हुए उन्होने कहा. "इससे सबसे बडा लाभ तो यही होगा कि अहिसा की शक्ति बढेगी। बार-बार नाकामयाबी मिलते हुए भी लोग हजारो साल से कितने श्रद्धापूर्वक हिसा के प्रयोग करते ही चले आ रहे है। मै कहता हूँ, अब इस मूढ-श्रद्धा को छोडकर अपने मन मे हिसा के बारे मे जरा शका तो लाइये! इतने रोज हिंसा को 'ट्रायल' दिया, अब अहिसा को भी तो एक बार 'ट्रायल' दो। फिर अगर परिणाम नही आता, तो सोचो कि अहिसा के प्रयोग मे कहाँ कमजोरी रह गयी है। इस तरह अहिसा के विकास मे कुछ समय दिया जाय, तो उससे दुनिया का कुछ बिगडनेवाला नही है। इतना ही होगा कि हजारो साल हिसा के प्रयोग मे दिये, तो सौ-पचास साल अहिसा के प्रयोग मे भी दिये। लेकिन ऐसा प्रयोग करने की सोचे, तो सभव है, उसमे से कुछ ऐसे नतीजे निकले, जिनकी दुनिया को आज अत्यत आवश्यकता है। इसीलिए दुनिया की ऑखे आज इस काम की तरफ लगी है। अगर

यह प्रयोग सिद्ध हुआ, तो दुनिया को एक बडी शक्ति और बडी राहत भी मिल सकती है। इसलिए इसे ट्रायल देना है। इसके लिए सारे लोग इसमे जुट जायँ, ऐसी आप सबसे मेरी मॉग है।"

भारी सहारा

रचनात्मक कार्यकर्ताओं से विनोबा ने खास तौर से कहा . "जो भाई समझने की शक्ति रखते हो, उन्हें मैं समझाना चाहूँगा कि इस वक्त केवल खादी-काम या हरिजन-सेवा काफी नही है। जहाँ कठिन मसले पडे हों, वहाँ उन्हींके हल करने मे सब लोगों की अक्ल लगनी चाहिए। आज इस इलाके मे ऐसी हालत है कि अगर रचनात्मक काम करनेवाले जगह-जगह पॉच-पॉच, दस-दस मील पर पडे हो, तो जनता को उन सबसे बडा सहारा मिलेगा। अवश्य ही आज पुलिस है, परतु उसका सहारा कोई ऐसा सहारा नहीं, जिससे जनता का उत्थान होनेवाला हो। सहारा तो ऐसा होना चाहिए, जिससे आश्वासन मिले। जनता को लगे कि और कुछ नहीं, तो हमारा एक भाई वहाँ बैठा है। इस तरह पॉच-पॉच, सात-सात मील पर हमारे कार्यकर्ता बैठ जायॅ, तो वह एक भारी बात होगी।"

ग्यारह बजे बैठक समाप्त हुई, तो मिलनेवालों का तॉता बॅधा रहा। 'हिंदुस्तान टाइम्स' के सवाददाता श्री कल्हन पिछले कुछ दिनो से हमारे साथ थे। वे आज दिल्ली लौट रहे थे। भूदान-यज्ञ-समिति की नियुक्ति मे विनोबाजी ने जो दृष्टि रखी थी, वह उन्हे बहुत पसद आयी। उसकी प्रशसा करते हुए उन्होने कहा . "आप ही ऐसा मौलिक ढग अपना सकते है—कमेटियों की नियुक्ति करने का।"

लिपि-सुधार

उन्हें लिपि-सुधार मे भी दिलचस्पी थी। विनोबाजी की लोक-नागरी लिपि के बारे मे उन्होने खुद विनोबाजी से ही समझ लिया था। "यदि लोकनागरी चलाते है, तो आज जो किताबे देवनागरी मे छपी

हुई मौजूद है, वे रद्द हो जायँगी।"—उनकी इस शका का जवाब देते हुए विनोबाजी ने कहा : "यह दलील तो लिपि-सुधार के ही खिलाफ है, न सिर्फ लोकनागरी के। अगर वर्तमान लिपि में कोई सुधार ही नहीं करना हो, तो अलग बात है। फिर हम टर्की का समर्थन नहीं कर सकते, जब कि उसने लिपि पूरी ही बदल दी। कुछ दिन दो लिपियाँ चलेंगी। धीरे-धीरे नयी लिपि चल पडेगी, पुराना साहित्य भी धीरे-धीरे नयी लिपि में आने लगेगा। फिर पढने लायक कुछ साहित्य यदि नयी लिपि में न हो, पुरानी लिपि मे ही हो, तो जो लोग उस साहित्य को पढना चाहेंगे, वे पुरानी लिपि भी जान लेंगे। इसमे कोई विशेष दिक्कत न आयेगी। अगर हमे अपने देशवासियो को कम-से-कम समय मे अधिक-से-अधिक शिक्षित करना है, तो वर्तमान लिपि में कुछ सुधार किये बिना गति नहीं है।"

दोपहर पुनः सम्मेलन शुरू हुआ। काग्रेस के कुछ प्रमुख नेता तथा कार्यकर्ताओं के भाषण हुए। काग्रेस के एक जिम्मेदार नेता ने आक्षेप किया कि विनोबाजी जहाँ-जहाँ गये, वहाँ उनके जाने के बाद पुलिस ने गिरफ्तारियाँ कीं, क्योंकि उन लोगो ने पुलिस की शिकायतें विनोबाजी से की थीं। एक दूसरे कार्यकर्ता ने भी इसको दोहराया। इससे सभा में कुछ सनसनी भी मची और लोगों ने सोचा कि विनोबाजी इस बारे मे जरूर कुछ कहेंगे। विनोबा यद्यपि गभीर नजर आये, कुछ नहीं बोले। सवेरे उन्होंने जिस भूदान-समिति का जिक्र किया था, उसके बारे मे पुनः थोडा स्पष्टीकरण किया।

गधा-समिति

"हमारी यह समिति गधा समिति है। याने इन लोगों को गधे की तरह काम करना है—हमारे हुक्म पर अमल करना है। ये वे लोग है, जिनका जनता पर कोई खास प्रभाव नहीं है। ये कार्यकर्ता हैं, गत दो माह से हमारे साथ घूम रहे हैं। हमने इन्हें देखा-परखा है, हमारी कार्य-प्रणाली से ये वाकिफ हो चुके है। इसलिए हमने इन्हीं लोगों को चुना है। ये

शून्य है, परंतु सबका सहयोग मिलेगा और सबके अंक एक-एक करके भी इन शून्यों के पीछे लगते जायेंगे, तो इनका मूल्य अनगिनत बढ जायगा।"

समिति के सदस्यों के जो तीन नाम सवेरे विनोबाजी ने जाहिर किये थे, उनके चुनाव के पीछे की विनोबाजी की जो नाविन्यपूर्ण कल्पना थी, वह सबको बहुत अच्छी मालूम हुई। श्री रंगा रेड्डी गारू तथा स्वामी रामानंद तीर्थ, दोनों ने अपने भाषणों द्वारा इस समिति का समर्थन किया। एक मित्र ने कहा कि इन दोनों नेताओं ने समिति का समर्थन किया है, तो इन शून्यों की कीमत ग्यारह हजार तो आज ही हो गयी है। दूसरे एक मित्र ने कहा कि ये दोनों दो ही नहीं है। इसलिए इन शून्यों की कीमत तो विनोबाजी कहते हैं, वैसे सचमुच ही अत्यधिक है।

कार्यकर्ताओं की गैरजिम्मेदारी

कल के भाषणों में जो गिरफ्तारियों का उल्लेख था, उसके बारे में जाँच करने पर मालूम हुआ कि विनोबाजी के जाने के बाद कुछ जगह गिरफ्तारियाँ जरूर हुई है, परंतु उनका विनोबाजी की यात्रा से कोई संबंध नहीं। मसलन वाविळापल्ली में विनोबाजी रामराव पटवारी नामक एक व्यक्ति के यहाँ ठहरे थे। विनोबाजी के जाने के चार रोज बाद वह शख्स गिरफ्तार कर लिया गया था। विनोबाजी तो इसलिए उसके यहाँ ठहरे कि रजाकारों के जमाने में उसे काफी सहना पडा, ऐसा उन्हें बताया गया। यह भी बताया गया कि कम्युनिस्टों ने भी उसे एक बार गिरफ्तार कर लिया था, लेकिन फिर छोड दिया, यद्यपि उन्होंने भी परेशान बहुत किया। अब पुलिस का कहना है कि रामराव के बारे में उन्हें शंका थी ही कि वह भीतर से कम्युनिस्टों से मिला हुआ है। वे उसकी जाँच कर रहे थे। उनको सबूत मिला कि वह आज भी कम्युनिस्टों के लिए पैसे जमा रखता है, उनको भेजता भी है, उनके साथ उसका संपर्क है। अगर विनोबाजी उसके यहाँ न ठहरते, तो भी वह गिरफ्तार होता। पुलिस उसके वारंट का इन्तजार कर रही थी।

पुलिस का यह बयान भी ठीक था, क्योकि विनोबा जब रामराव के यहाँ थे, तभी उसकी हरकते शकास्पद थी। उसके काम मे गडबडी नजर आती थी और शराब वगैरह का भी वह शिकार था।

इसी तरह दूसरी गिरफ्तारियो के बारे मे भी जॉच हुई, तो मालूम हुआ कि कल भाषणों मे जिम्मेवार लोगो ने सरकार पर जो आरोप किये, वे ठीक नही है।

विनोबा को इस प्रकार के गैरजिम्मेवारीपूर्ण बयान से काफी दु.ख हुआ। उन्होने सबद्ध व्यक्तियो से पूछा कि "बिना तहकीकात किये सरकार पर सार्वजनिक रूप से जिम्मेवार लोग ऐसा आक्षेप करे, यह कैसे शोभा देता है? फिर ये बाते तो हमसे सबध रखती थी, हमे बतानी चाहिए थीं। हम खुद उसकी जॉच करवाते, जैसी कि अभी करवायी है। सरकार ने हमारे साथ बहुत अच्छा सलूक रखा है। पुलिस के जिन-जिन लोगो की हमने शिकायत की है, उन्हे उसने फौरन नौकरी से हटा दिया है। सरकार के बारे मे इस तरह गलतफ़हमी पैदा करना गैरजिम्मेवारी का लक्षण है।"

इसलिए आज सवेरे जब सभा की कार्रवाई शुरू हुई, तो प्रारभ मे विनोबाजी ने इसी बारे मे जिक्र किया। उन्होने कहा

"कल आप लोगो के सामने एक बात कुछ जिम्मेवार लोगो की ओर से रखी गयी थी कि तेलगाना की हमारी यात्रा के दरमियान हम जहॉ-जहॉ ठहरे, वहॉ से जाने के बाद वहॉ पुलिस की ओर से जुल्म हुए। यद्यपि वह बात गभीर थी, हम कल इस बारे मे कुछ नही बोले। बाद मे हमने तहकीकात की, तो मालूम हुआ कि इस बारे मे आक्षेप करनेवालो की काफी गलतफ़हमी है। अगर वास्तव मे ऐसी कोई घटना हुई हो, तो आप हमे बताये, उसका इलाज हो सकता है। मै कहना चाहता हूँ कि जो शिकायत आपके सामने आयी, वह गलत है।"

कार्यकर्ता के लिए त्रिविध मर्यादाएँ

आज की सभा में चर्चा के लिए विषय रखा गया था कि हैदराबाद मे कार्यकर्ताओ की जो कमी है, उसकी पूर्ति कैसे की जाय ?

अनेक कार्यकर्ताओ ने इस चर्चा मे हिस्सा लिया और अपने-अपने विचार रखे।

चर्चा का समारोप करते हुए विनोवाजी ने कहा

"नये कार्यकर्ता जुटाने के सबध मे तो मै बाद मे कहूँगा, परतु एक बात की ओर आपका ध्यान आकृष्ट कराना चाहता हूँ, जिसका जिक्र कल वल्लभस्वामी ने अपने व्याख्यान मे किया था। वह है, कार्यकर्ताओ मे परस्पर प्यार का होना। दूध मे जैसे शक्कर मिल जाती है, वैसे ही हमें अपना स्वाद छोडकर एक-दूसरे मे घुल-मिल जाना चाहिए। फिर हम चद ही क्यो न हो, अपने विचार को दुनिया में फैला सकेंगे। हमें समत्व बुद्धि से सोचने की आदत डालनी चाहिए। हर चीज को वकील के नाते नहीं, न्यायाधीश के नाते देखना चाहिए। सत्य की खूबी यह है कि वह हमेशा बीचोबीच रहता है, इसलिए समत्वपूर्वक ही काम करना चाहिए। तीसरी बात यह कि किसीका दोष बताना हो, तो पीछे नहीं, सामने, रूबरू, बताना चाहिए। गुणो का ही चितन करना चाहिए। यह मर्यादा हम पालन करे, तो हमारा अपना भी दोप निराकरण और गुण-सवर्धन होगा।

गुणग्राहिता

"कार्यकर्ताओ को अपने सामने एक और दृष्टि रखनी चाहिए। मै इग्लैड की मिसाल देकर समझाऊँ। उन लोगो ने युद्ध देवता की उपासना मान्य कर ली और चर्चिल को नेता मान लिया। अब देखिये कि उस समय जितनी भी अलग-अलग प्रकार की शक्तियाँ थी, उन सबका उपयोग देश के लिए किया गया। सर सैम्युअल होअर को स्पेन भेजा गया। सर स्टैफर्ड क्रिप्स को रूस भेजा गया। आखिर रूस युद्ध मे

शरीक हुआ और यश भी मिला। कहने का मतलब यह कि हमारे विचारो के अनुकूल न होते हुए भी अगर हमारे पास कुछ गुणवान् लोग है, तो उनके गुणो का उपयोग करने की योजना-शक्ति हममे होनी चाहिए। यह ठीक है कि कार्यकर्ताओ मे परिभ्रमण की शक्ति चाहिए और जिसमे वह शक्ति हो, उससे भ्रमण का कार्य भी लेना चाहिए। परतु जिसमे वह शक्ति न हो और वह एक स्थान पर बैठकर काम कर सकता है, तो उससे उसी तरह का काम लेने की हमारी वृत्ति और योजना होनी चाहिए। इस तरह हमे एक-दूसरे की कमियो को जान लेना और उन कमियो के बावजूद गुणो के आधार पर काम करना चाहिए। ऐसी वृत्ति रखे, तो यहाँ जितने लोग उपस्थित है, वे सब-के-सब कार्यकर्ता बन जायँगे। इसके विपरीत अगर हम काम की एक, दो, तीन, चार, पाँच शर्तें लगाते रहेगे, तो हमे कार्यकर्ता मिल ही न पायेगे। तो, मनुष्य से किस तरह काम लिया जा सकता है, इसकी दृष्टि मै आपको दे रहा हूँ। जो भी व्यक्ति हमे मिले, उसे हम भगवान् समझे, यह हमारी सस्कृति की विशेषता है। दोष तो गुणो की छाया हैं। गुणों के सहारे ही वे रह सकते है। उनका अपना स्वतत्र अस्तित्व ही नही है। हमे वस्तु की मूल पहचान हो, तो उसका उपयोग भी सूझेगा। हर व्यक्ति को हम हरिरूप समझें, तो ये सारे वर्ग खतम हो जायेंगे और हर कोई आपको अपना कार्यकर्ता भाई ही नजर आयेगा।"

आश्रय नहीं, मदद

फिर सरकारी मदद लेने, न लेने के सबध मे चर्चा हुई। एक भाई ने कहा कि "अगर सरकारी मदद लेते है, तो तेजोहानि होती है और बिना मदद के काम करते है, तो कुछ होता नही।" जवाब मे बाबा ने समझाया कि "सरकार की मदद लेने मे कोई हर्ज नही, लेकिन सरकार का आश्रय नही लेना चाहिए। और मदद न मिले, तो भी हमारा काम रुकना न चाहिए, चालू रहना चाहिए।" चश्मे (सोते) की

मिसाल देकर उन्होंने समझाया कि 'बरसात हुई, तो चश्मे मे पानी बढ जायगा और न हुई, तो भी चश्मा बहता ही रहेगा। हमारे काम का भी ऐसा ही होना चाहिए।"

नित्य बनाम नैमित्तिक कर्तव्य

कार्यकर्ताओं के मन मे आया कि विनोबाजी हमारे बीच इतने रोज रहे, एक अद्भुत परिवर्तन हमारे मुल्क मे आ गया। अब वे जा रहे हैं, तो उनके पीछे हमें अपने को किसी सकल्प में बॉध लेना चाहिए। विनोबाजी से पूछा, तो उन्होंने कहा : "और सकल्प क्या हो सकता है, सिवा इसके कि सब लोग भू-दान-यज्ञ मे जुट जाने का निश्चय करे।" कार्यकर्ताओं ने तो १२ फरवरी के लिए मत्राजलि-सग्रह की बात सोची थी। साथ ही-साथ जगह-जगह कताई मडल, प्रार्थना-मडल आदि स्थापन करने की भी कल्पना कर रखी थी। कपोस्ट खाद, प्रौढ शिक्षा आदि का भी कार्यक्रम बनाया था। विनोबा ने यह सब सुनकर कहा :

"बडे सवेरे उठना, दैनिक प्रार्थना, कताई-यज्ञ आदि काम तो नित्य-कर्तव्यो मे से है ही, उनके लिए अलग से सकल्प क्या करना है? सकल्प करना हो, तो यही करो कि भू-दान यज्ञ में पूरी मदद देनी है। सीधी बात यह है कि पुरानी बातों का या आगे होनेवाली बातो का चिंतन करते रहने के बजाय अभी आज जिस काम की आवश्यकता है, उसी ओर ध्यान जाना चाहिए। आग लगी हो, तो बुझाने का काम ही मुख्य हो सकता है।"

हैदराबाद में एक वर्ष में एक लाख एकड भूमि जमा करने का सकल्प-पत्र तैयार हुआ। सबने खडे रहकर, विनोबा की उपस्थिति मे गभीरतापूर्वक सकल्प ग्रहण किया। नेताओं ने उठकर आश्वासन दिया कि वे सकल्प-पूर्ति मे पूरी मदद देंगे। श्री मुरली मनोहररावजी ने तथा श्री रगा रेड्डीजी ने क्रमश. एक हजार तथा एक सौ एकड का दान देकर सकल्प पूर्ति के काम को चालना दी। दो दिन मे कुल दो हजार एकड जमीन प्राप्त हुई। सम्मेलन से सबको बडी प्रेरणा मिली। ● ● ●

भारत की विशेषता

: ५३ :

वेलमपल्ली

१-६-'५१

तीन दिन गोदा-तट पर मुकाम कर पुनः यात्रा-क्रम शुरू हुआ। बहुत से साथी लौटे—कोई हैदराबाद, तो कोई वर्धा।

आज मंजिल पंद्रह मील की थी। अब वर्धा शीघ्र पहुँचना था—बारिश के पहले, इसलिए मंजिलें भी लंबी-लंबी रखी गयी थी। विनोबा बालाघाट की पहाड़ी से गुजर रहे थे। यह बालाघाट मध्य-प्रदेश का बालाघाट नहीं है। वह तो 'बाला' याने वास्तव में 'ऊँचा' ही है, परंतु यह तो बिलकुल 'बाल' याने 'छोटा' ही है। सड़क के दोनों ओर पूरब-पच्छिम साग का विशाल जंगल दिखाई दे रहा है। आकाश बादलों से घिरा रहता है। छह बजे एक खेत में बैठकर विनोबा ने सवेरे का कलेवा किया। मौसम का असर था कि दही भी पत्थर की तरह जमा था।

पड़ाव पर पहुँचने में काफी देर हो गयी थी। कोलियारी के सैकड़ों मजदूरों ने बड़े उत्साह से स्वागत किया। आदिलाबाद जिला और मजदूरों का केंद्र था, इसलिए खयाल था कि यहाँ शिकायतें शायद न आयें। लेकिन पहुँचने के समय से शिकायतों का आना शुरू हुआ और शाम को सभा के समय तक वे आती रहीं। शिकायतों से मालूम हुआ कि गरीब किसानों और मजदूरों पर गिरदावरों का काफी रोब रहता है। तहसीलदार के मातहत होते हुए भी वे तहसीलदार से अधिक अधिकार चलाते हैं और यह सब करते हुए वे कानून के बारे में बिलकुल ही बेखबर रहते हैं।

मजदूर-यूनियन की ओर से मंत्री ने विनोबाजी को मानपत्र दिया,

जिसमे प्रार्थना की गयी थी कि भू-दान-यज्ञ मे यहाँ जो जमीन मिले, वह खदान की नौकरी से निवृत्त होनेवाले मजदूरो में तकसीम की जाय।

रास्ते मे मदामरी गाँव पडता था। वहाँ के एक भूमिवान् मित्र श्री माधवराव दो-तीन रोज से सपरिवार साथ थे। आज उन्होने चुपचाप ढाई सौ एकड का दान-पत्र दिया और प्रणाम कर चले गये। उनकी नम्रता और सद्भावना का सब पर असर हुआ। शाम की सभा में, जिसमे कम-से-कम दस हजार मजदूर होगे, विनोबाजी ने और बातो के साथ-साथ इस घटना का भी जिक्र किया।

रात को भू-दान-यज्ञ-समिति के नियमोपनियम का मसविदा बना। तकसीम के नियमो के बारे मे भी चर्चा हुई। जमीन का हस्तातरण होने में रजिस्ट्री का खर्च न आये, जमीन जिनको दी जाय, उनके हाथ से वह कम-से-कम दस साल तो भी निकलने न पाये आदि शर्तों के बारे में सरकार से रूबरू मिलकर बाते करना तय पाया। बिना स्टॉम्प-ड्यूटी के जमीन का हस्तातरण करने की बात सरकार मान लेगी, ऐसा विश्वास तो विनोबाजी को था ही। परतु काम बिलकुल नया था। सभव है, कोई दिक्कत आये, इसलिए विनोबाजी ने अपना दृष्टिकोण भी समझा दिया :

"मुझे आशा है कि इस काम के लिए सरकार रजिस्ट्रेशन फीस और स्टॉम्प ड्यूटी छोड देगी। उससे उसकी प्रतिष्ठा बढेगी। हम चाहते भी है कि उसकी प्रतिष्ठा बढे। किंतु यदि इसमे सरकार को कोई सकोच या दिक्कत हो, तो हमें वैसा मालूम होना चाहिए, ताकि हम जनता से वह कह सकें। हम तो रजिस्ट्रेशन के लिए आवश्यक चदा भी जमा कर सकते है, परतु वह हमे नहीं करना है। यदि सरकार आवश्यक सुविधा न दे सकेगी, तो हम दाताओ से ही कह देगे कि हमारे ये नियम है। इनको खयाल मे रखते हुए तुम्हे जिन भूमिहीनों को जमीन देने की इच्छा हो, तुम खुद ही दे दो। सरकार को समझना चाहिए कि उसका कितना बडा काम इस भू-दान-यज्ञ से हो गया है। भू-दान-यज्ञ में जो जमीन मिल

रही है और मिलेगी, उसका मुआवजा अगर सरकार को देना पडे, तो कितनी बडी रकम होगी। बिना मुआवजे के जमीन का इतना बडा मसला हल हो रहा है, तो उसे भी यदि इसकी तकसीम मे कुछ खर्च बर्दाश्त करना पडे, तो करना चाहिए।"

तकसीम के बारे मे उन्होंने कहा : "भू-दान-यज्ञ मे मिली जमीन की तकसीम का काम हमे जनसेवकों के जरिये ही करवाना होगा। यह बोझ हम सरकार पर नही डाल सकते। लोगो को भी उससे संतोष न होगा, क्योंकि लोगो ने जमीन भू दान-यज्ञ मे दी है, न कि सरकार को। मुझे तो लोगो की श्रद्धा देखकर आश्चर्य होता है! दान-पत्र मे साफ लिखा है कि गरीबो के लिए विनोबा जैसा उचित समझे, इस्तेमाल करे। लोग मन मे बिना किसी प्रकार की शंका किये हजारो एकड का दान दिये जा रहे है, यह मैं भारत की विशेषता मानता हूँ।"

● ❂ ●

प्रेरक जीवन

: ५८ :

रेवना

१०-६-'५१

मुसाफिरी अब पद्रह मील रही। कभी कभी कडी धूप भी तपती है। सिर पर बादल या बारिश लेकर ही चलना पडता है।

पडाव रेवना के खादी केन्द्र मे ही था, जहाँ श्री गोसावीजी बहुत निष्ठा के साथ पिछले बारह वर्षों से खादी का काम कर रहे है। सारा वातावरण आश्रम की याद दिलानेवाला था। विनोबाजी के लिए स्वतत्र कुटिया खडी की गयी थी, औरों का प्रबन्ध भी झोपडियो में ही था। स्वच्छता आदर्श थी। दोपहर मे सामूहिक कताई का कार्यक्रम अच्छा प्रभावकारी रहा। अनेक स्त्री-पुरुषो ने कताई मे हिस्सा लिया और विनोबा को दरिद्रनारायण के लिए गुडियाँ भी बहुत भेट की गयीं। सारा दर्शन बहुत अच्छा रहा। नलगुडा और वरगल जिले में तो कम्युनिस्ट-आदोलन की ऑच मे यहाँ के कताई-बुनाई के पुराने उद्योग को भी नामशेष-सा कर दिया था। रेवना मे पुन यह खादी कार्य का दर्शन हुआ। ऑखों को तो सतोष हुआ, पर सशक मन अब पूछ बैठता है कि यह काम भी कब तक चल पायेगा? क्या यहाँ जमीन की भूख नहीं है? क्या आसपास के गॉवो मे भूमिहीनो को भूमि मिल गयी है, जो यह खादी-कार्य यहाँ इतनी शाति के साथ चल पा रहा है?

गॉववालो की सभा मे विनोबाजी ने तेलगाना की इस भूमि-समस्या की ओर सबका ध्यान आकृष्ट कराते हुए कार्यकर्ताओ को भी आगाह किया कि "वे अपना काम करते हुए भूमिहीनो के लिए जमीन-प्राप्ति की बात को नजर से ओझल न होने दे।"

अक्सर खादी-केन्द्रो मे यही होता है कि कातनेवालो के बदन पर खादी कम ही पायी जाती है। रेवना इस नियम का अपवाद नही था। लेकिन इस खयाल से कि गॉव मे कुछ लोग तो निष्ठावान् कातनेवाले और खादी पहननेवाले निर्माण हो ही गये होंगे, विनोबाजी ने जानकारी प्राप्त की, तो मालूम हुआ कि श्री गोसावीजी तथा उनके कुछ साथियो के अतिरिक्त कताई या खादी की निष्ठा गॉववालो मे अभी तक निर्माण नही हो पायी। वे इस काम को अन्य उद्योगो की तरह एक उद्योग के रूप मे ही देखते है। उनके जीवन को अभी तक खादी ने स्पर्श नही किया है। कार्यकर्ताओ मे भी सब-के-सब निष्ठावान् कातनेवाले नही थे और न खादी का व्रत ही सबका था। कारण पूछने पर सबने समय का अभाव ही बताया। इस गफलत और गलतफहमी से उबारने के लिए विनोबाजी ने किशोरलालभाई मशरूवाला की मिसाल देकर समझाया .

"श्री किशोरलालभाई सतत दमे की बीमारी से परेशान रहते है। कमजोर इतने है कि उनको देखने से कोई विश्वास के साथ नही कह सकता कि उनकी काया मे कल तक भी प्राण रह सकेंगे। फिर भी वे रोज बराबर कम-से-कम आध घटा तो कात ही लेते है। रोज उनकी १ लटी होती है याने बरस की ३६० लटी, ९० गुंडियॉ। इतने दुर्बल व्यक्ति से भी सालाना एक सौ अस्सी घटे का उत्पादक परिश्रम मिला—देश मे अठारह गज कपडे का उत्पादन बढा और देश की आमदनी मे सत्रह रुपये वार्षिक की वृद्धि हुई। यह मैने कम-से-कम हिसाब बताया—एक ऐसे व्यक्ति के जीवन का, जिससे हमे बहुत प्रेरणा मिलती है।" ● ● ●

सफेदपोशों की शिकायतें : ५५ :

आसफाबाद

११-६-'५१

रोजाना देहातों के गरीब किसान या खेतिहर मजदूर अपने जमींदारों या बड़े किसानों के जुल्मों के खिलाफ शिकायतें लेकर आते हैं और विनोबाजी दो-दो, तीन-तीन, चार-चार घंटे उनके बीच बैठकर उनके फैसले करवाते हैं। वे सबको संतोष देकर लौटाते हैं। लेकिन आज की शिकायतों का रूप दूसरा था। आज भी शिकायतों का ढेर था, लेकिन शिकायत करनेवाले आसफाबाद के सफेदपोश थे, जिनमें ज्यादातर वकील-वर्ग ही था। खास शिकायतें ये ही थीं कि पुलिस ऐक्शन के बाद पुरानी स्थिति बदलेगी, ऐसी आशा थी, लेकिन कोई खास परिवर्तन अब तक नहीं हुआ। सारे वे ही पुराने अधिकारी हैं। भेद-नीति से काम लेते हैं। कभी कम्युनिस्टों को अपनाते हैं, तो कभी कांग्रेसियों को। बेचारी प्रजा पीसी जाती है। कम्युनिस्ट प्रजा के असंतोष से लाभ उठाकर लोगों से जाहिरा तौर पर लेवी न देने के लिए कहते हैं। आप सरकार का ध्यान इस ओर आकृष्ट करायें।

शिकायतों की सत्यता के बारे में शंका न करते हुए विनोबा ने उन लोगों को अपना दृष्टिकोण समझाने की कोशिश की। उन्होंने कहा :

"आप लोग तो जानते ही हैं कि अब आपको वोट का अधिकार मिला है। योग्य आदमियों का चुनाव करना अब आपके हाथ में है। अधिकारी पुराने हैं याने मुसलमान ही हैं, ऐसा आपका कहना है। लेकिन हिंदू अधिकारी व्यवहार अच्छा ही करेगा, क्या ऐसा आश्वासन आपके पास है? देखना यही चाहिए कि आदमी अच्छा हो। आखिर जिनके

हाथ मे सत्ता होती है, वही शिकार खेल सकता है। आपको जो तकलीफे है, उनके बारे मे आप ऐसी हवा में ही बाते करे, इसका कोई मूल्य नही है। अगर आपकी शिकायतें जायज है, तो सबूत के साथ पेश कीजिये और उसके परिणामों को भुगतने की तैयारी रखिये। ताक्त इसी तरह बढती है, लोगो का विश्वास भी प्राप्त होता है और फिर लोगो मे प्रतिष्ठा भी बढती है।"

विनोबा ने कहा "खैर! यह बताइये कि आप लोग गरीबों के लिए कुछ जमीन देंगे या नही ?"

जवाब "गुजर-बसर हो सके, इतनी ही तो है। क्या दे और कैसे दे ?"

विनोबा : "यह एक यज्ञ शुरू हुआ है, जिसमे हरएक को, जिसके पास जमीन है, अपना हविर्भाग देना चाहिए। मुझे तो एक एकडवाले से भी एक गुठा मिला है। संकेत के तौर पर ही सही, थोडी-थोडी जमीन तो आप लोग दे ही सकते है। उससे भावना निर्माण होती है। आप लोग वकालतपेशा है और जमीनें भी रखते है, तो थोडी जमीन देनी ही चाहिए न ?"

प्रश्न : "आप इधर फिर कब पधारियेगा ?"

अपने लिए कुछ नहीं चाहिए

इतने मे एक बहन अपने लडके को लेकर आयी। वह प्रणाम कर चुपचाप बैठ गयी। मालूम हुआ कि कुछ दान देना चाहती है। विनोबा ने पूछा :

"कितनी जमीन है ?"

"चालीस एकड।"

"घर मे कौन कौन है ?"

"मै और यह लडका।"

"कितना देना चाहती है ?"

"मुझे अपने लिए तो कुछ चाहिए नही। आप अपना एक हिस्सा ले लीजिये और दूसरा प्रसादस्वरूप इस बच्चे को दे दीजिये।"

क्या इन सफेदपोशों को त्याग और सद्भावना का दर्शन कराने के लिए ही भगवान् ने इस बहन को इस समय यहाँ पदार्पण करने की प्रेरणा दी थी ?

विनाशकाले विपरीतबुद्धि

विनोबाजी जहाँ बैठे थे, सामने ही पुलिस का थाना था। एकाएक उधर लोगों की भीड़ नजर आयी। बात की बात में सैकड़ों लोग जमा हो गये। मालूम हुआ कि कुद्दू पटेल की लाश लायी गयी है। कुद्दू पटेल गोंड था। पास ही के गुडीगुडम् गाँव का साकिन। बहादुर था वह! अकेले ६० से अधिक शेरों का शिकार कर चुका था। दुनिया की खबरों से कुछ वाकिफ था। गोंडों में काम भी करता था। पहले ही रोज उसने लोगों को बताया था कि कल विनोबाजी आसफाबाद आ रहे हैं, वहाँ सबको चलना है।

उसने रात को चलने की सब तैयारी कर ली थी। एक मित्र से जरूरी काम से मिलने जा रहा था। घर से बाहर निकला ही था कि एक गोंड कम्युनिस्ट ने गोली से मार डाला। कुद्दू पटेल की हत्या भू-दान-यज्ञ के प्रति कम्युनिस्टों के रोष का प्रदर्शन भी हो सकता था, जिसे वे विनोबाजी के हैदराबाद छोड़कर जाने से पहले उन पर जतलाना चाहते हों। मचेरियाल में भी उस रोज नलगुंडा के उस लड़के की हत्या किये जाने की खबर आयी ही थी। आज फिर यह घटना घटी। कम्युनिस्टों ने तो अपने प्रभाव और शक्ति का प्रदर्शन करने के खयाल से ही यह सब किया होगा। परंतु उनको कौन समझाये कि यह 'विनाशकाले विपरीतबुद्धिः' ही है।

● ● ●

दान अच्छी जमीन का ही : ५६ :

बॉकडी

१२-६-'५१

शाम की उस घटना का घाव लेकर विनोबा अगले पडाव बॉकडी पर पहुँचे ही थे कि केशवरावजी गॉव के एक सीधे-सादे गोड किसान को विनोबाजी से मिलने ले आये। विनोबाजी ने उसे भी भूदान का विषय समझाया और अत मे पूछ लिया : "कुछ जमीन वगैरह रखते हो ?"

"जी !"

"कितनी ?"

"साठ एकड।"

"गरीब के लिए कुछ देना चाहोगे ?"

"जी !"

"कितनी ?"

"कितनी देनी चाहिए ?"

"कितने लोग है घर मे ?"

"तीन भाइयो का परिवार है।"

"चौथा हिस्सा गरीब के लिए दे सकोगे ?"

"ठीक है, पद्रह एकड लिख लीजियेगा।"

"जमीन कैसी है ?"

"यह पद्रह एकड अच्छी है। अभी जोतकर तैयार की है, बोनी के लिए। बाकी सब परती है। लेकिन दान तो अच्छी जमीन का ही देना चाहिए न ? यह जुता हुआ नबर आप लिख लीजिये। मै अपने लिए और जोत लूँगा। गरीब कहाँ से जोतेगा ?"

क्षणभर में उस मूर्ति ने सबको अपनी ओर आकृष्ट कर लिया। विनोबा की आँखों मे करुणा साकार हो उठी। प्रेम और उदारता का कैसा अद्भुत दर्शन था! थोड़ी देर कमरे में बिलकुल स्तब्धता छा गयी। फिर विनोबाजी ने केशवरावजी की ओर देखकर कहा "इस जमीन का बँटवारा भी क्यों न कर दिया जाय?"

"बहुत अच्छा होगा।"

"आप ही आइये।"

कल उधर उन वकीलों की उदासीनता और काहिली को मानवता ने उस प्रेम-मूर्ति माता के रूप में चुनौती दी थी और आज इधर कम्यु-निस्टों के हिंसाकाड को इस महान् चक्रवर्ती बलिराजा के त्याग ने हतप्रभ कर दिया। वास्तव मे इन घटनाओं मे सिर्फ कम्युनिस्ट-समस्या का ही जवाब नही, ससार की सभी समस्याओं का हल छिपा नजर आता है।

• • •

कृष्ण का व्रत : ५७ :

देवड़ा

१३-६-'५१

सह्याद्रि की कतारे शुरू हो गयी हैं। रास्ते के दोनों ओर घना ऊँचा साग-वन दिखाई दे रहा है। सडक लाल मिट्टी से छायी हुई है। काफिला चला जा रहा है। एक सहयात्री ने अपने मन की शका दूर करने के खयाल से पूछा "जापान की तरह गॉव-गॉव और घर-घर मे बिजली का उपयोग क्यों न करना चाहिए? सारे यत्र बिजली के द्वारा क्यो न चले? सारे ग्रामोद्योग भी बिजली द्वारा ही क्यों न चले?"

विनोबा "अब एक और सवाल पूछ लीजिये कि जापान की तरह गुलाम भी क्यों न रहना चाहिए? फिर अग्रेजों को इससे ज्यादा और कोई खुशी नही हो सकती। बात यह है कि हम लोगो की समझ मे अब तक यह नहीं आ रहा है कि रेल पॉव की बराबरी नही कर सकती। हमारी अपनी जो समस्याएँ हैं, उनका हल भी हमे अपने तरीके से खोजना चाहिए। हमारे यहाँ जनसख्या बढ रही है, पर आराजी तो नही बढती। पहले आराजी ज्यादा थी और जनसख्या कम। फिर भी लोग खेती करके कपडा बना लेते और बाहर के मुल्कों को भेजते थे। अब आराजी कम है, खेती के लिए उतना समय नही देना पडता, फिर भी अब पहले की तरह काम क्यो नही करते? इसीलिए कि लोग आलसी बन गये है। मै बिजली या यत्र के खिलाफ नही। फिर भी यत्र-शक्ति के उपयोग की मर्यादा रहनी चाहिए। पहले जन-शक्ति का पूरा उपयोग कर लेना चाहिए। ऐसा क्यो नही होता कि सौ मील के भीतर माल रेल से नही, बैलगाडियों से ही आया-जाया करेगा? आज हम देखते है। कि तीन तीन माह तक

चरखे स्टेशन पर पड़े रहते हैं, उनके लिए वैगनें नहीं मिलतीं, जब कि इस बीच वे बैलगाडियो से कई बार पहुँच जाते। सडकें तो पहले भी थीं और आज भी है। पहले बैलगाडियों का उपयोग होता था और आज नही होता है।

"आखिर यह गति बढाने की इतनी तीव्रता क्यो है? गति बढाने पर उत्पादन बढेगा। फिर मडियो की खोज होगी। जापान की निगाहें चीन और आस्ट्रेलिया पर हैं, पर उनसे अब कुछ बन नहीं पाता। भारत भी वैसी ही लाचारी महसूस करेगा। इसलिए गति बढाने की चिता फजूल है। पहले स्वावलबन, ग्रामोद्योग आदि बातो की फिक्र करनी चाहिए या फिर स्वराज्य गँवाने की तैयारी करनी चाहिए।"

गोंडो के बीच

गाँव दूर से दिखाई दे रहा था। स्वागत करनेवालो में गोंड स्त्री-पुरुष ही अधिक थे। पडाव का सारा प्रबध उन्हींके सिपुर्द था। पद्दरीनाथ गोंड, जो इस तहसील के प्रथम और एकमात्र सत्याग्रही थे, खुद सारा प्रबध देख रहे थे। गोंडो के खाने-पीने और रहन-सहन के रस्मोरिवाज स्वतत्र और पुराने ढग के होते हुए भी पद-यात्रियो के लिए सारा आवश्यक प्रबध बहुत सुदर और आतिथ्यपूर्ण किया था।

राजुरा और आसफाबाद तहसीलो की दो लाख की बस्ती मे गोंड करीब पचीस हजार तो होगे ही। इनके बारे में शिकायत यह है कि वे एक जगह टिककर नही रहते। हाथ से ही खेती करते है। पास में एक छोटी कुदाल रखते है, जिससे जमीन पर लकीरें घसीटकर तिल और जौ आदि छिडक देते हे। अक्सर पाँच आदमी का परिवार होता है, जो सबका-सब खेती मे जुटा रहता है। दो एकड मे दो खडी अनाज पैदा कर लेते है। गर्मी मे अक्सर गुलमोहा, तेदू, टेंबरा और चिरजी खाकर रहते है। जमीकद पर भी गुजर कर लेते है। सन्नागड्डा, नल्लागड्डा, तेल्लागड्डा आदि इनके प्रिय कद है। सात वक्त उबालकर, छिलका निकालकर एक

रोज नदी या तालाब मे भिगोये रखकर फिर खाते है। कम उबाले कद खाने से बेहोशी और बिना उबाले खा जायँ, तो मृत्यु, यह इन कदों की प्रकृति है।

सामाजिक रीति-रिवाज अभी तक पुराने ही चलते आ रहे है। स्त्रियों मे चोली पहनने का रिवाज नही है। वे सारे शरीर पर खूब चित्र-विचित्र नक्काशी कर लेती है। स्त्रियाँ पुरुषो से अधिक प्रभावी रहती हैं। शादी-ब्याह मे शराब और बकरा, दोनो खूब चलते है। एक जमाने मे गोडो का अपना राज्य था। आज भी कुछ लोग उसका सपना देखते है और स्वतत्र राज्य कायम करने की कोशिशे करते रहते है। लोग भी उनके बहकावे मे आ जाते है। ऐसी ही कोशिश करनसिह नामक एक गोड ने की थी और सरकार से उसका झगडा भी काफी चलता रहा। कम्युनिस्टो से उसका सपर्क था, ऐसा भी बताया गया। कुद्दू पटेल की हत्या मे उसका भी हाथ होना चाहिए, ऐसी शका लोगो ने प्रकट की।

भर-भरकर दो—भर-भरकर पाओ

आज की प्रार्थना-सभा मे गोंड लोग ही ज्यादा थे। विनोबा का प्रवचन भी उन्हीको ध्यान मे रखकर हुआ :

"परमेश्वर अनेक अवतार लेता है। आज उसने दरिद्रनारायण का अवतार लिया है।"—विनोबा ने बोलना शुरू किया।—"लोग मुझसे पूछते है कि इस कलियुग मे क्या कोई जमीन देगा ? मै कहता हूँ, देता है या नही, देख लो। जो जमीनें हमे मिली है, वे पिस्तौल से तो नही मिली। गये, समझाया और पायी। हम लोगों के पास जाते नही, उनके भीतर भगवान् है, उसे जगाते नही, तो जमीन मिले कैसे ?

"परसो एक गाँव मे कम्युनिस्टो ने एक गोड को मार डाला। उनका कहना है कि यहाँ गोंडो का राज्य है। पहले बादशाह के बेटे को बादशाह का तख्त मिलता था। लेकिन आज तो हरएक का राज्य है। इसलिए जवाहरलालजी के बेटे को जवाहरलालजी का तख्त

नहीं मिलेगा। गोंडों में फूट के बीज बोये जा रहे हैं। यह सही है कि किसी जमाने में यहाँ गोंडों का राज्य था। पर अब किसी एक का राज्य नहीं हो सकता। अब लोकसत्ता है, सबका राज्य है। तुम अपने में से अच्छे लोगों का चुनाव करो, तो तुम्हारा ही राज्य होगा।

"इसलिए मैं कम्युनिस्टों से कहता हूँ कि मेरी तरह प्रेम से माँगो, प्रेम से समझाओ। खुलेआम माँगो, खुलेआम समझाओ। मैं बार-बार समझाने को तैयार हूँ। मेरे पास सिर्फ ज्ञान ही है, जो मैं दे सकता हूँ। आपको कृष्ण और अर्जुन की कहानी मालूम है न? दुर्योधन ने सारी सेना माँगी और अर्जुन ने सिर्फ कृष्ण को माँग लिया। कृष्ण ने उसके सामने प्रस्ताव ही वैसा रखा था, या तो सेना ले लो या मुझे। अर्जुन ने कृष्ण को ही पसंद किया। मैंने भी कृष्ण का ही व्रत लिया है। मुझे हाथ में कुछ लेना नहीं है। सलाह की चार बातें कहना मात्र है। इसलिए सबसे मेरा कहना है कि भाइयो, दो, भर-भरकर दो और भर-भरकर पाओ।"

क्या दरख्त भी सेंदी पीकर खड़े हैं?

शाम को विनोबाजी घूमने निकले, तो रास्ते में दो-चार लोग मिले, जो सेंदी पीकर नशे में चूर थे। विनोबा को देखा, तो डर गये। पाँव पकड़ लिया, क्षमा माँगने लगे। विनोबा ने प्यार से हरएक को एक-एक चपत लगायी और धमकाया भी कि "आइन्दा मत पीना।" पियक्कड़ों ने पुनः प्रणाम किया और चपत हुए।

"यहाँ सेंदी इतनी ज्यादा है कि लगता है, दरख्त भी सेंदी पीकर ही खड़े हैं।"—विनोबा ने अपना दुःखभरा निरीक्षण सुनाया।

कोई जाति-भेद निर्माण नहीं करना चाहते

चाँदा से एक कार्यकर्ता २६ मील साइकिल की सवारी से मिलने आये। कहने लगे "चाँदा में जहाँ आपके ठहरने का प्रबन्ध किया गया है, वहाँ मत ठहरिये। वे आजकल नगराध्यक्ष हैं। उनके हाथों बड़ा अन्याय हो रहा है।" उन्होंने यह भी शंका प्रकट की कि वे और उनके

साथी विनोबा से मिलने के लिए शायद उनके घर न जा सकेंगे। इसीलिए उन्होने विनोबा को अपने यहाँ ठहरने का आग्रह भी किया।

विनोबा ने कल्लडा का दृष्टात दिया और शातिपूर्वक समझाया कि "हम ऐसा कोई जाति-भेद निर्माण नही कर सकते। क्या आप सज्जन है और वे दुर्जन हैं? क्या वह नही कहेगा कि आपने मुझे पूछा भी नही और मेरे यहाँ का निवास रद्द कर दिया?

"फिर आप जानते है, मै किसीके घर तो खाता नही हूँ। परमात्मा का खाता हूँ। जहाँ भी योजना की गयी हो, ठहर जाऊँगा। सूरज सबके यहाँ पहुँचता है। प्रकाश देना उसका काम है। नारद सबके यहाँ जाता था या नही? बस, हम भी सबके यहाँ जायेंगे। आपको भी वहाँ आना चाहिए, जहाँ मै ठहरनेवाला हूँ। आपको अपनी बाते बतानी चाहिए–लिखकर देना चाहिए, सामने बाते हो जायँगी। मै वहाँ ठहरा हूँ, इसलिए अगर वहाँ कोई न आये, तो मै खुश हूँ। रोज तो सभा आदि का कर्मयोग होता ही है, उस रोज ध्यानयोग हो जायगा। मुझे कम लोगों में रहने और उनसे बोलने की आदत है। पवनार मे मै बडी-बडी तकरीरे करता हूँ, परतु सुननेवाले कितने होते है? १०-२० आश्रमवासी। तो, लोग अगर न आयेंगे, तो मुझे अफसोस न होगा।

"कल्लडा मे मुझे लोगो ने ऐसा ही कहा था। वहाँ हमने व्याख्यान मे यही विषय रखा। उस जमीदार ने मुझे ढाई सौ एकड जमीन दी। ८-१० रोज वे हमारे साथ रहे। दूसरे लोगो से भी जमीन दिलवायी। हमने देखा कि आखिर वह हमारा भक्त बन गया। कितने ही लोगो मे ऐसा परिवर्तन हो गया है।"

प्रथम भूमि-वितरण

इधर विनोबाजी घूमकर लौट रहे थे, उधर से केशवरावजी भी आते दिखाई दिये। केशवरावजी को देखकर सहयात्री भी जमा हो गये। उस गोडवाली १२ एकड जमीन के वितरण का हाल जानने को सभी उत्सुक थे।

केशवरावजी ने विनोबा को प्रणाम किया। हमेशा ही करते हैं, पर आज के प्रणाम में कृतकृत्यता की अनुभूति थी। विशेष आनन्द से केशवराव का रोम रोम हर्षित था। हर शब्द उनके अभिभूत हृदय का परिचायक था। कहने लगे : "तीन हरिजन परिवारों में उस भूमि का वितरण कर दिया गया है। भूमिहीनों को यकीन नहीं हो रहा था कि क्या मामला है। लगता था, स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं! किसीने ऐसा कभी सुना-देखा नहीं था। लेकिन भूदान से यह सब हुआ! गाँव में, गाँव के इर्द-गिर्द, चारों ओर आश्चर्य की एक लहर-सी चल पड़ी है। दाता और आदाता, दोनों ने अपने जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन का अनुभव किया।" बोलते-बोलते केशवरावजी की आँखें भी बोल उठीं। नये युग की झाँकी पाकर लौटे थे। प्राप्ति का सुख तो पिछले दो माह से सतत अनुभव किया ही था, किंतु वितरण का यह एक विशेष आनंद था। भूमि-वितरण का यह प्रयोग और प्रसंग संसार में अपने ढंग का शायद पहला ही हो। ● ● ●

ईश्वर की प्रयोगशाला : ५८ :

राजुरा
१४-६-'५१

हैदराबाद राज्य का आखिरी पडाव। स्वागत-समिति के अध्यक्ष आर० एस० एस० के विचारो के बताये गये। पर गॉववालो मे कुल मिलाकर आपस मे प्रेम दिखाई दिया। अगवानी मे लोग एक मील तक लेने आये। उनमे खूब भक्तिभावना प्रकट हो रही थी। एक कारण यह भी था कि श्री अबादास भाई सूर्यवशी ने यहॉ पहले से गीताई का काफी प्रचार कर रखा था। अबादासजी वैसे काम तो सेगॉव मे करते थे—विद्यालय मे शिक्षक थे, भावुक, त्यागी और प्रज्ञावान् भी। यह सारा इलाका उनका कार्यक्षेत्र ही था। यहॉ उनके कारण 'सेवक' तथा 'सर्वोदय' के कुछ ग्राहक भी है। यहॉ गीता-प्रवचन आदि विनोबा-साहित्य चाव से पढा जाता है। प्रात काल विनोबा के आगमन के बाद तुरत ही तीस रुपये से अधिक का साहित्य बिक गया।

बच्चों के बीच

प्रात.काल के भाषण मे विनोबा ने श्रीमान् और गरीब की व्याख्या करते हुए अपने हाथ दिखाकर कहा . "ये देखो गरीब !" फिर सिर दिखाकर कहा : "यह देखो श्रीमान् !" फिर उन्होंने पूछा : "क्या दोनो मे विरोध है ? इसलिए जिसके पास जमीन है, वह उसे उसके लिए दे, जिसके पास नहीं है।"

सामने की कतार मे बच्चे बैठे थे। उनसे ही बातचीत शुरू हुई। "बताओ बच्चो, पढरपुर की यात्रा कौन करे ? क्या श्रीमान् ही करें और गरीब न करे ?"

"सब करें।"

"सूर्य किसके घर प्रवेश करे ? श्रीमान् के घर करे और गरीब के घर मे न करें ?"

"सबके घर में करे।"

"पानी कौन पीये ? क्या श्रीमान् ही पीये और गरीब न पीये ?"

"सब पीयें।"

"तो, अब एक बात और बताओ ! गरीबो को जमीन मिलनी चाहिए या नहीं, तुम्हारी क्या राय है ?"

"मिलनी चाहिए।"—एक स्वर से सबने जवाब दिया।

"तो, जाओ, अपने माता-पिता से कहो कि विनोबा की झोली मे जमीन डालो। उनसे कहो कि चाहे हमे मत दो, परतु दरिद्रनारायण के लिए दो।"

जय-विजय की विदाई

केशवराव और कोदड रेड्डी, दोनों विनोबाजी से विदा माँगने आये। गत दो मास की सारी स्मृतियाँ पुनः ताजी हो उठी। अब तक के राजनैतिक कशमकश के जीवन से भिन्न जीवन की अनुभूति करानेवाले परमहितकारी सत के चरणो का बिछोह था। दोनों असमजस में थे कि कर्तव्यवश ही लौटना है, वरना जी तो नहीं चाहता। विनोबा का भी हृदय भर आया। आगे की जिम्मेवारी निबाहने के लिए सत के आशीर्वाद का सबल लेकर जय-विजय विदा हुए।

गरीब लोगो की दरखास्तें आज भी काफी आयीं। कोर्ट भी हुआ। इसलिए इन दोनों का अभाव आज और भी तीव्र महसूस हुआ।

बीच बाजार मे सभा

जहाँ विनोबा का निवास था, सामने ही सभा के योग्य बडा मैदान रहा। परतु सभा गाँव मे बाजार के बीचोबीच रखी गयी थी। धूल-मिट्टी, कीचड, कूडा-करकट, सभी वहाँ था। सभा का स्थान देखकर विनोबा ने

कहा : "यहाँ हमारे दिल को प्रसन्नता नही लग रही है।" और वे लौटकर उसी मैदान मे पहुँच गये। सारा जन-समुदाय भी उनके पीछे हो लिया। लडके फुट-बॉल खेल रहे थे। विनोबा को देखकर उन्होंने खेल बद कर दिया। उत्तर दिशा की ओर मुँह करके विनोबा खडे हो गये और प्रार्थना शुरू कर दी। फिर ४५ मिनट तक स्फूर्ति गगा बहती रही। प्रेम-योग का निरूपण हुआ।

नर करनी करे, तो नारायण हो जाय!

"एक नवीन युग का आरभ हुआ है। वामन का अवतार हुआ है, जो बलिराजा के पास दान माँग रहा है। दरिद्रनारायण की झोली बहुत बडी है, लेकिन काम बहुत आसान है। इसके लिए इद्रिय-निग्रह, वेदाभ्यास, तपश्चर्या, उल्टे लटकना, पानी मे खडे रहना आदि किसी प्रकार के कठिन प्रयोगो की आवश्यकता नहीं। न छोडो अन्न और न छोडो धाम। सहज धर्म का पालन करो। दान किये जाओ और नाम जपते जाओ।"

मनुष्य-जन्म का वैशिष्ट्य समझाते हुए उन्होंने पशु और मनुष्य का फर्क बताया :

"पशु की अपनी मर्यादा है। वह न अधिक पाप कर सकता है, न पुण्य ही। पर मनुष्य का तो ऐसा है कि 'नर करनी करे, तो नर का नारायण हो जाय।' इसलिए मनुष्य याने ईश्वर की प्रयोगशाला है। प्रयोग किये जाओ। बुरे कर्म करोगे, तो बुरे फल पाओगे। अच्छे कार्य करोगे, तो अच्छे फल पाओगे।"

हाथ दिये कर दान रे

देने की प्रेरणा करते हुए उन्होंने कहा :

"आज सब लूटना जानते है, देना नहीं जानते। लोगो को देने का अभ्यास ही नहीं है। वह (अभ्यास) करना होगा। आखिर ये हाथ किसलिए दिये गये है? मारने के लिए नही। गधा अपने पैरो से

मारता है। मनुष्य हाथों से मारता है। दोनों मे क्या फर्क हुआ? "हाथ दिये कर दान रे।" भाइयो, हाथ इसीलिए दिये है कि खूब दान करो। तो, अब आप दीजिये। जो कोई देगा, मै स्वीकार करूँगा।"

एक वृद्ध भाई ने शुरू मे आध एकड जमीन दी। दूसरे एक भाई आये—गरीब किसान। फटे कपडे। एक कागज दिया। कागज में लिखा था, 'महाराज, मेरी सोलह एकड जमीन आपको अर्पण!' फिर एक तीसरे भाई को अम्बादासजी ले आये। उसने सात एकड का दान-पत्र भर दिया। और एक भाई आये। देरी से आये। सभा मे उपस्थित नहीं थे, परतु सुन रखा था। उन्होने पचास एकड का दान दिया। और भी लोगों ने दिया। पचहत्तर से अधिक एकड जमीन हुई।

और अत मे एक युवक आये। अपनी ओर से और अपने भाई की ओर से उन्होने पॉच सौ पचीस एकड का दानपत्र भर दिया तथा अपने-आपको इस भूदान-कार्य के लिए समर्पित भी कर दिया। अनुभव और दीक्षा पाने की दृष्टि से उन्होने वर्धा तक की यात्रा मे साथ रहने की इच्छा प्रकट की, जिसे विनोबा ने सहर्ष मजूर भी कर लिया। हैदराबाद-यात्रा की समाप्ति पर गोपालरावजी के दान का यह एक शुभ शकुन ही हुआ। हृदय-परिवर्तन की क्रातिकारी कीमिया का पुन एक बार साक्षात्कार हुआ!

• • •

जागतिक प्रश्न

: ५६ :

वल्लारपुर
१६-६-'५१

"रमारमण गोविंदो हरि" के रूप मे तेलगाना यात्रा की स्मृति लेकर कृतकार्य विनोबा ने नित्य की तरह ठीक पॉच बजे कूच कर दिया। वरदा नदी मे उस पार मध्यप्रदेश के मित्र प्रतीक्षा कर रहे थे। पीछे बहुत बडा जन-समुदाय विदा करने आया था। सामनेवाले लोगों ने, जैसे ही भगीरथ को नदी की बाला मे उतरते देखा, शख, सनई, उद्घोष और जयजयकार द्वारा आतरिक आनदानुभूति प्रकट करना शुरू किया।

नदी मे प्रवेश किया—जघा बराबर पानी! कहीं वालू, तो कही कीचड! कही गहरा, कही कम! कही ठढा, कही गरम! कही खिचाव, कही स्थिरता! वरदा आगे गोदावरी मे विलीन होकर समुद्र मे मिलती है। मानो वह व्यक्तिगत जीवन को समष्टि मे विलीन करके अनत मे जाकर मिलने की प्रेरणा ही दे रही है।

दादा की श्रद्धा

विनोबा ने जैसे ही पानी के बाहर बाला मे कदम रखा, सर्वप्रथम दादा (आचार्य धर्माधिकारी) ने प्रणाम किया। दादा का सारा हृदय मानो बाहर उमड आना चाहता था। क्रातिकारी तत्त्ववेत्ता और प्रतिभावान् भाष्यकार का मिलन था वह! उन थोडे-से क्षणो मे भी अपने स्वभावानुसार दादा ने मार्मिक वचनों, अर्थपूर्ण उत्प्रेक्षाओं तथा विनोद और सकेतभरे वाक्प्रयोगों के साथ विनोबा का मानो अनेकविध गौरव ही कर लिया : "विनोबा, आप यह सब चमत्कार करके न खुद चैन लेगे, न हम लोगो को चैन लेने देगे। लेकिन आपने

बड़ा उपकार किया, हम सबको उबार लिया। नहीं तो बापू के बाद हम गांधीवाले कहींके न रहते। बाकी सारा श्रेय तो उन कम्युनिस्टों को है कि आपको उधर घसीट ले गये।"

विनोबा के गंभीर चेहरे पर मुस्कराहट छा गयी। पर दादा को जवाब क्या देते? एक ही शब्द कहा. "कुछ रास्ता मिला दीखता है।"

लेकिन और भी मिलनेवाले लोग थे। पुराने अनेक मित्र आये थे। सर्वश्री खुशालचन्द खजाची, छगनलालजी, शंकररावजी देवे, सभी थे। महिलाश्रम से श्री विजया थत्ते पद-यात्रा में शरीक होने आयी थी। इनके भाई राम थत्ते तो मचेरियाल से ही साथ थे। विनोबा ने सबका प्रणाम स्वीकार किया और सबको नम्रभाव से वंदना की। कलेवे का समय हो गया था। बालू में बैठकर कलेवा किया। इतने में प्रांताध्यक्ष श्री कन्नमवार तथा अन्य मित्र लोग भी आये। मध्यप्रदेश की ओर से पहला स्वागत था वह! पूरे समारोह से सारा आयोजन किया गया था। स्वयंसेवक, पताकाएँ, जुलूस और जनता, जिसमें विशेष-कर बल्लारपुर की खानों में काम करनेवाले मजदूर थे। स्वागत में सभी उत्साह से शरीक थे।

प्रांताध्यक्ष का आश्वासन

डेरे पर पहुँचने पर प्रांत की ओर से स्वागत करते हुए श्री कन्नमवारजी ने कहा.

"आज का दिवस महान् सौभाग्य का है। एक हजार मील की पदयात्रा कर विनोबाजी लौटे हैं। उन्होंने हमें निराशा में आशा का मार्ग दिखाया। देहलीवाले भी विस्मित हैं कि विनोबाजी ने अँधेरे में उजाला कर दिया, शांतिमय क्रांति का मार्ग बताकर देश में पुनः एक बार आत्मविश्वास निर्माण कर दिया। पंडित जवाहरलालजी से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता के मन में एक प्रकार की निराशा छा गयी थी। विनोबा ने ऐसे समय तेलंगाना में एक ऐसा चमत्कार

किया कि सारे देश की आँखे आशा से उनकी ओर लग गयी। हम उनका हृदय से स्वागत करते है और विश्वास दिलाते है कि मध्यप्रदेश की जनता भी उनके आवाहन पर तैयार रहेगी।"

प्रार्थना-सभा का प्रबंध किले मे था, जो आज भी गोंड-राज्य के गौरवपूर्ण अतीत की झाँकी दे रहा था। प्रारम्भ मे विनोबाजी ने पद-यात्रा की पार्श्वभूमि बतायी कि किन परिस्थितियों मे उन्हें शिवरामपल्ली-सम्मेलन मे जाना पडा।

विचार लंबे अरसे से चल रहा था

फिर उन्होने अपनी गत दो माह की यात्रा के सिलसिले मे कहा: "अब आगे चुनाव आनेवाले है। चुनाव के पहले कही भी अशाति रहना देश के लिए ठीक नही है। इसलिए तेलगाना के इलाके मे हो आने की इच्छा थी। परतु यह कोई पता नही था कि वहाँ कहाँ जाना होगा, किससे मिलना होगा, कहाँ ठहरना होगा और क्या कहना या करना होगा। फिर लौटकर भी आना होगा या नही, इसलिए वर्धा से चलते समय लक्ष्मीनारायण-मदिर की उस सभा मे मैने कहा था कि अब आगे कब मिलना होगा, नही कह सकते। हो सकता है कि यह भेट आखिरी ही साबित हो, क्योंकि कम्युनिस्टो के मुल्क मे जाना था। विचार यद्यपि लबे अरसे से चल रहा था--वह पक रहा था, इसलिए मैने प्रकट नही किया।"

शब्द-शक्ति और परमेश्वर की कृपा

इसके बाद हैदराबाद-जेल मे कम्युनिस्टो के साथ की मुलाकात, रामनवमी की शाम की ऐतिहासिक प्रार्थना, तेलगाना-प्रवेश, पोचमपल्ली तक का अनुभव, पोचमपल्ली का पहला दान आदि सारा विस्तार से समझाकर आगे जिस तरह काम किया, जैसी जमीन माँगी और जैसी मिली, उन सबके सबध मे उन्होने अपनी भावना प्रकट की:

"मेरे पास जितनी भी शब्द-शक्ति है, सबका मैने प्रयोग किया।

अपने जीवनभर की सारी शक्ति मैने वहाँ लगा दी। लेकिन केव
शब्द-शक्ति का प्रयोग करने से काम नही चलता। परमेश्वर की कृपा
बिना शब्दो मे ताकत नही आती। फिर भी मैने देखा कि जिस प्रभु
शब्द शक्ति दी, उसीने उन शब्दो में ताकत भी भर दी।

दाता ही प्रचारक बने

"आप लोग जानते हैं कि मै कोई आदोलन-प्रवर्तक नहीं हूँ। मेरी वृ
मे ही नही है कि किसी भी तरह कुछ-न-कुछ काम होना ही चाहिए
मेरी हार्दिक इच्छा थी कि बिना समझे लोग कुछ न करे। इसलिए मै उ
बराबर कहता कि विचार समझने पर भी यदि आप भूमि न देगे,
मुझे खुशी होगी। लेकिन बिना विचार समझे देगे, तो दु ख जरूर होग
होना यही चाहिए कि जिसने मुझे जमीन दी, उसने इसीलिए दी कि
विचार मजूर है, इसीलिए फिर वह खुद मेरा प्रचारक बन जाय।

"और हुआ भी ऐसा ही। बहुत बार ऐसा हुआ कि जिन्होने
दिया, वे मेरे साथ अगले पडावो पर आये। एक प्रचारक-मडल ही
बन गया। वहाँ अनतहस्तेन काम हुआ। यह नहीं होता, अगर परे
की कृपा इसमे न होती।

"मैने जो दान का विचार समझाया, वह कोई एक बार थोडा-सा
का विचार नही था। मैने कहा कि भविष्य मे मेरी भी जरूरत न
चाहिए। आप लोग खुद ही देना शुरू कर दो। और मै आपसे
चाहता हूँ कि जिनको दुर्जन समझा गया था, वे सज्जन साबित हु
न सिर्फ हमारी नजरो मे, न सिर्फ औरों की नजरो में, खुद उनकी
नजरो मे भी। इस तरह लोगों के दिलो से भय दूर हुआ।

पद्धति का महत्त्व

"भू-दान मे जमीन कितनी मिली, यह हिसाब महत्त्व का नहीं है
गणितज्ञ हूँ, परतु मेरी निगाह मे भी दान का महत्त्व नही है। महत्त्
... दान मिला—जिसके आधार से

मिला और जिसके आधार से अन्न वितरण भी किया जा रहा है तथा किया जायगा, दोनो पद्धतियो को समझने की जरूरत है। यह पद्धति ही महत्त्व की वस्तु है।"

वास्तविक लब्धि

इसके बाद विनोबाजी ने वितरण-पद्धति, भू-दान-समिति के सदस्यों के चुनाव के पीछे की अपनी दृष्टि, उन लोगों की पक्ष-निरपेक्ष-शून्यत्व की भूमिका आदि सब समझाकर आगे कहा :

"गीता-माता ने हमे समझा रखा है कि आसक्ति मत रखना। कर्मयोग के लिए अनासक्ति की आवश्यक्ता होती है। कर्म का फल मिलना चाहिए और शीघ्र मिलना चाहिए, यह वृत्ति गलत है। हमे इस दृष्टि से इस आदोलन की ओर देखना ही नही चाहिए। यही देखना चाहिए कि लोग अहिसात्मक रास्ते की खोज मे थे, चाहते थे कि निराशा की परिस्थिति न रहे। इसलिए गाधीजी ने एक रास्ता हमे बताया था। तेलगाना में उस रास्ते का, उस विचार का साक्षात्कार हमे हुआ है। यही लब्धि है, इसीको हमे देखना चाहिए।

ममत्व छोड़े

"जमीन तो मैने एक सकेत के तौर पर मॉगी है। हेतु यही है कि हर कोई दे, जिसके पास जो चीज है, वही दे। हवा और पानी की तरह भूमि सबके लिए है, यह विचार सब समझे। देने की आदत डालें। ममत्व छोडे और निर्ममत्व का अनुभव करें। उपकार की भावना न रखे। ममत्व का भार कम करने की दृष्टि रखे।"

और फिर अत मे उन्होने कहा :

जागतिक समस्या

"यह जरूरी नही है कि पहले कम्युनिस्टो द्वारा खूब हानि हो और फिर जमीन भू-दान मे मिले। इसलिए जिस जिसके पास जमीन है, वे दें। यह न समझे कि यह समस्या वरदा नदी के उस पार की है।

आप जानते हैं कि मेरा तो एक परमेश्वर पर ही पूरा आधार है। तो क्या मैं परमेश्वर से कम्युनिज्म के प्रचार की प्रार्थना करूँ, जिनसे यह भूदान सफल हो सके ? यह गलत होगा। तो, आप लोग समझिये कि यह प्रश्न केवल तेलगाना का नहीं, केवल मध्य प्रदेश या भारत देश का नहीं, यह जागतिक प्रश्न है। क्या आप नहीं जानते कि जापान की हालत क्या है ? कितनी कम भूमि में वे गुजर बसर कर रहे हैं। रहने के लिए भी उनके पास पर्याप्त भूमि नहीं है। क्या उन्हें बाहर भूमि न मिलनी चाहिए ? इसलिए आप इस विचार को समझिये। मुझे विश्वास है कि एक बार आप विचार समझ जायेंगे, तो मुझे भगवान् भर-भरकर देगा—अनत हाथों से देगा। और जब भगवान् अनत हाथों देने लगता है, तो मनुष्य दो हाथों कितना ले सकता है ?"

• • •

सबको सन्मति दे भगवान् ! : ६० :

चाँदा

१६-६२-५१

जिले का मुख्य स्थान था और वर्धा तक की मजिल में यही बडा मुकाम था। रास्तेभर विसापुर, नादगॉव, बाबूपेठ आदि सभी गॉवों मे बहुत भाव-भरा स्वागत हुआ। एक गॉव की सीमा से दूसरे गॉव की सीमा तक गॉव-गाँव की कीर्तन-मडलियॉ पहुँचाने आती और इस तरह बल्लारपुर से चॉदा तक रास्तेभर ज्ञानदेव, तुकाराम का उद्घोष गूँजता रहा। शहर मे कम-से-कम पद्रह स्थानों पर तो भिन्न-भिन्न प्रकार के द्वार सजाये ही गये थे। जनता हजारों की सख्या मे उमड पडी थी।

भूदान मे सभी समस्याओं का हल

दिनभर कार्यक्रम बहुत भरा हुआ रहा। कताई-मडल, मजदूरों के प्रतिनिधि, भूमिवान्, नागरिक-जन, मेहतरो के प्रतिनिधि तथा वर्धा और पवनार का परिवार भी आ पहुँचा था, जिनमें गौतम और माला जैसे वानर-सेना के सदस्य भी थे।

शहर के प्रमुख नागरिकों के सामने बोलते हुए विनोबाजी ने तेलगाना की सारी परिस्थिति का हूबहू चित्र तो उपस्थित कर ही दिया, विविध प्रकार से मिले दान का भी जिक्र किया। लेकिन जमीन के बारे मे वृत्ति उदासीन रखी। नम्रता से सिर्फ इतना ही कहा कि "वहॉ मैंने काफी शक्ति लगायी। लेकिन अब तो मै लौट रहा हूँ। नदी बहती जा रही है, जिसे लाभ उठाना हो, उठाये। जिनकी जमीने हैदराबाद राज्य मे हों, वे तो जरूर दे ही। एक बार जब असतोष निर्माण हो जाता है, तो उसके लिए कम्युनिज्म की जरूरत नहीं होती। हरिजन-हरिजनेतर, ब्राह्मण-

ब्राह्मणेतर, किसी रूप में झगडा शुरू हो सकता है। मैं चाहता हूँ कि ये सारे झगडे समाप्त हो जायँ। भू-दान मे मुझे इस समस्या का हल दीखता है। अब आप लोग सोचें।"

स्वराज्य के संरक्षक बनो

शाम की प्रार्थना का प्रबंध हाईस्कूल के आँगन में था। सभा मे जनता हजारो की तादाद मे आयी थी। हर व्यक्ति के बैठने का उत्तम प्रबंध था। डेढ फुट चौडी और साधारणतः पचास फुट लंबी आसनवजा दरियाँ दो-दो फुट के अंतर से बिछा दी गयी थी। एक के पीछे एक, सब लोग सीधी कतार मे बडी तरतीब से ध्यानस्थ बैठे थे। ऐसी बा-तरतीब सभाएँ बहुत कम देखने मे आती है। विनोबा ने इस दर्शन का गौरव करते हुए कहा : "यह शक्ति हमारे हर देहात मे मौजूद है, परतु उनको दृष्टि देनी चाहिए। आज तो हमारे देहात पक्षभेदो के कारण तहस-नहस हो रहे है। चुनावों के कारण यह सब हो रहा है। गाँवो की एकता पर ही हमारे देश की सुरक्षा निर्भर है।"

अंत मे उन्होने कहा . "भाइयो, अशांति के कारणो को दूर करो। एकता कायम करो और स्वराज्य के संरक्षक बनो।"

मेहतरो का आवाहन !

देवडा मे जो भाई विनोबाजी से कहने आये थे कि वे नगराध्यक्ष के यहाँ न ठहरे, वे दोपहर मे यहाँ भी विनोबाजी से मेहतरो का एक प्रतिनिधि-मंडल लेकर मिले। मेहतरो ने वेतन-वृद्धि के लिए हडताल आदि के मार्ग का अवलंबन लिया था। उसमे वे कामयाब नही हुए, तो उनके एक नेता ने उपवास शुरू किया था। विनोबा ने कहा "उपवास नही करना चाहिए।" माँगो के बारे मे उन्होने कहा . "आपकी माँगे भले ही पूरी हो जायँ, लेकिन उससे आपका मसला हल नही होता। मै जगजीवनरामजी की राय से सहमत हूँ कि यह भंगी काम मनुष्यों के करने का है ही नही। सफाई की ऐसी योजना बनायी जा सकती है कि उसमें आज की तरह

गदगी न रहे और हर कोई वह काम सहज कर सके। हमने इस सबध मे काफी और सफल प्रयोग किये है। परतु आपको आज उन सबसे कोई मतलब नही। आज तो मै यही कहना चाहता हूँ कि अगर आप चाहे, तो आपमे से जिन-जिनको जमीन पर परिश्रम कर उदर-निर्वाह करने की इच्छा हो, उन्हे जमीन मिल सकती है। आप इस काम से मुक्त हो सकते है।"

कैसा दुर्भाग्य !

परतु ये लोग जमीन लेने को तैयार नही हुए। विनोबा को इससे दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी। जाहिर है कि जमीन जोतना मेहनत का काम है। मेहतर के काम मे वैसी मेहनत की आवश्यकता नही। सवेरे आधा दिन काम करना पर्याप्त होता है। उसमे भी अधिकतर काम स्त्रियाँ सँभाल लेती है। विनोबा ने कई बार कहा है कि इस तरह मेहतर भी अपनी स्त्रियो का शोषण ही करते है। जमीन के प्रति मेहतरो की जो उदासीनता है, वह भी उनकी श्रमविपयक अरुचि का ही परिचायक है।

ऊपर श्री जगजीवनरामजी की राय का जिक्र आया है। देहली की एक सभा मे अपने हरिजन-भाइयो से उन्होंने कहा था कि तुम यह काम छोड दो। इस काम का प्रबध क्या होगा, इसकी चिता मत करो। जो गदगी करेगा, वह खुद उसको दूर करने की चिता करेगा। तुम तो आज ही इस काम को छोड दो, क्योकि यह काम मनुष्यो के करने का है ही नही। उन्होने यह भी कहा था कि देखते नही कि हर काम मे—यहाँ तक कि चमडे के काम मे भी—होड शुरू है और ब्राह्मण तक की सब जातियो के लोग उसमे दाखिल हो रहे है। परतु मेहतर के काम मे न कोई होड है, न कोई दूसरा इसे करने को तैयार है। यह काम है ही ऐसा कि वह इन्सान के करने लायक ही नही है। एक आदमी का मैला दूसरा आदमी अपने सिर पर ढोये, यह काम कोई मनुष्यता का लक्षण है ?

जगजीवनरामजी के उस भाषण की सराहना विनोबाजी जगह-जगह

करते है। जगजीवनरामजी ने तो मेहतर भाइयों से कहा था कि "इस काम से भूखों मर जाना बेहतर है।" परंतु विनोबा ने तो भू-दान द्वारा उनको जीविकोपार्जन का स्थायी साधन भी मुहैया कर दिया है। फिर भी कैसा दुर्भाग्य है कि हमारे मेहतर भाइयों के दिलों में उनके वर्तमान शोषित, अपमानित, अमानुषिक जीवन के प्रति विद्रोह की भावना नहीं जाग उठती और वे भूमि-माता की सेवा द्वारा स्वतंत्र, स्वावलंबी, स्वाभिमानी जीवन बिताना पसंद नहीं करते।

कम्युनिस्टों द्वारा तेलंगाना में हुए अत्याचारों के घाव से हरिजन भाइयों की इस उदासीनता का घाव कम नहीं था।

सबको सन्मति दे भगवान्!

● ● ●

जाके प्रिय न राम-वैदेही : ६१ :

तादाण्ठी

१७-६-'५१

चरखा-सघ के एक कार्यकर्ता मिलने आये। विनोबा के साथ उनका बहुत पुराना सपर्क था। एम० ए० होने के बाद वे गत बीस वर्षो से चरखा-सघ की सेवा करते आ रहे थे। परतु अब सघ छोडकर प्रशिक्षण (बी० टी०) के लिए जाना चाहते थे। बच्चो की पढाई की भी चिंता थी। शायद घर मे गृहिणी से जैसा साथ मिलना चाहिए था, नही मिल पा रहा था। निर्णय नही कर पा रहे थे। अपनी कठिनाइयाँ विनोबा के सामने रखकर उन्होने मार्ग-दर्शन चाहा, तो विनोबा ने डूबते को सहारा देते हुए कहा :

"मीराबाई के सामने भी ऐसा ही धर्म-सकट उपस्थित था, तो तुलसीदासजी से पुछवाया। जवाब में गुसाँईजी ने लिख भेजा : **जाके प्रिय न राम-वैदेही, तजिये ताहि कोटि बैरी सम, यद्यपि परम सनेही।**"

अब तक का क्रातिकारी जीवन-क्रम छोडकर पुनः बी० टी० वगैरह करने की उनकी इच्छा की ओर इशारा करके विनोबा ने कहा :

"गृहस्थ जब वानप्रस्थ होता है, तो वह उचित ही है। परतु वानप्रस्थ अगर पुनः गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करता है, तो वह आरूढ-पतित होता है। शास्त्र मे उसके लिए कोई प्रायश्चित्त ही नही है। जाहिर ही है कि चढते समय चाहे धीरे-धीरे चढो, लेकिन चढने पर नीचे गिरोगे, तो उतनी ही गहरी खाई मे जाकर पडोगे, जितनी ऊँचाई पर चढ चुके थे।"

माया बड़ी अपार है

प्रश्न : "लेकिन चरखा-सघ मे रहकर 'मास-काटेक्ट' नही सधता।"

विनोबा : "मास-काटेक्ट का अर्थ यह नही कि 'मासेस' के साथ सतत घर्पण होते ही रहना चाहिए। कारोबारी और खटपट के काम करने से बडे प्रमाण मे राग, द्वेप, मत्सर निर्माण होते है। इससे उल्टे मर्यादा मे सहज सधने जैसी सेवा करने में प्रेम सघाटन होते रहता है। चरखा-सघ से मास-काटेक्ट सधता नही, यह गलत खयाल है। सघ न रहेगा, तब उसका महत्त्व समझ में आयेगा। वह तो एक क्रातिकारी काम है। आज जब कि चारों ओर मिलें खडी है, अगर एक भाई को भी हम चरखा सिखाते है, तो लका-नगरी में विभीषण खडा कर देते है। फिर चरखा-सघ मे वैज्ञानिक और शास्त्रीय शिक्षण की भी पूरी गुजाइश है। उसकी जरूरत भी है। रोमेल के बारे मे कहा जाता था कि जहॉ रोमेल, वहॉं विजय। जहॉं कृष्ण और अर्जुन, वहॉ विजय हम कहते हैं न—ठीक उसी प्रकार। लेकिन अमेरिकन पत्रकार उसे देखने गये, तो वह टॅक-दुरुस्ती मे व्यस्त नजर आया। यह था उसकी विजय का रहस्य। चरखा-सघ का काम अत्यत महत्त्व का काम है। दुर्भाग्य से चरखा-सघ के कुछ जिम्मेवार कार्यकर्ता भी मानते है कि यह काम निरर्थक है। हमारा कहना है कि उन लोगों की विचारधारा गल्त है। प्रत्यक्ष क्राति करनेवाले की अपेक्षा क्रान्तिकारी को भोजन करानेवाले कम क्रातिकारी नहीं हैं। जो लोग रात-बिरात कम्युनिस्टों को भोजन कराते तथा रक्षण देते है, उनका स्थान कम्युनिस्ट आदोलन मे किसी कम्युनिस्ट से कम नहीं है। वे लोग भी उतने ही कम्युनिस्ट हैं। कम्युनिस्ट सघटन के महत्त्वपूर्ण अवयव हैं। सतत काम करनेवाले लोगो मे से कुछ लोग अगर आरामतलब हो गये, तो उनमे तेज प्रकट करने के लिए और कुछ अधिक तेजस्वी लोगों को उसमें प्रवेश करना चाहिए। इतने रोज चरखा-संघ मे काम कर आज आप बी० टी० करके किसी विद्यालय में शिक्षक की नौकरी करना चाहते हैं, इसका अर्थ यही है कि यह माया बडी अपार है, इसे पार करना बडा कठिन है।"

नर-देह का क्या भरोसा ?

फिर विनोबा ने अपने स्नेही गोपाळरावजी काळे का दृष्टांत दिया : "गोपाळराव हमारे बालमित्र ! वकालत का इम्तहान देने ही वाले थे। पिताजी ने खर्चा भी खूब किया था। छह साल वकालत करके फिर देश-सेवा मे आनेवाले थे। मैने कहा, ये इधर के छह साल मुझे दे दो। कौन जानता है, नर-देह का कब क्या होता है। उन्होंने फौरन चीन्ह लिया कि यह मोह है और छोड दी परीक्षा !

दृष्टिकोणवालो की जिम्मेवारी

"पडितजी ने मुझे पूछा था कि सर्वोदय-समाज का सदस्य कौन हो सकता है ? क्या उसके लिए अहिसा की पूर्णनिष्ठा आवश्यक है ? मैने कहा, एक फौजी सिपाही भी सर्वोदय-समाज का सदस्य हो सकता है। अर्जुन हो सकता है, क्योंकि जैसे ही कृष्ण का हुक्म होगा कि छोडो, वह लडाई छोड देगा। जिन्हें एक दृष्टिकोण है, 'आउट-लुक' है, वे लोग अगर रचनात्मक काम छोडकर जाने लगेंगे, तो सारे भारत मे जो रचना इस काम के द्वारा हुई है, वह तितर-बितर हो जायगी। हमारी यात्रा मे हमने अनुभव किया कि राजनैतिक काम करनेवाले तो अपने-अपने कामो मे मशगूल रहे, लेकिन रचनात्मक काम करनेवालो ने और सर्वोदयवालो ने ही हमे मदद की।"

ज्ञान-पिपासा

विनोबा ने उनकी ज्ञान पिपासा के सबध मे कहा : "तुमने एम० ए० पास किया है, इसलिए अब और नया ज्ञान पाने का रहा नही, ऐसा नहीं है। मैने जेल के पॉच बरसो मे जितना ज्ञान प्राप्त किया, उतना पिछले पचीस वर्षो मे नही किया था। और मै पॉच वर्षो मे जितना प्राप्त कर सका, उतना दूसरा तो शायद पॉच जन्मो मे भी न पा सके। तो, ज्ञान-साधना तो सतत चलती रहनी चाहिए। लेकिन उसके लिए कॉलेज का द्वार खटखटाने की या बी० टी० की परीक्षा देने की आवश्यकता नही है।"

● ● ●

सैकडो बालक कतार मे खडे थे। विनोबाजी आये तो बालगोपाल उनके साथ हो लिये। विनोबा ने उनका हाथ पकड लिया और फिर विनोबा और बालगोपाल सभी दौडने लगे।

वरगल के ऐतिहासिक किले का निरीक्षण करते हुए

उत्पादन का व्रत क्यों नहीं लेते? : ६२ :

भांदक

१८-६-'५१

रास्ते मे रुकने का कार्यक्रम नही था, परतु कीर्तन-मडलियो ने ऐसा लुभा लिया कि विनोबा को रुकना पडा। कलेवे का समय भी हो गया था। एक डाक बॅगले मे कलेवा समाप्त हुआ, फिर बाहर आकर देखते है कि सारे गॉववाले बडी शाति से बैठे हैं। सामने बाल-गोपाल नजर आये, तो विनोबाजी ने बातचीत शुरू कर दी। एक बालक से पूछा :

"क्या काम करते हो?"

"गौएँ चराता हूँ।"

दूसरे से · "तुम?"

"वही।"

तीसरे से "और तुम?"

"वही।"

जी, हॉ, करेंगे

फिर बच्चो से सवाल पूछना शुरू किया

"बच्चो, तुम जानते हो हिन्दुस्तान मे जो कपडा बनता है, वह फी आदमी कितना गज आता है?"

बच्चे . "कितना गज?"

विनोबा (मुस्कराकर) · "अच्छा! देखो, मै तुम्हें बताता हूॅ। अभी जो बडी लडाई हुई दुनिया मे, उसके पहले सत्रह गज तैयार होता था। लेकिन अब आजकल तो सिर्फ बारह गज ही होता है। इसलिए मै गॉव गॉव के लोगो से कहता हूॅ कि थोडा-थोडा सूत अगर हर कोई कातेगा, तो देश की लक्ष्मी बढेगी। बताओ, तुम लोगो की क्या राय है?'

बच्चे (एक साथ) : "जी हाँ, ठीक है ।"

विनोबा : "केवल 'जी हाँ, ठीक है' कहने से काम नहीं चलता। 'जी हाँ, करेंगे' कहना चाहिए ।"

बच्चे : "क्या करना होगा ?"

विनोबा : "कातना होगा ।"

तलवारों से तकुए

और उन्होंने बच्चों को संत एकनाथ का एक गीत सिखा दिया

माझ्या रहाटाकडे कां पाहा ना ?
तुमची तलवार का मोडा ना ?
त्याच्या चातिच का बनवा ना ?

—"मेरे चर्खे की ओर क्यों नही देखते ? आप लोग अपनी तलवारें अब तोड क्यों नही डालते ? उनसे (मेरे चर्खे के लिए) तकुए क्यों नही बनाते ?"

फिर उन्होंने उसे बच्चों से बार-बार गवाया। बच्चे तो निमित्त बने, सारे समाज ने गीत को अपना लिया। फिर विदा लेते हुए विनोबाजी ने कहा :

"गांधीजी का यही कहना था। गरदन काटने का काम करनेवाली इन तलवारों को तोडकर उनके तकुए ही बनाने चाहिए ।"

पदयात्रा

करीब साढे आठ बजे तक भादक पहुँचे। जैनियों का तीर्थ-स्थान है। धर्मगुरुओं को प्राप्त होनेवाले सम्मान के साथ और अत्यंत सांस्कृतिक वातावरण मे विनोबाजी का आगमन हुआ। लोगों का उत्साह देखा, तो बातचीत शुरू की।

"आप जानते है कि हम लोग लंबी पदयात्रा करके आ रहे है। अपने देश के लिए यह कोई नयी चीज नही है। यह जैनियों का तीर्थ-स्थान है। यहाँ तो पदयात्री कुछ अधिक भी निकल आ सकते है ।"

बच्चे तो सम्मुख थे ही। पूछा :

"अच्छा, आप लोगों मे दस मील से अधिक जिन्होंने प्रवास किया हो, वे अपना हाथ ऊँचा करें।" बच्चों मे तो कोई था नहीं। "कोई नहीं? देखो, हमारे साथ यह वानर-सेना घूम रही है—यह मृदुला, माला, गौतम! इन्होंने सैकडो मील की यात्रा कर ली है। अच्छा! सारे गाँव मे से जिन्होंने दस मील से अधिक पदयात्रा की हो?" फिर भी लोग चुप रहे। विनोबा ने निश्चित प्रश्न पूछा

"पद्रह मील?"

एक हाथ उठा।

"बीस?"

एक हाथ उठा।

"पच्चीस?"

तीन हाथ उठे।

"तीस?"

दो हाथ उठे।

"पचास के ऊपर?"

"जी, मै पढरपुर गया हूँ पैदल।"

सहज मे पदयात्रा के अनुकूल वातावरण ऐसा बन गया कि लोगो ने और खासकर युवकों ने पदयात्रा मे साथ चलने की इच्छा प्रकट की। उनको निरुत्साहित न करके विनोबा ने कहा. "अच्छा, अब फिर बात करेंगे। शाम की सभा मे सब लोग आना।"

बिना उत्पादन खाने का हक नहीं

दोपहर प्राथमिक विभाग के शिक्षकों से बातें हुईं। प्रान्तभर मे उनकी हालत बहुत खराब है। सत्याग्रह वगैरह के बावजूद उनकी वेतन-वृद्धि नहीं हुई। कुछ हारे-से मालूम होते हैं। विनोबा के पास भी वे वेतन की शिकायत लेकर आये थे।

विनोबा ने कहा : "हाँ, शिकायत तो ठीक है। अब या तो वेतन बढाना चाहिए या आमदनी का कोई दूसरा अंग बढना चाहिए। मुझसे पूछा जाय, तो मै कहूँगा कि अगर शिक्षको के घर की स्त्रियाँ सूत कात देती है, तो बिना मूल्य बुनाई का प्रबंध होना चाहिए। विद्यालय को थोडी जमीन भी मिलनी चाहिए और कपास भी मुफ्त मिलना चाहिए। इस तरह कम-से-कम सौ रुपया सालाना तो भी आमदनी बढ सकती है। वेतन-वृद्धि की मुझे कोई आशा नही है, क्योकि सरकार की तिजोरी मे पैसा नही है और यह हालत सरकार की कभी सुधरनेवाली नहीं है। आज वह खुद भिखारी है—कर्जदार है, बाहर से अनाज मँगा रही है। बदले मे मैंगनीज दे रही है। इसलिए हर नागरिक पर उत्पादक परिश्रम करने की जिम्मेवारी आती है। देश को जब उत्पादन की आवश्यकता है, तो बिना कुछ उत्पादन किये खाने का हक ही नही है। हिंदू-समाज मे ऐसे तो नियम-व्रतादि बहुत है। फिर यह व्रत क्यो नहीं ले लेते कि जिस दिन एक घंटा कोई उत्पादक परिश्रम नहीं किया, उस रोज शाम का भोजन बंद! जब तक देश की लक्ष्मी नही बढती, तब तक शिक्षको का वेतन कहाँ से बढेगा ?"

शिक्षक . "किंतु जब 'पे-कमीशन' ने भी हमारे अनुकूल फैसला दिया है ?"

विनोबा "लेकिन तिजोरी मे पैसा कहाँ है ? जो कुछ थोडा है, वह सारा फौज पर खर्च हो रहा है। क्या आप लोग इसके लिए तैयार है कि आज के विद्यालयो की संख्या कम कर दी जाय ? एक काम हो सकता है। हर विद्यार्थी एक लटी सूत रोज अपने शिक्षक को भेंट दे सकता है। एक शिक्षक के पास चालीस बच्चे हो, तो रोज की दस गुडियाँ होगी। महीने की तीन सौ गुडिया हो जाती है। बहरहाल उत्पादन के बिना कोई रास्ता नही है। आप लोगो का कहना ठीक है कि कम-से-कम पेट भरने के लिए तो भी पर्याप्त चाहिए। लेकिन मान लीजिये कि आप ही

सरकार है, तब क्या कीजियेगा ? कितना दे पायेंगे ? इसलिए बिना उत्पादन के कोई चारा नहीं है। मैं तो ऐसा कोई विद्यालय शुरू ही नहीं करूँगा, जहाँ शिक्षक और छात्र उत्पादक परिश्रम न करते हों।"

अब तक विनोबा शिक्षकों को उद्देश्य कर बोल रहे थे। अब उन्होंने शिक्षण की दृष्टि से कहा . "ऐसे मुझे आजकल की शिक्षण-पद्धति से बिलकुल संतोष नहीं है। वहाँ बच्चों को कोई ज्ञान नहीं मिलता। जहाँ न उत्पादन हो, न शिक्षण, उन विद्यालयों को रखकर क्या करना है ? मैं तो बच्चों से कहूँगा, छोड़ो ये विद्यालय। जिस देश में उत्पादन नहीं, वह देश उन्नति कर ही नहीं सकता।"

जीवन-वेतन

शिक्षकों को संतोष नहीं हुआ। एक भाई ने कहा :

"लेकिन क्या जीवन-वेतन भी नहीं मिलना चाहिए ?"

"जीवन-वेतन पहले किसे मिलना चाहिए ? आपको या मेहतर को ? मान लो, सरकार कहे कि 'आप लोगों की आवश्यकता देश को उतनी नहीं है, जितनी मेहतरों की है। शिक्षण की जिम्मेवारी गाँववालों की है। वे सँभालें शिक्षकों को।' तब आपका क्या कहना है ? और मैं आजकल देखता हूँ कि शिक्षक अलग-अलग व्यवसाय भी काफी करने लगे हैं। उससे बच्चों का नुकसान होता है। इससे तो बेहतर है कि वे विद्यालय बंद कर दिये जायँ और नयी पद्धति के विद्यालय चलाये जायँ। मैंने यह कई बार कहा है और करके भी दिखाया है।"

सरकारी कुर्सी

फिर उन्होंने सरकार के बारे में कहा

"आप लोग सरकार की बात करते हैं। परंतु वह कुर्सी ही ऐसी है कि वहाँ जाते ही दूसरा ही दीखने लगता है। फिर वहाँ जाकर भी देश में परिवर्तन करने के लिए दर्शन और जनमत का बल चाहिए। मान लीजिये कि कल सरकार घोषणा कर दे कि 'पुराने विद्यालय हम बन्द करते हैं।

नये विद्यालय शुरू होते है, तब तक छह माह के लिए सभी शिक्षक देश के लिए शरीर-परिश्रम करने अर्थात् मजदूरी करने आ जायँ।' तो, काम तो जरूर होता, लेकिन ऐसी हिम्मत कौन करे? मान लीजिये, मै ऐलान करूँ कि मेरा यह प्रोग्राम है और चुनाव के लिए खडा रहूँ, तो आप लोग मुझे चुनेंगे? आप कहेगे : 'आप बहुत अच्छे है। हम आपको नमस्कार करते है, परतु चुनाव मे आपको मत नही देगे।'

"इसलिए जब तक देश का उत्पादन नही बढता, तब तक वहाँ कोई भी क्यो न रहे, कुछ नही कर सकता। फिर चाहे वहाँ जवाहरलालजी रहें या जयप्रकाशजी या कृपालानीजी। जो वहाँ जायगा, उसकी शिकायत अनिवार्य है।"

यन्त्र-युग

इतनी सब चर्चा होने पर भी एक शिक्षक महोदय उनसे पूछ ही बैठे :

"विनोबा, आप हमे इस यन्त्र-युग मे भी कातने के लिए और हाथ से काम करने के लिए कहते है। इसमे देर भी लगती है और लोगो को यन्त्रो का आकर्षण भी बहुत है। फिर यन्त्र जब तेजी से काम कर सकते हैं, तो यह धीरे-धीरे काम करने की बात का आप आग्रह क्यो करते हैं?"

"ऐसा है"—विनोबाजी ने प्रेमपूर्वक समझाया—"कतई काम न करने से धीरे-धीरे काम करना अच्छा है या बुरा? इतनी रेलगाडियाँ चलती है, हवाई जहाज चलते हैं, लेकिन गत तीन माह मे वे मुझे कोई भी जबरन अपने भीतर बैठा नही सके। कपडे की मिले इतनी चल रही है, उनके बावजूद हमारे बदन पर हाथ का कता-बुना कपडा है। भाइयो, आप लोगो ने रोटी की माँग की और बदले मे मैने ज्ञान दिया, तो उससे पेट नहीं भरेगा। ज्ञान कैसा ही महान् क्यो न हो, रोटी की पूर्ति नही कर सकता। इन यन्त्रो से हमारी बेकारी का सवाल दूर नही हो सकता।"

एक जैन भाई इतनी देर बडी शाति से सारा सुन रहे थे। वे दूध पीने के खिलाफ थे। लेकिन उन्होने प्रश्न और ढग से पूछा :

"विनोबाजी, दूध भी मास ही है, लेकिन लोग दूध बराबर पीते हैं। तो इससे अच्छा तो यही है कि वे मास खायें। आपको इस सबध मे कुछ कहना चाहिए।"

"अरे भाई, मै क्या कहूँ ? मुझे तो गोमाता ने ही सँभाला है। उसीकी कृपा है कि यह देह कुछ काम कर सकता है। लेकिन देखो, हम माता का दूध पीते है, लेकिन क्या माता का मास खा सकते है ? ऐसे ही गो-दूध का समझो। अच्छा, अब समाप्तम्।"

● ● ●

गाँवों में ग्रामराज्य कायम हो : ६३ :

चदनखेडा

१९-६-'५१

साथी का आग्रह

मजिल ऐसे ही चौदह-पद्रह मील की थी। एक भक्त रात को आये—जसराज गोठी! दु खी हुए कि विनोबा उनके गाँव से नही गुजर रहे है। पुराने परिचित थे। जेल के साथी थे। डेढ-दो मील का चक्कर पडता था। फिर भी विनोबा ने मजूर कर लिया। विनोबा से तो कोई क्या कह सकता था, परतु जसराजजी पर सभी लोग मन-ही-मन काफी बिगड रहे थे।

रातभर बारिश बहुत जोरो की हुई। इसलिए वानर-सेना को सडक-वाले रास्ते से आगे भेज देने का हुक्म हुआ। पदयात्रा का रास्ता कच्ची सडक से था, और वर्षा से उसमे कीचड भी हो गया था। वैसे ही सोलह मील चले।

जसराजजी ने सारा गाँव जुटाया था। खुद जमीन दी, औरो से भी दिलवायी। दरिद्रनारायण के लिए बीस एकड भू-दान मिला। खडे-खडे सैकडो 'गीताई' बिक गयीं। अब तो जसराजजी सभीको बडे प्यारे लगने लगे।

रास्ते मे एक गाँववाले ने ग्यारह रुपये भेट किये। रुपयो का क्या करते? ग्यारह रुपयो की गीताई की पुस्तके गाँववालों को दे दी।

नदी-पार चदनखेडा था। लोग उस पार प्रतीक्षा कर रहे थे। पास मे ही अगस्त-आदोलन मे प्रसिद्धिप्राप्त चिमूर है, भसालीजी के उपवासो के कारण जो दुनिया मे मशहूर हो चुका है। सैकडो युवक चिमूर से भी आये थे। वहाँ से बैंड भी आया था। इस पार विनोबाजी को

देखते ही उस पार नदी में उत्साह की बाढ आ गयी। विनोबा कब उस पार पहुँचते हैं, ऐसा कर दिया लोगों ने।

दरिद्रनारायण का पेट बडा है

यहाँ 'माता कस्तूरबा ट्रस्ट' द्वारा एक केंद्र का सचालन किया जा रहा है। श्रीमती तारावहन मशरूवाला मार्गदर्शन करती है। दो रोज से एक शिविर का भी आयोजन कर रखा था। आज समाप्ति थी। पाँच हजार से अधिक जनसमूह सवेरे से ही जुट चुका था। बहुत-से लोग तो परिचित ही थे। विनोबा ने थोडे मे यात्रा की पार्श्वभूमि समझायी और कहा "पिछले दो माह में करीब बारह हजार एकड भूमि मिली, याने रोजाना दो सौ एकड। लोग समझ रहे है कि युग बदल गया। अब वरदा नदी पार करके परधाम लौट रहे है। यहाँ भूमि पाने का उद्देश्य तो नही था, फिर भी हर पडाव पर लोग देते आ रहे हैं और आप लोग भी दे सकते हैं। हमारी भूख तो थोडी है, परतु दरिद्रनारायण का पेट बहुत बडा है। उसे जितनी भी जमीन आप दे, दे सकते हैं, बशर्ते कि आप प्रेम-भावना से दे—उपकार की भावना से नही।"

या घर या सरकार

आशीर्वाद पाने के लिए शिविरार्थी आये। विनोबा ने उनसे कहा

"किसी-न-किसी निमित्त से लोगो में जाग्रति होती रहनी चाहिए। शिविरो के निमित्त जाग्रति अच्छी होती है। आजकल सार्वजनिक जीवन रहा नही—या तो घर है अथवा सरकार। सफाई सरकार करे, दवा सरकार दिलाये, इन्साफ सरकार कराये। जो कुछ गाँव के लिए जरूरी है, सब सरकार करे। हम केवल घर की चिंता करे। सरकार रहेगी नागपुर और जिले मे रहे तो चाँदा मे। उससे गाँवो का काम नही चलेगा। किसी कारण-विशेष से सरकार की सहायता लेना अलग बात है। मानो 'कॉलरा' हो गया, तो सरकार की मदद ले सकते है। परतु नित्य की बीमारियों मे भी सरकारी सहायता की अपेक्षा करना गलत है। गाँव का

प्रबंध प्रायः सारे गाँववाले ही कर लें, तो अनुभव भी बढ़ेगा। घर में डी० सी० की सत्ता हम चलने देते हैं क्या ? पति-पत्नी में झगड़ा होता है, तो समझाने के लिए डी० सी० आते हैं ? फिर गाँव के झगड़े जिले की कचहरियों में क्यों जायँ ? गाँव में सज्जन लोग हैं, उनसे फैसला करवा लें। कानून तो नहीं है कि बच्चे माँ की बात मानें, पर हम सब मानते ही हैं। वैसे ही गाँववाले गाँव के बुजुर्गों का मानें, तो ग्रामराज्य का अनुभव आयेगा। स्वराज्य आकर अब पाँच बरस हो गये, अभी तक गाँववालों को उसका अनुभव नहीं हो रहा है। मैं चाहता हूँ कि गाँव में ग्रामराज्य का अनुभव हो।"

● ● ●

गीताई की कथा

: ६४ :

शेगॉव

२०-६-'५१

विनोबा सवेरे से विशेष प्रसन्न नजर आ रहे थे। एक भक्त के गॉव जाना था—अम्बादास सूर्यवशी के। शेगॉव खास और शेगॉव बुदरुक, दो हिस्से है गॉव के। गॉव पास आते ही वे बोले . "अरे, यह शेगॉव है न ? गाधीजी भी शेगॉव मे रहते थे। बाद मे वह 'सेवाग्राम' हुआ।"

आर्षवाणी

'शेगॉव खास' पर एक विद्यालय की नयी इमारत का उद्घाटन करना था। सोचा था कि वही नाश्ता करेंगे। परन्तु गॉव अभी पौन मील दूर था और नाश्ते का समय तो हो गया था। तौलियॉ बिछाकर नाश्ते की तैयारी की गयी। परतु स्थान प्रसन्न नही था, इसलिए विनोबा बैठे नही। आग्रह किया गया, फिर भी नही बैठे। ताई ने दही का बरतन हाथ मे दे दिया कि अब तो बैठेंगे, पर खडे-खडे ही खाना शुरू हुआ। फिर अग्नि-नारायण के मत्र से वातावरण मे आर्षवाणी गूॅज उठी :

"ऊर्ध्वो न पाहि अहसो नि केतुना विश्व समत्रिण दह।
कृधी न. ऊर्ध्वान् च रथाय जीवसे विदा देवेषु नो दुवः ॥"

उन्होंने समझाया

हे अग्नि ! खडे रहकर अपने ज्ञान से हमे पाप से बचाओ।
सब खानेवालों को भस्म कर डालो।
हमें खडा करो, ताकि हम चले, जीयें।
हमारी उपासनाएँ देवों तक पहुँचाओ।

जिज्ञासु ने पूछा :

"आपने अग्नि पर ज्ञान का आरोप किया ?"

"प्रकाशमान् जो है।"

"खानेवालो को भस्म कर डालो से क्या मतलब ?"

"राक्षसादि के लिए कहा है।"

"और खडे करो ?"

"जैसे अग्नि की ज्वालाएँ खडी रहती है।"

फिर अन्त मे श्लेष बताया

"दुव है न अत मे ? उर्दू के 'दुवा' के साथ इसकी तुलना करो।"

लेप न लगे

इन दिनो परधाम-आश्रम के बारे मे विनोबा का काफी तीव्र चिंतन चलता रहा। रास्ते मे कुछ बाते भी तद्विषयक हो गयी। एक-एक काम मे एक-एक आदमी प्रवीण बनना चाहिए, ऐसी विनोबा की कल्पना थी। बुनाई, बढईगिरी, लुहारी, खेती, गो-सेवा, तेलघानी, निसर्गोपचार, ईंटे बनाना, कवेलू बनाना, चूने की भट्टी, प्रेस का काम, गुड बनाना आदि सभी काम विनोबा की कल्पना मे थे और इन सबके लिए कम-से-कम एक दर्जन तज्ञो की आवश्यकता थी, जो आवश्यक्ता पडने पर किसी भी गॉव का नवनिर्माण कर सके। जो कार्यकर्ता आज परधाम मे काम कर रहे थे, उनकी रुचि, क्षमता के बारे मे चर्चा हुई, तो विनोबा ने कहा :

"हम किसीके कार्य के बारे मे निर्णय नही कर सकते। हरएक व्यक्ति अपने सस्कार लेकर आया है। अपना पूर्व-सचित लेकर आया है। हम उसका कार्यक्रम तय करनेवाले कौन होते है ? परधाम मे चलनेवाली प्रवृत्तियाँ और वहाँ आनेवाले पथिक, दोनो जिस बिंदु पर मिलेगे, उस बिंदु पर जो टिकेगा, वह उस काम मे लग सकता है। बाकी हमे तो किसीसे कुछ करवाना है ही नही।"

"काम नाही, काम नाही, तुका आहे रिकामा।"❀

❀ तुकाराम कहता है कि वह खाली है, उसे कोई काम नही है, कोई काम नही है।

इसी चर्चा के सिलसिले मे विनोबाजी ने रामदास और तुकाराम की बातचीत का जिक्र किया : "नदी के इस पार रामदास है और उस पार तुकाराम। तुकाराम रामदास से पूछते है 'कधि बा रिकामा होशी ?' (कब खाली होनेवाले हो—कब कार्यमुक्त होनेवाले हो ?) रामदास ने जवाब दिया : 'जधि मी निवारी कामा' (जब मै काम-धधो से निवृत्त हो जाऊँगा।) रामदास को परमार्थ के सिवा तो कोई काम था ही नहीं। यद्यपि परमार्थ का काम भी वे अनायास ही खडा करने के पक्ष मे थे, फिर भी उस समय की परिस्थिति मे उन्हें लोकसम्पर्क काफी साधना पडता था। छत्रपति शिवाजी महाराज को तो नित्य उनका मार्गदर्शन मिलता ही था।" विनोबा ने आगे बताया कि "रामदास ने तुकाराम से भी प्रश्न किये थे। तुकाराम ने जो उत्तर दिये, उससे लगता है कि कभी उसे भी कार्य करने की लालसा रही होगी। अपने लिए तो उसे कुछ करना था ही नहीं, किन्तु सार्वजनिक दृष्टि से ही क्यों न हो, कुछ करने की प्रेरणा होती होगी। लेकिन आगे चलकर वह भी दूर हो गयी।"

फिर उन्होने अपने बारे मे बताया : "मेरा स्वभाव भी कुछ ऐसा ही है। एक तो मेरा स्वास्थ्य ऐसा नहीं कि मै बहुत दौड-धूप कर सकूँ। इसलिए प्रवृत्ति मेरे लिए वैसे भी ज्यादा अनुकूल नहीं है। किन्तु मनुष्य को प्रवृत्ति की चिता करनी ही न चाहिए। जहॉ शरीर है, वहॉ कुछ-न-कुछ प्रवृत्ति तो रहेगी ही। सन्यासी रहा, तो उसे भी देह-धर्म के लिए कुछ काम करना ही पडता है। काम की चिंता नहीं करनी होती। चिंता तो इसीकी करनी होती है कि कैसे काम का लेप न लगे।"

विद्यालय की इमारत का उद्घाटन हुआ। विद्यार्थी और कार्यकर्ता, हरएक अपने हाथ की गुँथी पुष्पमाला ले आया था। पचीसों मालाएँ हो गयीं। विनोबाजी एक एक माला स्वीकार करते और छोटे-छोटे बाल-गोपालो के गले मे पहनाते गये। जो बालक सबसे छोटा था, प्रारम्भ उसी से किया गया। बालकृष्ण की मूर्तियॉ ही सामने विराजमान दीखने लगीं।

आज विनोबा के मदिर मे निवास था। पडाव पर पहुँचने पर विनोबा थोडा बोले भी :

"आपके गॉव मे जब से ये अबादास राव आये है, तब से हमारा ध्यान इस गाँव की ओर रहता है। आपने विठोबा के मदिर मे रहने की जगह दी, यह आपकी बडी कृपा हुई। रोज-रोज नया स्थान हमे मिलता है। नये-नये लोगो से भेट होती है। उधर हैदराबाद तो एक उद्देश्य लेकर हम गये थे। लेकिन अब तो चार दिन सहज मनोविनोद के ही है। कोई खास कर्तव्य नही रहा। लोग जो उपयोग हमारा करना चाहे, कर सकते है। गेहूँ का आटा तैयार है---चाहे रोटी सिकवा ले, चाहे हलुवा बनवा ले या लड्डू बॅधवा ले। ऐसे तो हम कल पॉच बजे यहाँ से चलेगे, अगर भगवान् ने चाहा तो। लेकिन नौ बजे रात तक लोगो से मिलना-जुलना हो सकता है। फिर हम ब्रह्मलोक मे पहुॅच जाते है, वह बडी अच्छी अवस्था है। चितन करके सोता हूॅ, तो सवेरे लाभ होता है। फर्क पडता ही है। इसलिए मै भगवान् से कहता हूॅ · 'तेरी दुनिया तू सॅभाल'।"

गॉव मे भोजन का प्रबध कही भी और बहुत अच्छा हो सकता था। परतु अबादास राव की वयोवृद्धा तपस्वी माता ने कहा : "सब मेरे हाथ का भोजन करेगे। जैसे अबादास, वैसे वे सब। फिर विनोबा नही, तो उनके सहयात्रियो के पॉव तो मेरे घर लगे।" वृद्धा ने अकेली ने सहयात्रियो के लिए अन्नपूर्णा की तरह सारा प्रबध किया। उनकी भक्ति-भावना ने उनकी कुटिया को मागल्यधाम बना दिया था।

मातृ-प्रेरणा

शाम की प्रार्थना-सभा मे विनोबाजी ने पुनः अबादास राव का गौरव किया। उनकी नम्रता, दृढ निष्ठा, अध्ययनशीलता और गीताई का उनका प्रेम, इसका सहज उल्लेख करने लगे, तो उस प्रवाह मे विनोबा के मुख

से गीताई की कहानी ही प्रकट हो गयी। विनोबा को 'गीताई' को लिखने की प्रेरणा कैसे हुई, कब हुई और क्यो हुई, यह सब उन्होने बताया।

विनोबा को यह प्रेरणा उनकी माता से ही हुई। "मै सस्कृत गीता नही समझ सकती, मुझे मराठी चाहिए"—माँ ने आग्रह किया।

विनोबा ने मराठी के सभी सस्करण लाकर माँ की सेवा मे उपस्थित कर दिये। 'ज्ञानेश्वरी' तो घर मे थी ही, लेकिन वामन पडित, मोरोपत आदि भी जिन-जिन साधु-सन्तो, कवियो तथा दार्शनिको ने मराठी मे गीता का पद्यानुवाद किया था, विनोबा माँ के लिए खोज लाये। लेकिन माँ की तृप्ति नही हुई।

"मुझे यह कुछ नही चाहिए, मेरे लिए तू ही लिख दे।"

"मै?"

"हाँ, तू। तू लिख सकता है विन्या!"

यह थी माँ की भावना अपने 'विन्या' के बारे मे। 'वर्डस्वर्थ' ने ठीक ही कहा है : 'चाइल्ड इज दि फादर आफ दि मैन!' माँ ने विनोबा को ठीक पहचान लिया था। 'जाकी रही भावना जैसी, प्रभुमूरत देखी तिन तैसी!' सत्यकाम आत्मा की भावना ही तो थी वह।

माता के आदेश ने विनोबा के मन मे गीतानुवाद का बीजारोपण किया। तब से विनोबा गीता का चिंतन-मनन करने लगे। गीता के सबध मे कोई भाष्य, कोई ग्रथ नही, जो विनोबा न देख गये हो। और गीता का कोई विचार नही, जिसकी अनुभूति अपने जीवन मे उन्होने न ली हो। माता तो स्वर्ग सिधारी। परतु विनोबा गीता-माता की उपासना, गीता का चिंतन-मनन सतत पचीस वर्ष अखड करते रहे। इसी बीच उन्होने कितनी ही कविताएँ लिखी। लिख-लिखकर 'अग्निनारायणाय स्वाहा' कर डालीं या फिर काशी में गगा-मैया को समर्पित कर दी। उन्हे कविताएँ तो लिखनी नही थी। 'गीताई' के लिए वह कविता लिखने का अभ्यास मात्र था। उस समय की कविताओ मे से कुछ दो-चार

बच गयी है, याने मित्रों के हाथ लग गयी हैं, बानगी के रूप मे। एक-आध तो 'विचार-पोथी' मे भी प्रकाशित हुई है। उससे पता चलता है कि अग्नि-नारायण को या गगामाई को विनोबाजी की कला-कृतियो का जो कुछ गुप्तदान मिला होगा, वह कितना महान्, कितना मूल्यवान् और कितना पावन होगा।

इधर विनोबाजी की यह साधना चल रही थी, इसी बीच एक रोज, जब वे वर्धा आ चुके थे, जमनालालजी ने भी यही माँग विनोबाजी के सामने रखी कि हमारे लिए गीता का सरल पद्यानुवाद कर दीजिये। फिर तो और मित्रो ने भी आग्रह किया। मातृऋण, मित्रो की इच्छा और पच्चीस वर्ष की साधना! ७ अक्तूबर १९३० के रोज गीतानुवाद प्रारभ हुआ और ६ फरवरी १९३१ को ठीक चार माह मे 'गीताई' माउली (मैया) का अवतरण हुआ।

'गीताई' समझ मे आ सके, इसीलिए जेल मे कुछ प्रवचन भी दिये गये, जो 'गीता-प्रवचन' नाम से प्रसिद्ध हैं।

फिर सत ज्ञानेश्वर का स्मरण करते हुए उन्होने कहा :

"गीताई मे नया कुछ नही है—ज्ञानेश्वर महाराज ने छह सौ वर्ष पहले अपने ग्रन्थ श्री ज्ञानेश्वरी मे जो कुछ कहा, वही गीता-प्रवचन में है। उनके द्वारा दिये प्रकाश मे मै उनके चरण-चिह्नो पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। मै तो अपने को उस महापुरुष की चरण-रज ही मानता हूँ।"

इसी सिलसिले मे उन्होने गीता के त्रिविध गुणो का भी जिक्र किया :

'सारा विषय थोडे मे'—यह गीता का पहला गुण!

'विवेचन सर्वांग है।'—यह उसका दूसरा गुण!

और 'किसी प्रकार का आग्रह नही'—यह उसका तीसरा गुण!

यही वजह है कि सभी पथ के लोग उसे अपना ही ग्रथ मानते है।

जैसे हर बच्चा समझता है कि माता का सबसे अधिक प्रिय पुत्र मैं ही हूँ, गीता के बारे मे भी सबकी वैसी ही भावना है।"

गीता की व्यापकता और अनाग्रहता का विशेष रूप से उल्लेख कर उन्होंने कहा था : "उसके इस गुण के कारण सभी महापुरुषों ने गीता का आधार लेकर समाज को जाग्रत किया। ये लोग साधारण नही थे। शकराचार्य का ही उदाहरण लीजिये। न केवल भारत मे, अपितु सारे ससार मे उनकी जोड के दस-पॉच लोग भी न होंगे। लेकिन उन्होंने गीता का आधार लेकर ही भाष्य किया। ज्ञानदेव ने तो यहॉ तक कह दिया कि "माझिया सत्यवादाचे तप वाचा केले बहुत कल्प"—मेरी वाणी ने अनेक जन्म लेकर अनेक कल्प तक सत्य भाषण की तपश्चर्या की, इसीलिए गीता का स्वारस्य समझाने का भाग्य उसे प्राप्त हो सका। ज्ञानेश्वर जैसा स्वतत्र प्रज्ञा का अनुभवी पुरुष! लेकिन ऐसे धन्योद्गार उसके मुख से प्रकट हुए।"

फिर आधुनिक काल के महापुरुषो का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा : "महात्मा गाधी, लोकमान्य तिलक, अरविन्द घोष आदि लोग कोई छोटे-मोटे नही है। परतु उन्हे भी इस ग्रन्थ से स्फूर्ति मिली और उन्होंने गीता का आधार लिया। इसका कारण यही है कि वह ग्रथ लिखा ही ऐसी अद्भुत समाधि की अवस्था में गया कि उसमे कही आग्रह दिखाई ही नही पडता और जीवन का ग्रहण भी परिपूर्ण समत्व से हुआ है। ऐसा एकाध ही ग्रथ राष्ट्र मे निर्माण हुआ करता और उसी एक ग्रथ पर अनेक राष्ट्रों का जीवन निर्भर रहता है।

"गीता के बारे मे वही अनुभूति भारत को हुई। इसलिए मैंने भी सोचा कि इस ग्रथ पर कुछ लिखा जाय। बचपन से ही गीता का चिंतन-मनन करने की आदत तो थी ही, घर में भी गीता का पठन होता ही था। गीता पर उपलब्ध सारी टीकाएं पढने की धुन भी थी। इस तरह तन्मयता बढी और फिर गीता का अर्थ समझ लेने की दृष्टि से उस

दिशा मे कदम उठाना शुरू किया। आखिर गीता मेरे लिए माँ से भी अधिक हो गयी। इसलिए मैने उसे 'गीताई माउली' [१] कहा।

"गीता मे हिन्दू-धर्म का सार-सर्वस्व है, और दूसरे किसी भी धर्म को बाधा न पहुँचे, ऐसी उसकी व्यापक शैली है। जिस किसीने गीता का चितन-मनन शुरू किया, उसे शात और समाधानपूर्ण जीवन का अनुभव हुआ। इसलिए कार्यकर्ताओ से मेरा निवेदन है कि भाइयो! गीता का चितन कीजिये, जीवन को गीता का आधार रहने दीजिये।

"आप कहेगे, 'हम कार्य-व्यस्त रहते है, चिन्तन-मनन कहाँ से किया जाय?' मै कहता हूँ आप लोग कार्य-व्यस्त रहते है, इसीलिए आपका चिन्तन-मनन का अधिकार है। जो बेकार है, उन्हें चिन्तन भी क्या सधेगा? चिंतन को दिशा की जरूरत होती है। जो सेवापरायण होता है, उसके पास सेवा की दिशा होती है। उस आधार से चितन अच्छा किया जा सकता है। अन्यथा दृष्टि व्यापक होती है, तर्क-वितर्क फैलते है, शाखाएँ फूटती है और ऐसा होता है, मानो मुक्ताकाश मे सचार हो रहा है। इसलिए चितन उसीको सधता है, जो कर्मयोग मे जुट गया है।"

अत मे गीता का सार थोडे मे बताते हुए तीन बाते विनोबा ने बतायी

"१ गीता मे एक बात यह बतायी है कि दुनिया मे उच्च-नीच-भेद मिथ्या है। मनुष्य की योग्यता उसकी भक्ति पर निर्भर रहती है, न कि जाति पर! भक्ति-मार्ग मे जाति-भेद नही, अधिकार-भेद नही! बहुत बडी बात गीता मे बतायी है यह!

"२ दूसरी सिखावन गीता की यह है कि जिसे जो कर्तव्य प्राप्त हुआ है, उसे वह आमरण बिना फलाकाक्षा रखे, निष्काम भावना से,

---

[१] गीता माँ।

निरतर किये जाना चाहिए। कर्तव्य, जो हमे प्राप्त होता है, वह न छोटा होता है और न बडा। वह हमारी मर्यादा का ही होता है। विद्यार्थी को विद्याध्ययन का कर्तव्य प्राप्त हुआ, वही उसके लिए श्रेष्ठ है। देह-गेहादि मोह और आसक्ति का परित्याग करके विश्वमय होकर रहने का धर्म सन्यासी को मिला, तो वही उसके लिए श्रेष्ठ है। गृहस्थ को सतान की तथा अडोसी-पडोसी की सेवा का धर्म मिला, तो वही उसके लिए श्रेष्ठ। जिसकी जो भूमिका, योग्यता, मानसिक भाव होता है, तदनुसार उसे धर्म प्राप्त हुआ करता है। उसका अनुसरण ही उसके लिए श्रेयस्कर है।

"३ गीता की तीसरी सिखावन है—चित्त-शुद्धि सतत की जाय और भिन्न-भिन्न गुणो का विकास किया जाय। यदि भीतर क्रोध है, तो क्षमा-गुण का विकास कर उसे दूर किया जाय। कठोरता हो, तो दया का विकास किया जाय। इस तरह एक एक दोष दूर कर दवी सपत्ति, सद्गुण विकसित होते जायँ, ऐसा प्रयत्न किया जाय।'

एक बार एक बहन ने विनोबा से कहा था "आप सबके लिए बोलते है, सबके लिए इतना सब करते है, बहनो के लिए भी कुछ कहना चाहिए। उनके लिए खास तौर से कुछ करना भी चाहिए।"

विनोबा ने कहा "मैने बहनो के लिए 'गीताई' लिख दी है। इससे ज्यादा अच्छी चीज मै बहनो के लिए शायद ही कोई कर सकता था।"

महाराष्ट्र के घर-घर मे 'गीताई' पहुँच चुकी है। जैसे उत्तर भारत मे 'रामचरितमानस' छह लाख से अधिक प्रतियाँ छप चुकी होगी।

'गीताई' के बारे मे विनोबा स्वय क्या सोचते है? देखिये "मेरा जीवन-कार्य तो तभी समाप्त हो चुका, जब 'गीताई' का लेखन समाप्त हुआ। अब तो यह जो कुछ काम हो रहा है, सारा मुनाफे मे है।'

और बापूजी ने तो 'गीताई' का जो सम्मान किया, उसे पढकर ससार मे मराठी का मस्तक हिमालय से भी ऊँचा हो जाता है। उन्होंने लिखा : "गीताई सुनता हूँ, तो लगता है कि यह मराठी ही मूल है, सस्कृत इसका अनुवाद है।"

● ● ●

प्रेरक तारुण्य

वरोरा
२१-९-'५१

कल 'गीताई' पर व्याख्यान हुआ। आज सारे रास्तेभर 'गीता' और 'गीताई' पर ही चर्चा होती रही। 'गीता' के दैनिक पठन का क्रम और उसका अनुबंध समझाते हुए जब विनोबा द्वारा बापूजी के नाम लिखे उस पत्र का जिक्र हुआ, जो 'गीताध्याय-संगति' नाम से छप भी गया है, तो विनोबा बोले : "वह तो बापूजी के नाम मेरा एक व्यक्तिगत पत्र है। यदि सार्वजनिक स्वरूप का लिखना होता, तो मैं उसे दूसरे ढंग से लिखता। उसे तो छापना ही नहीं चाहिए था।"

फिर आगे बात जारी रखते हुए वे बोले : "हाँ, उसमें साधक के लिए मार्गदर्शन है। उसके आधार पर वह गीता का अभ्यास अच्छा कर सकता है।"

गीता के विविध भाष्यों के बारे में चर्चा हुई, तो विनोबा ने कहा : "गीता का उत्तम भाष्य तो 'ज्ञानेश्वरी' ही है। ज्ञानेश्वर गीता का भक्त है। वह केवल गीता ही समझाना चाहता है। इसलिए जहाँ जो विषय आता है, उसमें वह तन्मय हो जाता है। दूसरों का ऐसा नहीं है।"

जिज्ञासु : "शंकराचार्य का ?"

"आचार्य का मुख्य ग्रंथ, जिस पर उन्होंने अपना भाष्य लिखा, है—ब्रह्म-सूत्र। गीता पर तो उन्होंने इसलिए लिखा कि उन्हें कुछ व्याख्याएँ देनी थीं। व्याख्याएँ देते-देते बीच में कोई ऐसा विषय आ ही जाता है, तो उन्हें कुछ खंडन भी करना पड़ता है। बाकी वे गीता के

सामने कितने नम्र हो जाते है। 'शाकरभाष्य' मे ऐसा नही है। वहाँ तो उनकी सारी कला और सारी प्रतिभा प्रकट हुई है।"

"तिलक महाराज का 'कर्मयोग-रहस्य' ?"

"कर्मयोग-रहस्य का जन्म गीता की भक्ति मे से नही हुआ है। तिलक महाराज को अपने कुछ विचार ससार के सामने रखने थे। उन्होंने गीता के आधार से रखे, उसके लिए गीता का उपयोग किया। वे भक्त नही थे, ऐसा मेरा कहना नही है। भक्तियोग पर उन्होने सबसे अधिक लिखा और बहुत अच्छा लिखा है। परतु गीता-प्रतिपादन उनका मुख्य विषय नही था।"

"आचार्यजी ने भी सन्यास-प्रतिपादन के लिए गीता का उपयोग ही तो किया है ?"

"नही। सन्यास तो एक ऐसी अवस्था है, जो देहधारी के लिए असभव है। आचार्यजी ने बताया कि 'गीता' का अन्तिम लक्ष्य सन्यास है। पर वह तो ध्रुव है। खुद आचार्यजी भी तो जीवनभर काम करते ही रहे। उस समय की रूढियो के खिलाफ उन्होने सन्यास-धर्म स्वीकार किया। फलस्वरूप माता की मृत्यु के बाद जब उस शव को श्मशान ले जाने के लिए कोई न आया, तो उसके तीन खण्ड करके खुद उसे जला आये। क्रांत-दर्शन के बिना यह नही हो सकता।"

प्रेरणामय तारुण्य

चर्चा चल ही रही थी कि 'कुष्ठाश्रम' आ गया, जहाँ विनोबाजी को अभी शिलान्यास करना था। वरोरा के एक युवक वकील श्री आपटेजी ने कुष्ठ-सेवा के लिए अपने-आपको परिवार-सहित समर्पित कर दिया था। उन्हीका आश्रम था यहाँ। शिलान्यास के समय कुष्ठ-सेवा का महत्त्व समझाते हुए विनोबा ने कहा :

"आप लोग देख रहे है कि जहाँ एक ओर लोग तरुणाई को सुखोपभोग का साधन मानते है, इस भाई ने अपने परिवार-सहित कुष्ठ सेवा

के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। वास्तव मे तारुण्य ही ऐसा है, जब बहुत बडी प्रेरणाएँ मनुष्य को मिलती रहती है। उत्तम-से-उत्तम काम और बडे-से-बडा त्याग करने की प्रेरणा अक्सर इसी उम्र मे हुआ करती है। वर्धा मे एक मनोहरजी है, जो गत १०-१२ वर्षों से इसी काम में तन्मय है। उनकी एकाकी उपासना चल रही थी। फिर मैने एक लेख लिखा और हिन्दुस्तानभर से इस काम के लिए सेवको की मॉग की, तो दो तरुण हमें मिले—उत्तर प्रदेश के रविशकर शर्मा और खानदेश के जोशी। कॉलेज की शिक्षा समाप्त करके ही वे आये थे। कॉलेज मे भी, जहॉ सेवा-वृत्ति का अभाव होता है, ऐसे तरुण निकल आते है। इसका इतना ही अर्थ है कि परमेश्वर की इस समय हमारे काम पर कृपा दृष्टि है। इसीलिए भगवान् युवको को अरण्यवास ग्रहण करने की प्रेरणा दे रहा है। फिर यह काम भी आसान नही है। इसमे रोगी को रोगमुक्त और कष्ट-मुक्त करने का आत्मसतोष तो है ही, परन्तु खुद को भी रोग होने की सभावना रहती है।"

यहॉ दान बोया जाता है

फिर इस काम को मदद देने के लिए लोगो से अपील करते हुए उन्होंने कहा :

"इस काम को सब लोगो से सब प्रकार की मदद मिलनी चाहिए। जैसे दान मे दिया हुआ पैसा फेका नही, बोया जाता है, क्योकि यह काम केवल भूतदया का है। गाधीजी के मन मे इस काम के लिए बहुत चिंता थी। अब गाधी-निधिवालो ने इस काम को उठाया है। पर काम इतना बडा है, इतना व्यापक है कि इसमे सबकी सहायता की जरूरत है। किसी एक भी दु:खी का दु:ख दूर करने मे क्या सुख है—इसकी अनुभूति जिन्हें हुई है, उन सबसे मेरी प्रार्थना है कि वे इस काम मे मदद करे।"

बहादुर गौतम

भादक से वानर-सेना याने गौतम बजाज आदि सब यहॉ पहुँच गये

थे। बच्चों ने घुँघची के पौधों से घुँघची के गुच्छ तोडने चाहे। शिलान्यास के स्थान पर उसके पौधे खूब थे और इमारत के लिए आये हुए नुकीले पत्थर भी खूब थे। एक पत्थर के सहारे गौतम भैया घुँघची तोडने चढे और पत्थर खिसक गया। चार इंच लम्बा, डेढ इंच गहरा जख्म हुआ। पत्थर, जमीन, कपडे, सभी खून से तर थे। सभी चिंतित हुए। जख्म को पाँच टाँके देकर सिया गया। सारी घटना मे वीर गौतम के मुँह से चूँ तक नहीं सुना। थोडे ही रोज पहले विनोबा के साथ की चर्चा मे उसने सुना था कि बिच्छू के डंक से शरीर मे पीडा जरूर होती है। परन्तु उसके कारण रोने के बजाय मनुष्य हँस भी सकता है। गौतम भैया के हृदय पर उस श्रवण-ज्ञान का ऐसा अमिट संस्कार रहा कि इतनी बडी जख्म के बावजूद वह रोने के बजाय हँसने लगा। उसकी यह सहन-शक्ति देखकर सबको धीर-गंभीर जमनालालजी की याद आ गयी।

सारा प्रेम से हो

बरोरा मे लोगो ने शिकायत की कि आजकल मजदूर ठीक काम नहीं करते। विनोबा ने कहा : "यह बात सही है कि मजदूर ठीक काम नहीं करते। लेकिन इसकी जिम्मेदारी हम पर ही है। हमने ही उन्हे बिगाडा है। हम तो बैल से भी काम ले लेते है न? बैल के बारे मे हमे शिकायत का मौका क्यो नही मिलता? क्योंकि हम खुद भी उसके साथ काम करते है। अगर हम अपने परिवार-सहित खेती मे काम करने लगे, तो मजदूर भी बराबर काम करने लगेगा। फिर यह भी सोचना चाहिए कि जब हमारे बच्चे अलसाते है, तो हम क्या करते है? जैसा व्यवहार हम उनके साथ करते है, वैसा मजदूरो के साथ भी करे। बच्चो को हम खाना खिलाते है या नही? तो इन्हे भी खिलाये। बच्चो पर थोडा नाराज भी होते है, वैसे प्रेम से थोडा इन्हे भी डाँटे। लेकिन सारा हो प्रेम से। उनमे इसी तरह धीरे-धीरे सुधार हो सकता है।" ● ● ●

धोखे में इतना, तो ज्ञानपूर्वक कितना ! : ६६ :

मागली
२२-६-'५१

मागली याने मागलपुर । यहाँ देवतळेजी पुराने सेवक हैं । वे अगले पडाव पर ही लेने आ गये थे । रास्ते में कीर्तन-मंडलियों ने कबीर, तुकाराम और तुकडोजी के भजनों से मंत्रमुग्ध कर दिया । विनोबा उनके पीछे-पीछे चले जा रहे थे । मागली जाना था, बीच में कहीं रुकने की बात नहीं थी । परंतु कीर्तन माधुरी में मधुप की तरह सारे लीन हो गये और नादब्रह्म जिधर ले गया उधर ही चलते गये । रास्ते में गाँवी ओर मुडे । रास्तेभर द्वार, तोरण और पताकाएँ ! सीधे मंच पर पहुँच गये ।

वहाँ पहुँचने पर रहस्य खुल गया कि मागली अभी दूर है, यह तो बीच का ही देहात है । विनोबा ने मुस्कराकर आसन ग्रहण किया और बातचीत शुरू कर दी

"क्यों, गाँव में कोई झगडा-बखेडा है या नहीं ?"

"जी नहीं" —बूढे मुखिया ने भी मुस्कराकर ही जवाब दिया ।

"अरे ! तब तो गाँव का सारा मजा ही किरकिरा हो गया होगा ?"

"जी ! परमात्मा की कृपा है कि अब तक कोई झगडा नहीं है ।"

"लेकिन अब ये चुनाव जो आ रहे हैं ! फिर उनके साथ शहरवालों के झगडे भी गाँव में आयेंगे । सावधान रहना ।"

फिजूल का टैक्स

विनोबा की लोगों के कपडों पर निगाह गयी । उन्होंने उसी बूढे मुखिया से पूछा : "क्या आपके बचपन में कपडा बाहर से ही आता था ?"

"बाहर से क्यो आये ? यही बनता था। घर-घर चरखे जो चलते थे।"

"फिर अब क्या हो गया ? खेती तो अब पहले से कम ही करनी पडती है।"

"लेकिन हम पहले इतने आलसी कहाँ थे ?"

"अब तो आटा भी बाहर से पिसकर आता होगा।"

"घरभर के काम के लिए तो नही आता। परतु जरा कोई बडा काम निकला कि पडोस के गॉववाली मिल की शरण लेनी पडती है।"

"यह कुछ ठीक नहीं। गॉव के लिए कपडा, आटा, सब गॉव मे ही होना चाहिए न ? आप सबके बदन पर यह सारा मिल का कपडा है। इसके निमित्त कितना रुपया बाहर जा रहा है ? फी आदमी दस रुपये भी मान ले और आप पॉच सौ आदमी भी हो, तो पॉच हजार रुपया सालाना बाहर जा रहा है। यह एक फिजूल का टैक्स ही लगा है आप पर। और बरसो से आप देते आ रहे है।"

"महाराज, दस नही, पचीस रुपया फी आदमी खर्च आता है।"

"तब आप ही सोचिये कि कितना भयकर है यह सारा ?"

और शीघ्रता से रवाना हो गये। मागली पहुँचे, तो देखते है कि गॉवभर की स्त्रियाँ कुकुम-आरती लेकर उपस्थित है। विनोबा ने कहा : "कोई एक स्त्री तिलक करे।" इच्छा हरएक की हुई। नतीजा यह हुआ कि एक-एक कर सबने तिलक किया, सबने आरती की। विनोबा सारी विधि चुपचाप देखते रहे। बहनो के स्नेह के आगे झुक जाना पडा।

"आपका यह छोटा-सा गॉव देखकर मुझे अपने छोटे गॉव की याद आती है। 'भावबळे कैसा झालासी लहान।'* वैसा ही है मेरा। कुछ लोगो को सब बडा-ही-बडा पसद आता है, पर मुझे तो सब छोटा-ही-छोटा पसद आता है—छोटा गॉव, छोटा घर, छोटी चक्की, छोटी तकली।"

---

* भक्ति-भाव के सामने कौन छोटा नही बनता ?

'रामदासाची माउली, आलगावरी गगा आली।' * तो वह घबराया—सोचा कि डुबो देगी। लेकिन मैं डुबोने नहीं आया हूँ। हाँ ठगने जरूर आया हूँ। अब देखता हूँ, आप लोग मेरा काम कितना करते हैं।"

कलियुग में भूदान ?

दोपहर में ग्रामवासियों के साथ काफी देर चर्चा हुई। "कलियुग में यह भू-दान कैसे चलेगा ? जमीन की आसक्ति कैसे छूटेगी ?'—लोगों ने शकाएँ की।

"रूस में भी जो कुछ हुआ, कलियुग में ही हुआ। वहाँ जिसने रुकावट पैदा की, खतम कर दिया गया। मैं कहता हूँ, विवेक से करो। अगर रूस में धोखे में भी इतना सब हो सकता है, तो ज्ञानपूर्वक आप लोग करना चाहें, तो कितना ज्यादा हो सकेगा। ज्ञान से अधिक पवित्र, अधिक तेजस्वी, अधिक प्रतापी, अधिक शक्तिशाली इस दुनिया में और क्या है ? तो, आप लोग अपनी जमीन का आपस में बँटवारा कर लीजिये, प्रेम से एक परिवार की तरह रहिये।'

"चार भाई भी प्रेम से एकत्र नहीं रह पाते ?'

"क्योंकि चारों एक-दूसरे पर अधिकार जताते हैं और इसलिए अपेक्षाएँ भी रखते हैं। भाई भाई का दृष्टात लागू नहीं होता। आप लोग जिन्हें जमीन देंगे, वे आपके साथ प्रेमभाव से बरतेंगे। भाई भाई की तरह झगड़ेंगे नहीं।"

○ ○ ○

---

* गगा-माता, जो सन्त रामदास के लिए माता के समान है, आलगाँव के घर गयी।

पुरुषार्थ कीजिये : ६७ :

नादुरा
२३-६-'५१

बुनकरो ने शिकायत की कि बुनने के लिए सूत नही मिलता।

विनोबा : "सूत होगा ही नही, तो सरकार कहाँ से देगी ?"

"सूत का संग्रह तो खूब पडा है।"

"लूट लो।"

"वितरण मे गडबड है। सरकार का काम है कि वितरण ठीक करे।"

"तो, बदल दो सरकार को, जिससे शिकायत की गुंजाइश ही न रहे।"

"हमारा निवेदन है कि जो काम सरकार का है, वह सरकार करे।"

"याने जो सूत दुनिया मे नही है, वह आपको लाकर दें ? देशभर में यही समस्या है। आप लोग पुरुषार्थ कीजिये। जैसे हर गॉव मे अनाज पैदा होता है, सूत भी पैदा कीजिये। देश की सम्पत्ति बढाइये। फिर बॅटवारे का सवाल ही न रहेगा। दूसरा कोई मार्ग नही है।" ● ● ●

कंट्रोल और लोकमत

: ६८ :

हिंगनघाट

२४-६-'५१

हिंगनघाट में वर्धा से अनेक लोग मिलने आये थे। मगनवाड़ी (वर्धा) में अभी-अभी कंट्रोल के संबंध में विचार-विनिमय करने के लिए विचारकों की सभा हुई थी। उसकी जानकारी विनोबाजी को दी गयी। इस सभा ने कोई निर्णय नहीं लिया। इसीसे जाहिर होता है कि मसला कितना पेचीदा है। विनोबा ने कहा "आजकल राम-नाम की अपेक्षा लोगों के जीवन पर कंट्रोल अधिक हावी है।"

कंट्रोल के बारे में लोकमत लेने, न लेने के संबंध में पूछने पर विनोबा ने कहा : "यह विषय ऐसा नहीं है कि इस पर लोकमत लिया जाय। यह तो विचार का और व्यवस्था शक्ति का विषय है। आप लोग उचित प्रबंध नहीं कर सकते या ठीक राज्य नहीं चला सकते, इसलिए क्या अब अंग्रेजों को पुन. राज्य सौंप देनेवाले हैं? हमारा सुझाव है कि महसूल अनाज में वसूल करो, मजदूरी अनाज में दो और सबको कातना सिखा दो। 'वार मेजर' की तरह ये दो बातें होंगी, तो कंट्रोल की जरूरत न रहेगी। गाँव-गाँव में सभा करके इसी विचार का आंदोलन कराना चाहिए। देहात के लोगों के बारे में मेरी श्रद्धा बढ़ गयी है। वे इस बात को तुरंत समझ सकते हैं।"

● ● ●

यश सारा प्रभु का

: ६६ :

येसबा
२५-६-'५१

सीधी सडक से जाना था, परतु सडक के रास्ते का पुल ही टूट गया था, क्योकि रात मे घनघोर वर्षा हुई थी। इसलिए रेलवे-पुल पर से ही जाना पडा। रेलवे-चौकी के पास कलेवे की वेला हुई। विनोबाजी और सहयात्रियो को रुकते देख चौकीदार ने फौरन अपनी खटिया डाली। हाथ धोने के लिए पानी ले आया। वह अपने को धन्य-धन्य मानकर पूछने लगा कि वह और किस तरह कुछ सेवा कर सकता है।

उधर येसबा से करीब सौ लोग भजन-कीर्तन करते चले आ रहे थे। येसबा अभी दो मील था। विनोबा कलेवे के लिए बैठे, तो कीर्तन-मडली ने तुकाराम का प्रसिद्ध गीत गाना शुरू किया **'तुका बिघडला, जग बिघडले !'**—'तुकाराम बिगडा, तो दुनिया भी बिगडी।' पूरा गीत लोगों ने बडे सुदर ढग से गाया। कलेवा होने पर विनोबा भी भजन मे शरीक होकर गाने लगे। इस बार उन्होने पदो का क्रम उल्टा कर दिया: **'जग बिघडले, तुका बिघडला**—'दुनिया बिगडी, तुकाराम भी बिगडा।' दुनिया से तुकाराम भिन्न नहीं है, यही शायद वे बताना चाहते थे। "लाइफ इज वन ऐंड इनडिविजिबुल" जो सबसे एकरूप हो, उसके लिए भिन्नत्व कैसा? वह तो सबके साथ सब इद्रियो से सदा-सर्वदा सहानुभूति अनुभव करता रहता है।

भजन चल ही रहा था कि सामने से विनोबाजी के बालमित्र, मध्य-प्रदेश के अन्नमत्री श्री गोपाळराव काळे भी आये। दोनो का हृदय भर आया। सबने भरत-भेट का आनद पाया। गोपाळरावजी के लिए विनोबा

के हृदय में बहुत आदर है, यह उनके पश्चात् उनके बारे में विनोबा द्वारा समय-समय पर प्रकट किये उद्‌गारों से हम लोगों ने अनुभव किया ही था। 'सत्याग्रहाश्रम' के सचालन में गोपालराव, विनोबा के दाहिने हाथ थे।

पडाव पर पहुँचने पर मालूम हुआ कि बरसात और पुल टूट जाने के कारण लोग वाबोली आदि अलग-अलग दिशा में विनोबाजी को लिवा लाने गये थे कि जिधर से अच्छा रास्ता हो, ले आयें। थोड़ी देर में सारे लौट आये और येसबा की उस छोटी सी बस्ती में सैकड़ों लोगों की भक्ति-भावपूर्ण कीर्तन-ध्वनि आसमान में गूँज उठी। बरसात देख और बोनी का समय जानकर अपने प्रास्ताविक भाषण में विनोबा ने कहा

"भगवान् का बड़ा उपकार है कि इतनी अच्छी बरसात हुई है। अब तो बोनी के लिए आप सबको खेतों में चले जाना चाहिए। यह बोनी का काम आप लोगों के अपने घर का काम नहीं है, वह तो देश का काम है।"

येसबा में श्री रामचन्द्र पाटील के यहां निवास था। उनका जिक्र कर विनोबा ने कहा. "रामचन्द्रराव को परमार्थ के प्रति बहुत आकर्षण है। उनका भक्त हृदय है। उनके कारण आज येसबा का योग आया।"

निरन्तर निरहकार देश-कार्य

फिर देहात के लोगों के बारे में, खास कर खेती पर काम करने-वालों के बारे में अपनी भावना प्रकट करते हुए विनोबा ने कहा. "देहात में रहनेवाले आप लोग बहुत धन्य हैं, जो निरतर देश-सेवा का काम करते रहते हैं। हम लोग तो कभी-कभी देश कार्य करते हैं, परन्तु आपका काम निरन्तर, अखड चलता ही रहता है। आप पूरी तरह ईश्वर पर निर्भर रहकर काम करते हो। बरसात कम हुई, तो ईश्वर को ही याद करते हो और समय से पहले हुई, तो भी उसीका स्मरण करते हो। अच्छी हुई और समय पर हुई, तो भी उसीका उपकार मानते हो। अपनी ओर किसी

प्रकार का कर्तृत्व नहीं लेते, सतत प्रयत्न करते रहकर भी अहकार का बोझा नही ढोते। आपकी तरह हम सबको भी अनुभव लेना है कि दुनिया मे हमारे किये कुछ नही होता, परमेश्वर के किये ही सब हुआ करता है।

मेरी प्रेरणा

"किसान अधिक परिग्रह कर ही नही सकता। पक्षियो को उनके हिस्से का मिल जाता है। बदर अपना हिस्सा ले लेते हैं। गाय, बैल आदि जानवर अपने हिस्से का खा लेते है। सरकार के हिस्से का सरकार ले लेती है। गॉव के लुहार, बढई, चमार भी अपना-अपना भाग ले जाता है। परिवार को आवश्यकताभर मिल जाता है। इस तरह आप लोगो के पास सग्रह रह ही नहीं सकता। इसलिए मै आप लोगो को गुरुमूर्ति मानता हूँ। आप लोग ही मेरी प्रेरणा हो, मेरी स्फूर्ति हो।"

गलतफहमी

किसान को अपने बारे मे जो गलतफहमी है, उस सबध मे विनोबा ने कहा :

"लेकिन किसान को अपने काम के महत्त्व के बारे मे ज्ञान नही है। वह जानता नही कि वही इस देश का मालिक है। आप लोग जब तक सुखी नहीं होगे, तब तक दुनिया सुखी नही होगी।"

अन्त मे उन्होंने आगाह किया :

"पर आप सब एक बात का आग्रह रखो। शहरो के झगडे यहॉ देहात मे मत आने दो।" अत मे उन्होंने सबको तुरत बोनी पर निकल जाने की हिदायत देकर बिदा किया।

स्वागत-सभा के बाद रामचद्रराव के घर मे विनोबाजी ने प्रवेश किया। शबरी की कुटिया मे राम का पदार्पण हुआ। बैठक मे सामने ही गाधीजी की तसवीर है और दोनो ओर विनोबा की दो तसवीरे—एक

बहुत पुरानी, दुबली-पतली कायावाली और दूसरी, अभी-अभी की। दाहिनी ओर ज्ञानेश्वर तथा रामतीर्थ के चित्र।

अब विनोबा ने उनका उपासना-साहित्य देखना शुरू किया। स्वाध्याय की पुस्तकों में ज्ञानेश्वरी के अतिरिक्त गीताई, हरिपाठ, चांगदेव पासष्ठी, गीता-प्रवचन आदि ग्रंथ थे और थे विनोबा के पत्र, जो समय-समय पर उन्हें विनोबा की ओर से मिलते रहे हैं। ज्ञानेश्वरी सारी-की-सारी जगह-जगह खूब चिह्नांकित है। गत ३० वर्षों से रामचन्द्रराव ज्ञानेश्वरी का नित्य पारायण करते हैं। वर्ष में चार पारायण होते हैं। हर साल बरस में एक बार 'भंडारा' याने 'ग्रामभोज' होता है, जिसमें इर्द-गिर्द के गाँववाले भी शरीक होते हैं। गृहिणी बहुत दक्ष और सेवा-परायण तो है ही, लेकिन पति की इन सारी धर्म-प्रवृत्तियों में पूर्ण सहयोग देनेवाली है। दोनों का जीवन ताने और बाने की तरह एकरूप है। दोनों ने गृहस्थाश्रम को धन्य किया है।

भू-दान का श्रेय ?

येसबा में वर्धा तालुका के कार्यकर्ता भी आये थे। उनमें विनोबा के चिरपरिचित तथा उनके साथ के कुछ आश्रमवासी भी थे। जो कुछ आन्दोलन हुआ, उसके बारे में वे सभी पहलुओं से विचार करना चाहते थे, ताकि इस इलाके में आगे काम के लिए मार्गदर्शन मिल सके।

एक भाई ने पूछा "क्या भू-दान-यज्ञ द्वारा विषमता का सवाल पूरी तरह से हल हो सकता है ?"

दूसरे एक भाई ने कहा "विनोबा ने रास्ता दिखा दिया है, अब सरकार सब लोगों में भूमि का समान बँटवारा क्यों न करे ?"

एक बहुत निकट के सहकारी ने पूछा . "भू-दान-यज्ञ का श्रेय कम्युनिस्टों को है या विनोबाजी को ? अगर विनोबाजी को है, तो वे भारत के और हिस्सों में भी, जहाँ तेलगाना जैसी परिस्थिति नहीं है, भू-दान प्राप्त करके दिखायें।"

हरएक ने अपने-अपने सुझाव दिये। विनोबा ता श्रवण भक्ति कर रहे थे। आखिरी सवाल पर लोग कुछ बिगडते भी नजर आये। इतने मे श्री गोपाळरावजी काले बोलने के लिए उठे। सभा मे पुनः शाति हो गयी।

गोपाळराव : "भू-दान-यज्ञ के श्रेय के सबध मे चर्चा का सवाल ही नही उठता। इस तरह सोचने का तरीका भी गलत है। लेकिन प्रश्न निकला है, तो मै अपना विचार बता देना चाहता हूँ। मेरे मन में कोई सदेह नही कि भू-दान-यज्ञ का श्रेय सारा विनोबा को ही है। यह सही है कि तेलगाना मे भूमि का सवाल एक जीवित सवाल के रूप में उपस्थित था और उसके हल करने के लिए आवश्यक ऐतिहासिक परिस्थिति भी वहाँ मौजूद थी। लेकिन उस परिस्थिति मे जो हल विनोबा ने सुझाया—'भूमि का सवाल कत्ल और कानून से नहीं, प्रेम से, अहिसा से, ऐच्छिक दान से हल हो सकता है'—वह उनका अपना दर्शन है। यह उनकी विशेषता है और इसलिए यह श्रेय उन्हींको है।"

गोपाळरावजी सरकार के भी प्रतिनिधि थे। सरकार के सबध मे भी जिक्र हुआ ही था। तो, उस बारे मे भी उन्होंने स्पष्टीकरण किया :

"सरकार इस मसले को अपने तरीके से हल कर ही रही है। परतु उसकी अपनी मर्यादा है। उसके सामने 'कापेन्सेशन' का सवाल है। भू-दान और सरकार के काम मे कोई तुलना नहीं हो सकती।"

अन्त मे उन्होंने भू-दान के बारे मे पुनः कहा : "यह मैं मानता हूँ कि हमारे यहाँ तेलगाना जैसी ऐतिहासिक परिस्थिति निर्माण नही हुई है। परतु इससे भू-दान के तरीके में कोई फर्क नहीं पडता। भू-दान की कल्पना अत्यत सुदर, अत्यत नवीन और अत्यत क्रांतिकारी है, इसमे मुझे सदेह नही है।"

इस सारी चर्चा को सहयात्रियों तथा सेवकों ने भी सुना। एक सेवक ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया "विनोबा के सम्मुख हमे इस चर्चा के बीच

कुछ कहते संकोच होता है। लेकिन सारी पदयात्रा में साक्षी रूप में उपस्थित रहने के कारण कुछ कहना मेरा धर्म हो जाता है। परिवार के लोगों को चर्चा करने का अधिकार है और उसकी सार्वजनिक उपयोगिता भी है। श्रेयवाले प्रश्न का जवाब विनोबा की भाषा में यही है कि 'सारा श्रेय परमेश्वर का है।' हमारा कहना है कि वह परमेश्वर तेलंगाना में विनोबा के रूप में ही प्रकट हुआ। उसने उनकी वाणी में जो ताकत भर दी और उसके कारण लोगों तथा परिस्थिति में जो परिवर्तन हुआ, उसके हम साक्षी हैं। एक एक इंच जमीन के लिए जहाँ कत्ल और मुकदमे-बाजियाँ होती हैं, वहाँ लोगों ने—जिनके बारे में किसीको उम्मीदें नहीं थीं, ऐसे लोगों ने—जमीनें दीं। हजार-हजार एकड़ जमीन दी और साथ-साथ घूमकर कार्यकर्ता की तरह काम भी किया। इधर गरीब से-गरीब लोगों ने भी अपने एक एक एकड़ में से एक एक गुंठा देकर सबको त्याग की प्रेरणा दी। यह सब परमेश्वर ने करवाया, लेकिन निमित्त हमें या आपको नहीं बनाया, विनोबा को बनाया। क्योंकि इस काम के लिए उन्हींको उसने सबसे ज्यादा अधिकारी पाया। वास्तव में विनोबा के रूप में वामना-वतार ही प्रकट हुआ। इस पदयात्रा के निमित्त प्रतिदिन जो एक एक नया मौलिक विचार वे देते गये, वह इस मानव-जाति के लिए उनकी विशेष और स्थायी देन है। विनोबा के इस काम को देखकर लगता है कि बापू के बादका सारा काम भगवान् उनके जरिये ही करवाना चाहते हैं।'

विनोबा अब तक श्रवण-भक्ति कर रहे थे। इस तरह की चर्चा से थोड़ी देर उनका मनोरंजन ही हुआ होगा, क्योंकि इन बातों का लेप उन्हें नहीं होता। अब उन्होंने बोलना शुरू किया :

"बात ऐसी है कि मैं जो वर्धा से निकला, वह तो सर्वोदय-सम्मेलन के लिए। रेल, हवाई-जहाज आदि के लिए मेरा विरोध नहीं है, यह भी आप लोग जानते हैं। लेकिन पैसे की पकड़ से मनुष्य की मुक्ति कैसे हो सकती है, इसका जो प्रयोग मैं परधाम में कर रहा था, उसी प्रयोग को

उस पदयात्रा के रूप मे मैने जारी रखा। लोक-संपर्क, देश-दर्शन, ये लाभ भी कम महत्त्व के नही थे। फिर लौटने का प्रश्न आया। जाहिर है कि जिस रास्ते से गया, उसी रास्ते से लौटने का सवाल ही नही था। और कम्युनिस्टो का इलाका देखने की कल्पना तो शुरू से थी ही मेरे मन मे। मैने उसे स्पष्ट शब्दो मे जाहिर नही किया था, इतना ही।

"भूमि का सवाल हल हो गया, ऐसा नही है। हॉ, उसकी दिशा मिल गयी है, रास्ता मिल गया है। मै तो गया था केवल अवलोकन करने के लिए। जो कुछ यश प्रकट हुआ है, वह बहुत ही बडा है, इसमे सन्देह नही। अपयश आता, तो भी मुझ पर उसका कोई असर होनेवाला नही था। प्रयत्न करना ही हमारा काम है।

नयी मनोवृत्ति

"जमीन का यह मसला कठिन है, इसमें शक नही। वहॉ तेलगाना के कम्युनिस्टो द्वारा लोगो की हत्याऍ काफी हुई है, कुछ कम्युनिस्ट भी मारे गये है, दबाये भी गये है। साराश, हिसा से ऐसे सवाल हल नही होते। अब अहिसा से वे हल हो सकते है या नही, यही देखना है। भू-दान-यज्ञ ने उस प्रयोग का रास्ता खोल दिया है। जो कुछ काम हुआ, उसका नाप जो भूमि मिली है, उससे नही हो सकता। उससे करना भी नही चाहिए। देने और त्याग करने की जो एक नयी मनोवृत्ति निर्माण हुई है, उसी पर से इसका नाप करना चाहिए। भू-दान-यज्ञ के कारण ही इस देश मे इस एक नयी मनोवृत्ति का उदय हुआ है।"

फिर उन्होंने प्रस्तुत चर्चा के बारे मे कहा :

जागतिक आशा

"अब तो मै आश्रम लौट रहा हूँ। इधर की यह यात्रा निरुद्देश्य है। मित्रों से मिलना हो रहा है, यही लाभ पर्याप्त है। फिर भी जमीन मिल रही है, यह भारत की और भू-दान यज्ञ की भी विशेषता है। बाकी इस समय यहॉ इस प्रकार की चर्चा की आवश्यकता भी नही थी। मेरा

जवाब तो यही है कि मैं यह भू-दान का काम लेकर वहाँ गया नहीं था। वहाँ अनेक प्रकार की घटनाएँ घटी हैं, अनेक प्रकार की कार्रवाइयाँ हुई हैं। वहाँ की परिस्थिति का निरीक्षण करते-करते और वहाँ की समस्याओं को सुलझाते-सुलझाते एक दिन यह भू-दान की कल्पना सूझ गयी। वर्धा से जाते समय भू-दान की कल्पना लेकर वहाँ की समस्या सुलझाने तो मैं गया नहीं था।

"जो परिस्थिति तेलगाना में थी और देश में भी जो स्थिति आज है, वह केवल तेलगाना या हिंदुस्तान की परिस्थिति नहीं है। वह तो जागतिक स्थिति है। उसीका अवलोकन करने और सभव हुआ, तो उसका उपाय खोजने मैं वहाँ गया था। उसी दृष्टि से मैं वहाँ घूमा। उसमें लाभ भी बहुत हुआ है, इसमें सदेह नहीं। दुनिया के लोगों के दिलों में भी एक आशा निर्माण हुई है कि शायद इस रास्ते से कोई हल निकल जाय।

गोपाल-कलेवा

"बाकी जो सवाल अभी उपस्थित हुआ है, उसका जवाब तो हमारे परधाम के काचनमुक्ति के प्रयोग में है, जो मेरी पदयात्रा से पहले वहाँ चलता था, मेरी गैरहाजिरी में भी चलता रहा और जिसमें अब जाते ही मैं पुन जुट जानेवाला हूँ। कम-से-कम भूमि में अधिक से-अधिक पैदावार निकालने का हमारा वह प्रयोग है। उसमें से पैसे से मुक्ति और सपूर्ण स्वावलबन सध सकता है। उसीमें से भूमि-समस्या का हल भी निकलनेवाला है। फिर मेरा प्रयोग मेरे इर्द-गिर्द के लोग, देहातवाले देख सकेंगे। फिर मैं भी उन्हें उसके बारे में कह सकूँगा। आज मैं सरकार की ओर नहीं देखता। वह मेरा तरीका ही नहीं है। मेरे तरीके से अगर पचास फीसदी यश मिला, तो भी मैं काफी समझूँगा। फिर मैं सरकार से भी कह सकूँगा कि यह प्रयोग सफल हुआ, अब इसका सारे देश के लिए

विनियोग करो। सरकार कभी गहराई मे नही जाती और जा भी नही सकती। वह तो लबाई-चौडाई मे ही काम करती है। वह काम भी थोडा ही कर सकती है। जनता की शक्ति के आगे उसका कदम बढ नहीं सकता। सरकार तो प्रजा की सेवक है। वह जनता के लिए गुरुरूप नही है। जो भूमिका सेवक की है, वही उसकी है। वह जनता की सेवा ही कर सकती है, जनता को धक्का नहीं दे सकती। मेरे सामने जमीन एक से माँगकर दूसरे को देने का सवाल ही नहीं है। सब मिलकर सारी जमीन को जोते, यही काम हमे करना है। इसीका प्रयोग हमे सिद्ध करना है। सारा 'गोपाल-कलेवा' हमे करना है।

युग तो भावनाओं का होता है

"कानून से जमीन का समान वितरण करने की बात भी यहाँ निकली। लेकिन वह कानून कौन करेगा? हैदराबाद मे कानून बनाने की बात चल रही है, तो लोगो ने अपनी जमीन की व्यवस्था करना शुरू कर दिया है। मनुष्य कानून मे से भाग निकलने के लिए रास्ते खोजता है और कानून का इरादा सफल नही होता। दडशक्ति से काम भी कम-से-कम होता है, यद्यपि देशभर मे होता है। लेकिन जो काम कानून से नहीं हो सकता, वह भू-दान से हो सकता है। मुझे इसका अनुभव इस बार अनेक गाँवो में हुआ है। एक गोंड के पास साठ एकड भूमि थी। पद्रह एकड उसने अच्छी जोतकर तैयार की थी। वही उसने दान में दी। तीन भूमिहीन परिवारो मे उसका हमने वितरण भी करवा दिया। उन भाइयों ने भी लिख दिया कि हम दस साल जमीन न वेचेंगे। उन लोगो को तो यह सारा अद्भुत ही मालूम हुआ। युग तो भावना का होता है और वह भावना ही बदलती है।

"मैं अब यहाँ जमीन माँगनेवाला नही हूँ। कोई दे, तो लेनेवाला जरूर हूँ। हाँ, 'समग्र ग्राम' का प्रयोग मुझे करना है और देहात-देहात में करना है। आज के देहातो को बदल देना है। यह सही है कि

देहातवालों को भी वैसी इच्छा होनी चाहिए। परंतु यह इच्छा ही तो हमें बदल देनी है। तो, आप लोग अब इस बहस में न पड़ें। मनुष्य तो निमितमात्र बनता है। यश तो सारा प्रभु का ही है।"

फिर उन्होंने शिवरामपल्ली के पंचविध संदेश की ओर ध्यान खींचकर कहा

पंचविध कार्यक्रम

"हमें ये सारे काम करने हैं—गाँव-गाँव साफ-सुथरे करने हैं, शुद्ध व्यवहार करनेवाले लोग निर्माण करने हैं। जो परिश्रम नहीं करते, उन्हें उसके लिए प्रेरित करना है और जो करते हैं, उन्हें निष्ठापूर्वक करने की बात समझानी है। गाँव-गाँव में शांति-सेना के सैनिक निर्माण करने हैं। अशांति नजर आते ही उसका निवारण करना है और सबको शरीर-परिश्रम द्वारा समाज के लिए कुछ-न-कुछ देने की प्रेरणा देनी है। इसके लिए हमने सूत्रांजलि का कार्यक्रम दिया है। उससे हमें अंदाज होगा कि सर्वोदय-विचार को माननेवाले लोग कितने हैं। आप लोग इस पंचविध कार्यक्रम में जुट जाइये और वर्धा-तहसील में यह सब कर दिखाइये।"

इस तरह यात्रा की परिसमाप्ति पर वर्धा-तहसील के लिए एक सुनिश्चित कार्यक्रम ही मानो विनोबाजी ने दे दिया।

और अपने लिए भी कार्यक्रम बना लिया—'कांचन-मुक्ति' और तद्द्वारा 'समग्र ग्राम।'

यह प्रलोभन !

लेकिन विनोबा ने भू-दान के काम पर जोर क्यों नहीं दिया? तेलंगाना की भूमि पर भू-दान यज्ञ की देवता प्रकट हुई, उसने क्या विनोबाजी के लिए यह सहजधर्म निर्माण नहीं किया था? क्या अब उनको सब ओर भू-दान नहीं माँगना चाहिए था?

तेलंगाना की भूमि को भेंट देना और वैसा ही प्रसंग आया, तो उसी भूमि पर अपना समर्पण भी कर देना, यह सहजधर्म तो विनोबा के

लिए निर्माण हो चुका था—हैदराबाद के लिए रवाना हुए, तभी। परतु तेलगाना का वह मिशन पूरा हुआ। अब जो काम तेलगाना जाने से पहले चल रहा था और जो विनोबा की दृष्टि मे भू-दान से भी अधिक महत्त्व का था, उसमे न जुटना ही सहजधर्म की उपेक्षा होती।

लेकिन विनोबा से प्रश्न पूछा गया था कि तेलगाना से बाहर भू-दान प्राप्त करके दिखाये। यह भू-दान-यज्ञ के लिए एक प्रकार का आह्वान था। उसे न स्वीकारना विनोबा के लिए कहाँ तक उचित था?

विनोबा की दृष्टि में वह आह्वान ही गलत था। तेलगाना की यात्रा समाप्त करके बल्लारपुर से वर्धा तक की यात्रा मे भू-दान-प्राप्ति का काम बद तो नहीं हुआ था। भूदान का आग्रह न रखते हुए भी वरदा नदी के इस पार भूदान मे भूमि तो मिली ही थी। खुद तेलगाना में भी, वरगल और नलगुडा मे जो परिस्थिति थी, वह करीमनगर और आदिलाबाद मे नहीं थी। परतु इन दो जिलो में तो नलगुडा-वरगल से भी अधिक जमीन मिली।

लेकिन यह सही है कि विनोबा ने तेलगाना के बाहर भूदान माँगने का वह आह्वान स्वीकार नही किया।

क्योंकि वह आह्वान नहीं था, प्रलोभन था, और जबरदस्त प्रलोभन था। विनोबा प्रलोभन के कैसे वश होते?

ईसा के सामने भी ऐसा ही प्रलोभन उपस्थित हुआ था। शैतान ने ईसा से कहा था: "अगर तुम भगवान् के बेटे होने का दावा करते हो, तो दो हुक्म इस पत्थर को कि रोटी बन जाय।"

ईसा ने कहा: "रोटी ही मनुष्य का सर्वस्व नही है। उसके लिए तो ईश्वर की आज्ञा ही सर्वस्व है।"

विनोबा के लिए भी भू-दान सर्वस्व नही है, ईश्वर की आज्ञा ही सर्वस्व है। उसकी आज्ञा होगी, तो वह भू-दान के लिए निकलने को कहेगा, उसकी आज्ञा होगी तो वह और कोई काम करायेगा।

शाम को विनोबाजी महज ग्राम-प्रदक्षिणा के लिए निकले, तो सारे गाँव में उजियाला ही उजियाला नजर आया। द्वार-द्वार और चबूतरा-चबूतरा दियों से सजा हुआ। लिपे-पुते मार्ग, हर द्वार सजा हुआ, हर चौक पूरा हुआ। दीपोत्सव से भी अधिक आनन्द मनाया जा रहा था। मराठी में कहते ही हैं कि

सत आले घरा, तोचि दिवाळी दसरा।"

—जिस दिन पधारे संत, वही दिवाली-वसंत।

दोपहर में विद्वान् लोग भू-दान-यज्ञ के यशापयश की चर्चा करते थे। ये दीप-मालाएँ कह रही थीं "जवाब हमसे पूछिये।" ● ● ●

जिसका उसको

सेवाग्राम
२६-६-'५१

रफ्तार तो रोज ही तेज रहती है। पर आज की रफ्तार असाधारण थी। दौड रहे थे कहा जाय, तो हर्ज नहीं। खुद दौडते न भी दिखाई देते हो, पर साथी तो सारे दौडकर ही साथ दे पा रहे थे—कदमो मे इतनी तेजी थी। कोई जबरदस्त आकर्षण था, जो उन्हें इतनी तेज रफ्तार चला रहा था! वह और क्या आकर्षण हो सकता था—सिवा उस कुटिया के, जहाँ तीन माह पूर्व पदयात्रा का सकल्प हुआ था, जहाँ से बल और आशीर्वाद लेकर "करो और मरो" की भावना से तेलगाना की पदयात्रा पर विनोबा निकल पडे थे। यद्यपि सबको कहा नहीं था, पर मन मे तो उनके यह था ही कि हैदराबाद से आगे तेलगाना जाना है।

रात मे मेह खूब बरस चुके थे। कच्चा रास्ता! कदम-कदम पर पैर मे पॉच-पॉच सेर से कम मिट्टी नही चिपक रही थी। ऐसी असुविधा मे यह हवा की-सी तेज रफ्तार थी विनोबा की।

छप्पन दीप

रास्ते मे भानखेड पडता था, जहाँ छप्पन बहने हाथ मे दीप के नीराजन लेकर आरती के लिए खडी थी। पकवान तो छप्पन सुने थे। परतु ये दीपक भी छप्पन थे, क्योंकि विनोबा अब अपने छप्पन बरस पूरे कर रहे है। पाद प्रक्षालन, तिलक, पुष्पमाला, न जाने क्या-क्या समारोह शुरू हुआ। पॉव अधीर थे। मन तो शायद कब का कुटिया के पास पहुँच चुका था। आखिर सहा नहीं गया। सारी भीड को वैसी ही

छोड़ एक किनारे से विनोबा चुपचाप ऐसे आगे निकल गये कि लोग देखते ही रह गये। विनोबा का हृदय भाव-भीना था। दुपट्टे से उन्होंने अपनी आँखें पोछीं। रफ्तार और तेज हुई।

बारिश के कारण नाले बहने लग गये थे। चिकनी मिट्टी थी। कदम-कदम पर पाँव फिसलने का भय था। पगडंडियों से ही चलना था। आगे-आगे विनोबा और पीछे-पीछे जन-समुदाय। एक के पीछे एक सहज-सुन्दर दर्शन था—रहबरी के संकेत से भरा हुआ। सामने विशाल ताल-वन था, जो तेलगाना के प्राकृतिक सौन्दर्य की स्मृतियाँ ताजी कर रहा था।

ताल-वन को पार करते ही सामने 'तालीमी-संघ' का सारा परिवार ताल-मृदंग, एकतारा-झांझर लिये कीर्तन कर अगवानी करता दिखाई दिया। सब उसी छोटी-सी पगडंडी पर एक-एक कर साथ हो गये। "प्रेमगली अति साकड़ी", उसमें दो समाते ही कैसे? विनोबा की रफ्तार और भी तेज हो गयी। मानो बरसों के विरह के बाद मातृ-मिलन के लिए उत्सुक वत्स दौड़ रहा हो। आश्रम के द्वार पर चिमनलाल भाई, बाबाजी आदि ने आदर और मौनपूर्वक प्रणाम किया। विनोबा के हाथ प्रणाम के लिए जुटे उतनी देर में पाँव 'आदि-निवास' वाली कुटिया तक पहुँच गये। फिर प्रार्थना-स्थल, पीपल और कुटिया का द्वार! क्षणभर में बापू के सामने जाकर बैठ गये। हाँ, बापू के सामने ही, क्योंकि विनोबा के लिए तो वे आज भी वैसे ही थे और हैं।

कुटिया में विनोबा बहुत देर रुक न सके। बापू के रहते भी उन्होंने कभी बापू का अधिक समय नहीं लिया, तो अब कैसे लेते? शीघ्र 'आखिरी' निवास में लौट आये, जहाँ डेरा रखा गया था। यहाँ से आश्रमवासियों ने दो माह पूर्व उन्हें बिदा किया था—"सुनेरी मैंने निर्बल के बल राम" गाकर! वही गीत फिर से गाया गया। विनोबा ने तो तभी कहा था कि 'सुनेरी' नहीं, 'देखेरी मैंने'। अब तेलंगाना की यात्रा ने तो इस 'देखने

पर मुहर भी लगा दी। इधर बहने एक-एक चरण अलापती जाती और उधर विनोबा की आँखो से कृतज्ञता निखरती जाती। गीत तो कब का समाप्त हुआ, पर विनोबा की मौन समाधि भग नही हुई। वाग्धारा का काम नयनधाराएँ कर रही थी।

'गुरोस्तु मौन व्याख्यानम्' '—काफी देर तक सबको इस तरह अत्यत शात-गभीर वातावरण का स्पर्श प्राप्त हुआ। आखिर सारा बल समेटकर मौन भग करते हुए विनोबा ने कहा :

"आप सब लोगो की शुभ-कामनाएँ लेकर मै यहाँ से रवाना हुआ था। जिस प्राणदायी बलवान् भजन से आपने मुझे विदाई दी थी, उसी भजन से यह महान्-यात्रा यहाँ समाप्त हो रही है, इसकी मुझे बहुत खुशी है। तालीमी सघ के इन छोटे-छोटे बच्चों का और इन बहनो का मै खास तौर से उपकार मानता हूँ, क्योकि जो कुछ भी हुआ है, उसमे इन लोगों की सद्इच्छाओं का बहुत बडा हाथ है, ऐसा मेरा मानना है।"

जाजूजी, बाबूकाका (किशोरलाल भाई) जानकी, देवीजी, गोमती काकी, शाता बहन, सारा महिलाश्रम-परिवार, गोपुरी-परिवार, परधाम परिवार, सभी से मिलना हुआ। नम्रता और तपस्या की मूर्ति, वयोवृद्ध जाजूजी की वात्सल्य भरी आँखों मे विनोबा के पराक्रम ने एक नया तेज और उत्साह भर दिया था। अक्सर गभीर रहनेवाले चेहरे पर एक दमक रही, मानो वह अहिंसा की ही दमक हो। किशोरलाल भाई से मिलकर ऐसा लग रहा था, मानो विनोबाजी अपने-आपसे ही मिल रहे हो।

"जितना विचार-साम्य मैने किशोरलाल भाई के साथ अनुभव किया है, शायद ही उतना किसीसे और किया हो।"—विनोबा ने कई बार कहा था। बापू के बाद किशोरलाल भाई तो विनोबा के साथ मानो तद्रूप ही हो गये थे। किशोरलाल भाई ने विनोबा के निकट बैठकर जब उनकी श्रात काया को वात्सल्य और चिता की निगाहो से निहारा और स्वास्थ्य के सबध मे पूछ-ताछ की, तो मालूम होता था—उनके मुख से स्वय बापू

ही पृच्छा कर रहे हैं। पास में गोमती काकी खड़ी थी, जो कभी विनोबाजी को निहारती, कभी बापूकाका को, मानो किसी अकथनीय आनंद की अनुभूति उन्हें हो रही हो।

तेलगाना में जो कुछ हुआ, उसके बारे में जितनी कृतकार्यता विनोबा अनुभव कर रहे थे, उससे कितनी ही अधिक किशोरलाल भाई स्वयं अनुभव कर रहे थे। मानो बापू पुनः हमारे बीच आ गये हों, ऐसा ही उन्हें लग रहा था।

साक्षात्कार

शाम को प्रार्थना के पहले, विनोबाजी की अनन्य सेविका, उनकी मानस-पुत्री, परंतु माता की तरह उनकी फिक्र करनेवाली, उनकी भूख-प्यास को अपनी भूख-प्यास की तरह अनुभव करनेवाली महादेवी बहन ने यात्रा के कुछ संस्मरण सुनाये, जिससे जाहिर होता था कि सारे यात्रा-पथ में विनोबा के लिए ताई के सुरक्षण का कितना बड़ा सहारा था।

अपने प्रवचन में विनोबा ने उनके निवेदन की ताईद करते हुए कहा :

"मेरा विश्वास इस मुसाफिरी से और भी बढ़ गया है। दुनिया में अगर किन्हीं दो शक्तियों का मुकाबला होनेवाला है, तो 'साम्यवाद' और 'सर्वोदय' विचारों में होनेवाला है। दूसरी जो शक्तियाँ दुनिया में काम करती दिखाई देती हैं, वे ज्यादा दिन टिकनेवाली नहीं हैं। 'साम्यवाद' और 'सर्वोदय' में साम्य भी बहुत है और विरोध भी उतना ही है। जमाने की माँग वही है। लेकिन हम सिर्फ उसका विचार करते रहने से या तत्संबंधी लिखते रहने या चिन्तन करते रहने से काम होनेवाला नहीं है। हमें उस विचार को सिद्ध करना होगा। बताना होगा कि कांचन-मुक्त समाज-रचना हो सकती है, सत्ता-रहित समाज बन सकता है। चाहे छोटे पैमाने पर ही क्यों न हो, हमें ऐसा नमूना दिखाना होगा। तभी हम साम्यवाद के मुकाबले में टिक सकेंगे। नहीं तो सम्भव है कि साम्यवाद ही

आ जाय । इसलिए मेरे मन में यह बात दृढ हो गयी है कि तेलगाना मे जो काम हुआ, उसकी बुनियाद हमारे पवनार के प्रयोग मे ही है ।"

फिर अपने अनुभवो का सार केवल दो शब्दो मे प्रकट करते हुए उन्होने कहा :

"अपना अनुभव किस शब्द मे रखूँ, ऐसा जब मै विचार करता हूँ, तो मुझे केवल एक ही विचार सूझता है : 'साक्षात्कार !' मै आपसे कहना चाहता हूँ कि तेलगाना की यात्रा मे मुझे ईश्वर का एक प्रकार से साक्षात्कार ही हुआ । मानव के दिल मे जो भलाई है, उसका आवाहन किया जा सकता है, ऐसी श्रद्धा से मैने काम किया और भगवान् ने वैसा ही दर्शन प्रकट किया । मै यह भी मानता हूँ कि अगर मै दूसरे विचार से गया होता और मानता कि मानव का दिल असूया, मत्सर, लोभ आदि विकारो से भरा है, तो मुझे दर्शन भी भगवान् ने वैसा ही दिया होता । साराश, मेरा अनुभव है कि भगवान् कल्पतरु है । जैसी कल्पना हम करते है, वैसा ही रूप वह प्रकट करता है । अगर हम विश्वास रखे कि भलाई मौजूद है, बुराई नाचीज है, तो वैसा ही अनुभव आ सकता है ।"

अन्त मे उन्होने कहा : "प्रवास का सकल्प यहाँ हुआ था, इसलिए यहाँ से ही होकर जाने का विचार मुझे सूझा । जो बल मै यहाँ से लेकर गया, वह इसी स्थान पर समर्पित कर, रीता होकर कल मै आगे बढूँगा ।"

सस्कृति-समन्वय

रात को श्री आशादीदी ने उत्तर-बुनियादी के छात्रो द्वारा कीर्तन का कार्यक्रम रखा था । हर भाषा का एक-एक भजन गाया गया । सबने मिलकर गाया, क्योकि सबको सब भाषा के भजन कठ थे । भजनो का चुनाव भी अच्छा था । स्वर-माधुर्य, अर्थ-माधुर्य, भाव-माधुर्य, त्रिविध माधुरी मे विनोबा और सारा परिवार तल्लीन था । किसीको अपेक्षा नही थी कि विनोबा कुछ कहेगे भी । परतु कीर्तन की परिसमाप्ति पर प्रसादी कैसे न मिलती ? वे बोले :

"अभी यहाँ अठारह भाषा के भजन गाये गये परन्तु चिंतन सबमे कैसा एक ही प्रकट हुआ। याने इस सत्संग के जरिये सारे संस्कारों का सम्मेलन ही हुआ। यह छोटी बात नहीं है कि सारे हिंदुस्तान के लोग अपने को एक समझें। लेकिन उससे बड़ी बात यह है कि भजनों मे जो भाव गाये गये, वे जीवन मे भी उतरें। जैसा मीराबाई ने गाया 'मेरे तो गिरिधर गोपाल!' एक भगवान् के सिवा दूसरा कोई शब्द ही मुख मे क्यों आये?"

फिर देशभर का अपना अनुभव बताते हुए उन्होंने कहा:

"हमारे देश मे सर्वत्र कीर्तन, भजन का सत्संग बहुत चलता है। अभी हैदराबाद मे हमने देखा ही, उधर महाराष्ट्र मे, बंगाल मे और उत्कल मे भी। सारांश, हर प्रांत और हर गाँव मे कुछ-न-कुछ सत्संग चलता ही रहता है। उन सबके मूल में जो सद्भावना है, उसका दर्शन हमारे निज के जीवन में और हमारे विद्यालय के जीवन मे भी होना चाहिए। यह सारा विश्व एक सागर है, उसमे हमारा यह विद्यालय तो एक बिंदु-मात्र है। लेकिन अगर हमारे जीवन मे वह भाव उतरे, जो इन भजनों में भरा है, तो यह विद्यालय सारे विश्व का मार्ग-दर्शन कर सकता है। जहाँ सच्ची तालीम है, वहाँ सारी दुनिया आकृष्ट हो सकती है। आजकल जो बड़े-बड़े शिक्षा-शास्त्री हुए—जिन्होंने शिक्षण के संबंध में कुछ प्रयोग किये—वे चंद ही बालकों को लेकर बैठे। 'उपवर्ण' की शाला मे दस-पाँच ही विद्यार्थी थे, परंतु उसने भारत को बड़े-बड़े विचारक दिये। इसलिए हम जो कुछ भी करें, पूरा करें। नानक ने जो पूरा पाने की बात कही है, वह बहुत अर्थपूर्ण है। अधूरे मे निर्वीर्यता रहती है। तालीमी-संघ से हम आशा करते है कि यहाँ संस्कृति समन्वय का जो प्रयोग शुरू किया गया है, वह पूर्ण होगा।"

फिर उन्होंने नयी तालीम के छात्रों के बारे मे कहा:

अल्प-सतोष बनाम आत्म-सतोष

"लोगों को शंका होती है कि कही नयी तालीम के लडके समाज को भारभूत तो न होगे ? पर नयी तालीम के लडके तो ज्ञान के सागर, विद्या के आगर होने चाहिए। ऐसे विद्यार्थी चाहे चद ही क्यो न हो—चार ही क्यो न हो, वे सारे भारत का नूर बदल सकते है। कॉलेज, हाईस्कूल से भी लडके निकलते है, परतु उनका तेज दुनिया मे प्रकट नही होता। मै नही चाहता कि हमारे बच्चे अल्प-सतोषी या थोडे ज्ञान मे सतुष्ट हो, थोडे सुख मे सुख मान ले। हम अल्प-सतोष नही, आत्म-सतोष चाहते है। दुनिया की चीजो के बारे मे आत्म-सतोषी कहता है कि ये तो जड चीजे है, वे मेरे पीछे आये। मै उनके पीछे क्यो जाऊँ ? इसलिए हमे आत्म सतोष की ही साधना करनी है, उसे ही पाना है, उसीमे सतोष मानना है। उससे कम मे सतोष नही मानना है। आप लोग आज उत्तर-बुनियादी करेंगे, लेकिन इससे पढाई पूर्ण नही होती। निरतर सेवा और निरतर ज्ञान-प्राप्ति, यही हमारा जीवन-क्रम है।" ● ● ●

अहिंसा की खोज मेरा मुख्य कार्य : ७१ :

परंधाम (पवनार)
२७-६-'५१

जिसका उसको सौंपकर परधाम के संत ने रोज की तरह पाँच बजे सेवाग्राम से भी कूच कर दिया। सारा परिवार मौन विदाई देने लम्बी दूर तक चला आ रहा था। 'आनंद-टेकडी' के पास से विनोबा ने सबको वापस लौटने की सूचना दी और काफिला अपनी आखिरी मंजिल के लिए आगे बढा।

रास्ते मे जो जो संस्थाएँ आती थी—महिलाश्रम, काकावाडी, गोसेवा-संघ, ग्राम-सेवा-मंडल आदि, उन सबके कार्यकर्ताओं ने अपनी-अपनी संस्थाओं के द्वार पर खडे रहकर विनोबा को मौन अभिवादन किया और हर कार्यकर्ता ने अपनी श्रद्धा के प्रतीक के रूप मे एक-एक गुंडी भेंट की। गोपुरी में काफी कार्यकर्ता जमा हो गये थे। विनोबा थोडी देर वहाँ रुके और मित्रों के साथ कुछ प्रकट चिंतन भी कर लिया।

आमूलाग्र परिवर्तन

"अब भविष्य मे, इस दुनिया में, केवल दो विचार-धाराओं के बीच ही टक्कर होनेवाली है। एक धारा सर्वोदय की है और दूसरी, साम्यवाद की। इनमे आपस में समझौता असंभव है। अगर हम ठीक तरीके से काम नही करते, तो कम्युनिज्म के आने की काफी संभावना है। इसलिए अब इतना काफी नही है कि हम अपने पुराने तरीकों में यहाँ-वहाँ कुछ थोडा-बहुत परिवर्तन कर दे। काल-प्रवाह को पहचानकर हमें अपनी संस्था और उसकी कार्य-पद्धति मे आमूलाग्र परिवर्तन करना होगा। इसके लिए हमें अपने को तैयार करना होगा। अन्यथा हम नामशेष हो जायेगे। अब

केवल विचार करते रहने से काम नहीं चलेगा, प्रत्यक्ष काम मे लग जाना होगा।"

उन्होंने काम के स्वरूप की अष्टविध रूपरेखा भी बतायी, जिसमे बुनियादी तालीम, श्रमिक जीवन-तादात्म्य और स्वावलबी-साम्ययोग का विशेष रूप से उल्लेख किया।

भरत की तपस्या

करीब साढे आठ बजे विनोबा परधाम पहुँचे। 'भरतराम' मदिर मे प्रवेश किया। प्रदक्षिणा करते हुए ज्ञानदेव का प्रसिद्ध भजन, "धर्म जागो निवृत्तीचा"* मुक्त-कठ से गाते गाये। जानकीदेवीजी ने विनोबाजी के पुनरागमन के उपलक्ष्य मे अपना छोटा-सा, किंतु मार्मिक भाषण किया : "यह सही है कि विनोबाजी ने तेलगाना मे एक अपूर्व चमत्कार किया है। परतु उनकी अनुपस्थिति मे आश्रमवासियो ने यहाँ भरत की तरह जो कडी और अज्ञात तपस्या की है, वह भी कम महत्त्व की नही है।"

शुभेच्छा का परिणाम

लोगो की इच्छा थी कि विनोबा भी कुछ बोलें। और वे बोले भी कि "अब बोलना समाप्त। जो कुछ थोडा-बहुत काम हुआ है, वह सबकी शुभेच्छा का परिणाम है।' सदा उस शुभेच्छा का ही आवाहन करते रहे, तो परिणाम भी शुभ और मगलमय आता है। जो कुछ काम हुआ है, उससे यह श्रद्धा बढी ही है। अतः मगलमय ही हमारा चिंतन हो, मगलमय ही हमारा विचार हो और मगलमय ही हमारा कर्म !"

सेवा की कसौटी

दोपहर मे कार्यकर्ताओं की सभा मे विनोबा ने आगामी कार्यक्रम का

---

* 'अब दुनिया में निवृत्तिनाथ का धर्म जगे।' निवृत्तिनाथ अर्थात् ज्ञानदेव के बडे भाई और गुरु।

सकेत करते हुए कहा . "हमें यह समझकर काम मे लग जाना चाहिए कि यहाँ कम्युनिस्ट-समस्या है। इसलिए हमें स्वावलबी-साम्ययोग सिद्ध करना है, 'ग्राम-राज्य' याने 'राम-राज्य' कायम करना है, जो परस्पर सहकार के बिना सभव नही है। देहात और शहरों का समान भूमिका पर सहकार्य होना चाहिए। आज का सहकार्य असमान भूमिका पर है। कम्युनिस्ट लोग समान भूमिका पर सहकार्य करते है, परतु वे समाज के दो टुकडे कर डालते है। मुझे टुकडे नही करने है और न होने देने हैं। परतु आखिर तो ईश्वर की इच्छा ही काम आती है। वह बहुत कृपालु है। दुनिया का दुःख दूर करने के लिए अगर उसकी इच्छा एक बार दुःख बढाने की होगी, तो वह बढायेगा। अगर मेरी जिदगी मे यह दुःख बढा, तो सेवा करते-करते मुझे उसमें खप जाना है। फिर कोई दूसरा आयेगा, वह आगे का काम करेगा।"

भू-दान-कार्य के सबध मे उन्होंने कहा :

परधाम का प्रयोग

"जमीन का प्रश्न केवल तेलगाना या मध्य-प्रदेश या अखिल भारत का नही, जागतिक प्रश्न है। यदि परधाम मे चलनेवाला साम्ययोग का प्रयोग सिद्ध होता है, तो इस समस्या का हल हमें मिल जायगा। इसलिए 'भूदान' से भी अधिक महत्त्व के इस काम में मुझे लग जाना है। तेलगाना की यात्रा के पहले भी मेरा यह प्रयोग जारी था। तेलगाना में जो कुछ काम हो सका, वह भी इसी प्रयोग के कारण हो सका है।"

पदयात्रा की पूर्णाहुति का प्रवचन तो सवेरे ही हो चुका था। परतु शाम को प्रार्थना के लिए इर्द-गिर्द के देहातों से अनेक लोग आ पहुँचे थे। ऐसा लगता था कि स्वय गगा ही भगीरथ को देखने के लिए उमड़ आयी हो।

विनोबा ने मन-ही-मन अपनी उस लोकमाता को वदन किया। जो सदेश उनके मुख से आज प्रकट हुआ, वह छोटा सदेश नहीं था :

साथियो की तपस्या

"आज सवेरे जानकीबाई ने मेरे मन की बात कही। हम लोग उधर गये और बहुत परिश्रम का काम किया। उसमे बहुत-सी सफलता भी मिली। उसमे सबको आनद हुआ और वह काम ससार मे प्रसिद्ध हुआ, यह बात सही है। फिर भी हमारे साथियो ने यहॉ पीछे रहकर जो कुछ अज्ञात तपस्या की, उसकी कीमत बहुत बडी है और उसमे अपना हिस्सा उठाने के लिए मै आ गया हूँ। यहॉ के काम का महत्त्व मेरी बुद्धि मे इतना खप गया है कि इस सारे प्रवास मे ऐसा एक भी दिन नही आया, जब मुझे यहाँ के साथियो के काम की याद न आयी हो। मेरी वाणी मे जो आत्म-विश्वास प्रकट हुआ, उसका आधार यही का काम है। यह बात कहने का मौका निजी चर्चा मे दो-तीन बार आया और खुले दिल से मैने उसे कहा। इस जगह जो प्रयोग हो रहा है, उसे अगर हम अच्छी तरह पूरा कर सके, तो निःसन्देह ससार का रूप पलट जायगा और इस बात का महत्त्व जितना मुझे मान्य है, उतना ही इस बात का विचार करनेवाले दूसरे किसीको भी मान्य होगा।

जमीन की समस्या

"लोग ऐसी अपेक्षा रखते है कि यहॉ आने पर मै जमीन मॉंगता फिरूँगा। लेकिन इस तरह की कोई सत्त्व-परीक्षा करने का मेरा विचार नही है। जो मैं पहले था, वही यहॉ वापस आया हूँ। बीच मे वामनावतार का जो रूप प्रकट हुआ था, वह यद्यपि लुप्त नहीं हुआ है, तथापि उसका कार्य यहा अभी मुझे शुरू नही करना है। लोग जानते है कि यदि कोई अनायास आकर मुझे दरिद्रनारायण की सेवा के लिए जमीन दे जाय, तो वह मै दोनो हाथों से लूँगा और दोनो हाथो से बॉट दूँगा। परन्तु वह कार्यक्रम मुझे यहॉ नहीं करना है। यहॉ जो कार्यक्रम करना है, वह उससे भी कठिन और महत्त्व का है। भूमि के बॅटवारे की समस्या मुझे कभी मुश्किल नही मालूम हुई। यदि सरकार, जनता तथा सेवक-

वर्ग विचार करे, तो वह समस्या सहज में हल होने लायक है। उसके लिए मुझे अधिक विचार करने की जरूरत न होनी चाहिए।

मुक्त प्रयोग

"परन्तु मैं एक मार्ग का प्रयोगी हूँ। अहिंसा का शोध करना मेरा बहुत वर्षों से जीवन-कार्य है। और मेरी शुरू की हुई प्रत्येक कृति, हाथ मे लिये हुए काम और छोड़े हुए काम, सब उस एक प्रयोग के ही लिए हुए और हो रहे हैं। मैं अनेक सस्थाओं का सभासद था। वह सभासदत्व मैंने छोड दिया। उसमे मेरी यही दृष्टि थी कि अहिंसा का शोध करने के लिए, अहिंसा का विकास करने के लिए मुझे 'मुक्त' रहना चाहिए। 'मुक्त' से मतलब 'कर्ममुक्त' या 'कार्यमुक्त' नही, किन्तु अलग-अलग सस्थाओं के काम-काज से मुक्त रहना है। अहिंसा के लिए सस्था बाधक है, अभी इस निर्णय पर पहुँचा नहीं हूँ। जिस दिन इस निर्णय पर पहुँचूँगा, उस दिन दूसरों से भी सस्था छोडने के लिए कहूँगा। मेरे बहुत-से मित्र सस्थाओं में हैं और उनका वही रहना उचित है, ऐसा मेरा मत है। उन सस्थाओं के द्वारा बहुत काम होना चाहिए, ऐसी मेरी अपेक्षा है। वह काम उन सस्थाओं से मुझे मिलनेवाला है, ऐसी मेरी श्रद्धा है। परन्तु किसी भी प्रकार का बन्धन अथवा मर्यादा, काल्पनिक किंवा सामाजिक—मान रखने पर मुक्त प्रयोग नहीं होगा।

मुख्य कार्य अहिंसक रास्ते की खोज

"अहिंसा के पूर्ण प्रयोग के लिए तो वास्तव में देह-मुक्त ही होना चाहिए। जब तक वह स्थिति नहीं आती, तब तक देह से जितना सभव हो, अलग रहकर काम करना, संस्थाओं से अलग रहकर काम करना और पैसे से अलग रहकर काम करना, इस तरह की सारी योजना की है। बीच में यह जो प्रयोग किया, वह केवल भूमि-दान प्राप्त करने का प्रयोग नहीं था। भूमि-दान निःसन्देह बहुत बडी वस्तु है, परन्तु मेरे सामने मुख्य

कल्पना यह है कि हमारी सामाजिक और व्यक्तिगत, सब प्रकार की कठिनाइयो का परिहार अहिसा से कैसे होगा, इसका शोध करूँ। यह मेरा मुख्य कार्य है और उसीके लिए मै गया था। इसलिए मैने वर्णन यही किया कि शान्ति सेना खडी करनी चाहिए। यह जो 'टेर' मेरे चित्त ने लगायी थी, उसके अमल का एक अवसर मुझे मिला। शान्ति-सैनिक के नाते मै गया था। यदि यह काम मै टालता, तो उसका अर्थ यह होता कि मैने अहिसा और शान्ति-सेना का काम करने की अपनी प्रतिज्ञा ही तोड दी।

मूल प्रयोग

"अब यहाँ लौटने पर मुझे भूमि-दान-यज्ञ का काम नहीं करना है। सभव हो, तो वह हैदराबाद-राज्य मे जारी रहे, ऐसी इच्छा है। परन्तु यहाँ आने पर मेरा जो मूल प्रयोग है याने प्रचलित समाज-व्यवस्था पर कुठाराघात, उसे आगे चलाना है। मेरी जो तरुण मित्र-मडली यहाँ है, और वृद्ध होकर भी सनत्कुमार जैसे नित्य कुमार, तरुण कोटि बाबा है, उनकी सगति मे अब मै इस काम मे बडे आनद से जुट जाऊँगा।

बड़ी प्रतिज्ञा

"आप देहात के लोग जमा हुए हैं, शहर के प्रेमी लोग भी आये हैं। जिनके साथ मै जेल मे रहा और जिनसे मेरी हृदय की मैत्री कायम हो गयी, ऐसे भी कुछ लोग यहाँ आये है। तो, मै आप सबसे कहना चाहता हूँ कि यह जो मेरा काम है, वह आश्रम तक ही सीमित नहीं है। आश्रम में मैं दही बना रहा हूँ। यह तैयार होने पर उसे बहुत-से दूध में मिलना और उसका भी दही बनाना है, ऐसी कल्पना है। पहले यह प्रयोग देहातो मे बाँटना है और देहातो मे उसकी सिद्धि किस मात्रा मे होती है, इसका अनुभव प्राप्त करने पर फिर उसे सारे देश के सामने रखना है। इस तरह राम-राज्य स्थापित करना है। ऐसी यह बहुत बडी प्रतिज्ञा मन में है।"

भगवान् की वाणी

"मैंने पिछले दिनो गाधीजी की पुण्यतिथि के अवसर पर कहा था कि
यह 'बात' बहुत बडी है। लेकिन इससे छोटी बात ईश्वर मुझसे नहीं
कहलवाता, इसमें मेरा कोई उपाय नही है। मेरी इच्छा तो बहुत छोटी
बात कहने की होती है। जैसे तुकाराम महाराज ने कहा, वैसी ही मेरी
मुराद है: **'भाव-बलें कैसा झालासी लहान।'** पहले के सतो के लिए तू कैसा
छोटा-सा हो गया था, वैसा ही बन। मुझे छोटी-सी मूर्ति ही प्रिय है।
परतु ऐसा होने पर भी यह इतनी बडी बात परमेश्वर मुझसे कहलवाता
है, ऐसी आज स्थिति है। तो, यह कार्य करना है और इस काम मे आस-
पास के हमारे देहातो मे हमारे जो आदमी बैठे हुए है—दस-दस, बीस-
बीस साल से काम कर रहे हैं, उन्हे मेरी मदद हो, ऐसी मेरी इच्छा है।

सुर-कार्य के लिए सुसज्जित हो

"इसके साथ आश्रम के जो आतरिक कार्य है—अहिसादि एकादश
व्रतो के ये जो सूक्ष्म प्रयोग है, वे भी चलते रहेगे और अपनी टूटी-फूटी
शक्ति के सहारे उनका बोझ जितना हम उठा सकेंगे, उठा लेगे। यह सब
हम परमेश्वर के प्रसाद पर ही सौप देते है। इस विषय मे हमारी तीव्र
इच्छा और लगन रहेगी। बाकी यह जो स्थूल कार्यक्रम रहेगा, उसे आपको,
हमे, सारे बाल-गोपालो को पूरा करना है, ऐसी हम प्रतिज्ञा करे। आज
यहाँ से जाते समय मन मे ऐसा निश्चय कर ले कि हम हाथ मे कुदाली
लेनेवाले है, हाथ मे तकली लेनेवाले है, करघे पर बैठनेवाले है, झाडू,
खपरा और फावडा लेनेवाले है। इन दिव्य आयुधो से हम सजनेवाले है,
भूषित होनेवाले हैं, क्योकि हमें सुर-कार्य करना है। जब सुर-कार्य करना
होता है, तो अनेक आयुधो से विभूषित भगवान् अवतरित होते है। हमे
सुर-कार्य करना है, इसलिए ये सब औजार लेकर हम काम करनेवाले है।
हमें भगवान् सफलता देगे, क्योकि इस काम मे असफलता ईश्वर को

अपेक्षित ही नहीं है। ईश्वर ही यह सब कहलवाता है और वही यह पूरा करायेगा। आइये, यही विश्वास रखकर काम करें।

आखिरी बात

"अब एक आखिरी बात है—'हम एक-दूसरे से प्रेम करें।' हमारा एक-दूसरे का एक-दूसरे पर अपार प्रेम होना चाहिए। 'दूजापन' हरगिज बाकी न रहे। मनुष्य को अपने निज से जो प्रेम होता है, वह निरुपचार होता है। याने उस प्रेम में कहीं उपचार नहीं होता, दिखावटीपन नहीं होता। वह बिल्कुल भीतर बैठा हुआ प्रेम होता है। आइये, ऐसा प्रेम हम दूसरों पर करें। इतनी एक बात हम सँभाल लें, तो और सब ईश्वर सँभाल लेगा।"

●

सर्वोदय तथा भूदान-साहित्य

(विनोबा)

गीता-प्रवचन १)
शिक्षण-विचार १॥)
कार्यकर्ता-पाथेय ॥)
त्रिवेणी ॥)
विनोबा-प्रवचन (सकलन) ।॥)
भगवान् के दरबार में =)
साहित्यिकों से ॥)
गॉव-गॉव में स्वराज्य =)
पाटलिपुत्र मे ।-)
सर्वोदय के आधार ।)
एक बनो और नेक बनो =)
गॉव के लिए आरोग्य-योजना =)
व्यापारियों का आवाहन =)
हिसा का मुकाबला ≡)
ज्ञानदेव-चिन्तनिका ।॥)
जनक्रान्ति की दिशा में ।)
भूदान गगा (भाग पहला) १॥)
भूदान-गगा (भाग दूसरा) १॥)
भूदान-गगा (भाग तीसरा) १॥)
चुनाव =)

(धीरेन्द्र मजूमदार)

शासन मुक्त-समाज की ओर ।=)
नयी तालीम ॥)
ग्रामराज ।)
आजादी का खतरा ॥)

(श्रीकृष्णदास जाजू)

सपत्तिदान-यज्ञ ॥)
व्यवहार-शुद्धि ।=)
चरखा-सघ का नव सस्करण १॥)

(जे० सी० कुमारप्पा)

गॉव-आन्दोलन क्यो ? २)
गाधी अर्थ विचार १)
स्थायी समाज व्यवस्था (भाग २रा) २)
श्रम-मीमासा और अन्य प्रबन्ध ।॥)
खून से सना पैसा ।॥)
यूरोप . गाधीवादी दृष्टि से ।॥)
वर्तमान आर्थिक परिस्थिति १॥)
ग्रामो के सुधार की योजना १॥)
स्त्रियॉ और ग्रामोद्योग ।)
राजस्व और हमारी दरिद्रता २॥)

(दादा धर्माधिकारी)

मानवीय क्रान्ति ।)
साम्ययोग की राह पर ।)
क्रान्ति का अगला कदम ।)
सर्वोदय-दर्शन (प्रेस मे) २॥)

(अन्य लेखक)

सर्वोदय का इतिहास और शास्त्र	।)
श्रमदान	।)
विनोबा के साथ	१)
पावन प्रसग	॥)
भूदान-आरोहण	॥)
सामूहिक पद यात्रा	।)
क्रान्ति की पुकार	≡)
पावन-प्रकाश (नाटक)	।)
गोसेवा की विचारधारा	॥)
गाधी : एक राजनैतिक अध्ययन	॥)
सामाजिक क्रान्ति और भूदान	।-)
गॉव का गोकुल	।)
ब्याज-बट्टा	।)
भूदान-दीपिका	=)
साम्ययोग का रेखाचित्र	=)
पूर्व-बुनियादी	॥)
सुन्दरपुर की पाठशाला	।॥)
सर्वोदय भजनावलि	।)
धरती के गीत	-)
भूदान-लहरी	-)
सत्सग	॥)
क्रान्ति की राह पर	१)
क्रान्ति की ओर	१)
सर्वोदय पद-यात्रा	१)
आठवॉ सर्वोदय-सम्मेलन	१)
भूदान-यज्ञ : क्या और क्यो ?	१)
राजनीति से लोकनीति की ओर	॥)
छात्रो के बीच	।)
राज्यव्यवस्था . सर्वोदय दृष्टि से	१॥)
भूमि-क्रान्ति की महानदी	।॥)
नक्षत्रो की छाया मे	१॥)
ग्रामशाला : ग्रामज्ञान	१)
मजदूरो से	=)
सामूहिक प्रार्थना	=)
भूदान-गगोत्री	२॥)

सफाई . विज्ञान और कला (प्रेस में)